शकराज

जयदमन

गुरुदत्त

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

143
-J
92

शकराज जयदमन द्वारा भारत आक्रमण के आधार पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

167992

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त की चुनी हुई रचनाएं

राजनीति पर आधारित

स्वाधीनता के पथ पर, पथिक, स्वराज्यदान, विश्वासघात, देश की हत्या, दो लहरों की टक्कर, दास्ता के नये रूप।

पौराणिक कथाओं के अधार पर

कुमार सम्भव, उमड़ती घटाएं, (राम कथा पर आधारित) अमृत-मंथन, परम्परा, अग्नि परीक्षा, परित्राणाय साधूनाम् (महाभारत पर)।

ऐतिहासिक पृष्ठ-भूमि पर

कुमकुम, विक्रमादित्य, पृष्यमित्र, लुढ़कते पत्थर (अशोक-कालीन), पत्रलता (हर्षवर्धन पर), गंगा की धारा (अकबर कालीन), खण्डहर बोल रहे हैं। (औरंगजेब के काल पर)

सामाजिक उपन्यास

अनदेखे बन्धन, एक और अनेक, मानव, गुंठन, आवरण, यह संसार, धरती और धन, जिन्दगी, अमानत, एक मुँह दो हाथ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयदमन

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयदमन

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

लेखक
गुरुदत्त
सम्पादक
ओमप्रकाश शर्मा

Central Library
167992
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar
081
167992

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली-110005

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयदमन

© हिन्दी साहित्य सदन

R
89.9143
GUR-J

लेखक : गुरुदत्त
मूल्य : 300/-
संस्करण : 2016
प्रकाशक : हिन्दी साहित्य सदन
2 बी.डी. चैम्बर्स,
10/54 देशबन्धु गुप्ता रोड,
करोलबाग, (पुलिस स्टेशन के समीप)
नई दिल्ली-110005
ई-मेल : indiabooks@rediffmail.com
hindisahityasadan.com
वैबसाइट : www.hindisahityasadan.com
दूरभाष : 23553624, 23551344, 9213527666
मुद्रक : संस्कृति प्रैस, दरियागंज, दिल्ली-110002

Jaidaman

By Gurudutt

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम परिच्छेद

:1:

"देखो बेटी! अपने देश में जातीय ह्रास तो कलियुग के आगमन से पूर्व ही होने लगा था। तुमने पूछा है कि हमारे शास्त्र और इतिहास के ग्रन्थ इतने समृद्ध होने पर भी हमारी दशा इतनी हीन क्यों है? इसका उत्तर यह है कि हमारे व्यक्तिगत और समष्टिगत जीवन में कोई सन्तुलन नहीं रहा। शरीर, मन, बुद्धि और भीतर बैठे पुरुष में समन्वय नहीं रहा।

"शरीर और इन्द्रियाँ देखती-सुनती और अन्य कार्य भी करती हैं, किन्तु मन और बुद्धि देखे-सुने पर मनन और विचार नहीं कर सकते। यदि वे कुछ विचार और चिन्तन करते भी हैं, तो मिथ्या परिणामों पर ही पहुँचते हैं। कभी-कभी जब परिणाम सही निकलते हैं, तो ईश्वर का आश्रय छोड़ देने से जीवात्मा उन परिणामों पर कार्य नहीं कर सकता।"

"तो बाबा! ऐसे में क्या किया जाये?"

"इसीलिए मैंने तुम्हें धारणा, ध्यान और समाधि का उपाय बताया है ताकि इस प्रकार तुम में उपस्थित जीवात्मा का सम्बन्ध उस सर्वव्यापक एवं सर्वशक्तिमान् परमात्मा से हो सके और तुम उसके बल पर अपनी बुद्धि से निकाले निष्कर्षों के अनुसार कार्य कर सको।"

केवल अधोवस्त्र पहने और ऊपर के शरीर से सर्वथा नग्न, सिर पर बड़ी-सी चोटी लटकाये और गले में मोटे सूत का यज्ञोपवीत पहने एक अधेड़ आयु का व्यक्ति एक कुमारी को एक बड़ी-सी पुस्तक में से पढ़ाते-पढ़ाते उस पर टिप्पणी कर रहा था।

सोलह-सत्रह वर्ष की कुमारी यौवनारम्भ के ओज और शालीनता से युक्त थी और प्रौढ़ावस्था के उस पुरुष के सामने कुशासन पर बैठी बड़े ध्यान से सुन रही थी। पढ़ाने वाले कुमारी के पिता पण्डित वीरभद्र दर्शनाचार्य थे और पढ़ने वाली उनकी इकलौती पुत्री पद्मिनी थी। जिस ग्रन्थ का पठन-पाठन हो रहा था—वह महर्षि वेदव्यास कृत महाभारत था। सांख्य और योग का प्रकरण पढ़ाया जा रहा था और पढ़ाते-पढ़ाते महाभारत-काल की घटनाओं पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चर्चा चल रही थी। पण्डितजी उस समय के अयुक्ति-सङ्गत व्यवहार पर टिप्पणी करते हुए अपनी बिटिया को समझा रहे थे।

पण्डितजी कह रहे थे—"लोग कहते हैं कि यह आने वाले कलियुग का प्रभाव था, जिसके कारण लोग दिन को रात समझने लगे थे, किन्तु इस कथन में कोई युक्ति प्रतीत नहीं होती। इस पर यह किंवदन्ति है कि द्वापर और कलियुग का सन्धि-काल तीन सौ देव वर्षों का चल रहा था। दो सौ देव वर्ष द्वापर के अन्त-काल का और सौ देव वर्ष कलियुग के आरम्भ का था। इन तीन सौ देव वर्षों में ही वे सब घटनाएँ हुईं, जिनके परिणामस्वरूप महाभारत का युद्ध हुआ।

उन्होंने आगे कहा—"महाराज शान्तनु ने ही अपनी वृद्धावस्था में एक मछुआरे द्वारा पालित लड़की पर आसक्त होकर महाभारत युद्ध का बीज बोया था।"

"बाबा!" लड़की ने बात बदलकर पूछ लिया—"भगवान् कृष्ण-जैसे योगीश्वर भी जब इस दुर्घटना को नहीं टाल सके, तो क्या यह मानना ठीक नहीं होगा कि काल की गति के कारण ही सह सब हुआ था?"

पण्डितजी बोले—"एक दृष्टि से तो यह ठीक ही प्रतीत होता है, परन्तु बेटी! काल का निर्माण भी तो मनुष्य ही करता है। काल एक बहते प्रवाह में मनुष्य द्वारा निश्चित एक अवधि ही तो है, अन्यथा इस प्रवाह का आदि और अन्त नहीं है। यह युग-गणना मनुष्य ने ही तो की है। किसी एक काल-बिन्दु से आरम्भ कर हमने ही युग आरम्भ किया है।

"इस सम्बन्ध में एक और बात भी घ्यान देने योग्य है कि पाप-पुण्य के लिए प्रवृत्ति का सम्बन्ध व्यक्ति के साथ बना हुआ है, काल के साथ नहीं। यह प्रवृत्ति मानव-सृष्टि के आदि-काल से चली आ रही है। प्राचीनतम मानव-इतिहास अदिति और दिति के पुत्रों का ही उपलब्ध है और तब से ही दैवी और आसुरी प्रवृत्तियाँ उपस्थित प्रतीत होती हैं।

"इस काल में भी भगवान् विष्णु भगवान् कृष्ण के समान ही पराक्रम और ज्ञान के स्वामी दिखाई देते हैं, किन्तु कृष्ण का भाई बलराम विष्णु के भाई इन्द्र के समान नहीं था। यदि बलराम में इन्द्र के समान गुण होते, तो इस युद्ध के भी वैसे ही परिणाम होते, जैसे विष्णु और माल्यवान् आदि के युद्ध में हुए थे। वहाँ केवल राक्षस वंश का विनाश हुआ था, जबकि यहाँ दोनों वंशों का विनाश हुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"युधिष्ठिर राज्य के लिए सर्वथा अयोग्य था। उसे तो एक कुशल प्रबन्धक अथवा व्यवस्थापक मात्र ही कहा जा सकता है, जबकि राजा व्यवस्थापक से बहुत ऊँचा होता है।"

लड़की गम्भीर विचार में मग्न हो रही थी। उसके मानस-पटल पर महाभारत-काल की घटनाएँ चलचित्रवत् प्रतिबिम्बित हो रही थीं। अचानक उसके मन में एक विचार आया। उसने पूछ लिया—"बाबा! युग-परिवर्तन को कितना समय व्यतीत हो चुका है?"

"आज कलि का व्यतीत काल अठारह सौ अस्सी है और महाभारत का युद्ध कलि के आरम्भ से छब्बीस वर्ष पूर्व हुआ था। इस युद्ध में एक करोड़ के लगभग व्यक्ति मारे गये थे। कहा जाता है कि इस युद्ध में पाँच पाण्डव, छठा कृष्ण और यादवों के कुछ सम्बन्धी ही बचे थे, जो युद्ध के समाप्त होते ही युद्ध-भूमि से चले गये थे। इस महाविनाश का ही यह परिणाम हुआ था कि भारत के प्रायः युवा और वृद्ध राजा मारे गये थे और बालकों को राजगद्दी पर बैठा दिया गया था। राजा अनुभवहीन और दुर्बल हो गये, तो देश पर विदेशियों ने आक्रमण कर दिया।

"वर्तमान में देश पर आक्रमण भी तो इस दुर्बलता के कारण ही हुआ है। इस ह्रास काल में वेद के विद्वानों का लोप हुआ है और अपठित, मूर्ख अपने मन की बात को वेदों के नाम पर आरोपित कर वेद-विरुद्ध मतों की सृष्टि में सहायक हुए हैं। वाम-मार्ग, तन्त्रवाद, बौद्ध मत और जैन मत इनमें से कुछ हैं। शैव मत तो आदि मत ही है। यह लोक-कल्याण का उपासक है।

"वाम-मार्ग और तान्त्रिक मत वाले भी शिव महादेव की उपासना करते हैं, किन्तु प्राचीन वेद मत में और इन अर्वाचीन मतों में बहुत अन्तर है।"

अभी पाठ चल ही रहा था कि मकान के आंगन से गाय के रम्भाने की आवाज़ सुनाई दी। पण्डितजी ने पाठ बन्द कर दिया और लड़की से कहा—"गाय आ गयी है, उसे चारा डालने का समय हो गया लगता है। देखो, घर की सेविका मोहिनी आयी है या नहीं? गाय की सानी करने में उसकी सहायता कर दो।"

पद्मिनी की माता जीवित नहीं थी। उसका निधन बेटी के दो वर्ष की होते ही हो गया था। लड़की का पालन-पोषण पण्डितजी ने ही किया था और अब वह उसके विवाह की चिन्ता कर रहे थे। वह देख रहे थे कि पद्मिनी-जैसी सुन्दर, सुशील और विदुषी लड़की के लिए गाँव में कोई उपयुक्त वर नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वह उसके लिए गाँव से बाहर दृष्टि दौड़ा रहे थे।

लड़की आंगन में गयी, तो घर की सेविका मोहिनी आ गयी थी। वह भूसा-दाना मिलाकर सानी तैयार कर रही थी। पद्मिनी ने गाय के गले में रस्सा बांधा और उसे खूंटे से बांध दिया। गाय का बछड़ा आंगन के दूसरे किनारे पर बंधा हआ था। मां को देखकर वह भी में-में करने लगा। बछड़े को खूंटे से खोलकर पद्मिनी जलकुण्ड के पास ले गयी और वह जल पीने लगा।

गाय और बछड़े को दाना-पानी देने में आधा घण्टा लग गया। अभी दिन का दूसरा प्रहर ही चल रहा था कि घर के बाहर गाँव की ओर भारी हो-हल्ला सुनाई दिया। पद्मिनी और मोहिनी घर से निकलकर देखने लगीं कि हल्ला किस बात का है। पण्डितजी भी भागे-भागे इनके पीछे आ खड़े हुए।

एक सौ के लगभग अश्वारोही नग्न खड्गें लिये गाँव में लूट-मार कर रहे थे और गाँव के लोग 'पकड़ो-मारो' का शोर मचा रहे थे। अश्वारोही बड़ी-बड़ी दाढ़ी-मूछों और सिर पर लम्बे बालों वाले थे। पण्डितजी ने देखा, वह भागकर मकान में गये और अपने शयनागार से अपना खड्ग ले आये और गाँव की ओर चल दिये। मार्ग में ही एक डाकू से उनकी मुठभेड़ हो गयी, जो उनके मकान की ओर ही आ रहा था। पण्डितजी ने एक ही वार से उसके घोड़े का सिर काट दिया। घोड़ा भूमि पर गिरा, तो सवार भी लोट-पोट होने लगा। पण्डितजी ने उसे उठने का अवसर नहीं दिया और उसका काम तमाम कर दिया।

पद्मिनी और मोहिनी भी घर में आ गयीं और मकान की छत पर चढ़कर तीर-कमान से उधर आने वालों को रोकने के लिए तैयार हो गयीं।

गाँव के लोग एक सौ से ऊपर डाकुओं का विरोध नहीं कर सके। वे आंधी की भाँति आये और घड़ी-भर में लूट-मार कर लौट गये।

गाँव के लगभग चालीस पुरुष लड़ते हुए मारे गये। बीस युवतियों का अपहरण हुआ और डाकू अतुल धन लूटकर ले गये। पन्द्रह-सोलह डाकू भी मारे गये। अपहृत की गयी युवतियों में पद्मिनी भी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाका डालने वाले शक थे। वे गुर्जर प्रदेश की सीमा पर बहुत बड़ी संख्या में एकत्र हो गये थे और पिछले एक सप्ताह से सीमावर्ती गाँवों में छापे मारकर लोगों का धन, पशु और उनकी स्त्रियों को लूटकर ले जा रहे थे।

पण्डित वीरभद्र का गाँव भद्रकच्छ एक ओर सागरतट के निकट था और दूसरी ओर मधुमति नदी के तट पर बसा था। सागर के द्वीपों और सागर-पार के देशों से व्यापार चलता था। भद्रकच्छ एक समृद्ध और बृहत गाँव था, अत: डाकुओं को लूट का भरपूर माल मिला था। यहाँ उनका विरोध भी अधिक हुआ था। पिछले एक सप्ताह में डाकुओं को विरोध का इतना सामना नहीं हुआ था, जितना उन्हें भद्रकच्छ में करना पड़ा था। डाकुओं के पन्द्रह-सोलह लोग तो भद्रकच्छ में ही मारे गये थे। पाँच-छह लोग गम्भीर दशा में वापस लौटे थे। वे मार्ग में ही रह गये थे और उनके साथी उन्हें बाद में उठाकर ले जाने के लिए वहीं छोड़ गये थे। अन्य गाँवों में तो विरोध नाम-मात्र को ही हुआ था। भद्रकच्छ से उन्हें माल भी बहुत मिला था।

एक घण्टे की दौड़ के उपरान्त छापामार सीमा-पार अपने शिविर में जा पहुँचे। उस शिविर में दो सहस्र से भी अधिक लोग थे और उनके साथ उनका सरदार भी मौजूद था।

भद्रकच्छ से लौटकर जब छापामार अपने शिविर में पहुँचे, तो उनका सरदार और अन्य मुख्य-मुख्य लोग शिविर से बाहर आ गये। लूट के माल की ढेरियाँ लगा दी गयीं और अपहृत युवतियों को एक पंक्ति में खड़ा कर दिया गया। तब सरदार अपने खैमे से बाहर आया और लूट के माल को देखने लगा। स्वर्ण, रजत, मुक्ता और माणिक्य आदि का ढेर देखकर वह छापामारों के नायक से पूछने लगा। नायक अपनी भाषा में भद्रकच्छ में विरोध का वर्णन करता हुआ अपनी लूट के दूसरे अंश स्त्री-वर्ग की ओर संकेत करने लगा।

सरदार पंक्ति में खड़ी स्त्रियों की ओर घूमा और एक-एक स्त्री को देखता हुआ चला जा रहा था। जब उसने पद्मिनी को देखा, तो उसके सौन्दर्य को देखकर रुक गया। वह पद्मिनी को सिर से पाँव तक देखता हुआ खड़ा रह गया। छापामारों का नायक उसके साथ उससे एक पग पीछे था। सरदार ने नायक से अपनी भाषा में कुछ पूछा, तो उसने उसी भाषा में उत्तर दिया। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पर सरदार ने पद्मिनी की ओर देखकर उससे कुछ पूछा, तो पद्मिनी ने कुछ भी उत्तर नहीं दिया। वह कुछ भी नहीं समझ सकी। वह तो किसी अज्ञात भय से सामने खड़े सरदार को देखती रही। सरदार समझ गया कि वह उसकी बात समझ नहीं रही। इस पर वह अपने पास खड़े नायक से कुछ बोला। नायक ने दूर खड़े किसी अन्य व्यक्ति से कुछ कहा और वह सरदार के खैमे की ओर चल दिया। सरदार पद्मिनी के पास ही खड़ा रहा। वह अन्य स्त्रियों की ओर नहीं गया।

खैमे से अधेड़ आयु की एक स्त्री निकली और सरदार के समीप आ खड़ी हुई। सरदार ने पद्मिनी की ओर संकेत कर उससे कुछ कहा। इस पर उस स्त्री ने पद्मिनी से देव-वाणी में प्रश्न करने आरम्भ कर दिये।

"तुम्हारा नाम क्या है?"

पद्मिनी ने अपना नाम बता दिया।

"तुम कौन जाति की हो?"

"ब्राह्मण।"

"तुम्हारे पिता का नाम क्या है?"

"वीरभद्र।"

"कौन ग्राम की रहने वाली हो?"

"भद्रकच्छ।"

इसके बाद उस स्त्री ने पद्मिनी से कहा—"तुम बहुत सुन्दर हो, विवाहिता हो?"

"नहीं।"

वह स्त्री एक क्षण के लिए पद्मिनी के मुख को देखती रही, फिर सरदार के कहने पर पद्मिनी से बोली—"तुम मेरे साथ आओ। तुम बड़ी भाग्यशाली प्रतीत होती हो।"

पद्मिनी ने सुना, किन्तु कुछ बोली नहीं और न हिली-डुली। इस पर उस प्रौढ़ा ने पद्मिनी को बाँह से पकड़ा और उसे सरदार के खैमे की ओर ले चली। उसके जाने के उपरान्त सरदार अन्य स्त्रियों तथा लूटे हुए धन का बँटवारा करने लगा।

अपने जातिवालों की प्रथा के अनुसार लूट का आधा धन राजकीय कोष के लिए पृथक् कर दिया गया और शेष आधा धन छापा मारनेवालों में बाँट दिया गया। स्त्रियों के विषय में यह प्रथा थी कि जो अविवाहित होती थीं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उनका विवाह अविवाहित सैनिकों से कर दिया जाता था, किन्तु विवाहितों को दासी बनाकर उन सैनिकों को दे दिया जाता था, जो उनका दाम देते थे। ऐसे सैनिक लूट के माल में से दाम देते थे। इस प्रकार मोल लेने वाले सैनिक ऐसी स्त्रियों को एक-दो दिन अपने पास रखने के बाद दूसरों के हाथ बेच देते थे। धीरे-धीरे वे स्त्रियाँ शिविर में हरजाई बन जाती थीं।

स्त्रियों और धन का बँटवारा करने के बाद सरदार ने घायलों को शिविर में लाने के लिए पालकियाँ भेज दीं। यह सारा प्रबन्ध करने में दो घड़ी भर लग गयीं।

इस बीच पद्मिनी और प्रौढ़ावस्था की स्त्री परस्पर वार्तालाप कर रही थीं। दोनों खैमे में पहुँचीं और पद्मिनी को एक चौकी पर बिठाकर वह स्त्री पद्मिनी से बोली—"हमारे सरदार ने तुम्हें पसन्द किया है।"

"पसन्द करने से क्या होता है?"

"तुम उसकी सेवा करोगी।"

"मैं ब्राह्मण कन्या हूँ, हम सेवा नहीं करते।"

"तो क्या करती हो?"

"पठन-पाठन।"

वह स्त्री मुसकरायी और कहने लगी—"हाँ, यह भी कर सकोगी, किन्तु उससे पूर्व वह तुम्हें अपनी दासी बनायेगा।"

पद्मिनी को कुछ समझ आ रहा था। वह पूछने लगी—"दासी कैसे बनायेगा?"

"तुमसे प्यार करेगा और फिर तुम्हें पुरस्कार भी देगा। यदि तुम उससे प्रेम से व्यवहार करोगी, तो वह तुम्हें जीवन-भर अपने पास रखेगा।"

"पर हम तो बिना विवाह के किसी से प्रेम नहीं करतीं।"

"विवाह में क्या विशेषता है?"

"स्त्री-पुरुष पति-पत्नी बन जाते हैं और फिर जन्म-भर गृहस्थी चलाते हैं।"

"यह भी हो सकता है, परन्तु यह यहाँ की प्रथा है कि पुरुष एक से अधिक पत्नियाँ रखते हैं।"

"इसका क्या नाम है?"

"इसका नाम जयदमन है और यह शक-नरेश है। सिन्धु नदी के तट पर इसका राज्य है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"परन्तु यह तो डाका डालता है और लोगों को लूटता है।"

"इस पर भी इसका देश है, इसका राज्य है और इसके नगर हैं। लूटना-मारना इनका व्यवसाय है। इनके यहाँ भी एक-एक सैनिक कई-कई स्त्रियाँ रखता है। इसका कारण यह है कि हमारे यहाँ स्त्रियों की संख्या पुरुषों से अधिक है। लड़ना इनका व्यवसाय है और पुरुष स्त्रियों से अधिक मरते हैं।"

"इस पर भी हम आर्य लड़कियाँ बिना विवाह के किसी की भार्या नहीं बन सकतीं।"

"विवाह कैसे होगा?"

"विवाह में परमात्मा को साक्षी मानकर यह वचन दिया जाता है कि हमारा सम्बन्ध जीवन-भर बना रहेगा।"

"यदि वचन देकर कोई सम्बन्ध तोड़ दे, तो?"

"तो हम उसे वचन भंग करने वाला मानकर सम्बन्ध-विच्छेद कर देती हैं।"

उस स्त्री ने मुस्कराते हुए कहा—"इससे क्या अन्तर पड़ता है?"

"अन्तर हममें पड़ता है। हम एक बार किसी की भार्या बन जाती हैं, तो फिर किसी अन्य को अपना पति नहीं मान सकतीं।"

"यदि कोई बिना विवाह किये बलपूर्वक सम्बन्ध बनाये, तो क्या होता है?"

"हम अपने प्राण त्याग देती हैं।"

"प्राण कैसे त्याग सकती हो?"

"यह तो बड़ा सुगम है। श्वास को ऊपर खींचते हैं और प्राण बाहर हो जाते हैं, परन्तु तुम हो कौन?" पद्मिनी ने पूछ लिया। "ये लोग म्लेच्छ भाषा बोलते हैं, किन्तु तुम देव-वाणी बोलती और समझती हो?"

"मैं इनकी जाति की नहीं हूँ। मेरा नाम मालती है। मैं इरावती के तट पर एक गाँव मूलाधर की रहने वाली हूँ। वहाँ के अनाज के एक व्यापारी की लड़की हूँ। आज से पचीस वर्ष पूर्व जयदमन के पिता ने मेरा अपहरण किया था। उसने मूलाधर पर आक्रमण किया और नगर को लूटा। लूट की स्त्रियों में एक मैं भी थी।

"हमारे नगर को लूटने वाले शकराज का नाम चष्टन था। वह अपने को एक महान् विजेता नहपान का वंशज बताता था। ये लोग पश्चिम की ओर से आये थे और सिन्धु पारकर इन्होंने सिन्धु नदी और इरावती के भीतर के क्षेत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पर अधिकार कर लिया था। इसके सजातीय नहपान के साथी तो मथुरा तक पहुँचे हुए हैं।

"एक दिन चष्टन नौकाओं पर सवार होकर इरावती को पारकर हमारे नगर पर चढ़ आया और अतुल धन तथा अगणित स्त्रियों को लूटकर ले गया। उसने मुझे अपनी दासी बना लिया। जब उसकी शक पत्नी को गर्भ ठहर गया, तो मैंने उसकी बहुत सेवा की और उसने मुझे अपने पास दासी-कार्य के लिए रख लिया। जब जयदमन का जन्म हुआ, तो मैं इसकी धाय का कार्य करती रही। अब मैं इसी रूप में इसकी सेवा में हूँ।

"जयदमन अपनी माँ खासा के निधन के पश्चात् मुझे ही माँ मानता है। मुझे इसके साथ रहते हुए पचीस वर्ष हो गये हैं और मैं इसकी भाषा सीख गयी हूँ। देव-वाणी तो मैंने अपने बाल्यकाल में ही पढ़ी थी।"

"परन्तु माँ! मैं पत्नी तो बन रहूँगी, किन्तु दासी नहीं बनूंगी। मैं ब्राह्मण से निम्न वर्ण में जा सकती हूँ, परन्तु मानव से पशु नहीं बनूंगी।"

"तुम सुन्दर हो, अभी तक यहाँ आयी सब स्त्रियों से अधिक प्रिय हो। अत: मैं आशा करती हूँ कि तुम राजा की रानी ही बनोगी, किन्तु यह भी उसकी इच्छा पर ही निर्भर करता है।"

"ठीक है, पूछ लो।" पद्मिनी ने जयदमन को देखा था। बीस वर्ष की आयु का सुन्दर, बलवान् युवक लगता था। सिर पर घुंघराले बालों की लटें कन्धे तक लटक रही थीं, परन्तु मुख पर अभी तक दाढ़ी-मूँछ नहीं आयी थी। वैसे छाती चौड़ी, भुजाएँ लम्बी और पाँव सुदृढ़ थे।

पद्मिनी ने खैमे को भी एक दृष्टि से ही देखा था। दरी, कालीन, तकिये, चौकियाँ और सुन्दर चित्रित परदे थे। खैमे की छत से फूलों के गुच्छे लटक रहे थे। खैमे के भीतर बीचोबीच एक सुन्दर परदा था, जिसके पीछे शयनागार था।

यह सब देखने पर उसे मालती के कथन का प्रमाण मिल गया कि वह युवक इनका राजा है और स्वामी भी है। इस सबसे और उसे पति के रूप में पाने पर पद्मिनी अपने मन में एक विशेष प्रकार की गुदगुदी अनुभव कर रही थी।

इसी समय बाहर का काम समाप्त कर जयदमन भीतर आया और मालती से अपनी भाषा में कुछ पूछने लगा। मालती ने एक लम्बे वक्तव्य के रूप में उसके प्रश्न का उत्तर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्मिनी समझ रही थी कि उसके विषय में ही वार्तालाप हो रहा है। इसलिए वह उत्सुकता से वार्तालाप के परिणाम की प्रतीक्षा कर रही थी।

लम्बे वार्तालाप के उपरान्त मालती ने पद्मिनी को बताया—"महाराज विवाह के लिए मान गये हैं, किन्तु विवाह उनकी अपनी रीति के अनुसार ही होगा। वह तुम्हारी सङ्गत के लिए इतने आतुर हो रहे हैं कि तुम्हारे गाँव से पण्डित बुलाने की प्रतीक्षा नहीं कर सकते।"

"ठीक है, मैं अपने विवाह के मन्त्र स्वयं ही पढ़ लूंगी। यह तो किसी समय भी हो सकता है।"

मालती हँस दी और उसने जयदमन को पद्मिनी की इच्छा बता दी। जयदमन एक क्षण के लिए खैमे से बाहर गया और खैमे के बाहर खड़े चौकीदार से कुछ कहकर भीतर आ गया।

भीतर आते ही वह दोनों स्त्रियों के पास एक चौकी पर बैठ गया। पद्मिनी ने उसकी ओर देखा, अर्थात् उसने उसकी भार्या बनने की स्वीकृति दे दी।

जयदमन के बैठते ही मालती ने पद्मिनी की ओर देखकर कहा—"देखो बेटी! यद्यपि मैं अपने गाँव में अपने पति की सङ्गत में छह मास तक ही रही और फिर महाराज के पिता ने भी मुझे कई वर्ष तक अपनी भार्या बनाकर रखा, तथापि मेरे कोई सन्तान नहीं हुई। जब इसका जन्म हआ, तो मैंने पुत्र की भाँति पहले इसकी सेवा की और बाद में प्यार करने लगी। बीच में इसका पिता इसकी माँ खासा से लड़ पड़ा, तो वह अपने पुत्र को साथ लेकर एक अन्य स्त्री के साथ रहने लगा। खासा ने मुझे अपने पास रख लिया। जब महाराज के पिता का निधन हुआ, तो यह पन्द्रह वर्ष का हो चुका था। तब यह अपनी माँ के पास आकर रहने लगा। इसका कबीले वालों से झगड़ा हुआ था। कई वर्षों तक इसके झगड़े, लड़ाइयाँ आदि चलते रहे। एक समय इसके साथियों में बहुत झगड़ा हुआ, किन्तु जीत इसी की हुई। तब से यही राजा है। इसके विरोधी दूर पर्वतों के पार चले गये हैं और अब यह पर्वतों के इस पार अपनी राजधानी में रहता है।

"इधर इसके मन में यह लालसा उत्पन्न हुई है कि यह अपने राज्य का विस्तार करे, इसीलिए यह कच्छ प्रदेश में अपने पाँव पसारने लगा है। इरावती के पार तो शूरवीर लोग रहते हैं, परन्तु इस क्षेत्र से तो ये लूट-पाटकर ले आते हैं और कोई राजा इनका विरोध नहीं कर रहा। जब से इसके मन में अपने राज्य को विस्तार देने की लालसा उत्पन्न हुई है, तब से ही यह अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए सुन्दर रानी पाने की इच्छा करता रहा। आज तुम्हें देखकर यह तुमसे विवाह करने के लिए मान गया है।"

यह सुनकर पद्मिनी ने मुस्कराकर जयदमन की ओर देखा। जयदमन ने इस मुस्कराहट पर मुग्ध होकर बलात् पद्मिनी को अपनी दोनों बाँहों में पकड़कर गले लगा लिया।

यह इतना अकस्मात् था कि पद्मिनी विरोध न कर सकी और उसके मुख से 'आह' शब्द निकल गया।

जयदमन ने पद्मिनी को छोड़ दिया और मालती से कुछ कहा। मालती ने उसके मनोभावों को समझ लिया और कहा—"यह विवाह नहीं है, यह तो वचन मात्र है कि वह तुम्हारा आदर करता है।"

पद्मिनी ने कहा—"आप इनसे कह दीजिये कि यह सब विवाह के उपरान्त और अपनी माँ-तुल्य धाय के सामने नहीं। मुझे लाज आती है।"

जब मालती ने जयदमन को पद्मिनी की बात बतायी, तो दोनों हँसने लगे। पद्मिनी भी हँस दी।

इसी समय खैमे के बाहर ढोल, नगाड़े और लोगों के गाने-बजाने का शब्द होने लगा। मालती ने कहा—"तुम्हारे विवाह की तैयारी हो रही है। तुम स्नान कर लो, फिर मैं तुम्हें राजसी वस्त्र पहनाऊँगी।"

पद्मिनी चुप हो गयी, तो मालती उठी और उसकी बाँह पकड़कर उसे परदे के पीछे ले गयी।

जयदमन बहुत प्रसन्न था। वह भी परदे के पीछे अपने वस्त्र बदलने चला गया।

:3:

पद्मिनी को पाँच कोस से सरपट दौड़ते हुए एक अश्व पर किसी गठरी की भाँति लादकर लाया गया था। अभी तक तो वह चिन्ता कर रही थी और मन ही मन अपना जीवनान्त करने की कल्पना करती हुई सुख-दुःख की अनुभूति से रहित थी।

जब उसे स्नान के उपरान्त नये वस्त्र पहना दिये गये, तो उसे अस्वाभाविक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ढंग की यात्रा की थकावट अनुभव होने लगी। इस पर उसे शिविर में राजा के उपयुक्त भोजन कराया गया, तो वह नींद अनुभव करने लगी। उसने मालती को बताया। वह उसके साथ दुभाषिये का काम कर रही थी। मालती ने भी कहा—"अभी विवाह में समय है, तुम एक घण्टा सो सकती हो।"

पद्मिनी को खैमे के शयनागार में पलंग पर सुला दिया गया। जयदमन खैमे के बाहर विवाह का प्रबन्ध देखने चला गया।

पद्मिनी लेट तो गयी,परन्तु खैमे के बाहर राजा के विवाह की सूचना पर घोर हर्षनाद हो रहा था। इस कारण वह सो नहीं सकी। इस पर भी उसे बीच-बीच में झपकी आती थी। वह अपनी कल्पना में विवाहित जीवन के स्वप्न लेती रही।

रात हो चुकी थी। खैमे में दीपक जला दिये गये थे। बाहर अब पहले से कुछ शान्ति हो गयी थी। इस पर भी अनेक स्त्री-पुरुषों के परस्पर बातें करने के शब्द आ रहे थे। मालती उसके शयनागार में आयी, तो पद्मिनी लपककर उठ बैठी। मालती ने पूछा—"सो लिया?"

"नहीं माँ, बाहर ढोल नगाड़ों के कारण नींद नही आयी। फिर भी चित्त पहले से अधिक स्वस्थ है।"

"हाँ, चलो, बाहर सभी कबीले वाले तुम्हारी प्रतक्षा कर रहे हैं। हमारे पुरोहित विवाह कराने का सामान लिये तैयार खड़े हैं।"

पद्मिनी उठी और शयनागार से निकली, तो जयदमन नवीन वस्त्र, एक बाज़ूबन्द और कण्ठहार पहने बैठक में खड़ा उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। वह दोनों हाथ फैलाकर उससे आलिंगन करने के लिए आगे बढ़ा, तो पद्मिनी मुसकराते हुए एक पग पीछे हटी और अंगुली से मालती की ओर संकेत करते हुए 'माँ' शब्द कह दिया।

जयदमन बात को समझ गया और उसने खैमे से बाहर चलने का संकेत कर दिया। खैमे के बाहर शिविर के प्रायः सभी लोग एक बहुत बड़े घेरे में खड़े थे। घेरे के बीचोबीच दो वृद्धजन श्वेत वस्त्र पहने हुए हाथ में एक विशेष प्रकार की हरी पत्ती से युक्त डाली लिये खड़े थे।

जयदमन और पद्मिनी को उनके सामने खड़ा कर दिया गया। इस पर वे दोनों—जो पुरोहित प्रतीत होते थे—ऊँचे स्वर में कुछ बोलने लगे। शिविर के सब लोग शान्त और मौन बने उनके बोलों को सुनने लगे। फिर कई बार उन पुरोहितों ने हाथ में पकड़ी डाली से वर-वधू को छुआ और तदनन्तर पद्मिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का हाथ जयदमन के हाथ में पकड़ा दिया।

इस प्रकार विवाह सम्पन्न हुआ। इसके उपरान्त पूरे शिविर-निवासियों को एक बृहद् भोज में सम्मिलित होने के लिए कहा गया। जयदमन पद्मिनी का हाथ पकड़कर उसे भोज के स्थान पर ले गया।

पद्मिनी अपने पिता के घर में एक धोती और एक चोली ही पहनती थी, यहाँ स्नान के बाद उसे राजसी वधू के उपयुक्त वस्त्र और आभूषणों से लाद दिया गया था। यद्यपि वस्त्र रेशमी थे, तथापि इतने अधिक थे कि पद्मिनी अपने को उनके नीचे दबा हुआ अनुभव कर रही थी। सभी आभूषण मणि-माणिक्यादि से जड़े होने के कारण पर्याप्त भारी थे।

अत: जब उसे भोज से वापस खैमे में लाया गया, तो उसने सुख की साँस ली और मालती से पूछने लगी—"क्या अब इस बोझ को उतार दूँ?"

मालती ने मुसकराकर कहा—"शयनागार में जाकर।"

इस पर मालती ने अर्थ-भरी दृष्टि से जयदमन की ओर देखा, तो उसने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया और पद्मिनी को अपना हाथ उस पर रखने के लिए कहने लगा।

पद्मिनी ने उसके भाव को समझ लिया और अपना हाथ उसके हाथ पर रख दिया। जयदमन उसे शयनागार की ओर ले गया।

पद्मिनी के लिए यह व्यवहार सर्वथा नवीन था। उसे इसका ज्ञान संस्कृत-साहित्य पढ़ने के कारण हुआ था, किन्तु उसका पति तो इसमें दक्ष था। वह उसे किसी अनजान शिशु की भाँति मार्ग दिखाता हुआ प्रणय-लीला में प्रवेश कराता प्रतीत हुआ। अन्तर्भावनाओं से प्रेरित पद्मिनी उसके साथ चलती हुई यह अनुभव कर रही थी। इस पर भी उसे कुछ अटपटा अथवा अरुचिकर प्रतीत नहीं हुआ।

पति ने आभूषण और वस्त्र उतारने को कहा, तो वह अपने को सुखी अनुभव करने लगी। उसे बोझ उतरता प्रतीत हुआ, किन्तु एक सीमा पर आकर वह रुक गयी। वह आज तक किसी के सामने विवस्त्र नहीं हुई थी।

पद्मिनी की माता का देहान्त उसके दो वर्ष की होते ही हो गया था। मोहिनी—घर की सेविका—ने ही उसका पालन-पोषण किया था, परन्तु वह भी उसे आज तक नग्न नहीं देख सकी थी। आज पति को उस अवस्था में करते देख वह सङ्कोच अनुभव कर रही थी। उसने उसे एक बार सङ्केत से मना भी किया, तो जयदमन ने उसे अपने अंग से लगाकर चूम लिया। यह तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कामनाओं को दियासलाई दिखाने के समान सिद्ध हुआ और तब वह भूल गयी कि वह किसके सामने है और तब उसके पति ने उसे पलंग पर लिटाकर मनमानी करना आरम्भ कर दिया।

मूक भाषा में रात-भर प्रेम-आलाप और मनोकामनाओं का खुला प्रदर्शन होता रहा। दोनों एक-दूसरे की भाषा नहीं समझते थे, किन्तु प्रेम-आलाप बहुत देर तक चलता रहा। जब पद्मिनी थककर चूर हो गयी, तो पति के भुजपाश में ही सो गयी।

स्वभाववश पद्मिनी बहुत सवेरे ही जाग गयी। यद्यपि अभी विश्राम पूर्ण नहीं हुआ था, तथापि पलंग उसे काटता हुआ अनुभव हुआ। वह उठी और पति को गहरी नींद में सोते देखकर और उसे वहीं छोड़कर अपने वस्त्र ढूंढ़ने लगी। फिर वह स्नानागार में गयी। जल भरा रखा था, उसने स्नान किया और उसके पश्चात् बाहर बैठक में आकर धरती पर बिछे कालीन पर पालथी लगाकर ध्यानावस्थित हुई, तो पिछले दिन का घटनाओं पर चिन्तन करने लगी।

अब उसे अपने गाँववालों और अपने पिता तथा मोहिनी की सुधि आयी। वह उन सबका सुख-समाचार प्राप्त करने की इच्छा करने लगी। उसे विस्मय हुआ कि उसका अभी तक उनकी ओर ध्यान क्यों नहीं गया? उसने जब से खैमे के बाहर अन्य अपहृत स्त्रियों के साथ पंक्ति में खड़े जयदमन को देखा था, उसी समय से वह एक प्रकार से विमोहित-सी हो गयी थी। अब जब ध्यानावस्थित होकर चिन्तन करने लगी, तो पिछले दिन की घटना किसी चित्रपट की भाँति उसकी आँखों के आगे आने लगी।

अब वह मालती की आवश्यकता अनुभव करने लगी थी। यही एक साधन था, जिसके द्वारा वह अपने गाँववालों और अपने पिता के घरवालों की जानकारी प्राप्त कर सकती थी।

मालती खैमे के दूसरे कक्ष में सो रही थी। वह अभी जागी नहीं थी। उसकी प्रतीक्षा में पद्मिनी पूजा के मन्त्र और शिवस्तोत्र पढ़ने लगी थी। वह ऊँचे स्वर में पाठ कर रही थी। उस खैमे में यह एक नयी बात थी। इससे मालती और जयदमन दोनों की नींद खुल गयी। दोनों बैठकघर में आये और पद्मिनी के सामने खड़े हो गये। पद्मिनी आँखें मूंदे सस्वर पाठ कर ही थी।

मालती ने अपने अधरों पर अंगुलि रखकर जयदमन को चुप रहने के लिए कहा और दोनों चौकियों पर बैठकर सुनने लगे। जयदमन कुछ न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझकर भी पद्मिनी की मधुर ध्वनि पर मुग्ध था। मालती को अपने बाल्यकाल में पुरोहितों के द्वारा किये गये पूजा-पाठ और मन्त्र-गान स्मरण आने लगे थे। पद्मिनी का मन्त्र-पाठ पण्डितों के पाठ से भी अधिक मधुर और रसमय था। पद्मिनी कितनी ही देर तक पाठ करती रही। पाठ समाप्त हुआ, तो उसने अपनी आँखें खोलीं और सामने पति और मालती को बैठा देखकर प्रसन्न होकर मुस्करायी और जयदमन को नमस्कार करने लगी। जयदमन तो पद्मिनी की मुस्कराहट पर मोहित हो उठा था। वह इतनी सुन्दर पत्नी प्राप्त करने पर बहुत प्रसन्न था।

पद्मिनी ने मालती की ओर देखकर उससे पूछ लिया—"माँ! स्नान कर लिया?"

"अभी बहुत सवेर है। सूरज निकलने पर स्नान करूँगी।"

"क्यों?"

"सर्दी लगती है।"

"सर्दी है क्या?"

मालती को उत्तर देने में परेशानी हो रही थी। अब पद्मिनी ने उससे अपने मन की बात कह दी। उसने कहा—" माँ! मैं अपने गाँव में अपने पिता का समाचार जानना चाहती हूँ।"

मालती ने गम्भीर होकर जयदमन से पद्मिनी का प्रश्न कह दिया। जयदमन ने इसका उत्तर दिया, तो मालती ने पद्मिनी को बताया—"आज शिविर में विवाह के उपलक्ष्य में अवकाश का दिन है। फिर वहाँ का समाचार भी वहाँ पुन: छापा मारकर ही पता किया जा सकता है।"

"अन्य कोई उपाय नहीं?" पद्मिनी ने पूछा।

मालती ने बताया—"एक उपाय है। उस गाँव पर वैसे ही अपना अधिकार कर लिया जाये, जैसे यहाँ किया हुआ है। यह क्षेत्र भी तो कच्छराज सिंहनाद के ही राज्य का एक भाग है।"

"परन्तु यह तो वीरान क्षेत्र है। भद्रकच्छ तो व्यापारिक केन्द्र है। वहाँ इस प्रकार अधिकार नहीं हो सकेगा।"

"तब तो तुम्हारे पिता का समाचार लाने के लिए वहाँ दूसरा छापा मारना होगा।"

मालती ने पद्मिनी को बताया—"जितने छापे डाले गये हैं, उन सब में भद्रकच्छ से ही सर्वाधिक धन और सुन्दर स्त्रियाँ प्राप्त हुई हैं। इसलिए छापा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डालना लाभप्रद ही होगा।"

"वहाँ विदेशों से व्यापार होता है, इसलिए गाँव बहुत समृद्ध है।"

जब व्यापार की बात मालती ने जयदमन को बतायी, तो उसने कहा—"तब तो उस स्थान पर अधिकार करना ही होगा।"

"परन्तु वहाँ अधिकार जमाने पर राजा से युद्ध हो जायेगा।" मालती ने पद्मिनी का विचार बता दिया। "साथ ही यदि युद्ध न भी हो, तो केवल अधिकार जमाने से ही लाभ नहीं होगा। विदेशी माल देश के भीतर व्यापारिक केन्द्रों पर पहुँचना चाहिये और वहाँ भी अधिकार करना होगा।"

"वही तो हम अपनी राजधानी में भी कर रहे हैं, वहाँ भी कर लेंगे।"

"परन्तु राजधानी का माल भीतर देश में तो नहीं जाता।"

"अपने देश में तो जाता है।"

"परन्तु भद्रकन्छ से तो भारत के सब प्रदेशों में जाता है।"

"इसके लिए भी यत्न कर लेंगे। जब कच्छ के पूर्ण क्षेत्र पर अधिकार हो गया, तो व्यापारिक सम्बन्ध भी हो जायेंगे।"

पद्मिनी ने अपनी इच्छा पुनः व्यक्त कर दी।

उसने कहा—"मैं तो अपने पिताजी का समाचार पाना चाहती हूँ। यहाँ से किसी व्यक्ति को चोरी-चोरी नहीं भेजा जा सकता?"

मालती द्वारा पद्मिनी की इच्छा जानकर जयदमन कच्छ पर अधिकार करने की योजना बनाने लगा था।

:4:

भद्रकच्छ में डाका डालने की घटना के उपरान्त हानि की गिनती होने लगी। मृत शवों की गिनती की गयी। गाँव के अधिक लोग मरे थे। उनकी संख्या पचास से ऊपर थी। गाँव के कुछ लोग भयभीत होकर भाग गये थे। उनके न शव मिले और न उनका कोई समाचार ही मिला। स्त्रियों की गणना की गयी, तो पता चला कि बीस युवतियाँ—जिनमें एक नवविवाहिता थी और शेष कुमारियाँ थीं—लापता थीं। लापता युवतियों में पद्मिनी भी थी।

मोहिनी पण्डित वीरभद्र के मकान पर घायल अवस्था में मिली। उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R 0 89.9143
GUR-J
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्मिनी के अपहरण की बात बता दी थी। मोहिनी ने बताया—"हम दोनों मकान की छत पर चढ़ गयी थीं, परन्तु छापामारों ने हमें मकान की छत पर से तीर चलाते देख लिया था। इसलिए दस-बारह छापामार मकान की ओर लपके। हमने कईयों को अपने तीरों से घायल कर दिया। इस पर भी वे मकान में घुस आये और पद्मिनी को पकड़कर ले गये।"

मोहिनी ने आगे बताया—"मैं पद्मिनी से लिपट गयी थी। एक छापामार ने हमें अलग करना चाहा। मैं पद्मिनी को छोड़ नहीं रही थी। इस पर उसने तलवार निकाल ली और मुझ पर चला दी। मेरी बाँह पर यह घाव आया, तो मेरी पकड़ छूट गयी। उसी समय छापामारों के लौटने की तुर्री बजी और वे मुझे छोड़कर पद्मिनी को अपने साथ ले गये।"

गाँववालों ने अपने और व्यापारियों के धरोहर में रखे चोरी गये माल को भी गणना की और उसका अनुमान तीन लाख स्वर्ण-मुद्राओं से अधिक लगाया गया।

Central Library
167992
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

इतनी बड़ी हानि होने पर पण्डित वीरभद्र ने स्वयं कच्छ की राजधानी पुरिका जाकर महाराज सिंहनाद को सूचना देने का विचार बनाया और वह उसी साँझ गाँव से चल दिये। उनके मन में अपनी लड़की को छुड़ाने की बात सर्वोपरि थी।

गाँववालों में अपने धन और जन की हानि पर शोक और उत्साहहीनता छा गयी थी। व्यापारियों का माल विदेश से आकर गाँव के गोदामों में रखा हुआ था। उसे किसी ने छुआ तक नहीं था। हाँ, विदेश से आये रत्न और स्वर्ण आदि लूट लिये गये थे।

अगले दिन गाँव के मुखिया गोपालकृष्ण महेश्वरी ने पण्डित वीरभद्र के मकान को ताला लगवा दिया और उसकी गाय के पालन-पोषण का प्रबन्ध गाँव के ही एक ब्राह्मण भृगुदत्त के घर कर दिया। गाँववालों के शवों का दाह-संस्कार किया गया और छापामारों के शवों को भूमि में गाड़कर दबा दिया गया।

अब गाँववालों की पञ्चायत हुई। उसमें गाँववालों की हानि की पूर्ति और भविष्य में धन-जन की रक्षा की समस्या पर विचार होने लगा। गाँव में प्रायः निम्न वर्णों के जैन मतावलम्बी ही अधिक थे। वे सब गाँव छोड़कर राजधानी में बसना चाहते थे। बहुत अल्प संख्या में ब्राह्मण और क्षत्रिय वर्ण के लोगों की गाँव में अपनी सेना बनाकर छापामारों का विरोध करने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योजना थी। सेना के पक्ष में बहुत कम मत था। इसलिए उसे छोड़ दिया गया।

बहुमत देश के राजा के पास जाना ही उचित मानता था। उस काम के लिए पण्डित वीरभद्र पहले ही राजधानी चले गये थे। इस पर सबको सन्तोष था, किन्तु यह भय भी था कि राजधानी से सहायता पहुँचने से पहले दूसरा डाका पड़ सकता है। इसलिए यही निश्चय किया गया कि जब तक राज्य से सहायता नहीं आती, तब तक गाँव के लोग अपने-अपने सम्बन्धियों के पास चले जायें, परन्तु इस योजना में कठिनाई यह थी कि बहुत कम गाँववालों के सम्बन्धी गाँव के बाहर थे।

इसके अतिरिक्त एक समस्या यह भी थी कि डाका पड़ने से जहाँ देश के व्यापारियों का आना कठिन हो गया था, वहीं विदेशी व्यापारियों द्वारा अपने पोत के आने से पूर्व अपने धन के प्रतिकार में माल माँगने पर—उन्हें धन लुट जाने के कारण वह भी नहीं दिया जा सकेगा—इसकी भी चिन्ता थी।

जब कुछ भी निर्णय न हो सका, तो वैश्य वर्ण के लोग भागने लगे। जिनके घरों में युवा लड़कियाँ और महिलाएँ थीं, वे भी एक-एक दो-दो कर जाने लगे। डाके को अभी एक सप्ताह भी नहीं हुआ था कि एक दिन लम्बे केशों वाली बहुत बड़ी सेना अपने अश्वों पर चढ़कर गाँव में आ पहुँची। गाँववालों का नैतिक पतन हो चुका था। अतः वे भाग खड़े हुए। इस प्रकार स्त्रियाँ और बच्चे सर्वाधिक घाटे में रहे। कुछ को भागते हुए पकड़ लिया गया। सारे गाँव में चीत्कार मच गया, किन्तु इस बार जयदमन की आज्ञा थी कि कोई भी छापामार गाँव में न जाये। किसी के भी धन और जन को हाथ न लगाया जाये, किन्तु भागनेवालों को पकड़कर राजा के सम्मुख उपस्थित किया जाये।

दो हज़ार से अधिक सैनिक गाँव से पूर्व की ओर नदी-किनारे एकत्रित होकर वहाँ शिविर-निर्माण करने में लग गये। उन्होंने भागनेवालों को रोकने के लिए गाँव में घेरा डाल दिया था। शिविर में दो सौ से ऊपर स्त्रियाँ और बच्चे लाये गये। सारे गाँव में भगदड़ मची हुई थी। कोई भी सैनिक गाँव में नहीं आया; किन्तु जो भी गाँववाला भागने का प्रयत्न करता, उसे पकड़कर शिविर में पहुँचा दिया जाता था।

शक-सैनिक दूसरे प्रहर वहाँ पहुँचे थे। घेरा डाले हुए आधा प्रहर व्यतीत हो गया। अब गाँव के लोग गाँव के मुखिया गोपालकृष्ण की दुकान के सामने एकत्रित होकर इस नवीन स्थिति पर विचार करने लगे। सब भयभीत थे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किन्तु इस बार किसी भी व्यक्ति को मारा-पीटा नहीं गया था।

कठिनाई यह थी कि कोई भी गाँववाला छापामारों की भाषा नहीं समझता था। एक-दो छापामारों से पूछताछ भी की गयी, किन्तु मतलब की बात का पता नहीं चल सका।

दिन का चौथा प्रहर आरम्भ हो चुका था। इस समय दो सैनिकों के साथ गाँव का एक वृद्ध व्यक्ति वहाँ आया और गाँव के मुखिया को बताने लगा—"पण्डित वीरभद्र की लड़की शिविर में है और उसने कहा है कि गाँव का राज्य बदल गया है और यहाँ का नया राजा जयदमन है। यदि गाँववाले उसे स्वीकार कर लेते हैं, तो किसी को किसी प्रकार की हानि नहीं होगी। अब यदि गाँववाले नये राजा को स्वीकार करतें हैं, तो गाँव का मुखिया उनसे मिल सकता है।"

"किससे मिले?" गोपालकृष्ण ने पूछा।

"पण्डित वीरभद्र की लड़की से। पता चला है कि वह इस नये राजा की रानी बन चुकी है।"

इस पर सब अवाक् उस वृद्ध का मुख देखते रह गये। उपस्थित लोगों में भृगुदत्त भी था। उसने कहा—"सेठजी! आप मुझे अपना प्रतिनिधि बनाकर भेज दें। मैं पण्डित वीरभद्र की लड़की से सारी बात जानकर लौट आऊँगा।"

गोपालकृष्ण ने सुख की साँस ली। उसने सबके सामने कहा—"पण्डित भृगुदत्त मेरे और सारे गाँव के प्रतिनिधि बनकर जायेंगे।"

भृगुदत्त उन सिपाहियों के साथ चल दिये, जो उस वृद्ध व्यक्ति को वहाँ लाये थे। वह पण्डित वीरभद्र के घर पर उनसे शास्त्र-चर्चा के लिए प्रायः आया-जाया करते थे और पद्मिनी को भली-भाँति जानते और पहचानते भी थे। इसलिए वह शकों की इस नयी योजना के विषय में जानना चाहते थे।

शक-सैनिकों ने भृगुदत्त को जयदमन के सामने उपस्थित किया, तो पद्मिनी उसके दक्षिण में बैठी थी। भृगुदत्त ने पद्मिनी को आशीर्वाद के रूप में कहा—"परमात्मा का धन्यवाद है कि तुम जीवित हो, किन्तु बहिन! तुम्हारा यह स्थान नहीं है।"

"कौन-सा स्थान?"

"इस म्लेच्छराज के साथ।"

"मैंने इसे वर लिया है। मेरा विधिवत् विवाह हो चुका है। इसी नाते मैं यहाँ बैठी हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"विधिवत् से तुम्हारा क्या तात्पर्य है?

"इनके पुरोहितों के द्वारा और पवित्र वेद-मन्त्र पढ़कर ही मैंने विवाह किया है।"

"पर पद्मिनी! मुझे किसलिए बुलाया है?"

"मैंने मुखिया को बुलाया था।"

"आज मैं ही मुखिया हूँ, गाँववालों ने मुझे ही भेजा है।"

"तब मैं गाँववालों को यह बताना चाहती हूँ कि शकराज श्री महाराज जयदमन ने इस गाँव और यहाँ तक कि समस्त क्षेत्र को अपने अधिकार में कर लिया है। अब कच्छराज महाराज सिंहनाद का राज्य यहाँ नहीं रहा। महाराज जयदमन की आज्ञा है कि जो भी प्रजा शान्तिपूर्वक इस राज्य में रहेगी, उसके धन-धान्य और जनों की रक्षा के लिए यत्न किया जायेगा।"

अब भृगुदत्त ने कहा—"परन्तु पद्मिनी बहिन! तुम्हारे पिता पण्डित वीरभद्र पुरिका गये हैं और हम आशा कर रहे हैं कि वहाँ से पचास सहस्त्र सेना इस शकराज को कच्छ-क्षेत्र से बाहर निकालने के लिए लेकर आयेंगे।"

पद्मिनी ने कहा—"जब सिंहनाद की सेना यहाँ आयेगी, तब जो विजयी होगा, वही राजा होगा। प्रजा विजयी राजा की आज्ञा का पालन करेगी। आज यहाँ शकराज का राज है। इसलिए गाँववालों को उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिये।"

"परन्तु शकराज ने छह दिन पूर्व ही हमें लूटा और मारा है और हमारे स्त्री-वर्ग पर भी अत्याचार किया है। हम अपने को उनकी प्रजा कैसे मान सकते हैं?"

"भैया! यह तब की बात है, जब वह यहाँ के राजा नहीं थे। अब वह यहाँ के राजा बन गये हैं। इसलिए वह यहाँ रहनेवालों को अपनी प्रजा मानते हैं। उस समय यहाँ के लोग उनकी प्रजा नहीं थे।

"इसके साथ ही हम जिस राजा की प्रजा थे, उसने हमारी रक्षा का प्रबन्ध नहीं किया था। जो प्रजा की रक्षा नहीं कर सकता, वह राजा कैसे हो सकता है? उसे राजा होने का अधिकार नहीं हो सकता। उसे तो कर प्राप्त करने का भी कोई अधिकार नहीं है। महाराजा सिंहनाद हमारा राजा नाममात्र को ही था।"

"और अब यह हमारी रक्षा करेगा?"

"यथासम्भव रक्षा करने का वचन दिया जाता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और हमारा जो धन लूटा गया था, क्या वह वापस मिल जायेगा?"

"वह तो सैनिकों में बँट गया है। उसका प्रतिकार धीरे-धीरे किश्तों में देने का वचन दिया जाता है।"

"और हमारे परस्पर के तथा राज्य कर्मचारियों के विवाद किस धर्मशास्त्र के द्वारा निबटाये जायेंगे?"

"मेरी इच्छा थी कि यदि पिताजी यहाँ होते, तो उनको न्यायाधीश नियुक्त कर दिया जाता और वह धर्मयुक्त न्याय-व्यवस्था स्थापित करते।"

"वह तो अब नहीं हैं।"

"यदि गाँववाले नियमानुसार व्यापार करना और नियम से कर देना आरम्भ कर दें, तो महाराज पण्डित भृगुदत्तजी को इस गाँव और सीमा से लेकर मधुमती नदी तक पूर्ण क्षेत्र का आयुक्त नियुक्त कर देंगे।"

"कब से?"

"जब से प्रजा शान्तिपूर्वक रहना आरम्भ कर देगी।"

"प्रजा तो अब शान्त है। केवल छह दिन पूर्व की घटना को याद कर भयभीत है। यदि सैनिक प्रजाजनों को विशेष रूप से उनके धन और जन का बलात् हरण नहीं करेंगे, तो प्रजा पूर्ण रूप से शान्त रहेगी।"

"तब आपको यहाँ का आयुक्त नियुक्त किया जाता है।"

"तो नियुक्ति-पत्र और दस सैनिक कार्य करने के लिए दे दिये जायें।"

"नियुक्ति-पत्र सायंकाल तक मिल जायेगा, किन्तु सैनिक आपको गाँव के क्षत्रिय वर्ग में से ही भरती करने होंगे।"

"ठीक है, तो मैं जाऊँ?"

"हाँ, कल किसी समय मिल लीजियेगा। शासन-प्रबन्ध की व्याख्या बता दीजियेगा।

:5:

यह प्रबन्ध एक लम्बे विचार-विनिमय के उपरान्त निश्चित हुआ था। इस वार्तालाप में पद्मिनी और जयदमन मुख्य पात्र थे और मालती द्विभाषिये का काम करती थी। वार्तालाप तो उसी दिन आरम्भ हो गया था, जिस दिन विवाह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
का उत्सव मनाया जा रहा था। पद्मिनी ने अपने पिता का सुख-समाचार पाने की इच्छा व्यक्त की थी। यह समाचार लाने के लिए मालती ने दो विकल्प प्रस्तुत किये थे। एक यह कि भद्रकच्छ पर पुनः आक्रमण किया जाये और दूसरा यह कि भद्रकच्छ को भी शक-राज्य में सम्मिलित कर लिया जाये। पद्मिनी को यह दूसरा विकल्प कम अनैतिक प्रतीत हुआ। इस विषय पर मध्याह्न भोजन के समय पुनः विचार हुआ। वार्तालाप पद्मिनी ने ही आरम्भ किया। उसने पूछा—"इस क्षेत्र में शक-राज्य की स्थापना से पूर्व कौन लोग रहते थे?"

जयदमन ने उत्तर दिया—"यहाँ जैन लोग रहते थे। उनसे इस क्षेत्र पर अधिकार प्राप्त करते समय कोई झगड़ा नहीं हुआ। हमारे सैनिक यहाँ पहुचे, तो उनके वृद्ध जन गले में कपड़े डालकर सैनिकों के सामने आ खड़े हुए और सन्धि करने की बात करने लगे। हमारे नायक श्रोवा ने उनसे एक लाख स्वर्ण मुद्राएँ और दस युवा लड़कियाँ माँग लीं। भाव-ताव हुआ और शर्तें तय हो गयीं। पचास सहस्र स्वर्ण मुद्राएँ और पन्द्रह लड़कियों पर सन्धि हो गयी। उसके उपरान्त हमने यहाँ अधिकार कर लिया। अब यहाँ के लोग हमारे पास अपना अनाज बेचते हैं और नारियल की गिरी तथा खजूर और फल राजधानी में भेजते हैं। प्रत्यक्ष रूप से ये लोग प्रसन्न एवं सन्तुष्ट दिखाई देते हैं।"

"तो ऐसा ही प्रबन्ध भद्रकच्छवालों से कर लिया जाये।"

"हम प्रतीक्षा कर रहे थे कि कच्छराज की ओर से हमारे इस छापे की प्रतिक्रिया होगी। हमने एक मास तक प्रतीक्षा करने के बाद ही भद्रकच्छ पर डाका डाला था।"

पद्मिनी ने कहा—"सम्भवतः यहाँ से कोई भी व्यक्ति आपके आक्रमण की सूचना लेकर नहीं गया।"

जयदमन ने कहा—"सूचना भेजना हमारा काम नहीं था। सुना है कि एक चौकीदार यहाँ रहता था और अब वह गाँव में रहता है।"

"परन्तु भद्रकच्छ तो इस गाँव से बड़ा और अत्यन्त समृद्ध गाँव है। वहाँ से सूचना पुरिका अवश्य गयी होगी। इसकी प्रतिक्रिया हो सकती है।"

"यही तो हम चाहते हैं। एक बार राज्य की सेना से युद्ध हो जाये और हम उनको परास्त कर दें, तो उसके उपरान्त हम एक सौ कोस राजधानी की ओर बढ़ सकेंगे और राजधानी पर अधिकार कर लेंगे।"

"युद्ध तो होगा, किन्तु जैसी स्थिति इस गाँव में है, उसमें युद्ध होने पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
शक लोग घाटे में रहेंगे।"

"क्यों ?"

"इस स्थान पर प्राकृतिक सुरक्षा के साधन नहीं हैं। प्राकृतिक सुरक्षा—जिससे आक्रमण करने वाले के मार्ग में बाधा उपस्थित हो सके—कोई नदी अथवा पहाड़ हो सकते हैं। यहाँ इन दोनों में से एक भी नहीं है।"

जयदमन इस समय पद्मिनी की बात सुन रहा था और यह समझ रहा था कि पत्नी बनते ही यह विदेशी और विजातीय लड़की उसे अपना समझने लगी है। इसीलिए वह अपने पति और उसके लोगों का हित-चिन्तन करने लगी है। इससे वह प्रसन्न था। उसने प्रेम-भरी दृष्टि से अपनी पत्नी की ओर देखकर कहा—"यदि हम भद्रकच्छ पर अधिकार कर लें, तो क्या हमें युद्ध में लाभ होगा ?"

"वहाँ गाँव के पूर्व में एक नदी है। वह बारहों महीने जल से भरी रहती है। सागर से दो कोस ऊपर तक नदी न केवल बहुत चौड़ी है, अपितु गहरी भी है। विदशों से आने वाले छोटे पोत तो नदी में आ जाते हैं और वहाँ से माल उतारते और लादते हैं, लेकिन बड़े पोत सागर में ही तट से कुछ दूर खड़े होते हैं और व्यापारियों को अपना मनपसन्द माल लादकर लाने के लिए वहीं जाना होता है। वह नदी एक सुदृढ़ दीवार की भाँति हमारी रक्षा कर सकती है।"

इस वार्तालाप से जयदमन को भद्रकच्छ पर अधिकार करने की प्रेरणा मिली। अगले ही दिन वह दो सहस्र सैनिकों के साथ भद्रकच्छ पर आक्रमण करने की योजना बनाने लगा। पद्मिनी को जब यह पता चला, तो वह युद्ध की सम्भावना को मिटाने के लिए राज्य के कर्तव्य और युद्ध के भयंकर प्रभाव पर अपने विचार व्यक्त करने लगी।

उसने कहा—"प्रजा और राजा में विरोध किसी के भी पक्ष में नहीं होता।"

"यदि वहाँ के लोग मेरे अधीन नहीं रहना चाहेंगे, तो विरोध होगा ही।"

"उनको आपके अधीन रहने पर लाभ का आभास होना चाहिये।"

"वह कैसे होगा ?"

"वहाँ पहुँचकर लूट-मार न की जाये। शान्ति से नदी-किनारे शिविर स्थापित कर लिया जाये और गाँववालों को उनके जान व माल की रक्षा का विश्वास दिलाया जाये।

इस पर जयदमन ने कहा—"परन्तु इस बार हमारी सेना को देखते ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाँववाले भाग खड़े होंगे।"

"इसका प्रबन्ध किया जा सकता है। वहाँ पहुचते ही गाँव को घेर लिया जाये। जो वहाँ से भागने का प्रयास करे, उसे पकड़कर बन्दी बना लिया जाये और उसे समझाया जाये कि उसके साथ प्रजा-जैसा व्यवहार किया जायेगा।"

इस प्रकार सारी योजना बन गयी और एक दिन दो सहस्र सैनिक भद्रकच्छ जा पहुँचे। सब कुछ योजनाबद्ध किया गया था। इस पर भी बड़ी संख्या में लोग भागने लगे। भागनेवालों में कुछ वृद्ध और बालक पकड़ लिये गये।

पद्मिनी के मस्तिष्क में अपने पिता से मिलने की उत्कट इच्छा थी। प्रथम बन्दी को पकड़कर लाया गया, तो उससे पूछा गया—"आपका क्या नाम है?"

उस व्यक्ति ने पण्डित वीरभद्र की लड़की पद्मिनी को पहचान लिया और देव-वाणी में अपना नाम नरसिंह बताकर कहा—"आप तो पण्डित वीरभद्र की लड़की हैं।"

"हाँ, मैं तुम्हें अपने पिता के नाम पत्र देकर पुनः गाँव में भेजना चाहती हूँ। यह पत्र उनको देकर उत्तर ले आओ।"

नरसिंह ने बताया—"पण्डित वीरभद्रजी तो डाका पड़ने वाले दिन ही राजधानी चले गये थे। वह कह रहे थे कि महाराज सिंहनाद से गाँव की सुरक्षा का प्रबन्ध कराकर ही लौटेंगे। उनका विचार था कि उनकी लड़की या तो मार डाली गयी होगी अथवा आत्महत्या कर मर चुकी होगी।"

पद्मिनी ने उस व्यक्ति से कहा—"बाबा! शकराज ने मुझसे विधिवत् विवाह कर लिया है और अब मैं महारानी के पद पर हूँ।"

"विश्वास नहीं आता।"

"आ जायेगा। अच्छा, अब आप गाँव में जाइये और पं० भृगुदत्त को बुला लाइये। उससे कहना कि गाँव की सुरक्षा के लिए उसे यहाँ आकर हमसे बात करनी चाहिये।"

तब नरसिंह को दो सैनिकों के संरक्षण में गाँव भेजा गया और पण्डित भृगुदत्त को बुलाया गया। वार्तालाप का सारांश जयदमन को बताया गया और भृगुदत्त को उस क्षेत्र का आयुक्त नियुक्त करने का जयदमन का हस्ताक्षरयुक्त नियुक्ति-पत्र उन्हें दे दिया गया। अब पद्मिनी ने अपने पिता के पुरिका सिंहनाद से क्षेत्र की रक्षा के लिए सेना लाने के लिए जाने की बात बतायी, तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जयदमन समझ गया कि युद्ध होगा। वह इस सम्भावना पर प्रसन्न था, अतः उसने तुरन्त अपनी राजधानी में सेना को पहुँचने के लिए सन्देश भेज दिया।

पद्मिनी ने पूछा—"कितनी सेना और बुला रहे हैं?"

जयदमन ने बताया—"पचास सहस्र। इसके साथ उनके परिवार व घोड़े आदि भी होंगे। सब मिलाकर एक लाख प्राणी तो होंगे ही।"

पद्मिनी ने पूछा—"उनके खाने-पीने का क्या प्रबन्ध होगा?"

"एक मास के लिए तो वे अपने साथ लायेंगे, उसके उपरान्त उनके लिए यहाँ प्रबन्ध करना होगा, अन्यथा वे आस-पड़ोस में डाके डालेंगे।"

"इसकी आवश्यकता नहीं होगी। हमें यहाँ के लोगों को सब प्रकार से सुखी रखना होगा। प्रत्येक वस्तु दाम देकर ही लेनी होगी।"

"इसके लिए धन कहाँ से आयेगा?"

"यदि यहाँ इस क्षेत्र के लोगों को सुरक्षा का विश्वास होगा, तो वे व्यापार आरम्भ कर सकेंगे। उस पर कर से आय होने लगेगी।"

"कितनी आय होगी?"

"उससे पूर्ण सेना का व्यय तो नहीं निकल सकेगा। सेना युद्ध के लिए बुलाई जा रही है। युद्ध का व्यय राज्य के एक क्षेत्र पर तो नहीं डाला जा सकता। इसका व्यय तो पूर्ण राज्य को वहन करना होगा।"

"किन्तु हम तो पहले से ऐसा नहीं करते आ रहे। हमने जिस देश पर भी अपना अधिकार जमाया है, सेना का पूर्ण व्यय उसी देश को देना होता है। यदि वह देश नहीं देता, तो लूट-पाट मचाकर सब प्राप्त कर लेते हैं।"

"परन्तु श्रीमान्! यह तो सोने का अण्डा देने वाली मुर्ग़ी को मारकर उसके पेट से सोना निकालने जैसी बात होगी।"

जब पद्मिनी ने सोने के अण्डे वाली बात जयदमन को समझायी, तो वह समझ गया कि उसकी पत्नी उससे कहीं दूर की बात सोचती है। पद्मिनी दिन-प्रतिदिन अपनी सूझ-बूझ के ढंग से पति पर अधिकाधिक प्रभाव डालती जा रही थी।

अगले दिन भृगुदत्त गाँव के बीस युवकों को अपने साथ लेकर आये और कहने लगे—"मैंने इनको अपना संरक्षक और कार्यकर्ता नियुक्त किया है।"

पद्मिनी ने कहा—"ठीक है। गाँव के और सम्पूर्ण क्षेत्र के रहनेवालों को इनके द्वारा यह विश्वास दिलाना चाहिये कि राज्य बदल गया है और सबके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जान और माल की रक्षा की जायेगी। अपने यहाँ धर्मशास्त्र के अनुसार प्रजा से न्याय किया जायेगा। यदि शक-सैनिकों के साथ प्रजा का किसी प्रकार का झगड़ा होगा, तो उसका निबटारा धर्मशास्त्र के अनुसार ही किया जायेगा। अत: प्रजाजनों को उनसे झगड़ा करने से बचना होगा। उनका धर्मशास्त्र हमारे धर्मशास्त्र से अधिक कठोर है।

"गाँव और क्षेत्र में व्यापार अतिशीघ्र आरम्भ हो जाना चाहिये। वैश्य समाज को यह विश्वास दिलाना चाहिये कि उनकी अर्थ-व्यवस्था में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया जायेगा। वह जितना और जैसा कर पहले देते थे, अब उससे कम ही देना होगा।"

भृगुदत्त से कहा गया कि आयुक्त होने के नाते न्यायकर्ता भी वही होंगे। यदि किसी को उनके न्याय पर सन्तोष नहीं होगा, तो उनके निर्णय पर महाराज पुनरावलोकन करेंगे।

इस प्रकार राज्य चलने लगा। भृगुदत्त प्राय: नित्य ही अपनी कठिनाइयाँ लेकर पद्मिनी द्वारा जयदमन के पास आते और पद्मिनी मालती के द्वारा जयदमन से सम्मति कर कठिनाइयों को सुलझाने का उपाय बता देती।

दिन व्यतीत होने लगे। कच्छ की राजधानी पुरिका से कोई समाचार नहीं आया। अब पद्मिनी ने स्थानीय लोगों से सीधा सम्पर्क बनाकर गुप्तचर के रूप में उन्हें पुरिका भेजा और उनके द्वारा वहाँ के समाचार मंगवाने का प्रबन्ध किया। उसने अपने पिता से सम्पर्क करने का प्रयास किया और गुप्तचर के द्वारा एक लम्बा पत्र भी उनके पास पुरिका भेजा।

:6:

भद्रकच्छ पर डाका पड़ने और वहाँ के हताहतों का प्रबन्ध हो जाने के उपरान्त पण्डित वीरभद्र को अपनी अपहृत लड़की की अवस्था पर विचार करने का अवकाश मिला। वह विचार कर रहे थे कि उसकी रक्षा और उसके साथ हुए अनिष्ट का प्रतिकार राज्य द्वारा ही हो सकता है और वह होना चाहिये।

भद्रकच्छ में राज्य ने कर प्राप्त करने के लिए कुछ कर्मचारी रखे हुए थे। कर जैसे ही एकत्र होता था, उसी समय सुभटों की सुरक्षा में राजधानी भेज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दिया जाता था। इस पर भी कोष का कुछ हिस्सा भद्रकच्छ में रहता था। जयदमन के सैनिकों ने राजकोष को लूट लिया था और राजा के अधिकारी इसकी सूचना देने राजधानी जा चुके थे। वीरभद्र और सारे गाँववाले जानते थे कि डाका पड़ते ही कर्मचारी और कोष की रक्षा करने वाले सैनिक कोष को अरक्षित छोड़कर भाग गये थे। एक भी व्यक्ति कोष की रक्षा करते हुए मारा नहीं गया था।

इस स्थिति में वीरभद्र ने स्वयं राजधानी जाने का प्रबन्ध किया था। वह मुखिया से एक अश्व लेकर पुरिका की ओर चल दिये। जाने से पूर्व उन्होंने गाँववालों को बताया था—"मुझे विश्वास है कि मेरी लड़की को या तो मार दिया गया है अथवा बलात्कार होने पर उसने आत्महत्या कर ली होगी। इसलिए उसके बचने का तो प्रश्न ही पैदा नहीं होता। मैं तो देश की रक्षा के लिए और इन बर्बर लोगों को देश से बाहर निकालने के लिए सेना लेने जा रहा हूँ।"

वीरभद्र दिन-रात यात्रा करते हुए पाँच दिन में राजधानी पहुँच गये। राजधानी की सम्पन्नता को देखकर वह चकित रह गये। चाँदी और सोने की राजमुद्राएँ बोरों में ऐसे रखी हुई थीं, मानो अनाज रखा हो। दुकानदार उन मुद्राओं को सोने के बदले तोलकर बेचते प्रतीत होते थे। रत्न मुक्ता आदि की भी दुकानें थीं। वस्त्र, आभूषणों एवं धन-धान्य आदि से दुकानें भरी हुई थीं और दुकानों पर ग्राहकों की भीड़ लगी थी।

स्त्रियाँ चटकीले वस्त्र पहने पुरुषों के समान हाट-वाटिकाओं पर जाती दिखाई देती थीं। सब अपने-अपने काम में व्यस्त थे। राज्य की सीमा पर किसी नागरिक के साथ अन्याय हो रहा हो, ऐसा किसी के हाव-भाव से दिखाई नहीं देता था। वीरभद्र ने पन्थागार में पहुँचकर अपना घोड़ा बांध दिया। अपने वस्त्र धोये, स्नान किया और भोजन कर राजप्रासाद की ओर चल दिये।

राजप्रासाद के द्वार पर द्वारपाल ने पूछा—"किससे मिलने आये हैं?"

"महामन्त्रीजी से।"

"वह यहाँ नहीं मिलेंगे, उसके लिए मन्त्रि-परिषद के भवन पर जाना होगा।"

वीरभद्र ने मन्त्रि-भवन का पता पूछा और वहाँ जा पहुँचे। वहाँ पहुँचकर उन्होंने महामन्त्री से मिलने की इच्छा व्यक्त की। द्वारपाल ने एक पाटी उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्मुख कर दी और कहा—"इस पर खड़िया से अपना नाम और पता लिख दो।"

वीरभद्र ने अपना नाम और गाँव का पता लिखकर डाके का वर्णन कर दिया और उसमें मारे गये व्यक्तियों की संख्या तथा अपहृत युवतियों की संख्या भी लिख दी। उसने एक पंक्ति में यह भी लिख दिया—इस स्थिति में मौखिक रूप से निवेदन करना चाहता हूँ।

पाटी भीतर जाते ही पण्डित वीरभद्र को महामन्त्री के समक्ष उपस्थित होने की आज्ञा मिल गयी। एक द्वारपाल उन्हें कार्यालय में ले गया और कई आगारों को लांघकर पण्डित वीरभद्र को एक वृद्ध व्यक्ति के सम्मुख उपस्थित किया गया।

पण्डित वीरभद्र ने आशीर्वाद देकर एक सौ कोस की यात्रा करने का अपना उद्देश्य बताया। उन्होंने कहा—"मन्त्री महोदय! हमारे गाँव से कर के रूप में राज्य को प्रतिवर्ष एक लाख स्वर्ण-मुद्राओं का लाभ होता है। अब यह लाभ गाँव में शान्ति-व्यवस्था होने पर ही हो सकेगा। शत्रु द्वारा राज्य की सीमा पार कर देश पर आक्रमण करने की अवस्था में वहाँ का व्यापार नष्ट हो जायेगा और वहाँ से कर प्राप्त करने की आशा नहीं रहेगी।

"श्रीमान! इसके अतिरिक्त यदि शत्रु को रोका न गया, तो वह राजधानी पर चढ़ आयेगा। मेरा आग्रह है कि शत्रु को मारकर सीमा से परे भगा दिया जाये।"

सब सुनकर महामन्त्री ने कहा—"हमें वहाँ से सूचना प्राप्त हुई है कि कर एकत्र करने वाले कर्मचारी दो दिन पहले यहाँ पहुँचे थे। इस विषय पर मन्त्रिमण्डल में चर्चा भी हुई है और इस छोटे-से क्षेत्र के लिए राज्य युद्ध की नीति को पसन्द नहीं करता। हमने शकराज के पास अपना दूत भेजा है और उसे राजधानी में आकर महाराजाधिराज से मैत्रीपूर्ण वार्तालाप के लिए आमन्त्रण दिया है। हम उस दूत के लौटने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

"श्रीमान्! दूत कब गया है? मुझे मार्ग में कोई दूत जाता हुआ नहीं मिला।"

"मैं अभी कार्यालय से पता करता हूँ। तुम हमारे पास कल आना।"

निराश पण्डित वीरभद्र पन्थागार में लौट आये। वह एक बहुत बड़ी सेना लेकर शक-सैनिकों को ध्वस्त करने का स्वप्न देखते हुए आये थे, किन्तु यहाँ तो उनकी सब आशाओं और आकांक्षाओं पर शीतल जल पड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया। वह अगले दिन पुनः महामन्त्री के कार्यालय के द्वार पर जा खड़े हुए। उस दिन उन्हें दो घड़ी प्रतीक्षा करनी पड़ी। महामन्त्री के आने पर वीरभद्र का नाम भीतर भेजा गया। इस पर भीतर से उत्तर आया कि आज महामन्त्री महोदय को अवकाश नहीं है और अगले दिन महामन्त्री को एक कार्य-विशेष से बाहर जाना है। इसलिए पण्डितजी को एक सप्ताह उपरान्त मिलने के लिए आना चाहिये। इसके साथ ही यह सन्देश भी आया कि पन्थागार के अध्यक्ष को आज्ञा दे दी गयी है कि पण्डितजी को राजकीय अतिथि मानकर उनकी सुख-सुविधा का प्रबन्ध किया जाये।

इस पर पण्डित वीरभद्र और भी निराश हुए, परन्तु सन्तोष की बात यह थी कि उन्हें राजकीय अतिथि मान लिया गया था। पन्थागार में पहुँचते ही उन्हें वहाँ के अध्यक्ष के व्यवहार में परिवर्तन दिखाई दिया।

वह अभी उस आगार में पहुँचे ही थे कि अध्यक्ष उपस्थित हुआ और झुककर पण्डित वीरभद्र को नमस्कार कर बोला—"आपके लिए ऊपर की मंज़िल पर एक आगार दिया गया है। वहाँ आपको सेवा के लिए एक सेवक मिलेगा और अब भोजन की व्यवस्था पन्थागार की ओर से होगी।"

अब वीरभद्र ऊपर की छत पर एक सुसज्जित आगार में पहुँच गये। वहाँ एक बड़े से आगार में दरी, कालीन, चौकियाँ और चादर, तकिये रखे मिले। सोने का आगार पृथक् था। स्नानागार का भी प्रबन्ध था।

पण्डित वीरभद्र को एक सेवक शङ्कर सेवा कार्य के लिए मिला था।

पण्डित वीरभद्र को ऊपर के आगार में आये अभी एक दिन भी व्यतीत नहीं हुआ था कि शङ्कर ने पण्डितजी के राजधानी में आने का प्रयोजन जान पूछ लिया।

वह प्रातः के अल्पाहार के समय उनसे पूछने लगा—"घर पर आपकी प्रतीक्षा हो रही होगी?"

वीरभद्र ने सेवक के मुख पर विस्मय से देखते हुए पूछा—"किस घर पर?"

"अपने घर पर, जहाँ से आप यहाँ आये हैं।"

पण्डित वीरभद्र ने अब भी सेवक के प्रश्न का अभिप्राय नहीं समझा और वह उससे कुछ कहने की प्रतीक्षा में उसका मुख देखते रहे। शङ्कर ने ही अपना अभिप्राय बताया। उसने कहा—"पण्डितजी! मेरा अभिप्राय घर पर माताजी तथा बच्चों से था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डित वीरभद्र ने उसकी बात समझकर पूछा—"किसलिए पूछ रहे हो?"

"इसलिए कि यदि कोई प्रतीक्षा करने वाला हो, तो उसे बहुत देर तक प्रतीक्षा करनी होगी। आप जो चाहते हैं, उसमें किसी की रुचि नहीं है। आपको महाराज सिंहनाद से मिलकर बात करनी चाहिये।

महामन्त्री जैन मतानुयायी है। यह अर्हत है। अपने धर्मावलम्बियों में इसकी बहुत प्रतिष्ठा है। इसकी पूजा होती है। इसलिए यह युद्ध-जैसे कर्म को स्वीकृति नहीं देता। पण्डितजी! आपको अपनी पत्नी और बच्चों को अधिक कष्ट न देते हुए शीघ्र लौट जाना चाहिये।"

शङ्कर को इस प्रकार कहते सुनकर पण्डितजी की पिछली दो दिन की निराशा फूट पड़ी। उन्होंने कहा—"तुम तो कोई जानकार व्यक्ति प्रतीत होते हो।"

"पण्डितजी! मुझे राजकीय अतिथियों की सेवा करते पन्द्रह वर्ष हो गये हैं और मैं यहाँ के राज-दरबार की सारी गतिविधि से भली-भाँति परिचित हूँ।"

"देखो शङ्कर! मेरे घर पर कोई नहीं है। एक मातृहीन युवा लड़की थी, उसका म्लेच्छों द्वारा अपहरण हो गया है। मुझे विश्वास है कि उसका अपमान किया गया होगा और उसने अब तक आत्महत्या कर ली होगी। मैंने उसे शरीर छोड़ने का सुगम ढंग बताया हुआ है। इसलिए मुझे घर जाने की चिन्ता नहीं है। मुझे मेरे देश और देशवासियों की चिन्ता है। उस चिन्ता का निवारण राज्य द्वारा ही हो सकता है, इसीलिए मैं यहाँ पड़ा हूँ।"

"तब ठीक है, किन्तु इस पर भी मेरी राय है कि आप महाराज से मिलें। एक विस्तृत पत्र महाराजाधिराज के नाम लिखें। मैं उस पत्र को उन तक पहुँचाने का यत्न करूँगा। मुझे आशा है कि वहाँ से आपको महामन्त्री की अपेक्षा अधिक लाभ होगा।"

अतः पण्डितजी ने राजपथ की एक दुकान से याचिका-योग्य पत्रक मोल लिया और एक लम्बा पत्र लिखा। उस पत्र में पड़ोसी म्लेच्छों का राज्य के एक विस्तृत क्षेत्र पर अधिकार और व्यापार-केन्द्र पर डाका डालने की बात लिखी। उन्होंने उस पत्र में गाँववालों के शौर्यपूर्ण विरोध का भी वर्णन किया।

उस पत्र को लेकर शङ्कर राजप्रासाद गया और दिन-भर की भाग-दौड़ के उपरान्त उस पत्र के उत्तर में महाराज से अगले दिन भेंट की स्वीकृति ले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आया।

पण्डितजी ने कहा—"शङ्कर! तुम तो बहुत काम के व्यक्ति हो।"

शङ्कर ने उत्तर दिया—"पण्डितजी! आप भी तो एक विशिष्ट कार्य के लिए यहाँ आये हैं। उसमें सहायता देने से मैं अपने को कृत-कार्य मान रहा हूँ। अभी मैं एक अन्य बात पर विचार कर रहा था।"

"क्या?"

"यह मैं आपको महाराजाधिराज से भेंट के उपरान्त बताऊँगा। अभी न यह सम्भव प्रतीत होती है और न अभी इससे कोई प्रयोजन ही सिद्ध होगा।"

पण्डित वीरभद्र चुप रहे, किन्तु शङ्कर के उस दिन के कार्य से वह उसे एक बुद्धिमान् और कुशल व्यक्ति समझने लगे। अतः वह उसके विषय में अधिक ज्ञान प्राप्त करने का यत्न करने लगे।

रात भोजन के समय उनका शङ्कर से खुलकर वार्तालाप हुआ। पण्डितजी ने उसे अपने सामने बैठाकर पूछा—"तुम जैन अथवा बौद्ध तो प्रतीत नहीं होते?"

"नहीं पण्डितजी! मैं जैन मतावलम्बी माँ का एक जैन अर्हत से उत्पन्न पुत्र हूँ। जब शकराज चष्टन इरावती के किनारे डाका डाल रहा था, उस समय मेरी माता भगवती कुमारी थी और उसी क्षेत्र में अपनी माता के घर रहती थी। एक बार वह शकों से भयभीत होकर भागी, तो एक अर्हत की सुरक्षा में चली गयी। वहाँ उसके गर्भ रह गया। अर्हत ने उससे विवाह तो नहीं किया, परन्तु एक आश्रम में प्रसव-काल के लिए उसके रहने का प्रबन्ध कर दिया। मेरा जन्म वहीं हुआ। मेरी माँ अभी जीवित है और वह इन अर्हतों की घोर शत्रु है। परिणाम यह हुआ कि मैं एक सेवक मात्र हूँ। वैसे मैं पढ़ा-लिखा हूँ। इस राज्य में जैनमतावलम्बी के लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त है, किन्तु मुझे उच्च कोटि का कोई काम नहीं मिल सका। वर्तमान महाराज सिंहनाद अभी तक अविवाहित हैं और प्रयत्न कर रहे हैं कि अपने पूर्वजों का महाक्षत्रप पद प्राप्त कर लें।

:7:

अगले दिन पण्डित वीरभद्र को कच्छाधिपति महाराज सिंहनादजी के दरबार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
में उपस्थित किया गया। पण्डित वीरभद्र ने जब महाराज को वेद-मन्त्र बोलकर आशीर्वाद दिया, तो सिंहनाद ने समझ लिया कि यह कोई शैव है।

उस समय भारत में प्राय: शैव मतावलम्बियों का प्राधान्य था। जैन और बौद्ध मत का अभी विस्तार हो रहा था। दोनों मतों के प्रवर्तकों का निधन हो चुका था और उनके शिष्य और पर-शिष्य दोनों मतों की रूपरेखा निर्माण कर रहे थे। प्रवर्तकों ने तत्कालीन जनता के आचरण के सुधार के लिए महान् प्रयत्न किये थे, परन्तु कोई भी आन्दोलन बिना वैचारिक आधार के ठहर नहीं सकता, अत: मतों के विद्वानों ने अपने गुरुओं के प्रचार के आधार पर ही विचार-निर्माण करना आरम्भ कर दिया था।

कच्छ और उससे संलग्न गुजरात एवं राजस्थान में जैन मत पनप रहा था। दूर पूर्व में मगध राज्यान्तर्गत बौद्ध मत अपनी रूपरेखा का निर्माण कर रहा था। दोनों ही मत अपने गुरुजनों के वचनों के आधार पर वैचारिक आधार का निर्माण करते जा रहे थे।

शैव मत की भी अनेक शाखाएँ व उपशाखाएँ बन चुकी थीं। इस मत का एक छोर वाम-मार्ग के नाम से प्रसिद्ध हो रहा था, तो दूसरा छोर शिव को वैदिक देवी-देवताओं में अधिष्ठित कर भागवत् मत के पीछे चल पड़ा था। इस पर भी सभी शैव मतावलम्बी, अपनी डोर वेद से जोड़े हुए थे। इनमें प्राय: मत-मतान्तर आचरण पर अधिक बल नहीं देते थे। केवल पूजा-पद्धति पर ही बल था। इस कारण सांसारिक व्यवहार में आचरण ढीला होता जा रहा था। इस ढीलेपन की ही प्रतिक्रिया महाप्रभु महावीर और महात्मा शाक्य मुनि गौतम के आन्दोलन थे। दोनों मतों की धुरी 'अहिंसा परमो धर्म:' था।

जब मत परिस्थितियों में सीमित हो जाते हैं, तो परिधि से बाहरवालों के साथ भेद-भाव आरम्भ हो जाता है। तब बाहर और भीतरवालों में द्वेष का श्रीगणेश हो जाता है। वृत्त के बाहरवाले भी अपनी सुरक्षा के लिए सीमा-बन्दी करने लगते हैं और इस प्रकार वे अपने-अपने वृत्त बनाने लगते हैं। प्रत्येक वृत्तवाले अपने-अपने घेरे की सीमा निश्चित करने में संलग्न हो जाते हैं।

इस प्रकार जैन समाज और शैव मतावलम्बियों के प्रशान्त प्रवाहों में छोटे-मोटे अनेक भंवर समाज को भयावह रूप देने लगे थे।

ऐसी स्थिति में देश और जाति पर शक-संकट आ पहुँचा था। जब पण्डित वीरभद्र आशीर्वाद दे चुके, तो सिंहनाद ने कहा—"पण्डितजी! आपकी याचिका मिली है। आपने पश्चिम क्षेत्र में बह रही आंधी की ओर संकेत किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है और यह लिखा है कि इस आंधी का विस्तार पूर्व की ओर बढ़ रहा है। आपने इस आंधी की भयंकरता का भी दिग्दर्शन कराया है। मन्त्रिमण्डल को भी इस आ रहे बवण्डर के आकार और विस्तार का ज्ञान है, किन्तु मन्त्रिण्डल का सामूहिक मत है कि इस बवण्डर के सम्मुख कोमल घास की भाँति झुक जाना चाहिये। समय आने पर इस आंधी का बल ढीला पड़ जायेगा और इसके शान्त होने पर घास पुनः अपना सिर ऊँचा कर लहलहाने लगेगा। हम नहीं चाहते कि इस देश का जनसमूह शुष्क वृक्षों की भाँति अकड़कर इस आंधी का विरोध करे और आंधी का बल समाप्त होने से पूर्व बड़े-बड़े वृक्षों की भाँति टूटकर जड़ों से पृथक् हो मृतप्राय हो जाये।"

"तो हम विनष्ट हो जायें?"

"नहीं पण्डितजी! हमारा आशय यह नहीं है। हम यह कहना चाहते हैं कि कोमल घास बन जाओ और इस आंधी को अपने सिर पर से निकल जाने दो।"

"महाराजाधिराज! इससे हम विनष्ट हो जायेंगे। विरोधियों के पाँव तले कुचले जाकर सूख-सड़ जायेंगे। महाराज! इसके साथ ही हमारे गाँव से राज्य को लाखों रुपयों की प्रतिवर्ष कर की जो आय होती है, राज्य उससे भी वञ्चित हो जायेगा।"

"हाँ, यह बात भी तुम्हारी याचिका में लिखी है। हमारे मन्त्रिमण्डल ने इस पर पहले भी विचार किया है और इसके विषय में हम एक प्रतिनिधिमण्डल इस नये शकराज से बातचीत करने के लिए भेज रहे हैं। यदि आप चाहें, तो आपको भी हमारे पाँच सदस्यों के प्रतिनिधिमण्डल में एक स्थान मिल सकता है। इससे प्रतिनिधिमण्डल को एक लाभ होगा। उस क्षेत्र के जानकार व्यक्ति की सम्मति मण्डल को उपलब्ध हो जायेगी।"

"महाराज! मुझे अपने राज्य और राष्ट्र की सेवा करने में भला क्या आपत्ति हो सकती है? मैं तो सदा महाराज की छत्रछाया में रहते हुए अपने कल्याण की इच्छा करता हूँ।"

"तब ठीक है। आप अभी पन्थागार में ही रहें। हम अपने प्रतिनिधिमण्डल की सेवा के लिए एक-दो सिपाहियों की खोज में हैं, ताकि प्रतिनिधिमण्डल का शकराज से वार्तालाप हो सके। यदि पन्थागार में ठहरे हुए कोई कष्ट अथवा असुविधा हो, तो अपने सेवक शङ्कर के द्वारा हमें सूचित करना। हम यथाशक्ति उसका निवारण करने का यत्न करेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर द्वारपाल ने वीरभद्र के निकट आकर कहा—"महाराज! चलिये।"

पण्डित वीरभद्र ने पुनः आशीर्वादसूचक कुछ पद कहे और नमस्कार कर राजभवन के बाहर निकल आये।

राजभवन के बाहर द्वार पर शङ्कर खड़ा था। वह पण्डितजी को एक रथ में बिठाकर वहाँ लाया था और अभी तक उसी रथ के समीप खड़ा था। पण्डितजी को राजप्रासाद से निकलते देख वह उनके निकट आकर उनसे प्रतीक्षा में खड़े रथ की ओर चलने के लिए कहने लगा।

शङ्कर ने राज-दरबार में हुई बात को मार्ग में नहीं पूछा। पन्थागार में पहुँचकर आगार में पण्डितजी को बिठाकर शङ्कर ने पहला प्रश्न किया—"क्या हुआ?"

"महाराज का विचार है कि आंधी के सम्मुख नरम घास के समान झुक जाना चाहिये। समय आने पर आंधी का बल कम होगा, तो घास पुनः लहलहाने लगेगा।"

शङ्कर हंस दिया। उसने पूछा—"अब आप क्या करना चाहते हैं?"

"मुझे आज्ञा है कि मैं उसी पन्थागार में ठहरूँ। मुझे भी उस प्रतिनिधिमण्डल में सम्मिलित किया जायेगा, जो शकराज जयदमन से बातचीत करने जा रहा है।"

"क्या बातचीत करने जा रहा है?"

"यह कि उस क्षेत्र की आय में से राज्य का भाग राज्य को दे दें और कर एकत्रित करने वाले का भाग वह स्वयं ले लें।"

"यह तो वह कर ही रहा है। अन्तर यह होगा कि राज्य का भाग वह अपने राज्य को दे देगा, जिसकी राजधानी खरीच है। उसकी दृष्टि में न राज्य कच्छ है, न राजधानी पुरिका है। शेष कर एकत्रित करनेवालों को तो वह पहले ही देता है। वे तो उसके सैनिक हैं, जो अपना भाग स्वयं ही निकाल लेते हैं।"

पण्डित वीरभद्र शंकर के कथन पर परेशानी अनुभव कर रहे थे। वह टुकुर-टुकुर सेवक का मुख देखते रह गये। उन्हें चिन्तित देखकर शङ्कर ने कहा—"पण्डितजी! मैंने एक अन्य राज्याधिकारी से आपकी भेंट का प्रबन्ध किया है।"

"वह कौन है?"

"जब मैं राजभवन के बाहर रथ के पास खड़ा आपकी प्रतीक्षा कर रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
था, तो एक अधिकारी मुझसे आपके विषय में पूछताछ करने लगा था। जब मैंने राजप्रासाद में महाराजाधिराज से आपकी भेंट की बात बतायी, तो उसने कहा कि आप जल मथ रहे हैं। जल के स्थान पर दूध मथने की अभिलाषा हो, तो आप उस अधिकारी से दुर्ग के पार्श्व में स्थित शिव-मन्दिर में दो घड़ी रात हो जाने पर मिलें। मैंने उस अधिकारी को बता दिया है कि उन महानुभाव से आपकी भेंट करा दूँगा।"

"परन्तु वह कौन है?"

"उसने अपना नाम और पद बताने से मना कर दिया है, किन्तु मैं उसे जानता हूँ। वह इस राज्य में एक शक्तिशाली व्यक्ति है।"

पण्डित वीरभद्र शङ्कर का मुख देखने लगे। शङ्कर ने कहा—"पण्डितजी! नाम और पद जानने में क्या लाभ है? आप उससे मिलने चलें, आप स्वयं समझ जायेंगे। मेरा विचार है कि मिल लेने और उसकी बात सुन लेने में कोई हानि नहीं है।"

"मैं स्वयं अनुमान लगाने का प्रयत्न कर रहा हूँ कि वह कौन हो सकता है। कोई राजद्रोही न हो।"

"पण्डितजी! यदि आप मेरा विश्वास करें, तो मैं कहता हूँ कि भय की कोई बात नहीं है। उसका शिव-मन्दिर में मिलने का स्थान नियत करना एक बात का सूचक है और यह उसके विषय में मेरे अनुमान का समर्थन करना है।"

पण्डित वीरभद्र चुप रहे। उन्हें चुप देखकर शङ्कर ने कहा—"पण्डितजी! वहाँ जाने के लिए पन्थागार से रथ लेना ठीक नहीं होगा। हम यहाँ से राजपथ पर चले जायेंगे और वहाँ से सार्वजनिक भाड़े पर चलने वाले किसी रथ को भाड़े पर कर लेंगे।"

"ठीक है शङ्कर भाई। तब तो चलेंगे।" पण्डितजी दीर्घ निःश्वास छोड़कर अपने आगार में लगे पलंग पर लेट कर विचारमग्न हो गये।

पण्डितजी विचार कर रहे थे कि कोमल घास बनने में क्या गुण अथवा क्या अवगुण हो सकता है। वह अपने बारे में विचार कर रहे थे कि क्या वह किसी शुष्क वृक्ष का अभिनय करने आये हैं? उन्हें महाराज सिंहनाद की उक्ति पसन्द नहीं आयी थी। वह अपने को कोमल घास ही नहीं समझते थे। कच्छ-राज्य पर बिछे कोमल घास के कालीन में वह स्वयं को एक काँटा समझ रहे थे। भद्रकच्छ पर आक्रमण के समय उन्होंने काँटे का ही काम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया था। उन्होंने बीस शकों में से दस की हत्या की थी। वह घास का कार्य नहीं था। क्या उसे घास में पड़े काँटे का कार्य कहा जा सकता है?

जब वह विचार कर रहे थे कि वह किस प्रयोजन से एक सौ कोस की यात्रा कर वहाँ आये हैं, तो उन्हें अपने उद्देश्य की विफलता ही समझ आ रही थी। वह शकराज के मार्ग पर मख़मल बनकर बिछने नहीं आये थे। इस पर भी शङ्कर ने उनके मन में आशा की एक किरण प्रज्वलित कर दी थी।

सूर्यास्त से एक घड़ी पूर्व शङ्कर पण्डितजी के सामने आ खड़ा हुआ और बोला—"पण्डितजी! मेरे विचार से चलना चाहिये।"

"हाँ।"

दोनों पन्थागार से बाहर निकल गये। द्वार पर चौकीदार ने पूछा—"पण्डितजी किधर जा रहे हैं?"

शङ्कर ने उत्तर दिया—"पण्डितजी को नगर दिखाने ले जा रहा हूँ।"

"बिना रथ के?"

"हाँ, पण्डितजी थोड़ा पैदल चलना चाहते हैं।"

दोनों पन्थागार से बाहर निकल गये। चौराहे पर खड़े रथों में से उन्होंने एक रथ भाड़े पर किया और नियत स्थान पर पर जा पहुँचे। शिव-मन्दिर में जाने से पूर्व शङ्कर पण्डित वीरभद्र को एक अंधेरे कोने में खड़ा कर स्वयं मन्दिर में पता करने चला गया कि समय व स्थान निश्चित करने वाला व्यक्ति आया है अथवा नहीं।

शिव-मूर्ति के सम्मुख एक व्यक्ति पूजा के कौशेय वस्त्र पहने बैठा था। शङ्कर ने उसे पहचान लिया कि वही व्यक्ति है, जिसके बुलाने पर वह पण्डितजी को लेकर आया है। यह निश्चय कर वह उस व्यक्ति की बग़ल में कुछ पीछे हटकर स्वयं पूजा के भाव में आसीन हो गया। शङ्कर के बैठते ही उस व्यक्ति ने बहुत धीरे-से पूछा— "पण्डितजी आये हैं?"

"हाँ।"

"कहाँ हैं?"

"बाहर अन्धकार में खड़े हैं।"

"तो चलो, वहीं बात होगी। यहाँ प्रकाश में नहीं।"

शङ्कर उठ खड़ा हुआ। वह व्यक्ति भी उठा और अपने ऊर्ध्व अंगों पर लपेटी चादर को समेटते हुए शङ्कर के साथ मन्दिर से बाहर चल दिया। मार्ग में उसने शङ्कर से पूछा—"मेरा परिचय दिया है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अभी नहीं।"

"तब ठीक है। मैं अपना परिचय समय आने पर स्वयं दूंगा।"

दोनों वहाँ आ गये, जहाँ पण्डितजी खड़े थे। दो साये उनके सामने खड़े थे। अन्धकार में कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। शङ्कर के साथ आये व्यक्ति ने कहा—"पण्डितजी! आपकी महाराज को दी याचिका मैंने पढ़ी है। महाराज ने हम सबको पढ़ने के लिए दिखाई थी।"

इतना कहकर वह एक क्षण रुक कर बोला—"आप प्रतिनिधिमण्डल के साथ शकराज से मिलने जा रहे हैं?"

"मैंने स्वीकार तो नहीं किया। इस पर भी वह कार्य अरुचिकर नहीं है।"

"आप जाइये। हमारे कुछ गुप्त कार्य करने वाले लोग भी वहाँ जा रहे हैं। वे शकों को वहाँ से भगा देने के लिए वहाँ पहुँचेंगे। वे अपने कार्य में प्रतिनिधिमण्डल से अधिक सफल हो सकते हैं। उनको किसी स्थानीय व्यक्ति की सहायता की आवश्यकता होगी और जैसा आपने अपनी याचिका में लिखा है कि आपने शकों के डाका डालने का सशस्त्र विरोध किया था, वैसी ही सहायता की मेरे आदमी आपसे आशा भी करते हैं।"

इसमें कुछ भी उत्तर देने को नहीं था। वह व्यक्ति एक क्षण रुककर बोला—"मैं आपसे अभी कुछ भी नहीं कह सकता। यह शङ्कर भी अभी आपको मेरा परिचय नहीं देगा। मेरा परिचय आपको भद्रकच्छ में जाकर मेरे लोग ही देंगे।"

"अच्छा, अब मैं चलता हूँ। नमस्कार।" इतना कहकर वह व्यक्ति अन्धकार में विलीन हो गया।

पण्डित वीरभद्र ने जब अनुभव किया कि वह व्यक्ति सामने से हट गया है, तो उन्होंने कहा—"शङ्कर!"

शङ्कर ने पण्डितजी की बाँह छूकर उत्तर दिया—"मेरे साथ-साथ चले आइये।"

पण्डित वीरभद्र इस भेंट का अर्थ समझने में लीन चुपचाप शङ्कर के साथ चल दिये। मन्दिर से कुछ दूर रथ खड़ा था, दोनों वहाँ पहुँचे और रथ पर सवार हो नगर की ओर चल दिये। मार्ग में भी सारथी के कारण किसी प्रकार का वार्तालाप नहीं हुआ। शङ्कर ने केवल यह बताया—"पण्डितजी! यह इस नगर का बहुत प्राचीन मन्दिर है। किसी समय इसकी बहुत प्रतिष्ठा रही है। आज भी अनेक निष्ठावान् शैव इस मन्दिर में मूर्ति पर जल चढ़ाकर पुण्य-लाभ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते हैं।"

पण्डित वीरभद्र समझ गये थे कि शङ्कर सारथी को भ्रम में डालने के लिए ही यह सब कह रहा है। वह बिना उत्तर दिये उसके कथन को सुनते रहे। वे रथ से पन्थागार नहीं गये, अपितु नगर के चौराहे पर ही उतरकर पन्थागार में पहुँच गये।

आगार में पहुँचकर दीपक जलाया गया और दोनों बैठ गये। तभी ग्रन्थागार का अध्यक्ष भोजन तैयार हो जाने की सूचना देने आया और वे दोनों भोजनशाला में चले गये।

शङ्कर के जाने का समय हो गया। उसने कहा—"पण्डितजी! अब प्रात:काल सेवा में उपस्थित हो जाऊँगा। माँ चिन्ता कर रही होगी।"

:8:

शङ्कर ने शिव-मन्दिर में मिलने वाले व्यक्ति का परिचय नहीं दिया। पण्डितजी के पूछने पर उसने केवल यह बताया—"उसने आपसे जो कुछ कहा है, वह मैंने भी सुना है। आपके लिए करने को अभी कुछ भी नहीं है। आपको जो भी करना होगा, वह भद्रकच्छ में पहुँचकर ही करने को कहा गया है। उसे सुनकर आप निश्चय कर लीजियेगा कि आपको इनकी योजना में सहयोग करना है अथवा नहीं।

"मेरी राय में तो अभी आप इस भेंट को अपने मस्तिष्क से निकाल दीजिये।"

पण्डितजी ने कहा—"परन्तु शङ्कर! ऐसा प्रतीत होता है कि यह व्यक्ति कोई राजद्रोही है।"

शङ्कर कुछ देर तक परेशानी से पण्डितजी को देखता रहा। फिर कुछ विचार कर उसने कहा—"पण्डितजी! मैं आपकी तुलना में आयु, ज्ञान और अनुभव में बहुत छोटा हूँ, पर यह निवेदन कर सकता हूँ कि यह व्यक्ति राजद्रोही हो सकता है, किन्तु राष्ट्रद्रोही नहीं है। राज्य तो राष्ट्र का एक छोटा-सा अंग है। अत: पूर्ण के अनुकूल होने के कारण इसे अंग का विरोधी नहीं कहा जा सकता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस तथ्यसङ्गत बात को सुनकर पण्डित वीरभद्र खिलखिला उठे। उनके मन में प्रकाश हो गया। वह समझ गये कि राज्य गौण है और राष्ट्र मुख्य है। उन्होंने पूछ लिया—"किन्तु राष्ट्र है कहाँ?"

"महाराज! खोजिये। इतनी बृहत् वस्तु को पा लेना आप-जैसे सूक्ष्मदर्शियों के लिए कठिन नहीं है।"

पण्डितजी को पुरिका में पहुँचे बीस दिन हो चुके थे। उन्हें पन्थागार में ठहरे हुए किसी प्रकार का कष्ट नहीं था। इस पर भी दिन व्यतीत होने पर चित्त में चञ्चलता अनुभव हो रही थी। वह भद्रकच्छ और उसके सम्पूर्ण क्षेत्र की भयावह स्थिति पर चिन्तित थे। उनका अनुमान था कि यदि शकों ने पुनः वहाँ डाका डाला, तो पूरा गाँव वहाँ से भाग खड़ा होगा और जनशून्य होने से सर्वथा नष्ट हो जायेगा।

दिन व्यतीत होने के साथ शङ्कर पण्डितजी के मुख पर चिन्ता के लक्षण देख रहा था, परन्तु शिव-मन्दिर की भेंट के उपरान्त न तो पण्डितजी ने उससे शकों के विषय पर बात की और न ही शङ्कर ने पुनः साहस किया कि राजद्रोह और राष्ट्रद्रोह में भेद पर बात करे। वह समझ नहीं सका कि पण्डितजी राजद्रोह और राष्ट्रद्रोह का भेद समझ सके अथवा नहीं।

एक दिन मध्याह्न भोजन के उपरान्त पण्डित वीरभद्र विश्राम की तैयारी कर रहे थे कि पन्थागार का चौकीदार एक व्यक्ति को लेकर आगार के बाहर आया। उसके आवाज़ देने पर शङ्कर बाहर आया और चौकीदार के साथ आये व्यक्ति को लेकर भीतर आ गया। पण्डितजी ने उसे पहचान लिया। वह भद्रकच्छ का रहने वाला एक नागरिक नरसिंह था। वह जन्म से क्षत्रिय कुलोत्पन्न, परन्तु व्यवसाय से वैश्य था।

पण्डितजी ने नरसिंह का अभिवादन किया और पूछा—"नरसिंह! यहाँ क्या कर रहे हो?"

"पण्डितजी! पिछले तीन दिनों से आपकी ही खोज कर रहा हूँ। मुझे किसी ने आपके नाम एक पत्र देकर भेजा है।" इतना कहते-कहते नरसिंह ने शङ्कर की ओर देखा। नरसिंह का अभिप्राय था कि वह पत्र शङ्कर की उपस्थिति में दे अथवा नहीं।

शङ्कर उस व्यक्ति के इस प्रकार उसकी ओर देखने पर समझ गया कि वह पण्डितजी से पृथक् में बात करना चाहता है। वह उठकर आगार से बाहर जाने लगा। पण्डितजी उसके मन में किसी बात का सन्देह उत्पन्न नहीं होने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देना चाहते थे। इस कारण उन्होंने शङ्कर से कहा—"बैठो शङ्कर! यह बेचारा तुम्हारे विषय में नहीं जानता। यह अपने गाँव का एक कृषक है।"

शङ्कर ने कहा—"मैं तो पहले ही आपके विश्राम के समय जाने वाला था। अब मैं तीसरे प्रहर के उपरान्त ही आऊँगा।"

इतना कहकर शङ्कर वहाँ से चल दिया। पण्डितजी को शङ्कर के जाने से प्रसन्नता तो हुई, परन्तु भय भी लग गया। वह समझते थे कि परस्पर मतभेद होने पर शङ्कर राज्य-अधिकारियों के समक्ष उनकी चुग़ली भी खा सकता है।

शङ्कर के जाने पर नरसिंह ने अपने उत्तरीय के नीचे से एक पत्र निकालकर पण्डितजी के सामने रख दिया। पत्र में पद्मिनी ने शकराज से अपने विवाह का वृत्तान्त लिखकर पत्र के साथ मुख्य विषय पर इस प्रकार लिखा था—"मैं यह सब अपने पति के ज्ञान में लिख रही हूँ। वह इस समय पचास सहस्र सैनिकों को साथ लेकर मधुमति को पार कर पुरिका की ओर प्रस्थान करना चाहते हैं। कच्छराज क्या करेंगे, मैं नहीं जानती और न मैं यह जानती हूँ कि आप जिस प्रयोजन से पुरिका गये हैं, उसका क्या हुआ। इस कारण मैं यह पत्र आपको भेज रही हूँ।

"यदि आपका सम्पर्क पुरिका के अधिकारियों से अथवा कच्छराज से हो गया हो, तो युद्ध-मार्ग एवं पुरिका पर आक्रमण का विकल्प ढूंढ़ने का यत्न कीजिये।

"जो कुछ मैंने पिछले दस-बारह दिनों में यहाँ देखा है, उससे मैं यह समझी हूँ कि कच्छ के सैनिक शक-सैनिकों से बहुत घटिया हैं। यहाँ शिविर में नित्य प्रातः तीन घण्टे सैनिक युद्ध में लड़ने का अभ्यास करते हैं। इनके पास अनेक प्रकार के और आकर्षक शस्त्रास्त्र हैं। कुछ शस्त्र तो ऐसे हैं जिन्हें बीसियों सैनिक इकट्ठे मिलकर प्रयोग करते हैं और वे उनकी सहायता से दो-तीन सौ सैनिकों को रोंदते हुए चले जाते हैं।

"ये लोग भाषा के विचार से म्लेच्छ हैं, परन्तु युद्ध-कला में कच्छ-सैनिकों से उन्नत ही प्रतीत हुए हैं। यह इस कारण भी हो सकता है कि मैंने कच्छ-सेना के कभी दर्शन नहीं किये। हमारे गाँव में तो चौकीदार ही सैनिक है और वह एक शक के बल में, शस्त्रास्त्र में, और रूप-राशि में बहुत ही घटिया है।

"यदि आपका उद्देश्य पूर्ण नहीं हो रहा हो, तो आप लौट आइये। आपका उद्देश्य यहाँ पूर्ण हो सकता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्र के नीचे पद्मिनी के हस्ताक्षर थे।

पत्र पढ़कर पण्डितजी पीत-मुख नरसिंह का मुख देखते रह गये। यह न जानते हुए कि पत्र में क्या लिखा है, नरसिंह गाँव की अवस्था का वर्णन करने लगा।

उसने बताया—"पण्डितजी! आपके गाँव से चले आने के उपरान्त गाँव की पञ्चायत की बैठक नित्य होती थी। आपके यहाँ आने के प्रयोजन की सिद्धि पर प्राय: सब संशय करते थे और समझते थे कि शक-सैनिक इतना धन-दौलत लूटकर ले गये हैं कि वह पुन: गाँव को लूटने के लिए आयेंगे। इससे भयभीत होकर सभी धनी-मानी लोग अपने परिवारवालों को लेकर गाँव छोड़कर पूर्व की ओर भागने लगे थे।

"प्रथम आक्रमण के एक सप्ताह उपरान्त पहले से बहुत अधिक संख्या में शक लोग गाँव की ओर आते दिखाई दिये, तो गाँव के बहुत से अन्य लोग भी भाग खड़े हुए। मैं भी अपने बाल-बच्चों के साथ भागा, परन्तु शक-सैनिकों द्वारा पकड़ लिया गया। वे मुझे पकड़कर नदी के किनारे सैनिक-शिविर में ले गये और हम सबको बैठा दिया गया। लगभग एक प्रहर के उपरान्त मुझे, मेरे साथ पकड़े गये मेरे बच्चों और अन्य स्त्री-पुरुषों को शकराज के सम्मुख उपस्थित किया गया। वह एक उच्च आसन पर राजा बना बैठा था। वह अभी छोटी आयु का एक सुन्दर कुमार ही प्रतीत हुआ। उसके अभी मूँछ-दाढ़ी फूटी नहीं थी। मूँछों की रेखाएँ ही दिखाई दे रही थीं।

"शकराज के समीप कुछ नीचे एक आसन पर आपकी लड़की बहिन पद्मिनी बैठी थी। उसके समीप एक अन्य प्रौढ़ावस्था की स्त्री थी। उसे शकराज की माता कहा जाता था। महाराज के पीछे पाँच सैनिक नग्न खड्ग लिये हुए खड़े थे।

"हमारे सामने आते ही बहिन पद्मिनी ने सबका नाम पूछा। तदनन्तर हमारे बन्दी बना लिये जाने पर हमसे सहानुभूति प्रकट की और कहा—"अब तुम लोग अपने गाँव लौट सकते हो। हम उठकर जाने लगे, तो बहिन ने मुझे रोककर कहा—नरसिंह! तुम ठहरो।

"मैं ठहर गया, तो बहिनजी ने मुझे दो सैनिकों के साथ गाँव भेजते हुए कहा—"तुम गाँव के मुखिया गोपालकृष्ण को लेकर आओ। महाराज को उससे कुछ काम है।"

"गोपालकृष्ण नहीं आया, उसे भय के कारण विसूचिका लग गयी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाँव को चारों ओर से सैनिकों ने घेर लिया था और गाँव के बचे-खुचे लोग गोपालकृष्ण की दुकान के सामने एकत्रित थे। उनकी सम्मति से भृगुदत्त पञ्च बनकर शकराज के सम्मुख आये।

"बहिनजी ने भृगुदत्त को समझाया कि उस क्षेत्र पर शकराज ने अपना राज्य स्थापित कर लिया है और वह वहाँ की जनता से अपनी प्रजा के समान ही व्यवहार करना चाहते हैं। पद्मिनी बहिन ने यह भी कहा कि कच्छराज और शकराज परस्पर निर्णय कर लेंगे कि राजा किसे बनना है? कच्छराज ने तो अपने राजा के अधिकार और कर्तव्य का पालन नहीं किया, परन्तु शकराज अपने कर्तव्यपालन करने का वचन देते हैं।

"भृगुदत्त मान गये, तो उन्हें गाँव और उस क्षेत्र का आयुक्त नियुक्त कर दिया गया है। उन्हें गाँव के युवकों में से अपना संरक्षक भरती करने की स्वीकृति भी मिल गयी है। अब गाँव के लोगों को सब प्रकार की स्वतन्त्रता है, किन्तु वे गाँव से भाग नहीं सकते। शक-सैनिक गाँव का निरीक्षण करते रहते हैं, किन्तु वे आयुक्त की सहायता ही करते हैं।

"भृगुदत्त के आयुक्त बनने के उपरान्त सात दिन तक मैं गाँव में रहा हूँ। इन दिनों गाँव से भागे हुए लोग गाँव में वापस लौटने लगे थे। एक बड़ा पोत भी सागर में आया था। भृगुदत्त को पोत के मालिक से बातचीत करने की स्वीकृति भी मिल गयी थी। किसी प्रकार समझौता हो गया और पोत का माल किनारे पर नौकाओं में आने लगा था।

"इस समय बहिनजी ने मुझे बुलाकर यह पत्र दिया और आपके पास भेजा है।"

पण्डितजी ने पूछा—"जो धन सैनिक लूट कर ले गये थे?"

"वह वापस तो नहीं किया गया, किन्तु उसकी गिनती कर ली गयी है। सारे लूटे गये माल का मूल्य दस लाख आँका गया है और भृगुदत्त से कहा गया है कि वह दस लाख गाँववालों को किश्तों में वापस कर दिया जायेगा।"

"और जो लड़कियाँ अपहृत की गयी थीं?"

"वे संख्या में बीस थीं। उन्नीस का विवाह शकों से हो गया है। एक का शिविर में निधन हो गया। यह पता नहीं चला कि उसका निधन किस कारण हुआ।"

"शकराज के साथ कितने सैनिक है?"

"इस समय तो दो सहस्र के लगभग हैं, परन्तु सुना है कि उनकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजधानी से पचास सहस्र और आ रहे हैं।"

"ये दो सहस्र सैनिक कहाँ ठहरे हैं?"

"मधुमति के तट पर शिविर-निर्माण किया गया है।"

"मेरे मकान का क्या हुआ?"

"वह अभी बन्द था। एक दिन भृगुदत्त को साथ लेकर पद्मिनी बहिन मकान पर गयी थीं। वह वहाँ से कुछ पुस्तकें अपने साथ ले आयी हैं। आपकी गाय भृगुदत्त के घर पर बंधी है और उसका दूध बहिनजी को जाता है।"

"गाँववालों को यह शक-राज्य कैसा लग रहा है?"

"शक-सैनिकों की भयंकर रूप-राशि के दर्शनों के अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार का अन्तर प्रतीत नहीं हो रहा। हाँ, गाँव में पहले-जैसी चहल-पहल नहीं है। फिर भी धीरे-धीरे गाँव के लोग वापस आ रहे हैं। सागर में पोत आने से कुछ चहल-पहल दृष्टिगोचर होने लगी है। देश के भीतर सूचना भेजने पर व्यापारी भी आने लगे है।"

"अच्छा नरसिंह! तुम ठहरे कहाँ हो?"

"नगर के पश्चिमी द्वार के समीप एक सामान्य से पन्थागार में। बहिनजी ने व्यय के लिए पाँच स्वर्ण और एक अश्व सवारी के लिए दिया है। आपको ढूंढ़ने में कितने दिन लगेंगे, यह न जानते हुए व्यय सङ्कोच से कर रहा हूँ।"

"ठीक है, अभी तुम वहीं ठहरो। किसी को बताना नहीं कि तुम यहाँ किस प्रयोजन से आये हो। नित्य इसी समय यहाँ आकर मिल जाया करो। मैं राज्य की ओर से इस पत्र की प्रतिक्रिया बताऊँगा। धन मेरे पास भी नहीं है। मुझे राज्य का मेहमान बनाकर यहाँ रखा गया है।"

चौथे प्रहर शङ्कर लौटा, तो नरसिंह जा चुका था। शङ्कर के आते ही पण्डित वीरभद्र ने उसे बताया—"गाँव से मेरी बेटी ने पत्र भेजा है। मैं चाहता हूँ कि तुम यह पत्र पढ़ लो और मुझे बताओ कि मैं क्या करूँ?"

शङ्कर ने कोई उत्तर नहीं दिया, तो पण्डित वीरभद्र ने अपनी जेब से पत्र निकालकर शङ्कर को दे दिया।

शङ्कर ने पत्र पढ़ा। कुछ क्षण विचार किया और फिर बोला—"मैं समझता हूँ कि आपको महामन्त्री से मिलकर यह पत्र उन्हें दिखा देना चाहिये। महाराजाधिराज तो इस पत्र से प्रसन्न नहीं होंगे, परन्तु महामन्त्री इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पत्र से उबल पड़ेंगे। इसलिए कहता हूँ कि आप महामन्त्री को पत्र दिखायेंगे, तो वह प्रतिनिधिमण्डल भेजने में शीघ्रता करेंगे।

"अभी तक राज्य को मध्यस्त का काम करनेवाला कोई विश्वस्त व्यक्ति नहीं मिला था। अब आपको इस काम के योग्य माना जायेगा और आपकी लड़की के वहाँ शकराज की पत्नी बन जाने से द्विभाषिये की आवश्यकता नहीं रहेगी। वह शकराज की ओर से देव-भाषा में बात कर सकेगी।"

"तो मैं इस पत्र को महामन्त्री के पास ले जाऊँ?"

"हाँ।"

"परन्तु उन्होंने तो कहा था कि अगले सात दिन तक अवकाश नहीं है?"

"अवकाश तो नहीं है। उनका उपवास का पखवाड़ा चल रहा है और महामन्त्री का बहुत सा काम ठप्प पड़ा हुआ है। इस पर भी आप एक पत्र अपनी ओर से लिखकर इस पत्र के साथ भेज दीजिये। वह अवश्य पढ़ेंगे और मैं समझता हूँ कि आपसे भेंट हो जायेगी।"

पण्डित वीरभद्र ने शङ्कर की सम्मति के अनुसार महामन्त्री को पत्र लिखा। उन्होंने लिखा—"मान्यवर महामन्त्री महोदय को भद्रकच्छ के वीरभद्र का आशीर्वाद मिले। समाचार यह है कि आपकी आज्ञानुसार आपके व्रतों से अवकाश की प्रतीक्षा में पन्थागार में पड़ा हूँ। मैं विचार कर रहा था कि उपवास के पन्द्रह दिन व्यतीत होने पर ही आपकी सेवा में उपस्थित होऊँगा, किन्तु आज गाँव से एक निजी पत्र आया है, जिसे आपकी सेवा में भेज रहा हूँ, ताकि आप राज्य की सीमा पर हो रहे परिवर्तनों से अवगत रहें। मेरे विचार से तो इस पत्र की सूचना से स्थिति में किसी प्रकार का अन्तर नहीं आया। इसी कारण आपकी आज्ञा की प्रतीक्षा में यहाँ पड़ा हूँ। यह पत्र इसलिए भेज रहा हूँ, जिससे आप भविष्य में राज्य का व्यवहार इस पत्र के प्रकाश में निश्चित कर सकें।"

पत्र शङ्कर के हाथ ही भेजा गया और वही महामन्त्री का उत्तर भी लाया कि महामन्त्री अगले दिन पण्डितजी से महाराजाधिराज के प्रासाद में द्वितीय प्रहर के आरम्भ में मिलेंगे। पण्डितजी को समय पर उपस्थित रहना चाहिये। वीरभद्र को शङ्कर की सूझ-बूझ और राज्याधिकारियों की मनोवृत्ति के ज्ञान पर विस्मय हुआ। पण्डितजी ने कहा—"शङ्कर! तुम निश्चय ही इन लोगों की मनोवृत्ति को भली-भाँति समझते हो। मुझे आश्चर्य है कि महामन्त्री अपने उपवास को भी भूल गया!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पण्डितजी! मैं एक भविष्यवाणी करता हूँ कि अब शीघ्र ही आपको भद्रकच्छ जाने के लिए तैयार रहना चाहिये। इस पत्र से प्रतिनिधिमण्डल में आपकी महत्ता बहुत बढ़ जायेगी।"

पण्डितजी ने कहा—"शङ्कर! मुझे भय है कि मेरी लड़की के विरोधी पक्ष में सम्मिलित होने के कारण मुझ पर विश्वास नहीं किया जायेगा और मुझे प्रतिनिधि-मण्डल में भी नहीं रखा जायेगा। ये लोग मानव-रक्तपात से भयभीत रहने के कारण प्रत्येक मूल्य पर शान्ति का प्रयत्न करते रहते हैं और अब भी यही हो रहा है।"

:9:

शकराज को भद्रकच्छ पर अधिकार किये हुए दो मास हो चुके थे। शक-राजधानी से समाचार आ चुका था कि पचास सहस्र सैनिक अपने सेवक-सेविकाओं के साथ प्रस्थान कर चुके हैं। उनके ठहराने के लिए नदी के पास शिविर-निर्माण किया जा रहा था। शिविर-निर्माण में बीसीयों व्यक्ति पकड़कर काम पर लगाये गये थे। वे सब लोग—जिनसे शिविर-निर्माण का काम लिया जा रहा था—भद्रकच्छ क्षेत्र के देहातों के रहने वाले थे, जिन्हें नियमानुसार दैनिक वेतन दिया जाता था। इस प्रकार जो लोग पहले बलपूर्वक पकड़कर काम पर लगाये गये थे और सैनिकों की देख-रेख में काम करते थे, अब स्वेच्छा से काम करने के लिए आने लगे थे, जिनकी संख्या धीरे-धीरे एक सहस्र के लगभग हो गयी थी।

विदेश से सागर में आये पोत का अधिकांश माल उतारकर किनारे पर बिक चुका था और पोतवाले इसी स्थान से कुछ वस्तुएँ क्रय भी कर चुके थे। कुछ विदेशी व्यापारी कच्छ के अन्य तटवर्ती नगरों से वस्तुएँ ख़रीदने के लिए वहाँ जाने वाले थे। एक अन्य पोत वहाँ पहले आने वाले पोत के लोगों से जाबच-पड़ताल कर रहा था। पहले पोत की अधिकांश वस्तुएँ शक-राज्य में भेजी जा रही थीं। वहाँ के व्यापारी भी माल क्रय करने तथा बेचने के लिए आने लगे थे।

जयदमन इस चहल-पहल को देखकर प्रसन्न था और देख रहा था कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उसकी पत्नी और मालती इस व्यापार सम्बन्धी काम को उन्नत करने में रुचि लेने लगी थीं।

एक दिन जयदमन ने अपनी पत्नी से पूछा—"क्या किसी राजा की पत्नी को इस प्रकार निम्न कोटि के काम में अपना जीवन व्यतीत करना चाहिये?"

जयदमन अब टूटी-फूटी देव-भाषा में अपने मन के भाव व्यक्त काने लगा था।

पद्मिनी ने समझाया—"नहीं प्रिय! यह तो अस्थायी कार्य है। आपकी सेना में इस काम को करनेवाले नहीं हैं। अब आपकी राजधानी से व्यापारी-वर्ग आने लगा है और वे इस कार्य को करने लगे हैं। मैं प्रयत्न कर रही हूँ कि भद्रकच्छ के व्यापारियों और खरीच के व्यापारियों में समन्वय बन जाये। दोनों के व्यापारिक नियम भिन्न-भिन्न हैं। कुछ दिनों में दोनों परस्पर बात को समझकर कार्य करने लगेंगे।"

"मुझे आश्चर्य है कि तुमने यह व्यापार की विद्या कहाँ से सीख ली?"

"इसके पढ़ने की आवश्यकता नहीं पड़ी। वास्तव में, मूल विद्या जान लेने पर इन छोटी-छोटी शाखाओं को समझने की आवश्यकता नहीं होती। मूल विद्या है—बुद्धि का विकास, जो ध्यान और धारणा से प्राप्त होता है। दूसरे की बात सुन-समझकर उसके उत्तर पर विचार करना ही तो काम है। विकसित बुद्धि से उसमें कठिनाई नहीं होती।"

अभी तक पति-पत्नी को घरेलू विषयों पर वार्तालाप के अतिरिक्त अन्य मामलों पर बातचीत में मालती की सहायता की आवश्यकता होती थी, इस कारण व्यापार सम्बन्धी अथवा राज्य-कार्य सम्बन्धी बातचीत होती, तो मालती को निकट बैठाना आवश्यक रहता था। इस पर भी पद्मिनी निरन्तर प्रयत्न कर रही थी कि जयदमन से ही समझकर कार्य कर सके।

राजधानी के फुटकर व्यापारियों के आने से सुविधा हो रही थी। उनमें प्राय: वे थे, जो पञ्चनद देश से व्यापार करने लगे थे और जिन्हें सैनिकों से अधिक देव-भाषा का ज्ञान था।

पद्मिनी ने इस समय तक भृगुदत्त को अपने पिता का मकान खोल लेने पर राज़ी कर उसका नव-निर्माण आरम्भ कर दिया। उसने उस मकान में कुछ भूमि और मिला कर वहाँ बड़े-बड़े पुस्तकालय, शयनागार, बैठकघर तथा रसोई एवं शौचालय भी बनवाने आरम्भ कर दिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्तुओं के आयात और निर्यात पर कर की राशि बढ़ रही थी।

इस समय तक पुरिका से भेजा गया प्रतिनिधिमण्डल आ चुका था। उस मण्डल में पाँच सदस्य थे। पण्डित वीरभद्र उनमें से एक थे। मण्डल में दो व्यक्ति तो कच्छराज के मन्त्री थे। एक रक्षा-मन्त्री था, जो सेनाध्यक्ष भी था। उनके साथ सहायता के लिए सेवक तथा राज्याधिकारी भी भारी संख्या में आये थे। पण्डित वीरभद्र के साथ शङ्कर और नरसिंह भी थे।

भद्रकच्छ आते हुए जब प्रतिनिधिमण्डल के सदस्यों का परिचय बढ़ने लगा, तो पण्डित वीरभद्र समझ गये कि रक्षा-मन्त्री शूरसेन की आवाज़ वही है, जो पुरिका में शिव-मन्दिर के बाहर अन्धकार में बात करनेवाले व्यक्ति की थी। उन्होंने अपने संशय का निवारण करने के लिए यात्रा पर चलने से पूर्व ही शङ्कर से पूछ लिया—"शङ्कर! मुझे विश्वास हो गया है कि हमारे रक्षा-मन्त्री वही व्यक्ति हैं, जो मुझसे शिव-मन्दिर के बाहर अन्धकार में मिले थे।"

"मुझे लगता है कि आपका अनुमान अशुद्ध है। वह व्यक्ति आपको भद्रकच्छ में मिलेंगे।"

शङ्कर के कथन पर पण्डित वीरभद्र का शङ्का-समाधान नहीं हुआ, इसलिए उन्होंने स्वयं ही रक्षा-मन्त्री शूरसेन से बात करने का निश्चय किया। अगले दिन जब दोनों अपने-अपने अश्वों पर सवार होकर साथ-साथ चल रहे थे, तो पण्डित वीरभद्र ने बात आरम्भ कर दी। उन्होंने शूरसेन से कहा—"मन्त्री महोदय! क्या आपको ज्ञात है कि मेरे पास भद्रकच्छ से एक पत्र आया था, जिसे मैंने महामन्त्रीजी की सेवा में भेज दिया था?"

"सच! हमें नहीं बताया गया। हमें केवल यही बताया गया कि पण्डित वीरभद्र वहाँ किसी द्विभाषिये का प्रबन्ध कर लेंगे। उनके जानकार शकराज के सम्पर्क में हैं।"

पण्डित वीरभद्र ने कहा—"हाँ, यह उसी पत्र में लिखा हुआ था। मुझे आशा है कि वार्तालाप मैत्रीपूर्ण ही होगा।"

"परन्तु हम दोनों प्रकार से तैयार होकर आये हैं। मैत्रीपूर्ण व्यवहार के लिए भी और शत्रुतापूर्ण व्यवहार के लिए भी।"

"परन्तु शत्रुतापूर्ण व्यवहार की तैयारी तो दिखाई नहीं दे रही। उस पत्र में यह भी लिखा था कि पचास सहस्र से अधिक शक-सैनिक मधुमति के तट पर एकत्रित हैं।"

"पचास सहस्र मूर्खों को भगाने के लिए पाँच सौ बुद्धिमान् वीर योद्धाओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
से अधिक की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।"

"परन्तु वे युद्ध-विद्या से अनभिज्ञ प्रतीत नहीं होते।"

"तो आपको उनका बहुत ज्ञान प्राप्त है?"

"मैंने निवेदन किया है कि मेरे पास उनके विषय में एक पत्र आया है। मेरा ज्ञान उसी के आधार पर है।"

"पत्र लिखनेवाले के ज्ञान का क्या आधार है? यह भी तो विचारणीय है।"

"मैं पत्र लिखनेवाले को जानता हूँ। उसके ज्ञान पर विश्वास किया जा सकता है।"

"वह कौन है?" शूरसेन ने पण्डितजी के मुख पर देखते हुए पूछा।

"एक स्त्री है, जो ब्राह्मण की कन्या है, पर शकों द्वारा उसका अपहरण कर लिया गया। उस लड़की के ज्ञान पर अविश्वास नहीं किया जा सकता।"

"उस लड़की की आयु कितनी होगी?"

"उसकी आयु तो अभी अठारह-उन्नीस ही होगी, किन्तु वह विदुषी है, बुद्धिमान् है और उसने वह पत्र ऐसे ढंग से लिखा है कि उस पर विश्वास किया जा सकता है।"

"तब तो हमें अधिक सैनिक बुलाने पड़ेंगे। इस समय तक तो यहाँ केवल पाँच सौ सैनिक ही हैं।"

"मेरी समझ में तो कच्छराज की पूर्ण सेना को चल देना चाहिये था और वैसे भी हमारी सेना में पैदल सैनिक अधिक हैं। शकों के प्राय: सभी सैनिक अश्वारोही हैं और यह ध्रुव सत्य है कि इन्द्रिय-लोलुप सैनिक अधिक लग्न से लड़ता है, जबकि अध्यात्मवादी सैनिक का चित्त सदा संशय से भरा रहता है। उसके हाथ में बढ़िया खड्ग भी कुण्ठित हो जाता है। उसका हाथ हत्या करते समय काँप जाता है।"

"परन्तु पण्डितजी! आप तो शैव हैं और शिव के गण तो ताण्डव करते समय उन्मत्त हो जाते हैं।"

"यह ठीक है, परन्तु उनको उन्मत्त करने के लिंए भांग और गांजा की आवश्यकता होती है। यदि इस पर भी आपने मुझे अपनी योजना के विषय में पुरिका में बताया होता, तो मैं आपको कुछ अन्य सुझाव देता।"

"पुरिका में कैसे बता सकते थे? वहाँ तो..."

पण्डित वीरभद्र ने बात को बीच में ही काटकर कहा—"अन्धकार में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कुछ अधिक वार्तालाप सम्भव नहीं था। परमात्मा ने हमें ये इन्द्रियाँ ज्ञान-लाभ करने के लिए दी हैं और ज़ो इनका प्रयोग करने से भय खाते हैं, वे ज्ञान से वञ्चित रह जाते हैं।"

अन्धकार में ब़ात न हो सकने की बात सुनकर शूरसेन विस्मय में पण्डित वीरभद्र का मुख देखता रह गया। पण्डित वीरभद्र ने कुछ क्षण मौन रहकर कहा—"अब तो वह समय हाथ से निकल गया। मेरा अनुमान है कि आप सेना पर छापा डलवाना चाहते हैं। यह उपाय श्रेष्ठ होते हुए भी स्वयं में पूर्ण नहीं है। ऐसे उपाय तब ही सफल होते हैं, जब इनकी पीठ पर कोई सुव्यवस्थित शक्ति हो। मेरा आशय व्यक्ति के हाथों की शक्ति से कदापि नहीं है। जब तक भुजाएँ वात-तन्तुओं के द्वारा मस्तिष्क से सम्बन्धित न हों, तब तक वे ठीक और प्रभावशाली कार्य नहीं कर सकतीं। मुझे मस्तिष्क पर ही सन्देह होने लगा है।"

"बिना पूर्ण योजना जाने ही?"

"योजना का स्रोत अब पता चल गया है। उस स्रोत का ज्ञान अपूर्ण है। अत: मैं समझता हूँ कि इन्द्रियों का सम्बन्ध मस्तिष्क से नहीं है।"

शूरसेन समझ गया कि पण्डितजी केवल भद्रकच्छ के निवासी ही नहीं, अपितु एक सूझ-बूझ रखनेवाले विद्वान् व्यक्ति भी हैं। वह समझ गया कि अन्धकार में बात करनेवाले के रूप में भले ही शङ्कर ने ही उन्हें मेरा परिचय दिया होगा, किन्तु उन्हें तो इस युद्ध के ढंग का भी पता है। क्या यह भी शङ्कर ने ही बताया है कि योजना क्या है?

इस विचार से शूरसेन परेशानी अनुभव करने लगा। उसने आगे बात नहीं चलायी। उस समय प्रतिनिधिमण्डल के अन्य सदस्य उनके साथ आ गये थे।

उस दिन सायंकाल जब वे एक धर्मशाला में ठहरे, तो शूरसेन ने शङ्कर से पता किया था। उसने पूछा—"पण्डितजी को मन्दिरवाले व्यक्ति का पता कैसे चला?"

शङ्कर ने उत्तर दिया—"पण्डितजी ने मुझे कल ही बता दिया था कि आपने ही उनसे उस रात बात की थी। मैंने इस संशय को निराधार बताते हुए कहा था कि उनका अनुमान निराधार है। इस पर उन्होंने यह भी कहा कि उनकी इन्द्रियाँ ठीक-ठीक काम कर रही हैं। मैं यह समझा कि वह अपनी श्रोत्र-इन्द्रियों की ही बात कर रहे हैं। अन्धकार में तो केवल वही इन्द्रिय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम कर सकती थी।"

"हाँ, यह तो सम्भव है कि उन्होंने मेरी आवाज़ पहचान ली हो, परन्तु हमारी योजना—छापा मारकर शकों को भगाने—का विचार उन्हें कैसे पता चला?"

"श्रीमान्! पण्डितजी की बाह्य इन्द्रियों के साथ ही उनकी भीतर की इन्द्रियाँ भी बहुत सजग और सक्रिय हैं। मुझे लगता है कि वह केवल अनुमान लगा रहे हैं।"

शूरसेन गम्भीर विचार में लीन हो गया। इस पर शङ्कर ने भद्रकच्छ से आये पत्र की बात बता दी। उसने कहा—"पण्डितजी की लड़की को ही शकराज ने अपनी पत्नी बना लिया है और उसी ने वह पत्र पण्डितजी को लिखा है कि युद्ध का कुछ विकल्प ढूंढ़ा जाये तो ठीक होगा।"

"अच्छा, तो यह बात है? वह पत्र बेटी ने पिता को लिखा है? तुमने वह पत्र देखा है?"

"हाँ श्रीमान्! महामन्त्रीजी को वह पत्र भिजवा दिया गया था और मैंने उस पत्र को महामन्त्रीजी के पास ले जाने से पूर्व पढ़ा था। उसमें लिखा था कि पचास सहस्र शक-सेना वहाँ एकत्र हो रही है? जो व्यक्ति पत्र लाया है, वह पण्डितजी के साथ ही वापस जा रहा है।"

"तो वह पण्डितजी और शकराज में सम्पर्क बना सकेगा?"

"जी। उसे महामन्त्री की स्वीकृति से ही पण्डितजी अपने साथ ले जा रहे हैं।"

"परन्तु महामन्त्री ने तो यह बात हमें नहीं बतायी।"

"सम्भवतः उन्होंने इसे आवश्यक नहीं समझा।"

इस जानकारी के उपरान्त शूरसेन ने पृथक् में वीरभद्र से बात नहीं की। वे अन्य की उपस्थिति में ही मिलते थे।

पण्डित वीरभद्र को विश्वास था कि शूरसेन ने अवश्य शङ्कर से शिव-मन्दिर पर हुए वार्तालाप के विषय में पूछताछ की होगी। शङ्कर ने स्वयं कुछ नहीं बताया तो एक दिन पण्डित वीरभद्र ने उससे पूछ लिया—"शङ्कर! रक्षा-मन्त्री ने मेरे बारे में कुछ पूछताछ की है?"

शङ्कर को झूठ बोलने में सङ्कोच होने लगा था। वह समझ गया कि पण्डितजी एक तार्किक विद्वान् हैं और उनकी अनुमान लगाने की शक्ति बहुत उग्र है। अतः उसने सर्वथा इनकार तो नहीं किया, परन्तु किसी मतलब की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कोई बात न बताने का निश्चय कर लिया। शङ्कर ने कहा—"हाँ, वह जान गये हैं कि आपने उनकी आवाज़ पहचान ली है और आप उनसे ही शिव-मन्दिर के पिछवाड़े में अंधेरे में उनसे बात कर रहे थे।"

"और यह नहीं बताया कि मैं उनकी छापामार योजना भी जान गया हूँ?"

"यह उन्होंने नहीं बताया।"

"यदि फिर कभी वह इस विषय पर बात करें, तो उनसे कह देना कि यदि छापामार-कार्य आरम्भ करने से पूर्व मुझसे सम्मति कर लें, तो ठीक रहेगा। मैंने उन्हें बता दिया है कि छापामार का काम तो विनाश करना है। वह युद्ध का स्थनापन्न नहीं हो सकता। यह प्रारम्भिक कार्य शत्रु-सेना को अस्त-व्यस्त करना तो हो सकता है, किन्तु जब तक इसके उपरान्त आक्रमण न हो, यह सफल नहीं हो सकता।"

शङ्कर ने बात सुन ली, किन्तु उत्तर देने तथा सम्मति प्रकट करने के स्थान पर कह दिया—"वह बीस वर्ष से सेनापति का कार्य कर रहे हैं। रक्षा-मन्त्री तो वह पिछले वर्ष ही नियुक्त हुए हैं। अतः उन्हें इन सब बातों कर ज्ञान होना चाहिये।"

"इस पर भी कभी बात हुई, तो उनको मेरी ओर से कह देना कि मैंने ही यह कुछ कहा है तथा और भी कुछ कहना चाहूँगा, किन्तु जब तक वह नहीं पूछेंगे, तब तक मेरा कुछ भी कहना अनाधिकार चेष्टा होगी।"

अगले दिन वह मधुमति के इस पार पहुँच गये। मधुमति के पश्चिमी तट पर सेना टिकी थी तथा उसके दक्षिण में बहुत बड़े शिविर का निर्माण हो चुका था, परन्तु उस शिविर में अभी सैनिक नहीं आये थे। सहस्रों कर्मचारी उसे रहने योग्य बनाने में लगे थे।

नरसिंह द्वारा कच्छ-राज्य की ओर से शकराज से बातचीत करने के लिए पुरिका से प्रतिनिधिमण्डल के आने की सूचना भेज दी गयी। इन लोगों ने अपना शिविर नदी के पश्चिमी तट पर स्थापित किया। नरसिंह को भेजकर उसके लौटने की प्रतीक्षा हो रही थी।

प्रतिनिधिमण्डल के अध्यक्ष एक नागरिक सोमदेवजी थे। उन्हें इसलिए अध्यक्ष बनाया गया था, ताकि प्रतिनिधिमण्डल को राजा की ओर से प्रकट होने के स्थान पर प्रजा की ओर से प्रकट किया जाये।

पण्डित वीरभद्र को इससे भी शङ्कर के कथन का समर्थन मिला था कि यह प्रतिनिधिमण्डल सन्धि करने के विचार से आया है। वह किसी भी मूल्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर सन्धि और शान्ति करने का प्रयत्न करेगा।

: 10 :

प्रतिनिधिमण्डल के भद्रकच्छ पहुँचने के दो दिन पूर्व ही जयदमन और पद्मिनी पण्डित वीरभद्र के नव-निर्मित भवन में अपने सेवक-सेविकाओं के साथ रहने चले गये। नरसिंह ने शकराज से भेंट के लिए भीतर सन्देश भेजा, तो नरसिंह को पद्मिनी के सम्मुख उपस्थित किया गया। नरसिंह ने देखा कि अब तक इस राजभवन में गाँव के स्त्री-पुरुष सेवा-कार्य के लिए रख लिये गये थे।

नरसिंह को पद्मिनी के सम्मुख ले जाने वाली गाँव की ही एक स्त्री थी। उसने नरसिंह को पहचानकर उससे पूछा—"भैया! पण्डितजी मिले हैं?"

"ओह, सरस्वती! तुम यहाँ क्या कर रही हो?"

"मैं महारानी पद्मिनीजी की सेवा में हूँ, पर भैया मैं पण्डितजी—पद्मिनीजी के पिताजी—के विषय में पूछ रही हूँ।"

"तुम यह सब क्यों पूछ रही हो? वह भी हमारे साथ आये हैं।"

"यहाँ झगड़े की स्थिति उत्पन्न हो रही है।"

"किस-किस में?" नरसिंह ने पूछा।

"गाँववालों और सैनिकों में।"

नरसिंह कुछ चिन्तित मन से जब सरस्वती की ओर देखने लगा, तो सरस्वती ने कहा—"भैया! रुको नहीं, चलते जाओ।"

नरसिंह को एक रिक्त आगार में खड़ा कर सरस्वती भीतर सूचना देने चली गयी। नरसिंह को अधिक देर तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। सरस्वती आयी और नरसिंह को एक अन्य आगार में ले गयी। यहाँ जयदमन और पद्मिनी एक उच्च आसन पर बैठे थे। उनकी सुरक्षा के लिए नग्न खड्ग लिये पाँच सैनिक आसन के पीछे खड़े थे। सैनिक तो शक ही थे, परन्तु इस आगार के द्वार पर कच्छ के दो युवक द्वारपाल के रूप में खड़े थे।

नरसिंह ने महाराज और महारानी को हाथ जोड़कर नमस्कार कहा और अपना सन्देश सुना दिया। उसने कहा—"महाराज! महारानीजी का पत्र लेकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मैं पुरिका गया था और उस पत्र के उत्तर में एक प्रतिनिधिमण्डल महाराज की सेवा में आया है।"

"मण्डल में कौन-कौन हैं?"

"प्रतिनिधिमण्डल के अध्यक्ष पुरिका के एक धनी-मानी नागरिक सेठ सोमदेवजी हैं। प्रतिनिधिमण्डल में चार अन्य व्यक्ति हैं—पण्डित वीरभद्र, रक्षा-मन्त्री शूरसेन, वित्त-मन्त्री वीरसेन और एक अन्य राज्याधिकारी करुण जिन।"

"ये लोग किस प्रयोजन से आये हैं?"

"प्रयोजन तो प्रतिनिधिमण्डल ही बतायेगा, किन्तु इन नामों से एक बात स्पष्ट है कि इनमें राज्याधिकारी भी हैं और प्रजा के प्रतिनिधि भी।"

इस पर पद्मिनी ने जयदमन से शक-भाषा में ही वार्तालाप किया और तदनन्तर नरसिंह से पूछने लगी—"पत्र का उत्तर पण्डितजी ने दिया है?"

"हाँ, वह कह रहे थे कि यदि महारानीजी उनसे पृथक् में मिलेंगी, तो उन्हें बहुत प्रसन्नता होगी।"

इस पर पद्मिनी ने जयदमन से पुनः बातचीत की। तदनन्तर उसने नरसिंह से कहा—"प्रतिनिधिमण्डल से बातचीत कल होगी। प्रतिनिधिमण्डल को अभी नदी के तट पर बन रहे शिविर के एक कक्ष में रहने के लिए स्थान मिल जायेगा।"

"वे गाँव में रहने का प्रबन्ध कर रहे हैं।"

"ठीक है।" पद्मिनी ने कहा। "यहाँ से आज्ञा जा रही है कि प्रतिनिधि-मण्डल की रक्षा और सुख-सुविधा के लिए गाँववाले राजसी प्रबन्ध करें। पिताजी से कहें कि वह आज सायंकाल मिलने के लिए आ सकते हैं। उनसे निवेदन कर दीजिये कि मैं चाहती हुई भी उनसे मिलने गाँव में नहीं जा सकती। इसका कारण यह है कि वह विपक्षी दल के प्रतिनिधि हैं।"

नरसिंह को सैनिकों की देखरेख में गाँव में पहुँचा दिया गया। राजभवन में उसे कुछ देर रुकना पड़ा। नरसिंह समझ गया कि शकराज के सेवक सारा काम अत्यन्त तत्परता से कर रहे हैं। जब वह भद्रकच्छ से पुरिका गया था, तब ही भृगुदत्त से कहा जा रहा था कि पण्डित वीरभद्र का मकान पद्मिनी को रहने के लिए दिया जाये। वह लगभग एक मास तक अनुपस्थित रहे थे और इतने समय में वह मकान अधिकार में कर लिया गया। उसमें नव-निर्माण हुआ, सुख-सुविधा और सजावट का सामान लगाया गया और पद्मिनी अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पति के साथ वहाँ रहने लगी। नरसिंह के लौटते समय सरस्वती उसे छोड़ने नहीं आयी थी। उस समय नरसिंह के साथ कुछ शक-सैनिक थे, जो न नरसिंह की बात समझते थे और न नरसिंह ही उनकी बात समझता था। वे नरसिंह को संकेतों के सहारे ही साथ ले जाते हुए गाँव की ओर चले जा रहे थे।

नरसिंह ने देखा कि गाँव में चहल-पहल पहले से अधिक थी। शक-सैनिकों द्वारा अपनी आवश्यकता का सामान ख़रीदने तथा सैनिक-शिविर के निर्माण के लिए अन्य गाँवों से आये कर्मचारियों के कारण ही ऐसा हुआ था। अब सागर में कोई पोत नहीं था, किन्तु उन दोनों पोतों से उतारा और क्रय किया गया सामान एक ओर शक-राजधानी के क्षेत्र और दूसरी ओर कच्छ-राज्य के उत्तरी क्षेत्र की ओर ले जाया जा रहा था। नरसिंह को यह देखकर भी आश्चर्य हुआ कि पुरिका से आये प्रतिनिधिमण्डल के ठहरने और सुख-सुविधा के लिए भृगुदत्त प्रबन्ध कर रहे हैं। उसने यह भी देखा कि सुरक्षा के लिए बीस से अधिक सैनिक उस स्थान पर नियुक्त थे, जहाँ भृगुदत्त ने प्रतिनिधिमण्डल को ठहराया हुआ था।

यह सब प्रबन्ध नरसिंह के राजभवन जाने और वहाँ से लौटते-लौटते हो गया था। सैनिक नरसिंह को सीधा भृगुदत्त के पास ले गये, उसे भृगुदत्त को सौंप दिया और वापस राजभवन की ओर लौट गये, जहाँ पण्डित वीरभद्र का पुराना मकान था।

नरसिंह ने भृगुदत्त को नमस्कार किया और कहा—"मैं पण्डित वीरभद्रजी से मिलना चाहता हूँ।"

"उनके निवास का प्रबन्ध हो गया है। तुम अपने घर ही रहोगे और पण्डितजी से मिलने जा सकोगे।"

"क्या मैं पण्डितजी के साथ नहीं रह सकता?"

"नहीं।"

"क्यों?" नरसिंह देख रहा था कि प्रतिनिधिमण्डल के साथ रहने पर खाने-पीने और निवास का उत्तम प्रबन्ध रहेगा।

भृगुदत्त ने उत्तर दिया—"आज्ञा नहीं है।"

"किसकी?"

"महारानीजी की।" इस समय तक पद्मिनी महारानीजी के नाम से विख्यात हो चुकी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आज्ञा कब आयी है?"

"अभी-अभी, तुम्हारे आने से पूर्व।"

"क्या आज्ञा आयी है?"

"यही कि प्रतिनिधिमण्डल के सदस्य और उनके निजी सेवक ही राजकीय अतिथि होंगे। तुम तो महारानीजी की सेवा में गये थे और तुम्हारे जाने के लिए पाँच स्वर्ण दिये गये थे। उनका लेखा सायंकाल तक देना, तुम्हारा वेतन मिल जायेगा।"

"और उसके उपरान्त छुट्टी?"

"यह महारानीजी से पूछकर ही बताया जायेगा।"

भृगुदत्त के अधीन पचास से अधिक काम करनेवाले कर्मचारी थे, जो एक ओर गाँव का प्रबन्ध और रक्षा-कार्य कर रहे थे तथा दूसरी ओर गाँव में हो रहे क्रय-विक्रय पर कर-प्राप्ति का काम कर रहे थे। तीसरी ओर उनका सीधा सम्बन्ध शकराज से था।

नरसिंह को भीतर प्रतिनिधिमण्डल से मिलने के लिए भेज दिया गया।

प्रतिनिधिमण्डल के अध्यक्ष और पण्डित वीरभद्र ही नरसिंह से मिले। नरसिंह ने बता दिया—"प्रतिनिधिमण्डल कल प्रातः अल्पाहार के उपरान्त महाराज जयदमन से मिल सकेगा और पण्डितजी अपनी लड़की से सायंकाल भोजन से पूर्व मिल सकेंगे।"

इस सन्देश को प्राप्त कर पण्डित वीरभद्र ने नरसिंह से कहा—"तुम यहाँ राज्य के सेवक हो, अतः तुमको यहाँ रहने की स्वीकृति नहीं है।"

"यह आपसे किसने कहा है?"

"यहाँ के आयुक्त भृगुदत्त ने।"

नरसिंह को लगा कि भद्रकच्छ गाँव अब सक्रिय हो गया है। उसने पण्डितजी के कहने पर एक क्षण के लिए विचार किया और फिर उन्हें प्रणाम कर अपने घर चला गया।

उसके जाने के उपरान्त प्रतिनिधिमण्डल की बैठक हुई। प्रतिनिधिमण्डल की भोजन-व्यवस्था भृगुदत्त द्वारा की गयी थी और प्रतिनिधिमण्डल मध्याह्न का अल्पाहार लेकर विचार-विनिमय करने लगा था।

अध्यक्ष सोमदेवजी ने नरसिंह द्वारा लाया गया सन्देश बताया। इसके साथ ही उन्होंने यह भी बता दिया कि पण्डित वीरभद्र से महारानी ने आज सायंकाल पृथक् में मिलने की अनुमति दे दी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शूरसेन ने पूछा—"किसलिए?"

पण्डित वीरभद्र ने उत्तर दिया—"पुत्री अपने पिता से मिलना चाहती है।"

"परन्तु उस समय राजनीति पर भी चर्चा हो सकती है?" शूरसेन ने कहा।

पण्डित वीरभद्र ने पिता-पुत्री की बात इसलिए कही थी, ताकि यह स्पष्ट हो जाये कि इस भेंट का राजनीति से सम्बन्ध नहीं है। अतः शूरसेन के इस प्रश्न से पण्डित वीरभद्र समझ गये कि शूरसेन इस भेंट को पसन्द नहीं करता। इस पर भी उन्होंने कह दिया—"इस भेंट में मेरा विचार राजनीति पर चर्चा करने का नहीं है। यदि इस पर कोई चर्चा चली, तो मैं इस विषय पर प्रतिनिधिमण्डल की नीति का ही समर्थन करूँगा।"

"परन्तु में समझता हूँ कि हमें पण्डितजी की इस भेंट के उपरान्त ही अपनी नीति पर विचार करना चाहिये।" शूरसेन ने कहा।

पण्डित वीरभद्र समझ गये कि उन पर अविश्वास किया जा रहा है। इस पर भी उन्होंने अपने मन की बात नहीं बतायी और शूरसेन के कथन का समर्थन कर दिया। उन्होंने कहा—"ठीक है। अब या तो मैं आपकी इस विचार-गोष्ठी से अलग होता हूँ अथवा यह विचार-गोष्ठी अभी स्थगित कर दी जाये।"

शूरसेन ने अपनी बात को स्पष्ट कर दिया। उसने कहा—"पण्डितजी! मैं आप पर विश्वास-अविश्वास की बात नहीं कर रहा। मैं तो यह कह रहा हूँ कि हमें अपनी नीति आपकी लड़की से बातचीत सुनकर ही निश्चित करनी चाहिये।"

इस पर अध्यक्ष ने विचार स्थगित कर दिया और इधर-उधर की बातें होती रहीं। एकाएक पण्डित वीरभद्र ने कहा—"एक बात जो यहाँ के आयुक्त ने मुझे बतायी है, वह मैं आपको बता देना चाहता हूँ। उसने मुझे बताया है कि हमारे यहाँ पहुँचने से पहले इस शिविर में काम करने वाले कर्मचारियों में दो सौ से अधिक लोग तोड़-फोड़ करनेवाले समझे जा रहे हैं और उन पर दृष्टि रखी जा रही है। भृगुदत्त कह रहे थे कि यदि उनका सम्बन्ध इस प्रतिनिधिमण्डल से माना गया, तो प्रतिनिधिमण्डल से बातचीत नहीं हो सकती।"

"तब क्या होगा?"

"बातचीत बन्द होने पर प्रतिनिधिमण्डल को वापस पुरिका जाने का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदेश दे दिया जायेगा।"

"तब ?"

"उन तोड़-फोड़ करनेवालों को फाँसी पर लटका दिया जायेगा और मुख्य शक-सेना—जो दो-तीन दिन में यहाँ पहुँचनेवाली है—पुरिका को चल देगी।"

"और यह शिविर ?"

"यहाँ रहने के लिए पचास सहस्र सैनिक पुरिका से बुला लिये जायेंगे।"

"किसलिए ?"

"इस सम्पूर्ण क्षेत्र में उनकी छावनियाँ स्थापित कर, उनका प्रबन्ध इस शिविर से किया जायेगा।"

अब शूरसेन ने वीरभद्र की ओर मुस्कराते हुए पूछ लिया—"किन्तु यह कैसे पता चला कि दो सौ कर्मचारी तोड़-फोड़ करनेवाले हैं ?"

"यह मैंने नहीं पूछा और न ही आयुक्त ने बताया है। आयुक्त के साथ बातचीत से ही यह समझ में आया है कि यहाँ पर गुप्तचरों का दल भी निर्मित किया गया है।"

शूरसेन ने कहा—"आप आयुक्त भृगुदत्त से अपने निजी रूप में पता करें कि उनका हमारे प्रतिनिधिमण्डल के प्रति क्या विचार है ?"

"आप यह विचार किस विषय में जानना चाहते हैं ? वह मेरा शिष्य है और यदि मैं उससे कुछ पूछूंगा, तो वह अपने हृदय की बात मुझे सत्य-सत्य बता देगा।"

इस पर सेठ सोमदेवजी ने प्रसन्न होकर पूछा—"क्या वह आपके आदेशानुसार कार्य भी करेगा ?"

"कह नहीं सकता। यदि कोई बात उसके सेवा-कार्य के विपरीत हुई, तो वह इनकार कर देगा।"

"परन्तु वह विद्रोह तो नहीं करेगा ?"

"यदि मैं उसे एक सेवक के धर्म के विपरीत करने को कुछ नहीं कहूँगा, तो वह मेरी बात मान लेगा।"

"परन्तु एक कच्छ-निवासी और अपने राष्ट्र का घटक होने के नाते, उसे अपने देश और जाति के हितों के पक्ष में होना चाहिये।"

"शूरसेनजी! आप अपने देश और जाति का हित किस बात में मानते हैं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं तो इन शकों को सीमा-पार पहुँचाने में ही देश और जाति का हित मानता हूँ।"

"और प्रतिनिधिमण्डल क्या चाहता है?"

इस पर सोमदेवजी ने कहा—"यह अभी तक निश्चित नहीं किया गया है। मैंने महामन्त्री से पता किया था कि वह क्या चाहते हैं? युद्ध अथवा शान्ति? इस पर उनका कहना था कि जो भी देश और जाति के हित में होगा, वही।"

"यह तो जयदमन से प्रथम प्रारम्भिक बात करने के उपरान्त ही हमें निर्णय करना है।"

"ठीक है। मैं शूरसेनजी से यह पूछ रहा हूँ कि जब अभी तक हम यह भी नहीं जानते कि देश और जाति के हित में क्या है, तो आप एक सामान्य व्यक्ति से उसके हित-अहित के विषय में कैसे पूछ सकते हैं? उसके हित-अहित के विचार आपसे भिन्न भी हो सकते हैं।"

इस पर शूरसेन ने कहा—"मैं यह जानना चाहता हूँ कि यदि वह अपने को कच्छ-राज्य का नागरिक मानता है, तो हम जो भी निश्चित करें, उसे हमारे पक्ष में ही रहना चाहिये।"

"देखिये शूरसेनजी! पहले आप यह निश्चय करें कि इस भद्रकच्छ क्षेत्र को आप कच्छ-राज्य में रखेंगे या नहीं? इसे कच्छ-राज्य में रखने के लिए आप किस सीमा तक जाना चाहते हैं, यह जानकर ही वह अपने व्यवहार का निर्णय कर सकता है। एक बात और, आप इस क्षेत्र को कच्छ-राज्य के अन्तर्गत मानते हैं अथवा नहीं?"

"हम यही तो निर्णय करने आये हैं।"

"तो पहले आप निश्चय कीजिये, उसके उपरान्त ही मैं किसी से पूछ सकता हूँ कि वह क्या चाहता है। एक बात उसने संकेत रूप में कही है कि वह जो कुछ कर रहा है, यहाँ रहनेवालों के हित में ही कर रहा है।"

"परन्तु उसे यह भी जानना चाहिये कि एक गाँव का हित पूर्ण राज्य के हित से कम और गौण है।"

"परन्तु श्रीमान्! वह जानता है कि शरीर में कौन अंग गौण है। उसकी पीड़ा भी तो पूर्ण शरीर को ही होती है। उस गौण अंग को काँटा चुभते ही शरीर के हाथ उस काँटे को निकालने के लिए दौड़ पड़ते हैं।"

"कच्छराज को काँटा निकालना है अथवा यहीं गड़े रहने देना है, इसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
निर्णय भी तो नहीं किया।"

इस पर सेठ सोमदेवजी ने कहा—"मैं इस वार्तालाप को बन्द करता हूँ। वह बात इस प्रतिनिधिमण्डल की नीति से सम्बन्धित है।"

पण्डित वीरभद्र ने बात बदल दी। उन्होंने कहा—"यदि आप किसी अन्य प्रकार की सुविधा चाहते हों, तो प्रबन्ध किया जा सकता है।"

सोमदेवजी ने कहा—"मैं तो एक घण्टा विश्राम करना चाहता हूँ। पाँच दिन की यात्रा से थक गया हूँ।"

शूरसेन ने कहा—"मैं तो बन रहे शिविर को देखना चाहता हूँ।"

"इस विषय में आयुक्त से कह सकता हूँ। आपको शिविर देखने की स्वीकृति मिल जायेगी।"

पण्डित वीरभद्र शिविर से बाहर गये। भृगुदत्त से मिलकर आये और शूरसेन से बोले—"आपके साथ दो सैनिक जायेंगे, जिससे आपका अपमान न हो जाये, किन्तु मैं समझता हूँ कि यह आप पर गुप्तचर का कार्य करने के लिए हैं।"

"वे संरक्षक यहाँ के नागरिक होंगे अथवा शक होंगे?"

"जहाँ तक मैं समझता हूँ कि यहाँ के रहनेवाले ही इस सेवा-कार्य के लिए भरती किये गये होंगे।"

"तब मैं जाऊँगा।"

: 11 :

पद्मिनी से मिलने के लिए पण्डित वीरभद्र रात के भोजन-काल से पूर्व ही गये।

पद्मिनी ने उन्हें बैठकघर में बैठाया और सेवक-सेविकाओं को वहाँ से बाहर कर स्वयं आयी और हाथ जोड़कर पिता के चरणों की ओर देखती हुई सामने खड़ी हो गयी।

वीरभद्र उसे आते हुए देखकर उठ खड़े हुए और कुछ देर तक देखते रहे। तदनन्तर बोले—"महारानीजी! विराजिये।"

पद्मिनी ने कहा—"पिताजी! मैं महारानी का पद अपने आगार में ही छोड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयी हूँ। यहाँ तो मैं अपने पति वरने पर आशीर्वाद माँगने आयी हूँ।"

"तब ठीक है। परमात्मा तुम्हें दीर्घ जीवन प्रदान करे और तुम इस लोक और परलोक में कल्याण की भागी बनो।"

"तो पधारिये।" पद्मिनी ने पिता को बैठने के लिए कहा। जब पण्डितजी बैठ गये, तो वह धरती पर उनके चरणों में बैठकर कहने लगी—"पिताजी! विवाह तो विवाह करने की इच्छा से ही किया था, किन्तु मेरे द्वारा वरे गये पतिदेव क्षत्रिय-स्वभाव और प्रकृति के हैं। एक क्षत्रिय के नाते वह महत्त्वाकांक्षी हैं, किन्तु मैं प्रयत्न कर रही हूँ कि महत्त्वाकांक्षा के लोभ में वह मानव-धर्म का उल्लंघन न कर सकें। अभी तक मुझे इसमें सफलता ही मिली है। परमात्मा की कृपा और आपके आशीर्वाद से भविष्य में भी मानवता की रक्षा कर सकूंगी। भगवद्गीता में कहा गया है कि धर्म-संस्थापना दुष्टों के विनाश से ही सम्भव है। मैं इसके लिए भी प्रयत्न कर रही हूँ।"

"ठीक है, ऐसा ही करना भी चाहिये। तुमने एक क्षत्रिय स्वभाव के नरेश को वरा है, सम्भवतः वह धर्म के सार को नहीं समझता। इस कारण ऐसी कठिनाइयाँ उपस्थित हो सकती हैं, जिनसे तुम उसका भी विनाश करने पर विवश हो जाओगी।"

"उस अवस्था में वह मेरा पति नहीं रहेगा। यह भूल हो सकती है कि मोहवश मैं स्वयं धर्म-पथ को भूल जाऊँ, किन्तु प्रयत्न करूँगी कि आपकी शिक्षा से लाभ उठा सकूँ। मैंने महाराज से कहा है कि यदि दोनों राज्यों में सन्धि हो जाये, तो वह आपको अपना महामन्त्री नियुक्त कर दें। वह मान गये हैं, परन्तु आपके साथ आये रक्षा-मन्त्री सन्धि नहीं होने देंगे। वह जिस काम के लिए यहाँ आये हैं, उसका विरोध करने का संकल्प हम किये हुए हैं।"

वीरभद्र ने कहा—"इसका प्रमाण क्या है?"

"यदि कहें, तो अभी आपके समक्ष उपस्थित कर सकती हूँ, अन्यथा कल पूर्ण प्रतिनिधिमण्डल के सम्मुख उपस्थित कर दूंगी।"

"पद्मिनी! यह राजनीति नहीं होगी।"

"पिताजी! यह मानवता होगी। इससे भविष्य में होनेवाला भयंकर युद्ध रुक सकेगा।"

"मैं यह कहूँगा कि पहली ही बैठक में यह विस्फोट मत करो। देखो, वे लोग क्या कहते हैं। इतने समय में अपने आरोपों को प्रकट करने के लिए साक्षियों को पक्का कर लो। कहीं वे अपने स्वामी के सम्मुख विचलित न हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जायें।"

"पिताजी! आज प्रातःकाल दो सौ व्यक्ति पकड़ लिये गये हैं और उनमें से पाँच-सात उनके नेता बन गये हैं।"

"इस पर भी मेरी सम्मति यह है कि जो भी क़दम उठाओ, भली-भाँति विचार कर ही उठाओ। कहीं बाद में लज्जित न होना पड़े।"

"अच्छी बात है। मेरा उद्देश्य यह है कि दोनों राज्यों में सीमा-बन्दी हो जाये और दोनों राज्य परस्पर सहयोग से प्रजा का कल्याण करें।"

"मेरी शुभकामना तुम्हारे साथ है।"

"अभी आपका प्रतिनिधिमण्डल के साथ ही रहने का प्रबन्ध है। यदि मेरी योजनानुसार सन्धि हो गयी, तो यह मकान आपको रहने के लिए मिल जायेगा और सीमा तय होने के उपरान्त हम अपने लिए मकान का निश्चय करेंगे।"

"कुछ लोग जो पकड़े गये हैं, वे तोड़-फोड़ करने के लिए ही आये थे, यह कैसे पता चला?"

"पण्डित भृगुदत्त बड़े काम के व्यक्ति हैं। उन्हें तो किसी राज्य का राजा होना चाहिये। उन्होंने ही गुप्तचरों का एक संगठन बनाया है और उस संगठन के व्यक्ति ही पुरिका तक भेजे गये थे। उस संगठन ने जानकारी दी है कि शूरसेन ने सीधा युद्ध करने के स्थान को तोड़-फोड़ को उपमा दी है।"

"ठीक है, किन्तु इसमें मेरा नाम नहीं आना चाहिये। मैंने तुम्हें सोच-विचारकर ही क़दम उठाने को कहा है। इस विषय में भी किसी प्रकार का संकेत नहीं होना चाहिये। मैं यह जानकर सन्तुष्ट हूँ कि तुमने स्वेच्छा से इस म्लेच्छ को चुना है। इस कार्य के शुभ-अशुभ परिणामों में तुम किसी अन्य को उत्तरदायी नहीं ठहरा सकतीं। मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि वह तुम्हें और तुम्हारे पतिदेव को सुमति प्रदान करे, जिससे तुम अपने साथ सम्बन्धित लोगों का कल्याण कर सको।"

इतना कहकर पण्डित वीरभद्र विदा होने के लिए उठे, तो पद्मिनी ने पूछ लिया—"आप अपनी लड़की द्वारा वरे गये पति को आशीर्वाद देंगे अथवा नहीं?"

"तुम उसे अपने साथ नहीं लायीं। मैं समझा कि वह किसी प्रकार से दर्शनीय नहीं है, इसीलिए तुमने उसे मुझसे छिपाकर रखा है।"

"नहीं पिताजी! यह बात नहीं है।" पद्मिनी ने उठते हुए कहा। "आप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तनिक ठहरिये। मैं उन्हें लेकर आती हूँ।"

यह बिना बताये कि जयदमन उसके साथ क्यों नहीं आया, पद्मिनी उधर ही चली गयी, जिधर से आयी थी। पण्डित वीरभद्र पहचान रहे थे कि क्या यह उन्हीं का मकान है? वहाँ पुराने मकान का कोई चिह्न नहीं था। वह अपनी पुस्तकें देखना चाहते थे, परन्तु अपनी इच्छा को मन ही मन दबाकर चुप थे।

पद्मिनी को लौटने में कुछ ही क्षण लगे। वह जयदमन के साथ पिता के सामने आ खड़ी हुई। जयदमन ने हाथ जोड़कर शीश झुकाये केवल इतना कहा—"आशीर्वाद दीजिये।"

पण्डित वीरभद्र उसकी देव-वाणी पर मुसकराये और अपना हाथ लड़की और दामाद के सिर पर रखकर बोले—"जीवेम शरदः शतं, भूयश्च शरदः शतात्।"

जयदमन ने धीरे-से कहा—"राज्यार्थ आशीष।"

"वह परमात्मा के अधीन है, उसका चिन्तन करो।"

पण्डित वीरभद्र गाँव में प्रतिनिधिमण्डल के शिविर में लौटे, तो मण्डल के शेष चारों सदस्य उन्हें लेकर पृथक् आगार में बैठ गये। वे पण्डितजी से वहाँ के समाचार जानना चाहते थे। पण्डितजी ने कहा—"मैं गया तो था केवल लड़की से इस विवाह के विषय में जानने कि उसे विवाह के लिए विवश किया गया था अथवा उसने उसे स्वेच्छा से स्वीकार किया है, परन्तु चर्चा राजनीति पर भी हुई। मुझे ऐसा समझ में आया है कि शकराज लड़की से प्रभावित है। वह एक सुदर्शन युवक है। कुछ इस बात का भी संकेत मिला है कि वे दोनों समझते हैं कि वस्तुस्थिति यह है कि वह कच्छ-राज्य की सीमा पर उपस्थित है और कच्छ-राज्य के दोषों के कारण उसकी सीमाओं में घुस आया है। इस कारण वह इसकी प्रतिक्रियास्वरूप युद्ध को सम्भावित मानते हैं, किन्तु लड़की युद्ध को रोकना चाहती है और कच्छराज को शकराज से सन्धि के लिए तैयार करना चाहती है।"

इस पर शूरसेन ने पूछा—"और कुछ पता नहीं चला?"

"चला है, परन्तु वह कार्य यहाँ के आयुक्त का है। भृगुदत्त को कुछ लोगों पर सन्देह हुआ है कि वह शकराज के सैनिकों में आतंक फैलाने का प्रयत्न करने के कारण पकड़े गये हैं। उन पर अभियोग चलेगा। उनमें कुछ पुरिका के रहनेवाले भी हैं।

"हम उन्हें छुड़ाना चाहते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसका अर्थ यह होगा कि यह प्रतिनिधिमण्डल उन बन्दियों में प्रकट होकर उनसे अपना सम्बन्ध घोषित करेंगे। यह राजनीतिक शिष्टाचार के विपरीत होगा। हमारी स्थिति राजदूत के समान है और राजदूत प्रतिक्रियात्मक कार्रवाई नहीं कर सकता।"

"परन्तु वे लोग प्रतिनिधिमण्डल की रक्षा के लिए हमारे गुप्तचर थे।"

"बहुत योग्य गुप्तचर थे, जो प्रकट हो गये हैं। देखिये शूरसेनजी! उन पर अभियोग चलेगा। यदि आप चाहें, तो पुरिका से किसी न्यायविद् को बुला लीजियेगा, जो उनको अभियोग से मुक्त करा सके। मैं पहले ही कह चुका हूँ कि बिना किसी निष्पक्ष न्यायालय द्वारा जाँच किये उनको दण्ड नहीं देना चाहिये।"

"तो इसका क्या उत्तर मिला?"

"यही कि यह कार्य यहाँ के आयुक्त भृगुदत्त का है। बिटिया ने यह आश्वासन दिया है कि मनुस्मृति के अनुसार ही निर्णय होगा, शकस्मृति के अनुसार नहीं।"

"परन्तु क्या इस बात पर विश्वास किया जा सकता है?"

"यदि आप कहें, तो इस विषय पर भृगुदत्त से बात की जा सकती है।"

"क्या वह हमारा कहा मानेंगे?"

"यह तो पूछने पर ही पता चल सकेगा।"

"परन्तु मैं चाहता हूँ कि कल प्रथम भेंट होगी। वहाँ क्या कहना है, इसका निश्चय अभी हो जाना चाहिये।"

इस पर मण्डल के अध्यक्ष ने बताया—"हमने कुछ निर्णय लिया है और इस मण्डल का प्रवक्ता मैं ही हूँ। मैं पण्डितजी को यहाँ आने से पूर्व सब कुछ बता दूंगा।"

पण्डित वीरभद्र इस लुकाव-घुमाव पर मौन हो गये। उन्होंने केवल इतना कहा—"यदि आप चाहें, तो मैं आपके साथ नहीं भी जा सकता।"

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं।" अध्यक्ष ने कहा—"अब भोजन का समय हो रहा है और मैं समझता हूँ कि सब को भूख लग रही है।"

पण्डित वीरभद्र उठ खड़े हुए और मण्डल की गोष्ठी समाप्त हो गयी।

भोजन करते हुए और भोजन के उपरान्त कोई बात नहीं हुई। पण्डित वीरभद्र अपने लिए नियत आगार में जाकर लेट गये। वह समझ रहे थे कि अब वह इस प्रतिनिधिमण्डल के सदस्य नहीं रहे। ऐसी अवस्था में उन्हें क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना चाहिये—यही विचार करते हुए वह अपनी शय्या पर लेटे हुए थे कि आगार के बाहर से शङ्कर ने देखा कि पण्डितजी सो रहे हैं या जाग रहे हैं।

पण्डितजी ने उसे देखा, पहचाना और भीतर बुला लिया। उन्होंने पूछा—"शङ्कर हो?"

"जी।"

"बैठ जाओ।"

पण्डित वीरभद्र उससे भी सतर्क थे। वह उठकर शय्या पर बैठ गये।

शङ्कर धरती पर बैठने लगा, तो पण्डित वीरभद्र ने उसे अपनी शय्या पर स्थान दे दिया और कहा—"शङ्कर! यहाँ बैठो। दूर बैठने पर ऊँची आवाज़ में बात करनी पड़ेगी और पड़ोस के आगारवालों की नींद खुल जायेगी।"

शङ्कर मुस्कराया और बोला—"पड़ोस में अध्यक्ष महोदय का आगार है और वह रक्षा-मन्त्री के आगार में हैं। मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या कल आप मण्डल के साथ जायेंगे?"

"मैंने निश्चय नहीं किया। इच्छा तो यही है कि न जाऊँ।"

"मेरी राय भी यही है कि आप न जायें। जिस दिन रक्षा-मन्त्री से आपकी भेंट शिव-मन्दिर के पिछवाड़े हुई थी, उसी दिन से मैं आपसे वार्तालाप करने से बचता रहा हूँ। इस पर भी जब-जब आपने सहायता माँगी, मैंने दी है। परमात्मा का धन्यवाद है कि आपने कभी दूसरे पक्ष के विषय में पूछा ही नहीं, परन्तु आपकी बात को सुनने के उपरान्त मैंने यह उचित समझा कि आप अपने को प्रतिनिधिमण्डल से पृथक् कर लें। सम्भवतः आपको सम्मति-दाता के रूप में यहाँ भेजा गया है, किन्तु यहाँ के राज-परिवार से आपका सम्बन्ध देखकर आपकी सम्मति पर भी सन्देह किया जा रहा है।"

पण्डितजी ने कहा—"पुरिका से चलने से पूर्व ही मैंने अपनी लड़की का पत्र महामन्त्री को दिखा दिया था और उससे स्पष्ट हो जाना चाहिये था कि मेरा यहाँ के राज-परिवार से क्या सम्बन्ध बन गया है। इस बात का ज्ञान हो जाने पर भी मुझे इस प्रतिनिधिमण्डल के पाँच सदस्यों में सम्मिलित करना उनकी भूल थी। मैं इस भूल को सुधारना चाहता हूँ, किन्तु प्रतिनिधिमण्डल के अधिकार-पत्र पर मेरा नाम लिखा है। इस कारण मैं यह विचार कर रहा हूँ कि यहाँ आकर मण्डल में कार्य न करना महाराज की आज्ञा का विरोध होगा। यह द्रोह के समान होगा। इस कारण मैं मौन हूँ।"

इस पर शङ्कर ने विचारकर कहा—"मेरी राय में आप अध्यक्ष महोदय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से पृथक् में मिल लें और कोई व्यावहारिक समझौता कर लें।"

"इस पर भी मेरा यह विचार है कि यदि प्रतिनिधिमण्डल से पृथक् हो जाऊँ तो ठीक रहेगा।"

"मैं इस प्रतिनिधिमण्डल के यहाँ आने को शुभ नहीं समझता। मैं तो इस प्रतिनिधिमण्डल के स्थान पर सेना के आने को उचित मानता था। जब आपके पत्र में लिखा था कि पचास सहस्त्र शक-सेना सीमा पार कर रही है, तो उसके उत्तर में एक लक्ष सेना यहाँ आ जानी चाहिये थी और इनको मार-मारकर भगा देना चाहिये था।"

पण्डितजी ने शङ्कर की बात सुनी और उसे स्वीकार करते हुए कहा—"मैं प्रातःकाल अध्यक्ष से मिलूंगा।"

पण्डित वीरभद्र ने छापामारों के विषय में अपनी सम्मति शूरसेन को बता दी थी। उन्होंने कहा—"इस प्रकार का कार्य तो तब ही चल सकता है, जब इन्हें राज्य की सहायता प्राप्त हो। शत्रु से तो चोरी होनी चाहिये, किन्तु अपने राज्य से नहीं।"

यह सुनते ही शूरसेन ने पण्डितजी से मतभेद रखना आरम्भ कर दिया। इस व्यवहार को तब और प्रोत्साहन मिला, जब पण्डितजी ने जयदमन से अपनी लड़की पद्मिनी के विवाह की चर्चा की। जब शूरसेन को भद्रकच्छ में पण्डितजी के शक-महारानी से पृथक् भेंट करने के विचार का पता चला, तो शूरसेन पण्डितजी का प्रत्यक्ष में विरोध करने लगा और उसके कहने पर पण्डितजी की अनुपस्थिति में ही प्रतिनिधिमण्डल की बैठक कर दी गयी और यह भी निश्चित किया गया कि पण्डितजी को न तो अपनी योजना बतायी जाये और न उनको जयदमन से बातचीत करने का अवसर दिया जाये।

भोजन से पूर्व जब पण्डितजी ने यह संकेत दिया कि यदि प्रतिनिधिमण्डल चाहे, तो वह उससे पृथक् भी हो सकते हैं, तो शूरसेन पुनः अध्यक्ष से मिला और कहने लगा—"यदि पण्डितजी स्वेच्छा से रुग्ण होने का बहाना बनाकर साथ चलने से इनकार कर दें, तो इसे स्वीकार कर लिया जाये।"

शङ्कर यही बात कहने के लिए पण्डितजी के पास आया था। उसने यह बात इस ढंग से कही, जिससे पता चला कि वह पण्डितजी से किये जा रहे व्यवहार को पसन्द नहीं करता और यह सम्मति वह पण्डितजी को अपने मन से दे रहा है।

पण्डित वीरभद्र शङ्कर को शूरसेन का गुप्तचर समझकर उससे बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने में अत्यन्त सावधान रहा करते थे। अतः अगले दिन अल्पाहार लेने से पूर्व वह अध्यक्ष सेठ सोमदेवजी से मिले। सेठ सोमदेवजी अपने चिन्तन-ध्यान से निवृत्त हुए ही थे कि पण्डित वीरभद्र उनके आगार पर पहुँच गये और सादर कहने लगे—"सोमदेवजी! मेरी राय में मेरे नियुक्ति-पत्र में महाराज कच्छाधिपति की ओर से यह आदेश लिखा है कि मुझे आपकी अध्यक्षता में प्रतिनिधिमण्डल में काम करना चाहिये। अतः मैं यह कहने आया हूँ कि यदि मण्डल को मुझ पर विश्वास नहीं रहा, तो मुझे पृथक् रहने का आदेश दे दिया जाये।"

सेठ सोमदेवजी ने सब सुना और कहा—"आपको प्रतिनिधिमण्डल से पृथक् करने का अधिकार मुझे नहीं है। आपको महाराज के आदेशानुसार ही इस मण्डल में सम्मिलित किया गया है। मैं उनके आदेश के विपरीत कुछ नहीं कर सकता। यह ठीक है कि मण्डल के शेष तीन सदस्यों का आप पर विश्वास नहीं है और उनका कहना है कि मण्डल के निर्णयों के विषय में आपको समय से पूर्व कुछ भी न बताया जाये।

"मैं चाहूँगा कि आप रुग्ण होने का बहाना कर हमारे मण्डल के कार्य से पृथक् रहने की स्वीकृति माँग लें।"

यही बात शङ्कर ने सुझाव के रूप में कही थी। इस कारण पण्डितजी ने कहा—"मैं झूठ नहीं कहूँगा और न लिखकर ही दूंगा। आप मुझे आदेश दे सकते हैं कि मुझे आपके साथ जाने की आवश्यकता नहीं है। जब किसी प्रकार से मेरी आवश्यकता होगी, तो मुझसे सहायता ली जा सकेगी। मेरे नियुक्ति-पत्र में लिखा है कि मैं आपकी अध्यक्षता में कार्य करने के लिए लिया गया हूँ। इस कारण आप लिखित आज्ञा देंगे, तो मैं बिना आपत्ति के उसे स्वीकार कर लूंगा।"

"मैं लिखकर नहीं दे सकता।"

"तो आप मेरा यह त्याग-पत्र ले लें और महाराज के पास भेज दें। इसके साथ आप महाराज को लिख सकते हैं कि इस परिस्थिति में मण्डल मेरे बिना कार्य कर रहा है।"

यह बात सेठ सोमदेवजी को पसन्द आयी। उन्होंने कहा—"त्याग-पत्र दिखाइये।"

पण्डित वीरभद्र ने अपनी जेब से निकालकर महाराज के नाम लिखा हुआ एक पत्र उपस्थित कर दिया। पत्र में लिखा था—

"महाराजाधिराज कच्छाधिपति की सेवा में पण्डित वीरभद्र का आशीर्वाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुँचे।

"निवेदन है कि भद्रकच्छ में पहुँचकर मुझे यह ज्ञात हुआ है कि मण्डल के शेष सदस्यों को किसी कारण से मुझ पर विश्वास नहीं रहा। इस अवस्था में यह उचित प्रतीत नहीं होता कि मैं इस प्रतिनिधिमण्डल में काम करूँ। अतः मेरा निवेदन है कि प्रतिनिधिमण्डल से मेरा त्याग-पत्र स्वीकार किया जाये और मुझे कार्यमुक्त किया जाये।"

"ठीक है, किन्तु यह लिखना उचित प्रतीत नहीं होता कि शेष सदस्यों का आप पर विश्वास नहीं रहा। ऐसा लिखा होने पर हमें आप पर अविश्वास का कारण लिखना होगा।"

पण्डित वीरभद्र ने कहा—"ऐसा लिखना ही उचित होगा। मैं किसी से भी कुछ छिपाता नहीं हूँ।"

"तब ठीक है। अब मैं आपको यह आदेश देता हूँ कि आप इस मकान से बाहर न जायें।"

"ठीक है, मैं आपकी आज्ञा का पालन करूँगा।"

इस प्रकार बात हो गयी।

सेठ सोमदेवजी का विचार था कि पण्डित वीरभद्र का कार्य एवं सुझाव युक्तिसङ्गत है।

: 12 :

पण्डित वीरभद्र ज्यों ही अध्यक्ष के आगार से बाहर निकले, शङ्कर उनके सामने आकर खड़ा हो गया और उनके साथ-साथ उनके आगार में जा पहुँचा।

पण्डितजी ने शङ्कर से कहा—"अब मुझे मण्डल के कार्य से मुक्त कर दिया गया है।"

"और मुझे आदेश दिया गया है कि मैं आप पर दृष्टि रखूँ, ताकि आप यहाँ से भागकर शत्रु के आश्रय में न चले जायें।"

"मैंने अध्यक्ष महोदय को वचन दिया है कि मैं अपने को बन्दी मानूंगा।"

इस बात को सुनकर शङ्कर मुस्कराया और कुछ विचारकर बोला—"परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मुझे इस विषय में कोई आदेश नहीं दिया गया कि आप किसी से सम्पर्क नहीं रख सकते। यदि आप किसी से लिखकर अथवा भेंटकर सम्पर्क बनाना चाहें, तो मैं उसमें सहायक हो सकता हूँ।"

पण्डित वीरभद्रजी का सतर्क उत्तर था—"मैं स्वयं को अध्यक्ष का बन्दी मानता हूँ और बन्दी का यह अधिकार नहीं कि वह बिना बन्दीगृह के अधिकारी की स्वीकृति के किसी से सम्पर्क बनाये।"

"पण्डितजी! आप बहुत भोले हैं। आपको बन्दी बनाकर शीघ्र ही पुरिका भेजने का आदेश होने वाला है।"

"तब तो ठीक है। मैं अपनी सफ़ाई महाराज के सम्मुख प्रस्तुत कर दूंगा।"

शङ्कर के मुख पर असन्तोष दिखाई दे रहा था, परन्तु पण्डित वीरभद्र को यह बात स्पष्ट दिखाई दे रही थी कि शङ्कर उन्हें भड़काकर कोई ऐसा काम उनसे कराना चाहता है, जिससे उन्हें पुरिका जाने पर दण्ड में फाँसी मिल सके।

पण्डित वीरभद्र ने शङ्कर से कहा—"किसी सेवक को कहकर मेरे लिए अल्पाहार यहीं मंगवा दो।"

शङ्कर लपककर उठा और शिविर के भोजनालय में चला गया। वह चाहता था कि अल्पाहार स्वयं लाकर पण्डितजी को खिलाये, परन्तु शङ्कर के जाते ही पण्डितजी ने अपनी जेब से एक काग़ज़ निकाला और बाहर खड़े भद्रकच्छ के एक सेवक को देते हुए उससे कहा—"तुरन्त जाकर यह पत्र पण्डित भृगुदत्तजी को दे आओ।

भद्रकच्छ के निवासियों में पण्डित वीरभद्र का अत्यधिक मान था और आयुक्त द्वारा नियुक्त वह सेवक भद्रकच्छ का ही रहनेवाला था। वह उसी समय आयुक्त को ढूंढ़ने चल दिया।

इधर शङ्कर को अल्पाहार लाने में आधी घड़ी लग गयी। उसके साथ भद्रकच्छ का एक पाचक थाल में अल्पाहार लिए हुए था।

पाचक ने अल्पाहार लाने की सफ़ाई में शङ्कर से कही हुई बात कह दी। पाचक ने कहा—"पुरिका के यह पण्डित कह रहे थे कि आप किसी रोग के कारण अपने कमरे से बाहर नहीं आ सकते, इसी कारण आपका भोजन यहाँ ले आया हूँ।"

वीरभद्र ने पूछ लिया—"क्या अन्य लोग भोजन ले रहे हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ पण्डितजी।"

पण्डितजी हाथ धोकर पहले ही भोजन करने के लिए चौकी पर आ बैठे थे। भोजन सामने रखा गया, तो वह भोजन करने लगे। पाचक जल लेने गया, तो पण्डित वीरभद्र ने शङ्कर से पूछ लिया—"आपने यह असत्य भाषण किया है और प्रतीत होता है कि इस पाचक को आपके कथन पर विश्वास नहीं हुआ। फिर भी आपके असत्य भाषण का समाचार गाँव-भर में फैल जायेगा, किन्तु यह ठीक नहीं होगा।"

शङ्कर चुप रहा। पाचक एक लोटे और गिलास में जल ले आया। शङ्कर पण्डितजी की बात का उत्तर नहीं दे सका।

पण्डितजी ने भोजन किया और हाथ धोने व कुल्ला करने के बाद पलंग पर लेट गये।

पाचक बरतन उठाकर चला गया, तो शङ्कर धरती पर बैठ गया। पण्डित वीरभद्र ने समझ लिया कि शङ्कर उन पर देख-रेख करने के लिए ही रखा गया है। उन्होंने शङ्कर से न जाने को कहा और न उससे अनावश्यक कुछ कहा।

भृगुदत्त आगार के बाहर आये और वहाँ शङ्कर को बैठा देखकर चुपचाप बैठ गये। प्रतिनिधिमण्डल के चारों सदस्य राजप्रासाद पर पहुँचे, तो उनको बैठकघर में बैठा दिया गया। उन्हें महाराज जयदमन के समक्ष उपस्थित करने में आधा घण्टा लग गया।

इतनी प्रतीक्षा करने पर एक सेवक आया और प्रतिनिधिमण्डल को एक अन्य आगार में ले गया। वहाँ जयदमन एक उच्च आसन पर बैठा था। उससे कुछ नीचे आसन पर पद्मिनी बैठी थी और उनके पीछे मालती खड़ी थी। नियमानुसार नग्न खड्ग लिये सैनिक पीछे खड़े थे।

प्रतिनिधिमण्डल के चार सदस्य आये और नमस्कार कर सामने खड़े हो गये। जयदमन ने मण्डल के सभी सदस्यों को चौकियों पर बैठने के लिए कह दिया।

पाँच चौकियाँ रखी थीं, किन्तु उन पर बैठने वाले चार ही थे। बात पद्मिनी ने ही आरम्भ की। उसने कहा—"कल जो पत्र आपने नरसिंह के हाथ भेजा था, उसमें मण्डल के पाँच सदस्यों के नाम थे और आप चार ही आये हैं। आपके पाँचवें सदस्य कहाँ हैं?"

उत्तर सोमदेव ने दिया। उसने कहा—"वह अचानक बीमार हो गये हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इस कारण हम उन्हें अपने साथ नहीं लाये।"

"मेरी राय में हमारे निजी चिकित्सक को भेजा जा सकता है।"

"हमने उनकी चिकित्सा का प्रबन्ध कर दिया है, आशा है वह कल तक स्वस्थ हो जायेंगे।"

इसके उपरान्त प्रतिनिधिमण्डल के अध्यक्ष ने मण्डल के वहाँ आने के कारण का वर्णन किया। उसने कहा—"श्रीमानजी! लगभग एक वर्ष से कच्छ-निवासी यह देख रहे हैं कि आपके सैनिक कच्छ-नरेश के राज्य-क्षेत्र में घुसकर लूट-मार मचा रहे हैं। कच्छ-निवासियों का यह प्रतिनिधिमण्डल आपसे निवेदन करने आया है कि यदि राजा और राज्य अपने-अपने देश की सीमाओं का उल्लंघन न करें, तो ठीक रहेगा, अन्यथा दो राज्यों में संघर्ष हो सकता है और तदनन्तर युद्ध भी हो सकता है। युद्ध का परिणाम कभी शुभ नहीं होता और नर-हत्या के अतिरिक्त अर्थ की भी विपुल हानि होती है।"

इस समय पद्मिनी ने अपने हाथ के संकेत से अध्यक्ष को ठहरने के लिए कहा—"इतना सन्देश महाराज को बता दें, तदुपरान्त थोड़ा-थोड़ा कहें, जिससे आपके भाषण का शब्दशः अनुवाद महाराज को समझाया जा सके।"

सेठ सोमदेवजी चुप हुए, तो मालती ने शक-भाषा में जयदमन को कुछ समझा दिया। जब वह कह चुकी, तो अध्यक्ष ने कहा—"हम कच्छ-निवासी आपसे निवेदन करने आये हैं कि आप सैनिकों को लेकर अपने राज्य में चले जायें, तो हम आपसे मैत्रीपूर्ण व्यवहार रखते हुए आपके देश से व्यापार-सम्बन्ध बनायेंगे। उस व्यापार से शक-राज्य को अपार धन का लाभ होगा।"

मालती ने मण्डल के अध्यक्ष के कथन का अनुवाद सुना दिया।

अन्त में अध्यक्ष ने कहा—"हम शक-महाराज से आश्वासन चाहते हैं कि वह हमारी प्रार्थना पर उचित कार्रवाई करने का आदेश देंगे।"

इसके उत्तर में पद्मिनी ने कहा—"आपका सन्देश महाराज को अक्षरशः बता दिया गया है और इसका उत्तर आपको कल इसी समय मिल जायेगा। तब तक आप भद्रकच्छ में सुखपूर्वक रहें। यदि किसी प्रकार की असुविधा हो, तो हमारे इस क्षेत्र के आयुक्त पण्डित भृगुदत्त को बतायें। यथाशक्ति उस असुविधा को दूर करने का प्रयत्न किया जायेगा।"

इस समय शूरसेन ने कहा—"महाराज से हमारा एक निवेदन है। हमारी रक्षार्थ कुछ लोग हमारे साथ आये थे। कल हमारे पहुँचने से पूर्व उन्हें बन्दी बना लिया गया है। हमारी मांग है कि उन्हें छोड़ दिया जाये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तर पद्मिनी ने ही दिया। उसने कहा—"हमें यह सूचना मिली है कि उन बन्दी बनाये दो सौ व्यक्तियों पर यहाँ सैनिक-शिविर में तोड़-फोड़ करने का आरोप है। उन पर आज मध्याह्न के समय अभियोग चलाया जायेगा। यदि आप अपने किसी प्रतिनिधि को उस अभियोग में उपस्थित रहने तथा पकड़े गये बन्दियों को सम्मति देने के लिए न्यायालय में उपस्थित रहने की स्वीकृति चाहते हैं, तो वह मिल सकती है।"

"परन्तु महारानीजी! वे आपकी प्रजा नहीं हैं। इस कारण आप उन्हें पकड़ नहीं सकते।"

"यह बात न्यायालय के समक्ष उपस्थित की जा सकती है। यदि यह सिद्ध होगा कि वे अपने देश के नागरिक नहीं और यह भी सिद्ध हो गया कि वे तोड़-फोड़ करने का यत्न नहीं कर रहे थे, तो न्यायालय उन पर अभियोग चलने की स्वीकृति नहीं दे सकेगा। तब वे राज्य के बन्दी हो जायेंगे और उन्हें वही दण्ड दिया जायेगा, जो किसी विदेशी गुप्तचर को ऐसे अपराधों के सम्बन्ध में दिया जाता है।"

"वह दण्ड क्या हो सकता है?"

"देश-निष्कासन से लेकर कुछ भी हो सकता है। तब उनके अपराधों की सूची महाराज के सम्मुख प्रस्तुत की जायेगी और महाराज ही उन्हें दण्ड देंगे। हमें अभी-अभी यह सूचना मिली है कि आपके प्रतिनिधिमण्डल के एक सदस्य और एक सेवक भी इस तोड़-फोड़ में सम्मिलित हैं। इस जाँच में महाराज हस्तक्षेप नहीं कर रहे। उनका हस्तक्षेप तो जाँच के उपरान्त ही आवश्यकता होने पर काम में लाया जायेगा।"

शूरसेन ने कहा—"हम महाराज के राजसी मेहमान हैं। हमारे काम पर आपके सेवकों का अधिकार नहीं होना चाहिये।"

"एक न्यायाधीश नियुक्त किया गया है, जो इन सब अपराधियों के अपराध का दण्ड देने का निश्चय करेगा। वह इस प्रतिनिधिमण्डल के सदस्य को अपराध के वृत्तान्त के साथ महाराज के सम्मुख उपस्थित कर देगा।"

इस पर जयदमन उठ खड़ा हुआ और मालती ने अगले दिन महाराज के मण्डल से मिलने की बात बता दी।

विवश प्रतिनिधिमण्डल भी उठा और जयदमन के पद्मिनी के साथ चले जाने पर राजप्रासाद से बाहर निकलकर अपने शिविर को चला गया।

मार्ग में शक-सैनिकों की देख-रेख होने के कारण परस्पर कोई बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं हुई। शूरसेन को यह भय सता रहा था कि उसे पकड़ लिया जायेगा। उसे आश्चर्य था कि न जाने कौन-कौन सेवक पकड़ा जायेगा। अधिक सम्भावना तो शङ्कर के पकड़े जाने की थी। पण्डित वीरभद्र और शूरसेन के बीच वार्तालाप वही चला रहा था, परन्तु तोड़-फोड़ करनेवालों से सम्पर्क रखनेवाला काई अन्य था।

शिविर में पहुँचते ही सेवकों ने अध्यक्ष को बताया कि पण्डित वीरभद्र और शङ्कर को शिविर के ही एक आगार में बन्दी बना लिया गया है तथा शक-सैनिक उन्हें भाग जाने से रोकने के लिए आगार के बाहर खड़े हैं।

इस नयी स्थिति पर विचार करने के लिए सब सदस्य अध्यक्ष के आगार में पहुँच गये, आगार को भीतर से बन्द कर बैठ गये और बातचीत होने लगी। सेवकों के नायक को भीतर बुला लिया गया और उससे वीरभद्र और शङ्कर के पकड़े जाने का वृत्तान्त पूछा जाने लगा।

नायक ने बताया—"शकराज के निवास-स्थान पर जाने के उपरान्त वहाँ का आयुक्त दस सैनिकों के साथ आया और शङ्कर का नाम लेकर उसके विषय में पूछने लगा। जब शङ्कर सामने आया, तो आगन्तुक ने उससे पूछा कि पण्डितजी कहाँ हैं?

"शङ्कर ने बताया कि वह अपने आगार में हैं। इस पर आयुक्त ने पूछा कि वह मण्डल के साथ नहीं गये?

"शङ्कर ने बताया कि वह रुग्ण हैं, इस कारण जा नहीं सके।"

आयुक्त ने कहा—"महाराज की आज्ञा से शङ्कर और पण्डितजी दोनों राज्य के बन्दी हैं। आप दोनों इस बग़ल वाले आगार में आइये। आज मध्याह्न के उपरान्त आप पर अभियोग चलेगा। इस पर दोनों को इस कोनेवाले आगार में लाकर बाहर प्रहरी बैठा दिये गये हैं।"

इसके उपरान्त नायक को आगार से बाहर कर विचार-विनिमय होने लगा। शूरसेन का प्रस्ताव था—"मण्डल के किसी सदस्य का ऐसा अपमान सहन नहीं करना चाहिये।"

अध्यक्ष ने मुसकराते हुए कहा—"परन्तु शूरसेनजी! आपने ही तो प्रातःकाल कहा था कि यह सदस्य अपनी लड़की के मोह में अपने राज्य से विद्रोह कर रहा है। अतः इसे बन्दी बनाकर पुरिका भेज दिया जाये। अब वह शकराज का बन्दी हो गया है, तो हम बिना किसी प्रकार का नियम भंग किये इस सदस्य से छुट्टी पा गये हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु सोमदेवजी! शकराज का हमारे एक साथी को पकड़ लेना तो हमारे राज्य का अपमान किया जाना है। इसके प्रतिकार में हमें यहाँ से लौट जाना चाहिये और शकराज के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर देनी चाहिये।"

"तो क्या सहस्रों वर्गमील क्षेत्र पर अधिकार जमा लेने से भी अधिक अपमान हुआ है? उस समय तो आपके मन्त्रिमण्डल ने युद्ध की घोषणा नहीं की, अब राज्य के एक विद्रोही के पकड़े जाने पर क्या आप युद्ध कर सकेंगे?"

शूरसेन मौन हो गया। वह मन्त्रिमण्डल के ज्ञान के बिना की गयी तोड़-फोड़ की कार्रवाई की चर्चा मन्त्रिमण्डल के समक्ष करना नहीं चाहता था। वास्तव में, मन्त्रिमण्डल के अधिकांश सदस्य किसी भी मूल्य पर युद्ध करने के पक्ष में नहीं थे। वह स्वयं वहाँ युद्ध का प्रस्ताव कर चुका था और तब मन्त्रिमण्डल ने उसके प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया था।

इस पर शूरसेन बात बदलकर अध्यक्ष से पूछने लगा—"अपने साथियों की न्यायालय में सुरक्षा का प्रबन्ध किस प्रकार किया जाये?"

अध्यक्ष सेठ सोमदेव ने पूछा—"पहले आप यह बताइये कि वे जो कल पकड़े गये थे और पण्डित वीरभद्र आदि क्या अपने आदमी हैं?"

"निस्सन्देह। वे जो कल पकड़े गये थे, हमारी रक्षार्थ ही यहाँ आये थे और पण्डित वीरभद्र का जो भी दोष है, उसका सम्बन्ध शक-राज्य से नहीं है। उनके दोष की सूचना हमने अपने राजाधिराज को भेज दी है। वही उस पर निर्णय दे सकते हैं। मैं समझता हूँ कि पण्डित वीरभद्र ने शकराज के विरुद्ध कुछ भी नहीं किया।

"मुझे आश्चर्य है कि पण्डित वीरभद्र यहाँ की महारानी के पिता हैं और उन्होंने ही यह सूचना दी थी कि प्रतिनिधिमण्डल के एक सदस्य और उसके सेवक को भी बन्दी बनाने की आज्ञा हो चुकी है। इसका अर्थ यह हुआ कि महारानी को यह ज्ञात था कि उनका पिता बन्दी बनाया जाने वाला है।"

"यह बात तो मुझे भी समझ में नहीं आयी। मैं तो यह समझा था कि मुझे ही बन्दी बनाया जा रहा है, परन्तु पण्डित वीरभद्र के बन्दी बनाये जाने पर आश्चर्य हुआ है।"

सेठ सोमदेव ने कहा—"यहाँ की महारानी अति भयंकर जीव प्रतीत होती है।"

यह सुनकर अन्य सदस्य मुख देखते रह गये। वे भी भयभीत होते प्रतीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो रहे थे।

सेठ सोमदव का कहना था—"सब बन्दियों की सुरक्षा का प्रबन्ध मैं करूँगा।"

"कैसे करेंगे?"

"मैं स्वयं न्यायालय में जाऊँगा और वहाँ की कार्रवाई पर आपत्ति करूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

:1:

अपहरण होने पर पद्मिनी को जिस समय यह पता चला कि जयदमन उस पर बल-प्रयोग करेगा, वह उसी समय से मन में विचार करने लगी थी कि इस बलात्कार का क्या प्रतिकार करे? वह अपने जीवन का अन्त करना जानती थी। श्वास ऊपर चढ़ाकर प्राण छोड़ने की विधि उसे बतायी गयी थी। यह एक क्रिया हो सकती थी। दूसरी क्रिया यह हो सकती थी कि बलात्कार के उपरान्त वह जयदमन की हत्या करने का प्रयत्न करे। तदनन्तर आत्महत्या करे। इन दोनों के अतिरिक्त एक तीसरा विकल्प भी था। वह समझती थी कि जयदमन एक सुदर्शन एवं ओजस्वी युवक है। यदि वह होनी को स्वीकार कर ले, तो वह एक अभिलाषित पति हो सकता है।

क्या यह तीसरा विकल्प सम्भव है? पद्मिनी यही विचार करने लगी थी। जब मालती उसे जयदमन की रुचि बता रही थी, तो वह तीनों विकल्पों पर विचार कर रही थी। उसने विचार किया कि क्या यह सुदर्शन युवक उससे विवाह कर और उसे अपनी पत्नी बनाकर पत्नी के अधिकार देगा? अन्य विकल्प, तो इसमें सफलता न मिलने पर प्रयोग किये जा सकते हैं।

अतः उसने मालती को अपने मन की बात बतायी। उसने कहा—"मैं इस युवक से विवाह कर सकती हूँ, किन्तु यदि उसने विवाह के बिना मेरे साथ बलात्कार किया, तो मैं जीवन का अन्त कर लूंगी।"

मालती ने जयदमन को पद्मिनी का विचार बताया, तो उसने पद्मिनी को सिर से पाँव तक एक बार देखा और उसका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। विवाह हुआ और जयदमन का पद्मिनी से प्रणय-मिलन हुआ। अगले दिन पद्मिनी जयदमन से पहले शय्या से उठी और अपने भविष्य के विषय में विचार करने लगी। उसने उसी समय शक-महारानी का कर्तव्य-पालन करने की योजना बना ली और उसके उपरान्त जयदमन ने जो कुछ भी किया, वह पद्मिनी के हाथ में एक कठपुतली के कार्य से अधिक नहीं था।

पद्मिनी ने अपने पिता से मिलने की इच्छा व्यक्त की, तो जयदमन ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका व्यावहारिक ढंग यह बताया कि भद्रकच्छ पर अधिकार कर लिया जाये। पद्मिनी ने अधिकार कर लेने को बुरा नहीं माना, किन्तु वहाँ के लोगों को राजा का संरक्षण प्रदान करने की बात कह दी। उसने राजा और प्रजा के सम्बन्ध में मुख्य बात कह दी। उसने कहा—"राजा सब प्रकार के भय से प्रजा की रक्षा करता है और प्रजा राजा का कोष धन-धान्य से भर देती है। वह राजा को परमात्मा के समान पद पर आसीन कर देती है।"

जयदमन ने मालती के द्वारा पूछा—"यह संरक्षण किस प्रकार दिया जा सकता है?"

पद्मिनी ने प्रजा के धन और जन की रक्षा और उनके जीवन को सुख और स्वतन्त्रता से व्यतीत करने के अवसर का ढंग समझाया। इसके प्रतिकार में प्रजा का स्वेच्छा से कर देना और राजा के लिए अपने प्राणों तक की आहुति देने की बात बता दी।

पति-पत्नी में समझौता हो गया और एक सप्ताह की तैयारी के उपरान्त शक-सेना ने भद्रकच्छ और उसके समीपवर्ती क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। यह सारा क्षेत्र मधुमति के पश्चिमी तट तक फैला हुआ था। अभी पूर्वी तट पर अधिकार नहीं किया गया था।

पद्मिनी ने भृगुदत्त की सहायता से गाँव के सब बुद्धिमान् लोगों को शकराज की सहायता करने के लिए तैयार कर लिया और एक मास की अवधि में ही इस क्षेत्र का सुव्यवस्थित शासन होने लगा।

भगुदत्त ने पण्डित वीरभद्रजी से महाभारत पढ़ा था और उसे राजा के प्रमुख कर्तव्यों का ज्ञान था। पद्मिनी ने भी इस ग्रन्थ का अध्ययन किया था, अत: शासन का कार्य उचित ढंग से चलने लगा।

इन दिनों भृगुदत्त ने शासन के अत्यावश्यक अंग गुप्तचर-विभाग की आवश्यकता और योजना पर स्वीकृति लेकर गुप्तचर-विभाग में योग्य युवकों को भरती कर पुरिका भेज दिया। गुप्तचरों ने ही यह सूचना भेजी थी कि पुरिका के अनेक लोग शक-राज्य में चोरी-चोरी तोड़-फोड़ का कार्य करने आ रहे हैं। उन्हें आने दिया गया, किन्तु उन पर भी गुप्तचर नियुक्त कर दिये गये। इधर भद्रकच्छ के कुछ लोग भी इन तोड़-फोड़ करनेवालों में सम्मिलित हो गयें और उनके भेद भृगुदत्त को देने लगे। जिस दिन प्रतिनिधि-मण्डल भद्रकच्छ पहुँचा, उसी दिन कुछ लोग सेनाध्यक्ष के नव-निर्मित मकान में कुछ तोड़-फोड़ करने में सफल हुए और इस प्रकार पुरिका से आये दो सौ से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अधिक लोग पकड़ लिये गये।

जब प्रतिनिधिमण्डल बिना पण्डित वीरभद्र के जयदमन से मिलने की तैयारी कर रहा था, पण्डित वीरभद्र अपने पर सन्देह किये जाने और बन्दी बनाकर वापस पुरिका भेजे जाने की आशङ्का का एक पत्र भृगुदत्त को लिख रहे थे। इस पत्र के अन्त में उन्होंने लिखा था—"अब मैं न स्वतन्त्र रूप में और न बन्दी बनकर पुरिका जाना चाहता हूँ। वहाँ के अधिकारी मूर्ख प्रतीत होते हैं। कम-से-कम राजनीति तो नहीं समझते। मैं उनके साथ काम नहीं कर सकता। वहाँ से अधिक सक्षम व्यवस्था यहाँ दिखाई देती है। मैं प्रतिनिधिमण्डल के लौटने से पूर्व इनसे पृथक् होकर यहीं रहने के लिए प्रयत्न कर रहा हूँ। तुम समय पर मेरी सहायता कर दो।"

यह पत्र उस समय लिखा गया था, जब शङ्कर अभी तक पण्डित वीरभद्रजी से मिलने नहीं आया था, परन्तु इस पत्र को भृगुदत्त के पास तब भेजा जा सका, जब शङ्कर ने बताया कि प्रतिनिधिमण्डल पण्डित वीरभद्रजी के बिना शकराज से मिलने जा रहा है। वहाँ उनके रुग्ण होने की बात कही जायेगी। जब शङ्कर पण्डितजी के भोजन की व्यवस्था करने के लिए भोजनालय में गया, तो पण्डितजी ने प्रातः का लिखा पत्र भद्रकच्छ के एक प्रहरी के हाथ भृगुदत्त के पास भेज दिया।

भृगुदत्त विद्युत्-गति से विचार करते थे। वह तुरन्त शक-महारानी से मिले और वहाँ से एक योजना बनाकर लौट आये। जब पुरिका का प्रतिनिधि-मण्डल शकराज से भेंट करने वहाँ गया, तो भृगुदत्त पद्मिनी से पण्डित वीरभद्रजी की कठिनाई पर विचार कर रहे थे। इसी कारण प्रतिनिधिमण्डल को भेंट के लिए एक घड़ी प्रतीक्षा करनी पड़ी थी।

इसी योजना के अनुसार पद्मिनी ने प्रतिनिधिमण्डल को बताया था कि उन सदस्यों में से एक को बन्दी बनाया जा रहा है।

भृगुदत्त ने भद्रकच्छ से एक विद्वान् ब्राह्मण महादेव शर्मण को न्याय-सम्बन्धी कार्य के लिए बुलाया हुआ था। पुरिका के छापामारों और पण्डित वीरभद्र को महादेव के न्यायालय में ही उपस्थित किया गया। जब दो सौ से ऊपर बन्दियों और पण्डित वीरभद्र तथा शङ्कर को उपस्थित किया गया, तो भृगुदत्त ने बन्दियों के विषय में न्यायाधीश के समक्ष आरोपों का वर्णन कर दिया।

भृगुदत्त ने कहा—"ये लोग कच्छ-राज्य के रहनेवाले हैं और वहाँ से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक-सेना में आतंक फैलाने के लिए भद्रकच्छ आये हैं। इन लोगों ने सैनिक-शिविर में कार्य करना स्वीकार किया और कल प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व इन्होंने शक-सेनाध्यक्ष क्रीच के मकान पर धावा बोल दिया। वहाँ शकों के साथ इनका युद्ध हुआ और क्रीच ने अत्यन्त शूरवीरता से अपनी रक्षा की। हमारे कुछ गुप्तचरों ने—जो इन तोड़-फोड़ करनेवालों में मिले हुए थे—इनको अपने प्रयास से विफल किया था और उन्होंने ही इन्हें बन्दी बनाने में सहायता की है।"

इसी समय प्रतिनिधिमण्डल के अध्यक्ष न्यायालय में आये। न्यायाधीश ने उन्हें सम्मान सहित बैठाया और न्यायालय की कार्रवाई जारी रही। न्यायाधीश महादेव ने बन्दियों से पूछा—"क्या तुममें से कोई इस आरोप के विषय में कुछ कहना चाहता है?"

इस पर एक बन्दी ने कहा—"मैं कच्छ-सेना का एक सैनिक हूँ। मुझे अपने नायक से यह आदेश प्राप्त हुआ था कि युद्ध-सम्बन्धी जाँच-पड़ताल करने के लिए कुछ अन्य लोगों के साथ मुझे कच्छ-राज्य भेजा जा रहा है, परन्तु नायक ने मार्ग में ही हमें बताना आरम्भ कर दिया कि हम वहाँ तोड़-फोड़ करने के लिए भेजे जा रहे हैं। मुझे तोड़-फोड़ पसन्द नहीं थी। यह शूरवीरों का काम नहीं। यह चोर-डाकुओं का काम है। मैं इसे पसन्द नहीं करता। मैंने नायक से कहा भी कि हम सैनिक हैं और यह काम क्षत्रियों का नहीं, अपितु शूद्रों का है।

"नायक ने मुझे और मेरे साथियों को समझाया कि यह कार्य राजा और देश के हित में है। मेरे संशय का निवारण नहीं हुआ और मुझे अनिश्चित मन से यहाँ आना पड़ा। हमें शिविर-निर्माण का कार्य मिल गया। परसों रात हमारे नायक ने हमें सूर्योदय से दो घण्टे पूर्व शक-सेनाध्यक्ष के निवास-गृह के बाहर एकत्रित होने का आदेश दिया गया और हमें बताया गया कि दिन चढ़ने से पूर्व सेनाध्यक्ष के आवास में घुसकर वहाँ के सब घटकों की हत्या कर देनी चाहिये।

"हमने एक सैनिक के नाते नायक की आज्ञा का पालन किया, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे आक्रमण की सूचना वहाँ के अधिकारियों को पहले ही मिल चुकी थी। ज्योंही हम मकान में घुसे, वहाँ एकत्रित सैनिकों से हमारा युद्ध होने लगा। उस युद्ध में दोनों ओर के लोग मारे गये, किन्तु हम पराजित हुए और बन्दी बना लिये गये। हम मकान को केवल कुछ ही क्षति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुँचा सके।

"हम यह आशा करते थे कि हमें निःशस्त्र कर मृत्यु के घाट उतार दिया जायेगा, परन्तु मैं देख रहा हूँ कि हम पर अभियोग चलाया जा रहा है और हमें अपनी सफ़ाई देने का अवसर दिया जा रहा है।

"हम क्या सफ़ाई दे सकते हैं? हमें तो यही कहना है कि हमारा कुछ भी दोष नहीं है। हमने अपने उच्चाधिकारियों की आज्ञा का पालन किया है। यदि किसी ने अपराध किया है, तो हमारे अधिकारियों ने किया है।"

इस वक्तव्य के उपरान्त न्यायाधीश द्वारा पूछा गया—"किसी अन्य को कुछ कहना है?"

इस पर एक अन्य सैनिक कहने लगा—"मैं यह कहना चाहता हूँ कि इस प्रकार के कार्य के लिए सैनिक दोषी नहीं ठहराये जाते, वे तो अपना कर्तव्य-पालन कर रहे होते हैं।"

न्यायाधीश ने प्रश्न किया—"यदि तुम्हें शक-सेना में भरती किया जाये, तो क्या तुम इसी प्रकार अपने कर्तव्य का पालन करोगे?"

"श्रीमानजी! मेरा कहना यह है कि ये छापे हमने अपने अधिकारियों के कहने पर मारे हैं। यदि इन छापों के लिए कोई दोषी है, तो वे अधिकारी हैं, जिन्होंने हमें ऐसा करने का आदेश दिया है। हमारे परिवार के लोग पुरिका एवं कच्छ-राज्यों में हैं। हम उन्हें छोड़कर यहाँ सेना का कार्य नहीं कर सकेंगे।"

"यदि हम कच्छ-राज्य को विजय कर लें, तब?"

"यदि हमारे साथ प्रजा-जैसा व्यवहार किया जायेगा, तो हम शकराज की सेवा कर सकेंगे।"

"कैसा व्यवहार चाहते हैं?"

"हमारे आंचार-व्यवहार में हस्तक्षेप न किया जाये तथा हमें भी शकों के समान समझा जाये।"

न्यायाधीश मुस्कराया और पूछने लगा—"और किसी को कुछ कहना है?"

जब सब मौन रहे, तो मण्डल के अध्यक्ष सेठ सोमदेवजी ने कहा—"क्या मैं कुछ कह सकता हूँ?"

इस पर न्यायाधीश महादेव शर्मण ने भृगुदत्त की ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखा और पूछा—"यह महानुभाव कौन हैं?"

"यहाँ आये प्रतिनिधिमण्डल के अध्यक्ष हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तब ठीक है, आप कहिये। क्या कहना चाहते हैं?"

"ये तीनों और अन्य सभी व्यक्ति सैनिक हैं अतः सभी निर्दोष हैं। इन्हें मुक्त कर देना चाहिये।"

"निर्दोष से आपका क्या अभिप्राय है? इन्होंने सेनाध्यक्ष के निवासस्थान पर छापा मारा है।"

"ये युद्ध कर रहे थे। युद्ध में जो मरने से बच जाते हैं, उनके हथियार छीनकर उन्हें अपने घरों को वापस भेज दिया जाता है।"

न्यायाधीश ने कहा—"घोषणा के बिना, युद्ध युद्ध नहीं कहलाता। उसे छापा मारना कहा जाता हैं। इस पर भी हम अध्यक्ष महोदय के कथन पर विचार कर सकते हैं। मैं इनसे प्रश्न करना चाहता हूँ कि आपका प्रतिनिधि-मण्डल यहाँ युद्ध करने आया है या शान्तिपूर्वक वार्तालाप करने? यदि आप लोग युद्ध करने आये हैं, तो मुझे आपको बन्दी बना लेने का अधिकार है और यदि शान्तिपूर्वक वार्ता करने आये हैं, तो ये लोग युद्ध नहीं कर रहे थे?"

अध्यक्ष निरुत्तर नहीं हुए थे। उन्होंने कहा—"युद्ध तो महाराज जयदमन और कच्छाधिपति महाराज सिंहनाद के मध्य हो रहा है। हमारा कहना है कि यह युद्ध शकराज महाराज जयदमन ने आरम्भ किया है। वह कच्छराज के क्षेत्र में घुस आये हैं। कच्छराज उसका उत्तर दे रहे हैं। हम कुछ नागरिक आपके महाराज से वार्तालाप द्वारा अपना सम्बन्ध बनाने आये हैं। यह वार्तालाप वर्तमान न्यायालय के विचार का विषय नहीं है।"

इस पर आयुक्त भृगुदत्त ने न्यायाधीश का ध्यान आकर्षित कर कहा—"मैं एक अन्य बन्दी को न्यायाधीश के समक्ष उपस्थित करना चाहता हूँ।"

"हाँ, कर सकते हो।"

इस पर वीरभद्र के समीप खड़े शङ्कर को उपस्थित कर दिया गया और भृगुदत्त ने कहा—"मैं इस बन्दी से कुछ प्रश्न करना चाहता हूँ।"

"हाँ, कर सकते हो।"

"क्या आप शैव हैं?"

"हाँ, मैं भगवान् शङ्कर को अपना इष्टदेव मानता हूँ।"

"आप उसे साक्षी मानकर सौगन्धपूर्वक कहें कि आप इस न्यायालय में जो कुछ भी कहेंगे, सत्य ही कहेंगे।"

"मैं सौगन्धपूर्वक कहता हूँ कि जो कुछ कहूँगा, सत्य ही कहूँगा।"

"ये बन्दी किसकी आज्ञा से यहाँ कार्य करने आये हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शङ्कर मौन रहा। उसने उत्तर नहीं दिया।

न्यायाधीश ने पूछा—"शङ्करजी! बोलते क्यों नहीं?"

शङ्कर ने इस पर भी उत्तर नहीं दिया।

इस पर भृगुदत्त ने पूछा—"जब आपको बन्दी बनाया जा रहा था, तो आप पण्डित वीरभद्रजी से क्या कह रहे थे?"

शङ्कर अब भी मौन ही रहा।

भृगुदत्त का अगला प्रश्न था—"क्या आप जानते हैं कि पण्डित वीरभद्र के विरुद्ध कच्छराज के पास आरोप-पत्र भेजा गया है?"

अब शङ्कर बोला—"हाँ, मुझे ज्ञात है।"

"क्या इस आरोप-पत्र में उन पर राजद्रोही होने का आरोप है?"

"हाँ, है।"

"कच्छराज में राजद्रोही को क्या दण्ड दिया जाता है?"

"देश-निष्कासन की आज्ञा दी जाती है अथवा फाँसी दी जाती है। यह आज्ञा महाराज ही दे सकते हैं।"

इस पर भृगुदत्त ने कहा—"श्रीमान्! जहाँ तक इन बन्दियों का सम्बन्ध है, इनकी छापा मारने की नियुक्ति कच्छराज ने नहीं की। यह मण्डल के ही एक सदस्य का काम है। अतः इनको दण्ड देना किसी प्रकार भी उचित नहीं। मैं शूरसेनजी को पकड़कर यहाँ न्यायालय में उपस्थित करना चाहता था, परन्तु महाराज की आज्ञा है कि प्रतिनिधिमण्डल के सदस्यों को पकड़ा न जाये। मैंने पण्डित वीरभद्र को पकड़ा है। ऐसा उन्हें शकराज का बन्दी बनाने के लिए नहीं, अपितु महाराज का सम्बन्धी होने के नाते इस मन्त्रिमण्डल के अन्याय से बचाने के लिए अपने संरक्षण में ले किया है। हमें सन्देह था कि प्रतिनिधिमण्डल शकराज के इस सम्बन्धी को या तो मार्ग में मार डालता अथवा उन पर मिथ्या आरोप लगाकर उन्हें राज्य से मृत्यु-दण्ड दिलवा देता।"

अध्यक्ष सोमदेव आश्चर्य कर रहे थे कि शङ्कर ने वीरभद्र के विरुद्ध कार्रवाई किसलिए प्रकट कर दी? वह समझते थे कि शङ्कर का मौन रहना भी प्रतिनिधिमण्डल को दोषी सिद्ध करने के लिए पर्याप्त प्रमाण है।

इसी समय न्यायाधीश ने अपना निर्णय सुना दिया।

न्यायाधीश महादेव शर्मण ने कहा—"यह सिद्ध हो चुका है कि प्रतिनिधि-मण्डल के सदस्यों को तोड़-फोड़ करनेवालों का पता था और वे इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपराध के दोषी हैं, परन्तु महाराज ने इन्हें कच्छराज का प्रतिनिधिमण्डल स्वीकार किया हुआ है। अतः इनके विरुद्ध न्यायालय का विचार महाराज जयदमन की सेवा में भेज दिया जायेगा। यह उनका अधिकार है और इस विषय में वह अपने व्यवहार का निर्णय करें।

"हम तोड़-फोड़ करनेवाले व्यक्तियों को मृत्युदण्ड का भागी मानते हैं। इस पर भी ये लोग प्रतिनिधिमण्डल की आज्ञा से कार्य कर रहे थे, इसलिए इनको अथवा इनके स्वामी शूरसेन को दण्ड दिया जाये अथवा दोनों को दण्डित किया जाये, यह भी हम महाराज के विचाराधीन छोड़ते हैं। यदि हम इन्हें या इनके स्वामी को दण्ड देने के अधिकारी होते, तो निस्सन्देह इन्हें मृत्युदण्ड देकर इनसे न्याय करते। हम शङ्कर को मुक्त करते हैं और वीरभद्र को महाराज के संरक्षण में देने का निर्णय करते हैं।"

:2:

न्यायालय का निर्णय और पण्डित वीरभद्र को महाराज जयदमन की सेवा में भेज दिया गया। जयदमन को महादेव शर्मण का निर्णय मालती ने शक-भाषा में अनुवाद कर सुनाया, तो वह चकित रह गया। उसने मालती से कहा—"यह महादेव तो कोई चतुर व्यक्ति प्रतीत होता है।"

"हाँ, यह भी पण्डित वीरभद्रजी का शिष्य है। न्यायाधीश के लिए महारानीजी ने ही इनके नाम का सुझाव दिया था।"

"तो यह महारानी के गुरुभाई हैं?"

"हाँ, महाराज।"

"महारानीजी को बुलाओ।"

उस समय पद्मिनी अपने आगार में सन्ध्या-काल का पूजा-पाठ कर रही थी। मालती गयी और पूजा से निवृत्त हुई पद्मिनी को बुला लायी। अब जयदमन भी देव-वाणी में सामान्य व्यवहार की बातें करने लगा था। बीच-बीच में वह शक-भाषा के शब्द भी बोल देता था और उन शब्दों को पद्मिनी समझने भी लगी थी। जयदमन ने कहा—"प्रिये! न्यायाधीश का निर्णय आया है और उसके साथ ही आयुक्त ने आपके पिताजी को भी भेजा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"आपने निर्णय सुना है? अब मेरे लिए क्या आज्ञा है?"

"न्यायाधीश के निर्णय से तो लगता है कि प्रतिनिधिमण्डल दोषी है। सम्भवतः इस तोड़-फोड़ में कच्छराज का हाथ नहीं है, किन्तु हम प्रतिनिधि-मण्डल से मिलना भी स्वीकार कर चुके हैं। उसके विरुद्ध न्यायाधीश निर्णय देने का अधिकार नहीं मानते।"

"तो अब आप क्या चाहते हैं?"

"मैं तो आरम्भ से ही यह विचार कर रहा हूँ कि सेना लेकर पुरिका पर धावा बोल दिया जाये। राज्य-कार्य सेना द्वारा ही सम्पन्न होते हैं। उन्हें बातचीत से नहीं सुलझाया जा सकता। आपने ही कहा था कि युद्ध अन्तिम उपाय है। इसका प्रयोग तब ही करना चाहिये, जब किसी प्रकार का अनर्थ होने की सम्भावना हो। इन लोगों ने शिष्टाचार का उल्लंघन किया है। अतिथि बनकर आतिथेय की हत्या का प्रयत्न किया है। ये दण्ड के भागी हैं।"

पद्मिनी ने कहा—"महाराज! मैं समझती हूँ कि अभी युद्ध का अवसर उपस्थित नहीं हुआ। हमने मधुमति के पश्चिम की ओर सहस्रों वर्गमील का क्षेत्र अधिकार में कर लिया है। सिन्धु नदी से लेकर मधुमति तक के क्षेत्र में अभी सुव्यवस्था स्थापित नहीं हुई और इस काम में अभी कई वर्ष लगेंगे। इस सुव्यवस्था से राज्य को कई करोड़ स्वर्ण प्रतिवर्ष की आय होने वाली है। उससे सेना का व्यय निकल सकेगा। वह समय होगा, जब हम अपना राज्य-क्षेत्र बढ़ायेंगे। अभी तो हमें कच्छराज से इस क्षेत्र पर अपना अधिकार मान्य कराना चाहिये।"

"वह कैसे होगा?"

"इस प्रतिनिधिमण्डल को यह कहकर वापस कर दीजिये कि हमने मधुमति तक के क्षेत्र पर अधिकार कर लिया है और हम समझते हैं कि हमारा अधिकार पूर्ण कच्छ पर होना चाहिये। यदि मधुमति तक हमारे अधिकार को मान्यता दी जाये, तो हम इस नदी से पूर्व की ओर बढ़ने का अपना विचार छोड़ सकते हैं।"

"इससे क्या होगा? क्या ये लोग युद्ध की तैयारी कर हम पर अचानक आक्रमण नहीं कर देंगे?"

"हमारी सेना आज सायंकाल तक यहाँ पहुँचनेवाली है। उसके दर्शन इन्हें हो जायेंगे। उनकी उपस्थिति में ये अपने राजा को आक्रमण न करने की ही सम्मति देंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझे सन्देह है कि ये ऐसा करेंगे।"

"हमारे गुप्तचर पुरिका तक पहुँचे हुए हैं। यदि उन्होंने आक्रमण की सूचना दी, तो हम अपनी तैयार सेना को कूच करने का आदेश दे देंगे। उस सेना का लक्ष्य होगा कच्छ-राज्य को पराजित कर वहाँ महाराज का राज्य स्थापित करना।"

"मुझे यह बात समझ में नहीं आती कि इस सारे झगड़े की जड़ को छोड़कर आज ही आक्रमण क्यों न कर दिया जाये?"

"हाँ, वह भी किया जा सकता है, परन्तु हमारा उद्देश्य केवल अपने राज्य को विस्तार देना है। अकारण युद्ध करना, तो पशुओं से भी इतर स्तर का कार्य करना है। पशु भी अकारण नहीं लड़ते। उनमें भी जब भोजन, पत्नी अथवा आश्रय-स्थान पर विवाद होता है, तब ही वे लड़ते हैं। वे शस्त्रास्त्र बनाना नहीं जानते, इसी कारण वे दाँतों और नाख़ूनों से लड़ते हैं। इस अन्तर से तो यही पता चलेगा कि हम शस्त्रास्त्र बनाने की कला जाननेवाले पशु हैं।"

जयदमन पद्मिनी के शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक सौन्दर्य से प्रभावित था। वह उसकी बातें तथा उसकी युक्तियाँ मुग्ध होकर सुनता और उनके अनुसार कार्य करता था।

पद्मिनी इस प्रभाव को जानती थी और इसका प्रयोग मानवता के हित में करती रहती थी। वह जानती थी कि कभी ऐसा भी हो सकता है कि उसका शारीरिक सौन्दर्य कालातीत हो जाये और उसकी युक्तियाँ और सदुपदेश फीके होने लगें। उस समय वह गरदन मरोड़कर उसकी हत्या भी कर सकता है, परन्तु उसके जन्मजात संस्कार थे कि वह शरीर नहीं, आत्मा है और आत्मा की कभी मृत्यु नहीं होती। उसे भावी जन्म इस जन्म के कर्मों के अनुसार ही मिलेगा। वह मरने से नहीं डरती थी, अपितु पाप-कर्म करने से डरती थी। यही कारण था कि वह अपना कार्य सद्बुद्धि से विचार कर ही करती थी।

आज जयदमन की महत्त्वाकांक्षाओं और पद्मिनी की सम्मति में प्रबल टकराव उठ खड़ा हुआ था। प्रातःकाल सन्देश आया था कि शक-सेना सायंकाल से पूर्व भद्रकच्छ पहुँच जायेगी। उसके लिए रहने का शिविर तैयार था। ज्यों-ज्यों सेना निकट आती जा रही थी, जयदमन की नाड़ियों में रक्त का दबाव बढ़ता जा रहा था। वह अपने पूर्वजों के शौर्य-कृत्यों को स्मरण कर स्वयं भी वैसे ही कृत्य करने की इच्छा करने लगा था।

जयदमन के मुख पर निराशा प्रकट होने लगी थी। मालती को महारानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
की बात में सार दिखाई दे रहा था। अतः उसने महारानी की बात का समर्थन करते हुए कहा—"महाराज! आपके पिता महाराज क्षत्रप चष्टन ने आजीवन युद्ध किये, परन्तु अपने एवं शत्रु के लाखों शूरवीरों के मारने के उपरान्त उन्हें क्या मिला? अपने लोग भी उन्हें क्रूर, निर्दय और आततायी कहते थे। इसका कारण था—यथा राजा तथा प्रजा। अपने राजा को शत्रु के साथ क्रूर व्यवहार करता देख वे भी अपने शत्रुओं के साथ वैसा ही व्यवहार करने लगते थे। उनके शत्रु प्रायः अपनी जाति के लोग ही होते थे। प्रायः लूट के माल और स्त्रियों के वितरण पर ही उनमें झगड़ा होता था और वे एक-दूसरे से लड़ने लगते थे।

"बड़े महाराज इसे पसन्द नहीं करते थे, परन्तु युद्ध के लिए उन्हें उन सैनिकों की आवश्यकता होती थी। अतः वह उनको डाँट-डपट नहीं सकते थे। महाराज के निधन के समय सेना में लूट-खसोट हो रही थी। इसीलिए सेना को शान्त रखने के लिए उन्हें उनको पड़ोसी राज्यों पर आक्रमण करने में संलग्न रखना पड़ता था।

"महारानी का यही तो कहना है कि एक सभ्य और समृद्ध शत्रु से युद्ध करने से पहले अपने सैनिकों को नियन्त्रण में रहकर काम करने का ढंग सिखाना होगा। सेना में सुव्यवस्था स्थापित किये बिना विजय की आशा नहीं करनी चाहिये।

"युद्ध जीतने के लिए इनको व्यवस्थित रखना परमावश्यक है। महाराज चष्टन राज्य-कला नहीं जानते थे, अतः जब कभी अकाल पड़ा अथवा अतिवृष्टि से नदी में बाढ़ आयी, तो सहस्त्रों व्यक्ति मारे गये। स्त्रियाँ, बालक, वृद्ध चीख़ें मारते अन्न के एक-एक दाने के लिए बिलखते हुए मर गये अथवा नदी की बाढ़ में बह गये। न आप उनकी कुछ सहायता कर सके और न आपकी सेना अपने एक भी प्रियजन की रक्षा कर सकी। महारानी चाहती हैं कि आप इस प्रकार की दैवी दुर्घटनाओं से अपनी प्रजा को बचाने का प्रबन्ध करें। तब आपकी प्रजा की सुख-सुविधा को देखकर अन्य देशों की प्रजा भी आपकी प्रशंसा करेगी और आपको अपने देश का राज्य करने के लिए आमन्त्रित करेगी। राज्य-विस्तार का वही उपयुक्त समय होगा। उस विस्तार में कुछ प्रयोजन होगा, जो महाराज की महत्त्वाकांक्षा से अधिक यश एवं कीर्ति देने वाला सिद्ध होगा।"

जयदमन को बात समझ में आ गयी। विवाह होने के उपरान्त पद्मिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उसे अन्य राज्यों में प्रजा और राजा की सुख-सुविधा का वर्णन सुनाया करती थी।

भद्रकच्छ में नव-निर्माण-कार्य की प्रगति देखकर जयदमन को भी प्रसन्नता होती थी। वह भृगुदत्त की कार्य-कुशलता का अनुभव कर रहा था। पन्द्रह-बीस दिन में ही उसने पण्डित वीरभद्र के मकान पर एक राजा के रहने योग्य राजप्रासाद निर्माण करा दिया था। यहाँ का छोटा-सा राजभवन खरीच के विशाल राजभवन से अधिक सुख-सुविधापूर्ण बन गया था।

सबसे बड़ी बात तो यह हुई कि डेढ़ मास के भीतर मधुमति के पश्चिमी तट पर एक विशाल सैनिक शिविर खड़ा हो गया था। लगभग एक लाख लोगों के रहने के लिए मकान, उनके क्रय-विक्रय के लिए दुकानें, उनके लिए भोजनालय तथा सैनिकों के मनोरञ्जन आदि के लिए भी साधन जुटा दिये गये थे।

इस सब निर्माण-कार्य पर अतुल धन व्यय हो रहा था, परन्तु वह धन व्यापारियों द्वारा दिये गये साप्ताहिक कर के रूप में एकत्रित हो रहा था। राज्य-कोष से बहुत कम धन निकालना पड़ा था।

राजप्रासाद के निर्माण के लिए भी भद्रकच्छ के लोग नियुक्त कर दिये गये थे। वे शक-सैनिकों से अधिक सभ्य एवं कार्य-कुशल थे।

पण्डित वीरभद्र को जब राजप्रासाद में लाया गया, तो सबसे पहले उनकी भेंट पद्मिनी से हुई। पद्मिनी ने पिता से कहा—"पिताजी! कुछ घण्टों के लिए बन्दी बनकर रहने से आपको कष्ट तो हुआ होगा। उसके लिए हम क्षमा चाहते हैं, परन्तु हमारी सूचना यह थी कि शूरसेन आपकी हत्या करा देना चाहता था। उसे यह विश्वास हो गया था कि तोड़-फोड़ की योजना का रहस्योद्घाटन आपने ही किया है।

"जहाँ तक हमारी सूचना थी, शूरसेन यह निर्णय नहीं कर सका था कि आपकी हत्या यहीं भद्रकच्छ में कराये और दोष यहाँ के राज्य पर लगवाये अथवा पुरिका जाते हुए मार्ग में हत्या कराये।

"उसे यहाँ हत्या कराने से शङ्कर ने मना किया था। शङ्कर का विचार था कि यदि यहाँ हत्या हो गयी, तो मैं उसे फाँसी पर लटकवा दूंगी और पकड़े गये दो सौ बन्दी भी मौत के घाट उतरवा दिये जायेंगे।

"शङ्कर के इस प्रकार धमकाने पर शूरसेन का मन अनिश्चित था। इसी समय आपका पत्र भृगुदत्तजी को मिला। उन्होंने तुरन्त निश्चय किया और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आपको अपनी सुरक्षा में ले लिया। प्रकट यह किया गया था कि आप शकराज के बन्दी हैं।"

"हाँ, शङ्कर ने मुझे इस विषय में बताया है और सम्भवतः शूरसेन के व्यवहार से रुष्ट होकर ही अब वह पुरिका वापस लौटना नहीं चाहता। उसकी माँ वहाँ है और उसने भृगुदत्त से कहा है कि उसे यहाँ बुलवा लें।"

पण्डित वीरभद्र की जयदमन से भी भेंट हुई। मालती दोनों के बीच द्विभाषिये का कार्य करती रही। जयदमन का कहना था—"पिताजी! अब आपको शक-राज्य की सेवा स्वीकार कर लेनी चाहिये।"

"यह मैं नहीं करूँगा। इसमें दो कारण हैं। एक तो यह कि राज्य अब मेरी लड़की का है और हमारे समाज में पिता लड़की के घर पर सेवा-कार्य नहीं कर सकता। दूसरा कारण यह है कि एक ब्राह्मण किसी राजा का वेतनधारी सेवक बने, तो उसे ब्राह्मण-पद से च्युत मान लिया जाता है। उसे शूद्र की संज्ञा दी जाती है। मैं ब्राह्मण से शूद्र नहीं बन सकता।"

जयदमन ने कहा—"हाँ, यह बात तो भृगुदत्त और महादेव शर्मण ने भी कही है। वे दोनों बड़ी लग्न से राज्य की सेवा कर रहे हैं, किन्तु इसके प्रतिकारस्वरूप वे कुछ भी नहीं लेते। उनका भी यही कहना है कि ऐसा करने से वे जाति-च्युत हो जायेंगे।

"इस पर पद्मिनी ने एक सुझाव दिया है कि ये दोनों ब्राह्मण राज्य के सेवक नहीं, वरन् सहायक और मन्त्री माने जायेंगे। ब्राह्मण की वर्ष में एक बार व्यास-पूजा के दिन पूजा की जाती है। उस दिन जो भी भेंट में आये, उसे स्वीकार करना ही चाहिये। इस पर वे दोनों भी मान गये। यही आप भी कर सकते हैं।"

"नहीं महाराज! मैं लड़की के घर निःशुल्क सेवा भी नहीं कर सकता।"

"परन्तु हम पद्मिनी के कार्य में आपके ज्ञान की सहायता चाहते हैं।"

पण्डित वीरभद्र गम्भीर विचार में मग्न हो गये। वह विचार कर रहे थे कि घटनावश पद्मिनी एक राजा की रानी बन गयी है। पदवी के शिखर पर पहुँचकर उसके फिसल जाने का भी डर है।

पण्ड़ित वीरभद्र को विचारमग्न देखकर मालती ने कहा—"पिताजी! लड़की की भयावह स्थिति को देखकर आप पद्मिनी की बात मान जाइये। मैंने ऐसी ही सम्मति इनको दी थी। मैं समझती हूँ कि बहिनजी ने यह बात अपने पति महाराज जयदमन से स्वीकार करा ली है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डित वीरभद्र ने कहा—"अभी मैं महाराज की सम्मति को स्वीकार करता हूँ। एक-दो दिन में विचार कर बताऊँगा कि मैं क्या करना चाहता हूँ। किसी निश्चय पर पहुँचने से पहले मैं पद्मिनी से भी विचार-विमर्श करना चाहूँगा।"

:3:

उसी सायंकाल पचास सहस्र शक-सैनिक मधुमति के तट पर बने शिविर में आकर टिक गये। भद्रकच्छ गाँव के लोग उनको ठहराने और उनकी अन्य सुख-सुविधाओं के लिए प्रबन्ध करने लगे। सैनिकों के शिविर में शान्ति और नियम से ठहर जाने का समाचार पुरिका से आये प्रतिनिधिमण्डल को भी मिला। अध्यक्ष महोदय जब से न्यायालय से लौटकर आये थे, चारों सदस्य एक आगार में बैठे भावी कार्यक्रम पर विचार कर रहे थे। अध्यक्ष ने जब न्यायाधीश का निर्णय सुनाया, तो शूरसेन ने कहा—"हमें रात के अंधेरे में यहाँ से भाग जाना चाहिये। एक ओर शकराज पूर्ण सेना के संरक्षण में है और दूसरी ओर हम निःशस्त्र यहाँ आ पहुँचे हैं। यह हमारी भूल थी।"

इस पर अध्यक्ष ने कहा—"जब मैं पुरिका से चलने के लिए पत्नी से विदा ले रहा था, तो मेरी पत्नी ने पूछा था कि मैं कब तक लौटूंगा?

"मेरा उत्तर था—"श्रीमतीजी! मैं ऐसे काम पर जा रहा हूँ, जहाँ से वापस आने की आशा नहीं है। इस कारण तुम मेरी इस भेंट को अन्तिम भेंट समझो और मेरे जीवन के लिए भगवान् महावीर से प्रार्थना करो कि वह मेरी रक्षा करें।

"पत्नी आँखों में आँसू भरकर बोली थी—तो आप जाते ही क्यों हैं?

"मैंने उससे कहा था—अपने देश और जाति के रक्षक राजा का कार्य करने। जिस देश का अन्न खाया है और जहाँ जीवन पाया है, उसके लिए ही यह अर्पण कर रहा हूँ। अतः मन्त्री महोदय! मुझे महाराज ने एक काम के लिए भेजा है और मैं उसे पूर्ण करने के उपरान्त ही यहाँ से जाऊँगा। हमें शकराज को एक सन्देश देने के लिए भेजा गया है और आवश्यकता पड़ने पर उस विषय पर समझाने-बुझाने के लिए भी कहा है। बिना उस काम को किये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मैं यहाँ से नहीं लौटूंगा।"

शूरसेन अपनी योजना के विफल होने से भयभीत था। वह उस योजना के समाचार और वार्तालाप पर उसके प्रभाव की बात पुरिका तक नहीं जाने देना चाहता था। उसने इस वार्तालाप को अधूरा छोड़कर अपने राज्य को युद्ध के लिए तैयार करने के इरादे से अध्यक्ष से पूछा—"आपने शङ्कर के विषय में कुछ नहीं बताया। उसका क्या हुआ?"

अध्यक्ष ने बताया—"उसे मुक्त कर दिया गया। उसके विरुद्ध किसी प्रकार का आरोप नहीं था। उसने मौन रहकर यहाँ के आयुक्त द्वारा हमारे विरुद्ध लगाये गये सब आरोपों को स्वीकार कर लिया, परन्तु वह मेरे साथ आने के स्थान पर पण्डित वीरभद्र के साथ चला गया। जब वह जाने लगा, तो मैंने उससे पूछा था—"कहाँ जा रहे हो? तो उसने कहा—"मैं पण्डित वीरभद्रजी के साथ जा रहा हूँ। राज्य की ओर से मेरी नियुक्ति वीरभद्रजी की सेवा के लिए थी और उस सेवा के अनुरूप ही मैं उनके साथ यहाँ आया हूँ।

"मैंने उससे कहा था—पण्डित वीरभद्र अब हमारे प्रतिनिधिमण्डल में नहीं हैं।

"उसने कहा—परन्तु श्रीमान्! मेरी नियुक्ति तो पण्डितजी के प्रतिनिधि-मण्डल में नियुक्त होने से पहले ही हो चुकी थी। मैं बिना महामन्त्री की आज्ञा के उनको छोड़ नहीं सकता।"

"परन्तु मैं जो कहता हूँ।"

"मेरी नियुक्ति करनेवाले आप नहीं हैं।"

इस पर शूरसेन के मुख से निकल गया—"बहुत बड़ा बेईमान है।"

अध्यक्ष ने कहा—"भृगुदत्त जब पण्डित वीरभद्र को राजप्रासाद की ओर ले जाने लगे, तो वह उनके साथ हो लिया। भृगुदत्त ने पूछा भी था—"शङ्करजी! किधर जा रहे हैं?"

वह बोला—"मेरे स्वामी ने मेरी नियुक्ति पण्डित वीरभद्रजी को सेवा के लिए की है। मैं इनके साथ ही रहूँगा।"

इस पर पण्डित वीरभद्र ने कह दिया—"इसे आने दो। यह मेरा शिष्य बनने के लिए आ रहा है।"

"इस प्रकार मैं उसे राजप्रासाद की ओर जाते हुए छोड़ आया हूँ।"

इसी समय पुरिका से साथ आये एक सेवक ने आगार के द्वार पर खड़े होकर कहा—"श्रीमान्! बहुत बड़ी शक-सेना आ पहुँची है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेवक को भीतर बुलाकर पूछा गया—"कितने लोग होंगे?"

"कहा जा रहा है कि पचास सहस्र हैं। पूरा शिविर भर गया है।"

"वे क्या कर रहे हैं?"

"उनके खाने-पीने का प्रबन्ध तो गाँववालों ने किया है, परन्तु उनके अपने सेवक भी हैं और वे उनके रात के भोजन का प्रबन्ध कर रहे हैं।"

प्रतिनिधिमण्डल के सदस्य अपने शिविर की छत पर चढ़ गये और देखने लगे कि मीलों तक फैले हुए शिविर के गृहों में सैनिक बाहर-भीतर से टिड्डी दल की भाँति आ-जा रहे हैं। सब प्रसन्न और हँस-खेल रहे हैं। मण्डल के सदस्यों ने यह भी देखा कि शिविर के भोजनालय के बाहर सैकड़ों पशु एकत्रित हैं। उनको काटा जा रहा है, ताकि उनका गोश्त सैनिकों के खाने के लिए तैयार किया जा सके।

यह देखकर शूरसेन ने कहा—"यदि यह सेना यहाँ एक मास भी रह गयी, तो यह क्षेत्र उजड़ जायेगा। यहाँ के रहनेवाले भूखों मर जायेंगे। विचित्र बात यह है कि इस गाँव के लोग इन सैनिकों का ऐसे प्रबन्ध कर रहे हैं, मानो ये इनके मेहमान हैं।"

अध्यक्ष ने बताया—"इस विषय में भृगुदत्त से मेरी बात हुई है। आज न्यायालय में न्यायाधीश अभी आया नहीं था और मैं न्यायालय के बाहर खड़ा था, तो मैंने उनसे पूछा—"पण्डित भृगुदत्त! तुम्हें बहुत कठोर दण्ड दिया जा रहा है?"

भृगुदत्त ने कहा—"यह दण्ड नहीं है। मुझे काम करते हुए दो मास हुए हैं। एक मास समाप्त हुआ, तो मुझे पाँच सौ रजत वेतन दिया जा रहा था। मैंने उसे स्वीकार नहीं किया। ब्राह्मण होने के नाते मैं वेतनधारी बनना नहीं चाहता था। मैं तो इस काम को लोक-कल्याण का कार्य समझकर कर रहा हूँ।"

"और अन्य गाँव में काम करनेवालों को?"

"सब को वेतन मिला है। इस समय पचास के लगभग कर्मचारी मेरी सहायता कर रहे हैं और लगभग पचास सेवक गोपालकृष्ण के साथ कार्य कर रहे हैं। वे लोग कर वसूलकर उसे जमा करा देते हैं।"

"ओह! कर कहाँ से वसूल करते हैं?"

भृगुदत्त ने बताया—"विदेशों से अनेक प्रकार का माल देश में आता है। उस माल के क्रय करनेवालों और कपड़ा तथा अनाज बेचनेवालों के लिए यहाँ मण्डी लग जाती है। उसमें जो कुछ क्रय-विक्रय होता है, उसका छह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रतिशत राज्य लेता है। पिछले मास विदेशी माल से लदे हुए दो जलपोत यहाँ आये थे। उनका दो करोड़ रजत का माल यहाँ बिका है। लगभग उतने ही दाम का माल उनके व्यापारी यहाँ से ख़रीदकर ले गये हैं। इस पर चार करोड़ रजत का व्यापार हुआ और उस पर चौबीस लाख रजत कर राज्य को मिला है। वह सब गोपालकृष्ण प्राप्त करता है और उसका हिसाब रखता है।

"पहले यह काम पुरिका से आये मुंशी किया करते थे। वे बीस प्रतिशत कर लेते थे। इस बार महारानीजी की आज्ञा से आयात और निर्यात कर कम कर दिया गया है। अत: विदेशी व्यापारी बहुत प्रसन्न होकर गये हैं और अपने देश के व्यापारी भी प्रसन्न हैं। आयात-निर्यात पर कर चालीस प्रतिशत से घटाकर उन्हें केवल बारह प्रतिशत ही देना पड़ा है।"

भृगुदत्त ने यह भी बताया कि इस कर में कमी के कारण दूर-दूर से व्यापारी भविष्य में आनेवाले जलपोतों की प्रतीक्षा में यहाँ आ रहे हैं। इससे गाँव के लोगों की आय में वृद्धि हुई है। यहाँ एक ही धर्मशाला है, जो व्यापारियों से भर गयी है और महारानीजी कह रही हैं कि एक अन्य पन्थागार बनवाना चाहिये, जो धर्मशाला से अधिक सुख-सुविधाओं से सम्पन्न होना चाहिये। उसमें रहने का भाड़ा भी सामान्य होना चाहिये।"

शूरसेन यह सब सुनकर हैरान रह गया। उसके मुख से निकल पड़ा—"इसीलिए यहाँ के गाँववाले इतने प्रसन्न हैं।"

अध्यक्ष का कहना था—"मैं समझ रहा हूँ कि यदि यहाँ के लोगों की प्रसन्नता का ज्ञान हमारे राज्य के अन्य लोगों को हुआ, तो वे भी इस राजा की प्रजा बनने की इच्छा करने लगेंगे। अभी तक तो यह प्रसिद्ध है कि ये लोग अत्यन्त क्रूर और लूट-मार कर ही अपना निर्वाह करते हैं। व्यापार में इनकी कुशलता का ज्ञान होने पर तो लोग अपने-आप भाग-भागकर यहाँ आने लगेंगे।"

सेठ सोमदवजी ने कहा—"मैंने गाँव के अन्य लोगों से भी पूछा है कि शक-सैनिक उनके स्त्री-वर्ग को तो तंग नहीं करते? उन्होंने बताया है कि पिछले डेढ़ मास से तो ऐसा एक भी समाचार नहीं मिला। सैनिकों के शिविर में एक झुण्ड वेश्याओं का भी है और वे उससे सन्तुष्ट प्रतीत होते हैं।"

अध्यक्ष ने मुसकराते हुए कहा—"मैंने यह भी सुना है कि उनके शिविर में कुछ अल्पवयस्क लड़के भी हैं और वे भी प्रयोग किये जाते हैं।"

शूरसेन यह सब वृत्तान्त सुनकर चकित हो रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगले दिन प्रतिनिधिमण्डल के चारों सदस्यों को महाराज जयदमन के सम्मुख प्रस्तुत किया गया। इस बार पद्मिनी उपस्थित नहीं थी। द्विभाषिये का काम मालती कर रही थी। मालती ने देव-भाषा में लिखी एक आज्ञा पढ़कर सुनायी। आज्ञा इस प्रकार थी–

"कच्छाधिपति महाराज सिंहनाद का मौखिक सन्देश उनके द्वारा भेजे गये प्रतिनिधिमण्डल के अध्यक्ष श्रीयुत् सोमदेवजी से मिला। उनका सन्देश है कि शक-सेना कच्छ-राज्य में साठ मील तक घुस आयी है। उसे उनका देश ख़ाली कर अपने राज्य में चले जाना चाहिये। इस सन्देश के उत्तर में हमारा कहना है कि हमारी प्रजा की संख्या प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। उसके जीवन-निर्वाह के लिए अधिक भूमि की आवश्यकता थी और महाराज सिंहनाद के राज्य का यह क्षेत्र वीरान पड़ा हुआ था। अत: लोक-हित के लिए हमने इस वीरान क्षेत्र पर अधिकार कर लिया है।

"हम महाराज सिंहनाद को विश्वास दिलाते हैं कि आगामी चालीस-पचास वर्ष के लिए हमें और अधिक क्षेत्र की आवश्यकता नहीं होगी और हम तब तक अन्य क्षेत्र को अपने अधीन नहीं करेंगे। हमने मधुमति के पश्चिमी तट तक अपना अधिकार कर लिया है। यहाँ के पूर्व निवासी और नये निवासी सब प्रसन्न और सुखी हैं। अत: कच्छराज को उनके हित का विचार कर यह क्षेत्र हमारे पास ही रहने देना चाहिये।

"इस क्षेत्र की आय में से हम कुछ अपने लिए भी निकाल रहे हैं, परन्तु उसे हम अपनी प्रजा के प्रति सेवा का प्रतिकार ही मानते हैं।

"हम कच्छराज से मैत्री के इच्छुक हैं और वर्तमान स्थिति के अनुसार कच्छ-राज्य से सन्धि करने को तैयार हैं। यदि हमारा मैत्रीपूर्ण बढ़ाया हुआ हाथ स्वीकार न किया गया, तो हमें विवश होकर अपनी प्रजा की रक्षा के लिए युद्ध करना होगा।

"मैत्री की सन्धि के अभाव में हमें यह भी विचार करना होगा कि अपने राज्य की सुरक्षा के विचार से सीमा मधुमति ही रहे अथवा कच्छ में ही कुछ अधिक आगे बढ़कर दुर्गों की शृङ्खला बनायी जाये।

"हम महाराज सिंहनाद के स्वास्थ्य तथा सुख के लिए अपने देव से प्रार्थना करते हैं।"

इस वक्तव्य के नीचे जयदमन के हस्ताक्षर थे और राजकीय मुद्रा अङ्कित थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मालती ने वक्तव्य पढ़कर अध्यक्ष महोदय के हाथ में देते हुए कहा—"हमारे महाराज चाहते हैं कि भविष्य में जो भी सन्देश वह भेजें, लिखित भेजें, जिससे किसी प्रकार की भूल न हो सके।

"महाराज जयदमनजी की आज्ञा है कि पुरिका के प्रतिनिधिमण्डल का अब यहाँ अन्य कुछ काम नहीं रहा। अत: उनको सायंकाल से पूर्व यहाँ से दस कोस दूर चला जाना चाहिये।

"इस बार हमारे महाराज ने पुरिका के कुछ लोगों के तोड़-फोड़ के प्रयत्न को क्षमा कर दिया है। उनकी आज्ञा है कि वे भी प्रतिनिधिमण्डल के साथ ही यहाँ से विदा होकर पुरिका के मार्ग पर दस कोस दूर चले जायें।"

इस पर अध्यक्ष सेठ सोमदेवजी ने पूछ लिया—"हमारे प्रतिनिधिमण्डल के एक सदस्य पण्डित वीरभद्र शक महाराज के बन्दी हैं। उनके विषय में क्या आज्ञा है?"

"उन्हें महाराज ने कल ही मुक्त कर दिया था, परन्तु उन्होंने अपने गाँव में—जो अब महाराज जयदमन के अधिकार में है—रहने की स्वीकृति माँगी है और उन्हें यह स्वीकृति दे दी गयी है। वह कच्छ-राज्य की नागरिकता को त्यागकर शक-राज्य की नागरिकता स्वीकार कर रहे हैं।"

"क्या हम उनसे मिलकर उनकी इच्छा जान सकते हैं?"

मालती ने जयदमन से पूछकर सेठ सोमदेवजी को बताया। उन्होंने कहा—"वह कार्य यहाँ के आयुक्त भृगुदत्त का है। इस भेंट की याचिका आयुक्त से करनी चाहिये।"

इसी समय जयदमन उठ खड़ा हुआ, अर्थात् भेंट समाप्त हो गयी।

:4:

राजभवन से बाहर निकलकर प्रतिनिधिमण्डल के सदस्य एक-दूसरे का मुख देखने लगे। वे अभी वहाँ खड़े जयदमन के हस्ताक्षर किये हुए वक्तव्य को हाथ में पकड़े विचार कर रहे थे कि सैनिकों से घिरे हुए दो सौ छापामार बन्दी उनके समक्ष खड़े किये गये और सेनानायक ने उन्हें प्रतिनिधिमण्डल के सम्मुख खड़ा कर संकेत से कहा कि इनको आप अपने साथ ही लेते जाइये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेठ सोमदेव उनके संकेतों को अभी समझ ही रहे थे कि सेनाध्यक्ष ने सूर्य की ओर सङ्केत करते हुए यह बताने का यत्न किया कि यदि वे लोग सूर्यास्त तक न गये, तो—उसने अपनी गर्दन पर हाथ के संकेत से बता दिया कि—उनकी गर्दन काट दी जायेगी।

सेठ सोमदेव उसकी बात समझकर सेनानायक को समझाने लगे कि वह उन सबको अपने साथ ले जायेंगे। भृगुदत्त को पण्डित वीरभद्र से भेंट करने के विषय में बताया गया, तो उन्होंने पण्डित वीरभद्र से पूछकर अपने कार्यालय में भेंट का प्रबन्ध कर दिया। पूर्ण प्रतिनिधिमण्डल पण्डित वीरभद्र और शङ्कर से मिला। अध्यक्ष ने पूछा—"पण्डितजी! आपने देश-द्रोह किया है?"

पण्डित वीरभद्र ने उत्तर दिया—"नहीं श्रीमान्! मैंने देश-द्रोह नहीं किया और न राज-द्रोह ही किया है। मैंने आपकी अध्यक्षता में प्रतिनिधिमण्डल से द्रोह किया है। इसका कारण मैंने कच्छराज महाराज सिंहनाद की सेवा में लिखकर भेज दिया है। मैंने उनसे सेवा से मुक्ति मांग ली है।"

"परन्तु सेवा-मुक्त हुए तो नहीं?"

"सेवा दासता नहीं है। यह स्वेच्छा से अवैतनिक सेवा थी, इस कारण स्वेच्छा से छोड़ दी। यदि महाराज ने यह इच्छा प्रकट की कि मैं उनके दरबार में उपस्थित होकर किसी विषय पर अपनी सम्मति दूँ, तो वहाँ उपस्थित हो जाऊँगा, परन्तु यह आपके प्रतिनिधिमण्डल के लिए शुभ नहीं होगा। मेरे पास आपके मण्डल द्वारा मेरे सम्बन्ध में किये निर्णयों के प्रमाण हैं।"

सेठ सोमदेव ने पूछा—"और शङ्कर! तुम क्या कहते हो?"

"मैंने भी अपनी सेवा से मुक्ति के लिए महाराज सिंहनाद की सेवा में याचिका भेज दी है। मैं यहाँ रहकर पण्डित वीरभद्रजी से शास्त्राध्ययन करना चाहता हूँ।"

"तुमने कल भृगुदत्तजी के प्रश्नों का उत्तर क्यों नहीं दिया?"

"उनके प्रश्नों के विषय में उत्तर देने की आपकी स्वीकृति नहीं थी। आपने चोरी-चोरी कुछ निर्णय किये थे। मैं उनके विषय में पण्डितजी को बताना नहीं चाहता था। मैंने वह गुप्त वार्तालाप कच्छराज के महामन्त्रीजी को लिखकर भेज दिया है।"

पण्डित वीरभद्र से भेंट समाप्त हुई और प्रतिनिधिमण्डल अपने अश्वों पर सवार होकर वहाँ से चल दिया। छापामार बन्दी तो प्रतिनिधिमण्डल से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहले ही विदा हो गये थे।

सब के विदा हो जाने पर पण्डित वीरभद्र ने भृगुदत्त से कहकर अपने लिए गाँव में एक मकान ले लिया और अपना पुस्तकालय लेकर वहाँ चले गये। पुस्तकालय में कई सहस्र पुस्तकें थीं, जिन्हें एक बैलगाड़ी पर ले जाया गया। शङ्कर ही पण्डित वीरभद्रजी के नये निवास का प्रबन्ध करने लगा था।

जयदमन ने पण्डित वीरभद्र से कहा भी था—"पिताजी! आपको इसी मकान में रहते हुए सुख मिल सकता था। हमने अपने लिए इस गाँव के उत्तर में एक मकान बनवाने की आज्ञा दे दी है।"

पण्डित वीरभद्र ने कहा—"महाराज! यह घर मेरी बेटी का है, जो अब वर्णच्युत होकर क्षत्रिय वर्ण में चली गयी है। इस कारण मैं इस मकान में नहीं रह सकता। मैं ब्राह्मणोचित वातावरण में रहना चाहता हूँ। इसके लिए अभी अस्थायी रूप से एक मकान ले लिया है। समय और सामर्थ्य होते ही उपयुक्त स्थायी निवास-गृह बनवा लूंगा।"

"हम चाहते हैं कि आप हमारे राज्य में ही स्थायी रूप से रहें।"

"मुझे किसी राज्य से मोह नहीं है। मुझे अपने राष्ट्र से मोह है। मुझे लग रहा है कि पद्मिनी अपने प्रभाव एवं योग्यता से यहाँ वैदिक राष्ट्र-निर्माण करने का प्रयत्न कर रही है। यदि इस प्रयत्न में मेरे किसी प्रकार के सहयोग की आवश्यकता हुई और इस दिशा में मेरी सेवाओं का विरोध न किया गया, तो मैं यहाँ रहते हुए अपना कार्य करता रहूँगा, अन्यथा किसी अन्य स्थान पर चला जाऊँगा।"

"आशा है कि आपके कार्य का विरोध नहीं होगा। शर्त यह होगी कि आप भी हमारे रीति-रिवाजों का विरोध नहीं करेंगे।"

"देखिये महाराज! किसी को यह समझाना कि वह अमुक कार्य न करे, विरोध नहीं कहलाता। एक निःशस्त्र ब्राह्मण—जो अकेला भी है—विरोध कर ही नहीं सकता, परन्तु वह जनता को सही मार्ग दिखला सकता है। यह उसका धर्म है।"

"परन्तु यदि हमारे लोग आपकी बात मानने लगेंगे, तो आप उनके राजा बन जायेंगे। यह तो राज-द्रोह हो जायेगा।"

"नहीं महाराज! राजा के साथ प्रजा का सम्बन्ध तो केवल सीमित बातों में ही है। उनका सम्बन्ध प्रजाजनों की व्यक्तिगत बातों से नहीं है।

"उदाहरण के रूप में आपके लोग गाय का गोश्त खाते हैं, किन्तु हमारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहाँ इसे उचित नहीं माना जाता। इस खाने अथवा न खाने का राज्य से सम्बन्ध नहीं हो सकता। आपकी प्रजा में गोश्त खानेवाले भी रह सकते हैं और न खानेवाले भी। राज्य का कर्तव्य है कि वह देश के भीतर और बाहर बलशाली दुष्टजनों से प्रजा की सुरक्षा करे। इसके प्रतिकार में प्रजा आपको कर देती है, आपका मान करती है और आपके लिए सुख-सुविधा के साधन जुटाने में आपकी सहायता करती है। आपकी सेना का व्यय भी प्रजा ही देती है। प्रजा आपके राज्य सम्बन्धी नियमों को मानती है, परन्तु खाना, पहनना, पूजा-पाठ, विवाह एवं मैत्री प्रत्येक व्यक्ति के अपने विचार करने का प्रश्न है। इसमें राज्य को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिये। इसी प्रकार इस विषय में राजा और अन्य लोगों का विलक्षण व्यवहार प्रजा को सहन करना चाहिये।

"मुझे यह बताया गया है कि कच्छ-राज्य में पशु-हत्या वर्जित है और वहाँ कोई भी व्यक्ति गोश्त नहीं खा सकता।"

जयदमन ने कहा कि वह ऐसी प्रथा अपने राज्य में नहीं चाहता।

"जो कुछ कच्छराज करते हैं, वह आपके अनुकरण करने की बात नहीं है। इस विषय में आप अपनी प्रजा को स्वतन्त्रता दें, परन्तु आपको एक बात पर भी विचार करना होगा।"

"क्या बात?"

"मान लीजिये कि आपने उद्यानों में चन्दन के वृक्ष लगवा दिये हैं। चन्दन में सुगन्धियुक्त इत्र होता है, जो एक बहुमूल्य पदार्थ है। इत्र से लाभ भी बहुत होता है। अनेक ओषधियों में इसका प्रयोग किया जाता है। यह इत्र वृक्ष में तब तक ही बना रहता है, जब तक वह धरती पर अपनी जड़ोंसहित खड़ा रहे। यदि कोई कोयले का व्यापारी उस वृक्ष को जलाकर और कोयला बनाकर बेचना चाहे, तो क्या आप उसे रोक देंगे? इसका कारण यह है कि उस वृक्ष से बने कोयले का दाम उस दाम का अंश मात्र भी नहीं होगा, जो इत्र बेचकर प्राप्त हो सकता है। इसके साथ ही यह भी सत्य है कि इत्र तो वह वृक्ष जीवन-भर देता रहेगा, जबकि कोयला एक बार ही मिल सकता है।

"यही बातें कुछ जन्तुओं की भी हैं। कुछ जन्तु जीवन-भर मनुष्य के लाभ की वस्तुएँ देते रहते हैं। यदि कोई उन्हें मारकर उनके गोश्त को एक-दो दिन में खाकर समाप्त कर दे, तो वह उससे जीवन-भर मिलनेवाले लाभ से वञ्चित हो जायेगा।

उदाहरण के रूप में एक भेड़ जब तक जीवित रहती है, ऊन देती रहती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। जीवन-भर में इतना ऊन देती है, जिसका दाम उसके गोश्त से सहस्रों गुणा अधिक है। केवल दो-तीन दिन गोश्त खाने के लिए उस भेड़ से आयु-भर मिलनेवाले ऊन से वञ्चित होना तो कोई मूर्ख ही पसन्द करेगा।"

"परन्तु ऐसा तो सब करते हैं।"

"जी महाराज। आप स्वयं विचार कीजिये कि ऐसा करनेवाला मूर्ख है अथवा नहीं? मैं तो यह कह रहा था कि इस सम्बन्ध में राजकीय आदेश नहीं होना चाहिये। न भेड़ को खाने का और न उसकी हत्या करने का। जिसकी भेड़ है, जिसको उसकी आय से लाभ होनेवाला है, उसे स्वेच्छा से विचार करने का अवसर देना चाहिये।"

इस पर जयदमन ने कहा—"मुझे पद्मिनी ने गाय के गोश्त के बारे में समझाया था और मैं इस विषय में आदेश भी देनेवाला था। आज आपने भेड़ के विषय में भी समझा दिया है। तो क्या सब पशुओं का गोश्त खाने को वर्जित कर दूँ?"

"नहीं महाराज। मेरा आशय यह नहीं। आप न तो गोश्त खाने के विषय में कुछ कीजिये और न ही न खानेवालों को दण्डित कीजिये। यह मेरे जैसे ब्राह्मणों का कार्य है कि वे उनको समझायें कि उनका अपना हित किसमें है और किसमें नहीं है।"

जयदमन समझ गया और उसने कहा—"तो मैं गाय के विषय में यह आदेश न दूं?"

"राजाज्ञा करने की आवश्यकता नहीं। इस विषय में राज्य को तटस्थ रहना चाहिये। लोग अपना हित-अहित स्वयं देख लेंगे। उनको समझाने की आवश्यकता है। समझाने में कठिनाई का ज्ञान मुझे है। मैं किसी सामान्य शक को अपनी भाषा में समझा नहीं सकता। वे मेरी भाषा समझते ही नहीं।"

"तो इस कठिनाई का पार कैसे पायेंगे?"

"मैं प्रयत्न करना चाहता हूँ कि आपकी जाति के कुछ बुद्धिमान् घटकों को अपनी भाषा सिखाऊँ और फिर उनके द्वारा आपके सजातियों को उनकी अपने हानि-लाभ की बात बताऊँ, ताकि वे उपकारी जीवों की हत्या न करें।"

"ठीक है, आप यह कीजिये। हमारा तो यह कहना है कि आपकी बातें मानने से लोग मेरे राज्य के विरुद्ध न हो जायें।"

"यदि उनको अन्य राज्यों की अपेक्षा यहाँ अधिक सुख और सुरक्षा मिली, तो वे आपके राज्य में रहना पसन्द करेंगे। प्रत्येक व्यक्ति राजा नहीं बन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सकता, परन्तु सब स्वेच्छा से खाना, पहनना और परस्पर व्यवहार रखना पसन्द करते हैं। यदि आप ऐसा राज्य चलायेंगे, जहाँ लोगों को आराम मिले, तो सब आपके ही राज्य में रहना पसन्द करेंगे।"

जयदमन देख रहा था कि कच्छ-राज्य में आयात-निर्यात पर बीस प्रतिशत कर लिया जाता था। शक-राज्य में कुछ भी नहीं लिया जाता था और विदेश से आने वाले माल को प्राय: सैनिक लूट लेते थे। पद्मिनी ने बताया कि यह तो शत-प्रतिशत कर लेने के समान था। अब उसने अपने राज्य में सैनिकों को लूट-खसोट करने से रोक दिया और छह प्रतिशत कर लगा दिया। इसके परिणामस्वरूप दूर-दूर के व्यापारी शक-राज्य में आकर माल का क्रय-विक्रय करने लगे।

पद्मिनी ने उसे बताया—"अभी यह समाचार प्रसारित नहीं हुआ कि शक-राज्य में लूट-खसोट नहीं होती। यह समाचार प्रसारित होते ही भद्रकच्छ व्यापार का एक बहुत बड़ा केन्द्र बन जायेगा और केवल आयात-निर्यात के कर की आय से ही सम्पूर्ण राज्य का व्यय निकल सकेगा।"

दो मास के अनुभव से ही जयदमन को पद्मिनी के कथन पर विश्वास हो रहा था। अब पण्डित वीरभद्र ने एक अन्य सुझाव दिया, जिसमें जनता के प्रयोग में लानेवाले कुछ व्यवहार थे। उनमें उन्होंने खाना, पहनना, विवाह तथा मित्रता आदि व्यवहार बताये थे। इनमें पूजा आदि की भी बात थी। पण्डित वीरभद्र का कहना था कि इस विषय में जनता को स्वतन्त्रता से विचार करने दिया जाये, तो शक-राज्य धन-धान्य से सम्पन्न एक महान् देश हो जायेगा। जयदमन इस विषय में भी प्रयत्न करनेवाला था। इसी कारण उसने पण्डित वीरभद्र से कहा था—"मैं चाहता हूँ कि आप मेरे महामन्त्री बन जायें।"

"मैं मन्त्रि-पद स्वीकार नहीं करूँगा। ब्राह्मण किसी राज्य का वेतनधारी सेवक नहीं हो सकता। हाँ, ब्राह्मण से मन्त्रणा की जा सकती है। इसके लिए यदि कोई मेरे निवास पर आकर मुझसे किसी विषय में जानना चाहेगा, तो मैं अपनी मन्त्रणा का कुछ भी प्रतिकार लिये बिना सत्य हृदय से कल्याणकारी मन्त्रणा दूंगा।"

"परन्तु राज्य-कार्य तो बहुत लम्बा-चौड़ा है। इसमें तो आपका पूर्ण जीवन भी खप सकता है।"

"उसके लिए मेरे शिष्य आपकी सेवा कर रहे हैं। अनेक शिष्य हैं। वे शक-राज्य के भय से कहीं भाग गये हैं। यहाँ की सुव्यवस्था का समाचार पाते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही वे लौट आयेंगे। तब आप उनसे बातचीत कर काम ले सकते हैं।"

"यही बात तो भृगुदत्तजी ने भी कही थी। इस पर आपकी लड़की ने उससे एक समझौता किया है।"

पण्डित वीरभद्र ने पूछा—"क्या?"

"यही कि वर्ष में एक दिन व्यास-पूजा होती है। पद्मिनी ने उनसे कहा है कि व्यास-पूजा के दिन गुरुजनों को भेंट-पूजा दी जाती है। वह उनको स्वीकार कर लेनी चाहिये। भृगुदत्तजी इसे मान गये हैं और सुना है कि वह दिन अभी तीन मास के उपरान्त आनेवाला है।"

"हाँ, यह ठीक है। इसमें यह बात उत्तम है कि देनेवाला ब्राह्मण को गुरु मानकर देता है। वह उस पर किसी प्रकार का अहसान नहीं करता और लेनेवाला शिष्य का अपने विचारानुसार कल्याण करता है। वह अपने को शिष्य के अनुशासन में नहीं मानता। उसकी सम्मति पक्षपातरहित होती है।"

जयदमन इसका अर्थ समझने का प्रयत्न करता रहा और पण्डित वीरभद्र राज्य-भवन छोड़कर गाँव के एक सामान्य-से मकान में चले गये।

:5:

प्रतिनिधिमण्डल पुरिका वापस लौटा, तो अध्यक्ष और शूरसेन दोनों ने महामन्त्री से पृथक्-पृथक् मिलकर भद्रकच्छ में हुई कार्रवाई का वर्णन किया।

अध्यक्ष ने कहा—"श्रीमान्! जयदमन से भविष्य के विषय में बात करने का अवसर ही नहीं मिला। हमारे वहाँ पहुँचने से पूर्व ही यहाँ के लगभग दो सौ व्यक्ति वहाँ पहुँच चुके थे और पकड़े जा चुके थे।"

"वे क्यों पकड़े गये थे?"

"उन्होंने शक-सेनाध्यक्ष की हत्या करने का प्रयत्न किया था।"

"वे कौन थे? किसके कहने पर वहाँ गये थे और इस हत्या का प्रयत्न क्यों किया था?"

"उन पर वहाँ के न्यायालय में अभियोग चलाया गया था। मैं न्यायालय में उपस्थित था। वहाँ साक्षियों से यह सिद्ध हो गया कि उन लोगों को हम वहाँ तोड़-फोड़ के लिए ले गये थे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या सत्य ही आप उन्हें ले गये थे?"

"मुझे इसका ज्ञान नहीं, परन्तु हम में से ही एक था, जिसने प्रतिनिधिमण्डल के नाम पर ऐसा किया था।"

"वह कौन था?"

"बाद में श्रीमान् शूरसेन ने स्वीकार किया था कि उन्होंने ही ऐसा किया था। उनका विचार था कि इस प्रकार आतङ्क-निर्माण करने से वार्तालाप में अधिक सफलता की आशा है।"

"तो अब क्या कर आये हो?"

"हमारे मौखिक सन्देश का लिखित उत्तर यह है।" सेठ सोमदेवजी ने जयदमन के हस्ताक्षर किया गया पत्र महाराज के सामने प्रस्तुत कर दिया।

महामन्त्री ने पत्र पढ़ा और पूछा—"क्या तुम लोग इसमें से कुछ मान आये हो?"

"हमें उत्तर देने का अवसर ही नहीं दिया गया। इस पत्र के साथ इतनी बात मौखिक रूप से कही गयी है कि भविष्य में महाराज की ओर से शकराज को जो कुछ भी सन्देश भेजा जाये, वह लिखित हो, मौखिक न हो।"

"हम समझ रहे थे कि वहाँ देव-वाणी लिखने-पढ़नेवाला नहीं होगा।"

"परन्तु श्रीमान्! हम में से पण्डित वीरभद्र की लड़की जयदमन की पत्नी बनी हुई है और वह एक पढ़ी-लिखी विदुषी है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह उत्तर उसका ही लिखा हुआ है।

"इसके अतिरिक्त पण्डित वीरभद्र के कुछ शिष्य भी जयदमन की सेवा में नियुक्त हैं। एक हैं भृगुदत्त। वह वहाँ के आयुक्त हैं। उन्होंने वहाँ की व्यवस्था बहुत अच्छी बना रखी है। हमारे गुप्त छापामारों को उन्होंने ही पकड़ा था। पण्डित वीरभद्र का एक अन्य शिष्य भी है, जिसका नाम महादेव श्रमण है। उसे वहाँ का न्यायाधीश बनाया गया है।"

"उन दो सौ छापामारों को क्या दण्ड दिया गया है?"

"उनको इस बार क्षमा कर दिया गया है। न्यायाधीश का यह निर्णय था कि वे गुप्तचर दोषी नहीं थे, वरन् उनको इस कार्य पर नियुक्त करनेवाले अर्थात् हम दोषी हैं, किन्तु हम अपने महाराज के प्रतिनिधि हैं, इस कारण वास्तविक अपराधी हमारे महाराज हैं। उनसे सन्धि-वार्ता हो रही है। अतः न्यायाधीश उनको महाराज जयदमन के अधीन करता है। वही इस सम्बन्ध में निर्णय देंगे। महाराज शकराज ने उनको क्षमा कर दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह सब अप्रत्याशित है। हम उनको केवल म्लेच्छ ही नहीं, अपितु गंवार मानते थे, परन्तु उन्होंने जो कुछ किया, वह एक सभ्य राज्य की भाँति किया है।"

"हाँ, ऐसा प्रतीत होता है कि यह सारा खेल पण्डित वीरभद्र की लड़की और उनके शिष्यों का है। महाराज! मैं तो वहाँ से जीवित लौटने की आशा छोड़कर ही वहाँ गया था। मैंने अपनी पत्नी को अन्तिम नमस्कार करने के उपरान्त ही यहाँ से प्रस्थान किया था।"

महामन्त्री ने मुस्कराते हुए पूछा—"तब तो आपकी पत्नी बहुत प्रसन्न होंगी।"

"हाँ, श्रीमान्! उसने अपने सम्बन्धियों में मेरे जीवित लौटने पर मिठाई बाँटी है।"

महामन्त्री मुस्कराया और सेठ सोमदेवजी को धन्यवाद देते हुए बोला—"अब कच्छनरेश से सम्मति लेकर इस पत्र का उत्तर दिया जायेगा।"

शूरसेन भी महामन्त्री से मिला। महामन्त्री ने शूरसेन से पूछा—"तो आपकी योजना असफल हुई है?"

शूरसेन ने उत्तर दिया—"इस असफलता का कारण पण्डित वीरभद्र ही प्रतीत होते हैं। पण्डित वीरभद्र को आपने शङ्कर नाम का एक सेवक दे रखा था। पण्डित वीरभद्र ने उसकी सहायता से अपनी लड़की—जो इस समय शकराज की पत्नी बनी हुई है—की सहायता की है। प्रतिनिधिमण्डल के शेष चार सदस्यों ने यह निश्चय किया था कि पण्डित वीरभद्र को बन्दी बनाकर महाराजाधिराज के सम्मुख उपस्थित किया जाये और उन्हें प्रतिनिधिमण्डल से द्रोह करने का दण्ड दिलवाया जाये, परन्तु पण्डित वीरभद्र ने अपनी लड़की की सहायता से अपने को सुरक्षित कर हमारा साथ छोड़ दिया। पण्डित वीरभद्र और उनका सेवक वहीं रह गये हैं।"

"परन्तु मन्त्री महोदय! यह गुप्तचरों की बात पण्डित वीरभद्र को पता कैसे चली? यह तो प्रतिनिधिमण्डल से पृथक् और गुप्त योजना थी।"

"महाराज! लगता है कि शङ्कर को पता चल गया होगा और उसने ही पण्डित वीरभद्र को बता दिया होगा।"

"इस कारण से ही तो मैं कहता हूँ कि तुम्हारी योजना असफल हो गयी।"

शूरसेन समझ गया कि पण्डित वीरभद्र प्रतिनिधिमण्डल में नियुक्ति से पूर्व उससे मिले थे और उस भेंट ने ही यह सब गड़बड़ की है। शैव होने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कारण शङ्कर एक विश्वस्त व्यक्ति प्रतीत हुआ था, परन्तु पण्डित वीरभद्र के भी शैव होने के कारण शङ्कर उनसे प्रभावित हो गया। शूरसेन ने इस परिस्थिति को अपनी असफलता का कारण मानते हुए महामन्त्री के समक्ष इस बात का विस्तार से वर्णन कर दिया।

सब सुनकर महामन्त्री ने कहा—"मैं समझता हूँ कि पण्डित वीरभद्र की लड़की ने जयदमन को सम्मोहित किया हुआ है, जिस कारण जयदमन किसी पशु की भाँति उस सुन्दर कन्या के पीछे चल पड़ा है। उसे बिना युद्ध किये पराजित करने का उपाय है—पण्डित वीरभद्र की लड़की से अधिक सुन्दर और हाव-भाववाली किसी स्त्री को जयदमन के सामने खड़ी कर दिया जाये और जब जयदमन उसके प्रभाव में आ जाये, तो वह उसे आकर्षित कर अपनी राजधानी खरीच में ले जाये और उसके पश्चात् भद्रकच्छ क्षेत्र पर आक्रमण कर दिया जाये।

"इस प्रकार हम इस मूर्ख शकराज को कम-से-कम रक्त बहाये बिना अपने राज्य की सीमा में सीमित कर सकेंगे।"

शूरसेन ने कहा—"हाँ, आपकी बात तो उचित प्रतीत होती है। पण्डित वीरभद्र की लड़की युवा है, सुन्दर है, विदुषी है और बातचीत करने का ढंग भी जानती है। प्रतीत होता है कि उसने शक-भाषा भी सीख ली है। उसके साथ प्रौढ़ावस्था की एक अन्य स्त्री है, जिसका नाम मालती है। वह कौन है? जयदमन पर उसका भी बहुत प्रभाव है।"

"अच्छी बात है। हम इस दिशा में भी प्रयत्न करेंगे। अभी तो हमें जयदमन को एक पत्र लिखकर दोनों राज्यों में सीमा के विषय में बातचीत करने के लिए वहाँ से एक प्रतिनिधिमण्डल को यहाँ बुलाना चाहिये।"

"यह पत्र कैसे जायेगा?"

"इसके लिए एक राजदरबारी भेजा जायेगा। किसी मन्त्री के जाने की आवश्यकता नहीं है।"

यह विचार कर महामन्त्री ने महाराज सिंहनाद को सूचना दी। उसने महाराज से कहा—"महाराज! शकराज से मिलकर हमारा प्रतिनिधिमण्डल सफल वार्तालाप कर वापस लौट आया है। मण्डल शकराज का एक लिखित पत्र भी लाया है। उस पत्र में शकराज ने वचन दिया है कि अभी वह अगले चालीस-पचास वर्ष तक मधुमति के पश्चिमी तट तक ही अपना राज्य सीमित रखेंगे। इसके लिए वह महाराज से सन्धि करना चाहते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कच्छराज ने पूछा—"यह चालीस-पचास वर्ष की बात क्या है?"

महामन्त्री ने बताया—"जयदमन ने अपने पत्र में लिखा है कि उनकी प्रजा की संख्या द्रुतगति से बढ़ रही है, जिसके पालन-पोषण के लिए उन्हें अभी इतने क्षेत्र की आवश्यकता है। यदि चालीस-पचास वर्ष तक उनकी जनसंख्या और बढ़ गयी, तो अधिक क्षेत्र की आवश्यकता होगी।"

"बहुत युक्ति-सङ्गत बात लिखी है।"

"महाराज! यह सब पण्डित वीरभद्र की लड़की द्वारा सिखायी गयी बात प्रतीत होती है। शकराज ने पण्डित वीरभद्र की लड़की से विवाह कर लिया है और वही लड़की शकराज से इस प्रकार की बातें करा रही प्रतीत होती है।"

"तो उस लड़की का अपहरण कर लिया जाये और इस मूर्ख शकराज को खरीच वापस भगा दिया जाये।"

"महाराज! आप आज्ञा दें, तो भगवान् महावीर के आशीर्वाद से ऐसा ही किया जायेगा, परन्तु इसमें समय लगेगा। तब तक के लिए सन्धि की चर्चा चला दी जाये।"

"क्या चर्चा चलायेंगे?"

"महाराज के हस्ताक्षरों से युक्त एक पत्र भेजा जाना चाहिये। उसमें सन्धि के लिए वहाँ से प्रतिनिधिमण्डल को यहाँ बुलाना चाहिये और इसमें दो-तीन वर्ष निकाल देने चाहिये। तब तक हम पण्डित वीरभद्र की लड़की से निबटने का प्रयत्न करेंगे।"

"हाँ, यह ठीक रहेगा, यही करो।"

अब शकराज के नाम एक पत्र तैयार किया गया। उस पत्र को भेजने से पूर्व शकराज के लिए कच्छराज की सर्वोत्तम वस्तुएँ भेंट स्वरूप भेजी गयीं और पत्र में महाराज सिंहनाद की ओर से शकराज के लिए मैत्रीपूर्ण शब्द लिखे गये। इसके साथ पत्र में यह भी लिखा गया कि सन्धि-वार्ता के लिए महाराज शकराज को अपना एक प्रतिनिधिमण्डल पुरिका भेजना चाहिये। उससे सन्धि की बातचीत करने के उपरान्त सन्धि-पत्र तैयार किये जायेंगे, उस सन्धि-पत्र पर दोनों महाराजाओं के हस्ताक्षर होंगे और दोनों राज्यों में उस पत्र की एक-एक प्रति रहेगी।

एक अश्वारोही दल को इस आशय का पत्र तथा भेंट की जाने वाली वस्तुएँ देकर भद्रकच्छ भेज दिया गया।

जब दूत वहाँ पहुँचा, तो क्षीरसागर क्षेत्र के विष्णुगढ़ नामक राज्य से दो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जलपोत भद्रकच्छ आये हुए थे। उनके आने पर दो-दो तीन-तीन सौ मील दूर से भी व्यापारी भद्रकच्छ पहुँच गये थे। भद्रकच्छ में भारी चहल-पहल थी। वहाँ कर कम, वस्तुएँ सस्ती और जीवन सुरक्षित होने के कारण लोग अधिक आने-जाने लगे थे। जब से जयदमन ने इस क्षेत्र पर अपना अधिकार जमाया था, तब से प्रति सप्ताह एक अथवा दो जलपोत माल बेचने अथवा क्रय करने भद्रकच्छ पहुँच रहे थे। अब प्रति सप्ताह लाखों स्वर्ण का व्यापार होने लगा था। इस पर राज्य को छह प्रतिशत कर क्रय पर और छह प्रतिशत कर विक्रय पर मिलता था। प्रत्येक जलपोत से राज्य को चालीस-पचास सहस्त्र रजत की आय होने लगी थी। व्यापारी और कर्मचारी दोनों वर्ग धन-धान्य से सम्पन्न हो रहे थे। खाद्य पदार्थों की माँग अधिक होने के कारण दाम कुछ बढ़ गये थे, परन्तु दाम बढ़ने के कारण दूर-दूर से अनाज भी वहाँ विक्रय के लिए आने लगा था।

तीन-चार मास में ही नगर में चहल-पहल होने लगी थी। जयदमन इसे देखकर बहुत प्रसन्न था। इसी समय पुरिका से दूत महाराज सिंहनाद का पत्र लेकर आया। दूत को नये बने पन्थागार में ठहरा दिया गया और महाराज सिंहनाद के पत्र पर विचार होने लगा।

जयदमन को इस बात से सन्तोष हो रहा था कि युद्ध के स्थान पर बात पत्र-व्यवहार तथा बातचीत से तय हो रही है। इस समय तक पद्मिनी के गर्भ स्थित हो चुका था और उसके रुग्ण होने के कारण जयदमन को उसके पिता पण्डित वीरभद्र की सहायता की आवश्यकता अनुभव हो रही थी।

पण्डित वीरभद्र का विचार था कि राजदूत को एक सप्ताह तक और रोक कर रखा जाये और तब तक भली प्रकार सोच-विचार कर पत्र का उत्तर लिखा जाये।

पण्डित वीरभद्र को पुरिका के राजदूत के आने से पूर्व पन्थागार में नर्तकियों के एक दल के आकर ठहरने का समाचार मिला। यह समाचार भृगुदत्त ने दिया था। उसने कहा—"गुरुदेव! जहाँ इस नगर की समृद्धि का समाचार सुनकर दूर देशों से व्यापारी और कर्मचारी-वर्ग के लोग आ रहे हैं, वहीं अब मनोरञ्जन करनेवाले भी यहाँ आने लगे हैं।"

"कौन आया है?"

"पाटलीपुत्र से आकर नर्तकियों की एक मण्डली पन्थागार में ठहरी हुई है। उसमें ग्यारह नर्तकियाँ, कुछ संगीतज्ञ स्त्रियाँ तथा उनके साथ वीणा, मृदंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि बजाने वाले सात पुरुष और मण्डली की मुख्य नर्तकी व गायिका है। उन्होंने कल पन्थागार के प्रांगण में मनोरञ्जनार्थ महोत्सव किया था, जिसमें चार-पाँच सौ व्यक्ति दर्शक के रूप में उपस्थित थे।

"महोत्सव चार घड़ी-भर हुआ और सुना है कि दर्शकों ने प्रसन्न होकर न्योछावर में स्वर्ण मुद्राएँ दी हैं। कुछ लोगों ने रजत भी दिये हैं। रजत को तो वे बाँट देती थीं, केवल स्वर्ण ही ग्रहण करती रही हैं।

"गुरुदेव! मेरी सूचना है कि कल के उत्सव में इस मण्डली को तीन सौ से अधिक स्वर्ण भेंट में मिले हैं।"

पण्डित वीरभद्र ने मुसकराते हुए कहा—"इसका अभिप्राय यह हुआ कि अब भद्रकच्छ एक समृद्ध नगर हो गया है?"

"हाँ, गुरुदेव! मैं भी इसे प्रसन्नता का विषय मानता हूँ कि अब यहाँ के निवासी मनोरञ्जन पर भी व्यय कर सकते हैं।"

"हाँ, यह इस बात का सूचक है कि लोगों के पास आवश्यकता से अधिक धन आने लगा है, परन्तु इससे यह भी पता चलता है कि तुमने धन-व्यय के लिए नगर में पर्याप्त सत्कार्य नहीं किये, जिन पर जनता का धन व्यय हो सके।"

"यह काम तो राज्य की ओर से होने चाहिये।"

"भृगुदत्त! क्या दिन के चौबीस घण्टों में से एक घण्टा भी अवकाश का नहीं होता, जिससे किसी सत्कार्य की योजना बन सकती?"

"गुरुदेव! मैं आपके द्वारा उसके आरम्भ किये जाने की प्रतीक्षा में था। मेरे द्वारा किया गया सत्कार्य भी राज्यकार्य ही समझा जायेगा और मैं किसी भी सत्कार्य को राज्य से सम्बन्धित नहीं मानता।"

पण्डित वीरभद्र समझ गये और बोले—"ठीक है। मैं शीघ्र ही इस विषय में विचार करूँगा और कोई योजना बनाऊँगा।"

इसके दो दिन उपरान्त पण्डित वीरभद्र ने नगर के प्रमुख व्यापारियों की एक सभा अपने निवास पर बुलायी। उस सभा में लगभग चालीस-पचास विशिष्ट सम्भ्रान्त नागरिकों ने भाग लिया। पण्डित वीरभद्र ने सभा में प्रस्ताव रखा—"भगवान् शङ्कर की असीम कृपा से हमारे प्रयास का प्रथम चरण बड़ी द्रुतगति से चल रहा है। हमारी कामना थी कि शक-राज्य में सभ्यता का सञ्चार करने के लिए व्यापार की उन्नति की जाये। इसमें हमें एक सीमा तक सफलता भी मिली है। शेष सफलता समय पाकर ही प्राप्त होगी। हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भद्रकच्छ को पुरिका के समान धन-धान्य से परिपूर्ण नगरी बनाना चाहते हैं। हमें विश्वास है कि हम अपने उद्देश्य में सफल हो रहे हैं।

"अब मैं इस क्षेत्र में शक और आर्य जनता में समन्वय के लिए दूसरा पग उठाना चाहता हूँ। मैं इस नगर को शिक्षा का एक महान् केन्द्र बनाना चाहता हूँ। हमारा लक्ष्य उज्ज्ञयिनी है। कच्छ में भी उज्ज्ञयिनी-जैसा शिक्षा का केन्द्र बन जाये, परन्तु यह तब ही हो सकेगा, जब यहाँ एक विशाल शिक्षा-केन्द्र की स्थापना की जाये। तब एक सौ वर्ष में भद्रकच्छ भी उज्ज्ञयिनी, वाराणसी एवं तक्षशिला-जैसा केन्द्र बन जायेगा, जहाँ देश-भर के विद्वान् आकर अपने को सौभाग्यशाली मानने लगेंगे।

पण्डित वीरभद्र के प्रस्ताव का सभी उपस्थित नागरिकों ने समर्थन किया और इसके लिए नगर के धनी-मानी व्यक्तियों की एक समिति बन गयी। पण्डित वीरभद्र उस समिति के अध्यक्ष निर्वाचित हुए और इस दिशा में कार्य द्रुतगति से चलने लगा।

:6 :

पद्मिनी गर्भवती थी। उसके गर्भ में छह मास का बालक पल रहा था। पति-पत्नी की सङ्गत नहीं हो पा रही थी। इन दिनों नृत्य-सङ्गीत मण्डली का पदार्पण राजप्रासाद में होने लगा था और प्रमुख नर्तकी कभी-कभी रात को राजप्रासाद में ही रहने लगी थी। पद्मिनी को यह बात पता थी, परन्तु वह अपनी अवस्था का विचार कर इस पर आपत्ति नहीं करती थी। महारानी के इस व्यवहार पर जयदमन को प्रसन्नता ही होती थी तथा वह पद्मिनी से और भी प्रेममय व्यवहार करने लगा था।

पिछले सात-आठ मास में जयदमन कई बार अपनी राजधानी खरीच जा चुका था, परन्तु मधुमति के तट पर सीमा को सुदृढ़ रखने के लिए तथा देश की सुरक्षा के प्रबन्ध में दुर्गों के निर्माण के लिए वह अधिकतर भद्रकच्छ में ही रहता था।

इस बार जब वह खरीच जाने लगा, तो प्रमुख नर्तकी वीणापाणि भी उसके साथ जाने के लिए तैयार हो गयी। मण्डली की अन्य नर्तकियाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भद्रकच्छ में ही रहीं।

जाने से पूर्व जयदमन ने पद्मिनी को बताया—"मेरे अधिक समय तक भद्रकच्छ में रहने के कारण खरीच में रहनेवाले कर्मचारी प्रमादी होते जा रहे हैं। साथ ही मैं चाहता हूँ कि वहाँ का प्रबन्ध भी उसी प्रकार होने लगे, जिस प्रकार यहाँ होता है। अत: यहाँ के कुछ कर्मचारी भी वहाँ ले जाकर मैं काम पर नियुक्त कर देना चाहता हूँ। इस कारण इस बार मुझे वहाँ कुछ अधिक समय तक रहने की आवश्यकता होगी।"

"तो मैं आपके साथ चलूँ?"

"तुम्हें यात्रा में कष्ट होगा। मैं समझता हूँ कि तुम प्रसव तक यहीं रहो। यहाँ पिताजी हैं, वह तुम्हारी देखभाल करेंगे।"

जब से विवाह हुआ था, पद्मिनी और जयदमन में इतने लम्बे समय के लिए पहली बार वियोग हुआ था। इस बार जयदमन खरीच गया, तो दिन, सप्ताह और मास व्यतीत हो गये, वह नहीं आया।

पद्मिनी के लड़का हुआ। इसकी सूचना खरीच में गयी, तो जयदमन ने लड़के के लिए मुक्ताहार और लड़के की माँ के लिए वस्त्र, आभूषण इत्यादि भिजवा दिये और कहला भेजा कि अभी कुछ मास तक पद्मिनी को विश्राम करना चाहिये। वह कुछ दिन उपरान्त ही आयेगा।

भद्रकच्छ में एक लाख स्वर्ण मुद्रा-कोष से एक महाविद्यालय की नींव रख दी गयी थी और उसके लिए भवन-निर्माण भी होने लगा था। उज्जयिनी तथा नालन्दा से विद्वान् इस महाविद्यालय में पढ़ाने के लिए आ पहुँचे थे। महाविद्यालय अभी नगर से पाँच कोस के अन्तर पर एक शिव-मन्दिर के प्राङ्गण में चालू कर दिया गया था। उस मन्दिर के निकट ही महाविद्यालय का भवन-निर्माण किया जाने लगा था।

जयदमन राजधानी खरीच गया, तो फिर नहीं लौटा। उसके स्थान पर सेनाध्यक्ष खापान अपने-आप को उस क्षेत्र का अध्यक्ष मानने लगा था। उस क्षेत्र का प्रबन्ध भृगुदत्त के पास था। अत: दोनों के आदेशों में अन्तर होने लगा था। यह अन्तर शिक्षा-दीक्षा में अन्तर के कारण उत्पन्न हुआ था। एक सैनिक संस्कारों से प्रभावित था और दूसरा देश के प्राचीन शास्त्रों और साहित्य से बनी बुद्धि के सहारे निश्चित कर रहा था।

अनेक बार आदेशों में भेद होने से दोनों को परस्पर मिलकर बात करने की आवश्यकता अनुभव हो चुकी थी। इस समय भद्रकच्छ में एक गम्भीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घटना घट गयी। भृगुदत्त अभी प्रातःकाल स्नान तथा सन्ध्योपासना से निवृत्त होकर बैठकघर में आये ही थे कि उनके द्वार पर नर्तकियों का नेता महासेन एक अभियोग लेकर आया। भृगुदत्त ने उसे भीतर बुलाकर पूछा—"क्या हुआ है?"

"पण्डितजी! मेरी मण्डली की एक नर्तकी पुष्पा की रात में हत्या कर दी गयी है।"

"कहाँ? नर्तकियों के निवास-गृह में?"

"नहीं, भगवन्! सैनिक शिविर में।"

"हत्या किस समय की गयी?"

"मध्य रात्रि के समय।"

"वह वहाँ क्या कर रही थी?"

"नृत्य-सङ्गीत के लिए रात के समय वह सैनिक शिविर में गयी थी। शिविर के नियमानुसार मण्डली के शेष लोग रात्रि के प्रथम प्रहर की समाप्ति पर नगर में लौट आये थे, किन्तु सेनापति के आग्रह पर वह नर्तकी शिविर में ही रह गयी थी। प्रातः समाचार आया कि आधी रात के समय उसकी हत्या कर दी गयी।"

"उसका शव कहाँ है?"

"उसे वहीं शिविर में ही भूमि में दबा देने का आदेश हो गया है।"

"क्या उसकी हत्या करनेवाले का पता चला?"

"मुझे एक सैनिक ने सूचित किया है कि पुष्पा की हत्या हो गयी है और उसके शव को शिविर के एक कोने में ही भूमि में दबाकर हत्या की बात को छिपाने का यत्न किया जा रहा है। मैं सेनाध्यक्ष के पास गया था। उसने कहा है कि शिविर में रात को किसी वेश्या ने एक सेनानायक की हत्या कर दी। इस कारण उस सेनानायक के मित्रों ने उस वेश्या की हत्या कर दी। मैंने सोनाध्यक्ष से निवेदन किया है कि इस विषय में जाँच होनी चाहिये। सेनाघ्यक्ष का कहना है कि इस विषय में जाँच हो चुकी है और जाँच का यही परिणाम है। हत्यारों का पता नहीं चला।"

भृगुदत्त ने कहा—"पहली बात तो यह है कि तुम पुष्पा नर्तकी का शव लेना चाहते हो या नहीं?"

"हम उसका दाह-संस्कार करना चाहते हैं।"

"ठीक है। इस विषय की एक याचिका मेरे कार्यालय में दे दो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

याचिका दी गयी, तो भृगुदत्त ने शव लेने के लिए शिविर के सेनाध्यक्ष के पास अपने सुभट भेज दिये। उसने यह लिखकर भेजा था—

"आदरणीय सेनाध्यक्ष महोदय!

"मेरे पास एक याचिका आयी है कि शिविर में एक असैनिक नागरिक की हत्या हो गयी है। कृपया उसका शव और यदि कोई पकड़ा गया है, तो वह और साथ ही पकड़े जानेवालों के विषय में जाँच तथा दण्ड की सूचना भेज दें।"

उत्तर में सेनाध्यक्ष ने लिखा था—"हत्या सैनिक शिविर में हुई है और अभी तक हत्यारे को पकड़ा नहीं गया है। शव भूमि में दबा दिया गया है। अब उसे उखाड़ा नहीं जा सकता। इससे मृतक का अपमान होता है। इसे हमारे यहाँ एक बहुत बड़ा अपराध माना जाता है।"

भृगुदत्त ने इसके उत्तर में लिखा—"मृतक एक असैनिक नागरिक था। इस कारण उसकी हत्या की सूचना आयुक्त के पास आनी चाहिये थी। यदि हत्यारा कोई सैनिक होता, तो हत्यारे को दण्ड देने का अधिकार सैनिक न्यायालय को ही था। किन्तु हत्यारे को दण्ड की सूचना मेरे पास आनी ही चाहिये। जहाँ तक मृतक के शव का सम्बन्ध है, उसके संरक्षक उसका अन्तिम संस्कार स्वयं करना चाहते हैं। मेरी राय में उनकी यह माँग उचित ही है।"

इस बार सन्देश ले जानेवाले को यह कहकर वापस भेज दिया गया कि इसका उत्तर नहीं दिया जायेगा।

भृगुदत्त यह सूचना लेकर पद्मिनी के पास गया। उसके लड़का हुआ था और वह प्रसूति-गृह में थी। भृगुदत्त के वहाँ पहुँचने पर प्रसूति-गृह से सूचना आयी—"राजकुमार के जन्म की सूचना महाराज के पास भेज दी गयी है और यहाँ आशा की जा रही है कि महाराज एक-दो दिन में यहाँ पहुँच जायेंगे। आप जिस कार्य के लिए मिलने आये हैं, उसके विषय में महाराज से मिलना ही उचित रहेगा।

"मेरे पास रात हुए दङ्गे की सूचना है और वहाँ यह यत्न हो रहा है कि हत्या का समाचार छिपा दिया जाये। इसका कारण यह है कि हत्या केवल नर्तकी की ही नहीं हुई, वरन् कुछ अन्य लोगों की भी हुई है। मैं इस विषय में हस्तक्षेप नहीं करूँगी।"

भृगुदत्त विवश हो गये और उन्हें जयदमन के राजधानी लौटने की प्रतीक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
करनी पड़ी। जयदमन बच्चे के तेरह दिन का हो जाने पर आया। उसके साथ वीणापाणि भी आयी और इस बार वह राजप्रासाद में ही टिक गयी।

भृगुदत्त ने जयदमन के सम्मुख उपस्थित होकर उसे पुष्पा की हत्या और उसके शव को शिविर में ही दबा देने तथा उसकी हत्या के विषय में सेनाध्यक्ष के उत्तर न देने के विषय में बता दिया।

जयदमन ने सब सुना और पूछा—"तो पण्डितजी! आप क्या चाहते हैं?"

"महाराज! मेरे चाहने की बात नहीं है। पुष्पा के संरक्षक उसके शव को जलाकर संस्कार करना चाहते हैं। साथ ही वह एक असैनिक नागरिक की हत्या की जाँच असैनिक न्यायालय में कराना चाहते हैं।"

"वह पटना से आयी नृत्य-संगीत मण्डली की सदस्या है न?"

"जी।"

"तो मण्डली के नायक से कहो कि वह अपनी मण्डली की नायिका वीणापाणि के द्वारा याचिका करें।"

भृगुदत्त ने एक क्षण तक विचार किया और उसे महाराज के व्यवहार में परिवर्तन अनुभव हुआ। वह नमस्कार कर लौट गया। उसने महासेन को सूचना दे दी कि वह अपनी याचिका वीणापाणि के द्वारा कराये।

"परन्तु वह कौन है, मण्डली का नायक मैं हूँ। वीणापाणि भी तो मेरे अधीन ही है।"

"इस पर भी तुम पहले उससे मिल लो। उसके उपरान्त मेरे पास आना।"

विवश महासेन वीणापाणि के पास जा पहुँचा। महासेन की बात सुनकर वीणापाणि ने कहा—"नायक! मैं इस विषय में तब ही हस्तक्षेप कर सकती हूँ, जब तुम एक याचिका महाराज के नाम मेरे द्वारा भेज दो।"

महासेन ने वीणापाणि की सम्मति के अनुसार एक याचिका महाराज के नाम द्वारा श्रीमती वीणापाणि लिखकर भेज दी।

जाँच महाराज ने की और सेनाध्यक्ष से कहकर आधा गला-सड़ा शव निकलवा कर मण्डली के नायक को दे दिया गया।

भृगुदत्त ने इस स्थिति में काम करने में असुविधा अनुभव की, परन्तु वह इस मामले को चुपचाप सह गये।

जयदमन के लड़के का नामकरण संस्कार करने का विचार किया गया, तो पण्डित वीरभद्र से सम्मति करने के लिए उन्हें बुलाया गया। पण्डित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वीरभद्र उन दिनों उस शिव-मन्दिर में रहते थे, जिसमें महाविद्यालय चल रहा था। लगभग एक सौ विद्यार्थी और पाँच अध्यापक वहाँ रहते थे। पण्डित वीरभद्र प्रबन्ध-समिति के अध्यक्ष के नाते वहाँ थे और भवन-निर्माण का निरीक्षण कर रहे थे।

पण्डित वीरभद्र को पद्मिनी के लड़का होने की सूचना मिली थी। जयदमन के भद्रकच्छ लौटने पर उन्हें बुलाया गया, तो वह गये, किन्तु महाराज से मिलने से पूर्व पण्डित वीरभद्र भृगुदत्त से मिले। भृगुदत्त ने उन्हें अपने और सेनाध्यक्ष में बढ़ रहे मतभेद और पुष्पा की हत्या का भी वृतान्त सुना दिया।

पण्डित वीरभद्र ने कहा—"मेरा अनुमान है कि वीणापाणि के महाराज की प्रेमिका बन जाने से स्थिति बदल रही है। पद्मिनी का प्रभाव मिट रहा है और इसके साथ ही भद्रकच्छ क्षेत्र के भारतीयों का शकराज पर प्रभाव भी कम होने लगा है। मुझे सूचना मिली है कि हमारे शिव-मन्दिर के निकट वीणापाणि अपना एक निवास-गृह बनवाना चाहती है। हमारी प्रबन्ध-समिति यह नहीं चाहती। हम विद्यालय के निकट गृहस्थियों का वास नहीं चाहते।"

भृगुदत्त ने कहा—"प्रबन्ध-समिति ने वहाँ निवास-गृह बनाने का विरोध लिखकर महाराज के पास भेज दिया है और इस विषय में मुझसे बातचीत होने वाली है। गुरुजी! मैं तो अपने पद से त्याग-पत्र देकर राज्य से पृथक् हो जाना चाहता हूँ। राज्य से पृथक् होने का अर्थ होगा इस क्षेत्र से पृथक् होना। इस विषय पर विद्यालय की प्रबन्ध-समिति में चर्चा हुई है। यहाँ अधिक संख्या में वैश्य समुदाय के लोग हैं। इनका विचार है कि कच्छराज की एक वर्ष में हुई उन्नति इनके परिश्रम का ही फल है। यदि महाराज हमारी सामान्य-सी बात भी नहीं मानते, तो हम पुनः कच्छ-राज्य को प्रस्थान कर जायेंगे। इनका कहना है कि एक वर्ष में पालतू जानवरों की इतनी हत्या हुई है कि यहाँ दूध और अन्न का अभाव अनुभव होने लगा है। वे इस हत्या को बन्द कराना चाहते हैं।"

पण्डित वीरभद्र ने कहा—"देखो भृगुदत्त! एक समय जयदमन ने स्वयं गो-हत्या वर्जित करने के लिए कहा था और उस समय मैंने ही उसे इस काम के लिए राजाज्ञा अनावश्यक बतायी थी। मैं समझता था कि समझाने से शक समझ जायेंगे, किन्तु इस काम में समय लगने वाला है और इन लोगों ने उससे पहले ही गो-वंश को निःशेष करने का प्रयत्न करना आरम्भ कर दिया है। मेरा विचार था कि विद्यालय के शक विद्यार्थियों द्वारा इस दिशा में प्रचार कराऊँगा, परन्तु अब तो पानी नाक से भी ऊपर आ रहा प्रतीत हो रहा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो अब?"

"मैं प्रयत्न कर रहा हूँ कि सारे मतभेद शान्तिपूर्वक मिट जायें और हम राज्य को व्यक्तिगत धर्मों में हस्तक्षेप से मना करें और न्यायपालिका के कार्य में सेना के हस्तक्षेप को रोका जा सके। यदि ये दो मुख्य बातें स्वीकार नहीं की जातीं हैं, तो राज्य से पृथक् हो जाना होगा और कदाचित् यत्न करना पड़ेगा कि यहाँ राज्य बदले, परन्तु उसके लिए केवल यत्न ही किया जा सकता है; क्योंकि युद्ध तो क्षत्रिय वर्ण के लोग ही लड़ेंगे।"

:7:

पण्डित वीरभद्र जयदमन से भेंट के लिए उपस्थित हो गये। जयदमन ने उन्हें विशेष रूप से बुलाया था। पण्डित वीरभद्र को अपने सामने बैठाकर जयदमन ने औपचारिक सुख-समाचार पूछने के उपरान्त उन्हें बुलाने का प्रयोजन बताना आरम्भ किया।

उसने कहा—"पण्डित प्रवर! पद्मिनी के लड़के का नाम रखने का समय आ पहुँचा है।"

"जी महाराज! आज्ञा कीजिये।"

"हमारे पुरोहित इसका नाम अपने रीति-रिवाज के अनुसार रखना चाहते हैं।"

"यही उचित है।"

"परन्तु पद्मिनी इसे अपने रीति-रिवाज के अनुसार चाहती है।"

"वह अपने निजी रूप में जो चाहे कर सकती है। मेरी राय में इतनी स्वतन्त्रता तो आपको उसे देनी ही चाहिये, परन्तु मैं इसे उसका अधिकार नहीं मानता कि वह इस विषय में आपको अथवा आपके समाज को उनकी रुचि के विपरीत करने को कहे।"

"तो दो प्रकार के रीति-रिवाज होंगे।"

"राज्य में और आपके समाज में आपके रीति-रिवाज चलेंगे, परन्तु वह अपने घर में निजी रूप से कुछ दूसरे संस्कार कर सकती है।"

"तो आप उसे समझा दीजिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"हाँ, महाराज! मैं प्रयत्न करूँगा। वह महारानी है। मैं उसकी प्रजा हूँ। मैं उसे इस योजना का औचित्य समझा दूंगा।"

जयदमन अब भली-भाँति देव-वाणी में बातचीत कर सकता था। अतः मालती को द्विभाषिये के रूप में सामने बैठाने की आवश्यकता अब नहीं पड़ती थी। इसके साथ ही अब पण्डित वीरभद्र भी शक-भाषा का चालू ज्ञान प्राप्त कर चुके थे।

जयदमन ने दूसरी बात कही—"आपके सागर-तटवाले शिव-मन्दिर का स्थान वीणापाणि को बहुत पसन्द है और उसने इच्छा प्रकट की है कि वह वहाँ अपना एक निवास-गृह बनवाये। भद्रकच्छ महाविद्यालय के मुख्याचार्य का पत्र मिला है, जिसमें उन्होंने हमसे निवेदन किया है कि प्रबन्ध-समिति इसे पसन्द नहीं करती कि विद्यालय के पाँच कोस तक गृहिस्थयों का वास रहे। हम प्रबन्ध-समिति के इस कारण को उचित नहीं मानते।"

"कारण तो ठीक ही है। ब्रह्मचारियों को गृहस्थियों के सम्पर्क में रखना ठीक नहीं है।"

"परन्तु वहाँ आचार्य लोग भी तो रहते हैं।"

"जी, और उनकी पत्नियाँ और परिवार के अन्य सदस्य भी रहते हैं, परन्तु आचार्य-पत्नी तथा आचार्य की लड़कियों से माँ और बहिन का सम्बन्ध माना जाता है, जबकि अन्य स्त्रियों और लड़कियों के वास में यह सम्बन्ध न होने से दोष उत्पन्न होने की सम्भावना है।

"क्या दोष हो सकता है?"

"कुमारावस्था में विद्यार्थियों को स्त्री-संसर्ग की इच्छा हो सकती है। इसे शिक्षा-काल में वर्जित माना गया है।"

"किसने वर्जित माना है?"

"प्रबन्ध-समिति ने।"

"परन्तु राज्य इसे वर्जित नहीं मानता।"

"महाराज! यह राज्य का कर्तव्य नहीं कि वह आचार-विचार के सम्बन्ध में कुछ आदेश दे। इस सम्बन्ध में व्यवस्था देने का अधिकार ब्राह्मण-वर्ग को ही है।"

"आपकी प्रबन्ध-समिति में कोई शक तो है ही नहीं।"

"यह व्यवस्था तो भारतीय ब्राह्मणों की है। इस सम्बन्ध में प्रबन्ध-समिति ने अपनी ओर से कुछ नहीं कहा।"

Gurukul Kangri Library ... 167992 ... Haridwar

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भारतीय ब्राह्मण-वर्ग की व्यवस्था को हम अस्वीकार करते हैं। इसमें हमारे राज्य की व्यवस्था चलेगी।"

"महाराज! राज्य की नहीं, आपके पुरोहित-वर्ग की इच्छा चलनी चाहिये। उनमें से प्रमुखों को भेज दें। दोनों का संयुक्त निश्चय राज्य को मानना चाहिये।"

"हमारा शक-राज्य अपने को पुरोहितों के अधीन नहीं समझता और न ही इसे पुरोहितों के अधीन करना चाहता है।"

"तो इसका अर्थ यह हुआ कि ब्राह्मण-वर्ग अपने को राज्य से अलग कर ले।"

"अपने विद्यालय की प्रबन्ध-समिति में हम अपने सेवकों को ही रखना चाहते हैं। जो लोग हमारी सेवा में नहीं हैं, हम उनको विद्यालय की प्रबन्ध-समिति में रखना पसन्द नहीं करते।"

"परन्तु महाराज! प्रबन्ध-समिति के सदस्य किसी के वेतनधारी नहीं हैं। उन लोगों ने ही विद्यालय के लिए एक लक्ष स्वर्ण एकित्रत किया है। वे अभी और एकत्रित करने वाले हैं।"

"इस सारे धन को हम राज्य का ही मानते हैं। यही शक-प्रथा है।"

"प्रबन्ध-समिति में एक शक भी है। वह खरीच का एक धनी व्यक्ति है और उसने विद्यालय के लिए पाँच सहस्र स्वर्ण दिया है। उसने भी प्रबन्ध-समिति को राज्याधीन होने की सम्मति नहीं दी है।"

"उसे हमने समझा दिया है। अब वह अपनी सम्मति हमारे अनुकूल ही देगा।"

"परन्तु अन्य लोग भी तो हैं। जब तक प्रबन्ध-समिति के सदस्य यह नहीं मानेंगे तब तक कोई भी आपकी बात नहीं मानेगा।"

"क्यों नहीं मानेंगे?"

"प्रबन्ध-समिति के सदस्य राजा से वेतन लेना स्वीकार नहीं करेंगे।"

"तो हम उनकों सेवक बना लेंगे।"

"तब वे राज्य से बाहर विद्यालय बनायेंगे।"

"कहाँ बनायेंगे?"

"यह मैं अभी नहीं बता सकता। इसका निर्णय प्रबन्ध-समिति ही करेगी।"

"तो इस विषय में पता लगाओ। एक तो यह कि वे लोग यहाँ विद्यालय बनाना मानते हैं या नहीं। दूसरा यह कि भविष्य में उनको राज्य का वेतनधारी होना पड़ेगा। वे पूर्ण समय के सेवक नहीं होंगे। उनको समिति की प्रत्येक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैठक में उपस्थित होने का वेतन मिलेगा। इसका अर्थ यह कि उनको राजा की आज्ञा माननी होगी। हमने देखा है कि वेतन न पानेवाले सदस्य राज्य-हित में काम नहीं कर सकते।"

"तो महाराज! मैं इस विषय में राजा की इच्छा उन तक पहुँचा दूंगा और वे लोग अपनी सम्मति आपको बता देंगे।"

"आप वहाँ किस रूप में कार्य करते हैं?"

"मैं विद्यालय का मुख्य अधिष्ठाता हूँ।"

"प्रबन्ध-समिति आपको क्या वेतन देती है?"

"मैं वेतन पर काम करना पसन्द नहीं करता और न वे मुझे वेतन देना चाहते हैं। कोई भी ब्राह्मण किसी का भी वेतनधारी सेवक नहीं हो सकता।"

"परन्तु आपके शिष्य भृगुदत्त तो राज्य-कार्य करते हुए भी राज्य से वेतन नहीं लेते।"

"ब्राह्मण किसी का सेवक नहीं हो सकता।"

"हम इसे पसन्द नहीं करते। हम सेनाध्यक्ष से उसके झगड़े का कारण भी यही मानते हैं। दोनों में अत्यधिक मतभेद हो गया है।"

"महाराज! राज्य में कुछ हत्याएँ हो गयी हैं। उन हत्याओं में जाँच और निर्णय करने के लिए एक न्यायाधीश नियुक्त किया हुआ है। भृगुदत्त ने उन हत्याओं की जाँच और अपराधी को दण्ड देने के लिए शव-परीक्षण और सैनिकों से पता करने के लिए महादेव श्रमण को नियुक्त करना चाहा था। सेनाध्यक्ष ने इसे पसन्द नहीं किया।"

"सेनाध्यक्ष हमारा सेवक है, वह हमारा ही कहा मानेगा। इस विषय में उसे हमें बताना चाहिये था।"

"महाराज! भृगुदत्त ने वही करना चाहा था, जो करने के लिए आपने उसे नियुक्त किया हुआ है। उसने सेनाध्यक्ष द्वारा उसकी आज्ञा न मानने के विषय में आपसे कहा था, परन्तु आपने उसको उत्तर नहीं भेजा। इससे वह समझ रहा है कि आपने सेनाध्यक्ष को उसकी धृष्टता के लिए क्षमा कर दिया है। इस कारण उसने पुनः आपसे इस विषय में नहीं कहा।"

"परन्तु हम तो नित्य होनेवाले मतभेद की बात कह रहे हैं। कुछ दिन हुए कि सेनाध्यक्ष ने भृगुदत्त पर यह आरोप लगाया था कि उसने दो सैनिकों को मद्य पिये हुए नगर में घूमते हुए पकड़कर बन्दी बनाने की आज्ञा दी है। वह चाहता है कि सैनिकों को दण्ड देने का अधिकार सेनाध्यक्ष को ही है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु महाराज! यह अधिकार तो उन अपराधों के विषय में है, जो सैनिकों द्वारा शिविर के भीतर किये जाते हैं। यदि कोई सैनिक किसी प्रकार का अपराध शिविर के बाहर किसी असैनिक क्षेत्र में करे, तो उस अपराध की जाँच और अपराधी को दण्ड देने का अधिकार न्यायाधीश को है।

"पुष्पा की हत्या के विषय में विवाद दूसरा था। उसका विषय यह था कि हत्या एक सैनिक की हुई और वह अपराध असैनिक क्षेत्र में हुआ। उस समय न्यायाधीश ने ही उन सैनिकों को दण्ड दिया था। भृगुदत्त ने तो न्यायाधीश की आज्ञा का ही पालन किया है।"

"हम उन सैनिकों को मुक्त कर देना चाहते हैं।"

"यह आप कर सकते हैं। जब आप जैसी आज्ञा देंगे, तो वह उसे मान जायेगा।"

"वह वेतनधारी न होने के कारण काम छोड़ देगा अथवा असावधानी से करने लगेगा।"

"जब वह ऐसा करेगा, तो उसे पदच्युत किया जा सकेगा। इस पर भी वह आपकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करेगा और कार्य सावधानी एवं सतर्कता से करेगा।"

पण्डित वीरभद्र ने युक्ति से बात समझ-समझा दी। केवल विद्यालय के स्थान पर राजभवन बनने का विषय अनिर्णीत रहा।

इसके उपरान्त पण्डित वीरभद्र पद्मिनी से मिलने गये। पद्मिनी ने अपने लड़के को उसके नाना की गोदी में देकर कहा—"पिताजी! मुझे इसके जीवन का भय सता रहा है। मैं इसे आपके संरक्षण में दे रही हूँ।"

पण्डित वीरभद्र ने कहा—"देखो पद्मिनी! जब तुमने इस पशु-वृत्ति के व्यक्ति से विवाह स्वीकार किया था, तो तुम्हें समझ लेना चाहिये था कि तुम अपनी स्वतन्त्रता को एक सीमा तक पशु के अधीन कर रही हो। पहले तुम्हारी स्वतन्त्रता की सीमा कुछ अधिक थी। यह तुमसे उसकी वासना-तृप्ति होने के कारण ही थी। अब उसे वासना-तृप्ति के लिए एक सहयोगी मिल गया है। इस कारण तुम्हारी स्वतन्त्रता की सीमा संकुचित हो रही है। तुम्हें इसे स्वीकार कर लेना चाहिये।

"इस पर भी एक सीमा है, जिससे अधिक स्वतन्त्रता का सङ्कोच तुम्हें स्वीकार नहीं करना चाहिये। वह तुम्हारे अधिकारों की अन्तिम सीमा है। उसे तुम समझ लो और जब उसका उल्लंघन होने लगेगा, तब ही तुम्हें चिन्ता करनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिये।"

"पिताजी! मैं अपने लिए नहीं कह रही। अपने अधिकारों की रक्षा तो मैं स्वयं कर लूंगी। नहीं कर सकूंगी, तो यह शरीर छोड़ दूंगी। मैं इस एक मास के बालक के विषय में कह रही हूँ। यह मेरा पुत्र है, मैं इसे अपने ज्ञान का उत्तराधिकारी बनाना चाहती हूँ। इसमें केवल मेरे आत्मसन्तोष की ब़ात नहीं है, वरन् मैं समझती हूँ कि देश और जाति के भावी कल्याण पर भी इसका प्रभाव हो सकेगा।"

"ठीक है। मैं सब समझता हूँ, किन्तु पद्मिनी! अभी इसके अधिकारों की बात नहीं हो रही, इसके संस्कारों की बात हो रही है। वे तुम्हारे अधीन हैं। देखो! इसके विषय में इसके पिता को अपने सजातियों में उनके रीति-रिवाज चलने दो। कठिनाई उस समय होगी, जब यह माँ की गोद से उतरकर स्वेच्छा से घूमने-फिरने लगेगा। उस समय के लिए मैं योजना बनाऊँगा। अभी तो यही ठीक होगा कि तुम इसका नाम रखो और उन्हें भी इसका नाम रखने दो। शेष के विषय में विचार करने का अभी समय नहीं है।

पद्मिनी ने उसी दिन वेद-मन्त्रों के उच्चारण के साथ बालक का नाम रुद्रदमन रख दिया।

:8:

पद्मिनी को नाम रखने के समारोह के उपलक्ष्य में राजधानी खरीच ले जाया गया, जहाँ धूमधाम से बालक का नाम मघपान रखा गया। पद्मिनी पहली बार राजधानी आयी थी, जहाँ उसे राजभवन में ठहराया गया।

जयदमन वीणापाणि को भी अपने साथ राजधानी ले गया था, परन्तु वह आग्रह कर रही थी कि उसके लिए एक पृथक् भवन भद्रकच्छ में ही सागर-तट पर शिव-मन्दिर के निकट बनवा दिया जाये।

जयदमन भद्रकच्छ में बन रहे विद्यापीठ की प्रबन्ध-समिति के साथ झगड़ा करना नहीं चाहता था और प्रयत्न कर रहा था कि वीणापाणि किसी अन्य स्थान का चयन कर ले। प्रबन्ध-समिति का पत्र आया था और उसमें निवेदन किया गया था कि विद्यालय का पठन-पाठन मन्दिर के प्रांगण में वृक्ष

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के नीचे बैठकर किया जा रहा है। इसके लिए पक्का भवन-निर्माण हो रहा है, जिस पर कई सहस्र स्वर्ण व्यय हो चुका है। भवन का निर्माण-कार्य पिछले तीन मास से इस कारण रोक दिया गया है कि विद्यालय की प्रबन्ध-समिति मन्दिर के निकट महाराज के भवन-निर्माण की योजना को उचित नहीं मानती।

यदि महाराज का यही निर्णय रहा कि राजभवन वहीं बनेगा, तो समिति विद्यालय के लिए कोई अन्य स्थान देखेगी। उस स्थिति में समिति वर्तमान भवन पर अधिक धन व्यय करना नहीं चाहती। राज्य की ओर से निश्चित योजना की सूचना देने की कृपा की जाये, ताकि प्रबन्ध-समिति निर्माण-कार्य को आगे बढ़ा सके।

इस पत्र का उत्तर ही खरीच में विवाद का विषय बन चुका था। जयदमन चाहता था कि भद्रकच्छ के व्यापारियों से झगड़ा न किया जाये, जबकि वीणापाणि शिव-मन्दिर के निकट ही अपने लिए भवन-निर्माण कराने का हठ कर रही थी।

इस विषय में तथा अन्य किसी भी विषय में पद्मिनी से सम्मति नहीं ली जाती थी। लड़के का नाम रखने के उपरान्त जयदमन पद्मिनी से मिलने भी नहीं गया। एक बार कुछ सेविकाओं ने पद्मिनी को यह सुझाव दिया कि उसे वीणापाणि से अपना मेल-जोल बढ़ाना चाहिये, किन्तु पद्मिनी ने इसमें कोई रुचि नहीं दिखायी।

इधर जयदमन ने वीणापाणि से कहा कि वह पद्मिनी से साख्य-सम्बन्ध बनाने का प्रयत्न करे। जयदमन ने इसके लिए स्वयं प्रयत्न करने का प्रस्ताव भी रखा, किन्तु वीणापाणि ने यह कहकर बात को टाल दिया कि वह ब्राह्मण-कन्या उससे केवल घृणा ही कर सकती है। इस कारण वह अपमानित होने के लिए उसके सम्मुख नहीं जायेगी।

इस समय भद्रकच्छ में सैनिकों और असैनिकों में वैमनस्य बढ़ रहा था। जब से शिविर में नर्तकी पुष्पा की हत्या हुई थी, नर्तकियों ने शिविर में जाना बन्द कर दिया था। सैनिक उनके सङ्गीत-समारोह आदि देखने-सुनने के लिए नगर में आते रहते थे। नर्तकियों ने अपने लिए नगर के मध्य एक कला-भवन बनवा लिया था, जहाँ प्रति पूर्णिमा की रात उनके समारोह हुआ करते थे। भवन में एक बहुत बड़ा प्राङ्गण था और समारोह उसी प्राङ्गण में हुआ करते थे। वहाँ नागरिकों को निःशुल्क आने की स्वीकृति होती थी। इस समारोह में सैनिक भी भारी संख्या में आया करते थे। उस रात आयुक्त को नगर की स्त्रियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
की सुरक्षा के लिए विशेष प्रबन्ध करना पड़ता था। इस पर भी छेड़-छाड़ की छुटपुट घटनाएँ होती ही रहती थीं। पण्डित वीरभद्र की सम्मति से भृगुदत्त नगर-रक्षकों और सैनिकों को आमना-सामना होने से बचाते रहते थे।

इस पर भी एक दिन एक बृहद् घटना हो गयी। सेनाध्यक्ष के लोग वाराणसी से आयी पुत्रिका नाम की एक नयी नर्तकी को सैनिक शिविर में चलने का निमन्त्रण देने लगे। निमन्त्रण स्वीकार नहीं हुआ। इस पर सैनिकों ने पुत्रिका को उठाकर ले जाना चाहा। पुत्रिका ने हल्ला मचा दिया। इस पर नागरिकों और सैनिकों में जमकर युद्ध होने लगा। दोनों ओर से खड्ग निकल आये और मार-काट होने लगी।

पुत्रिका को शिविर में नहीं ले जाया जा सका, परन्तु सैनिकों और नागरिकों के युद्ध में बीस व्यक्ति मारे गये और पचास के लगभग घायल हुए। मारे जानेवालों में पाँच सैनिक भी थे। यद्यपि मरनेवाले नागरिकों की संख्या सैनिकों से अधिक थी, तथापि सैनिकों में रोष अधिक था। एक सैनिक को—जिसने आरम्भ में पुत्रिका को उठाया और रथ पर बैठा कर ले जाने का प्रयत्न किया था और बलपूर्वक ले जाये जाने पर पुत्रिका ने बहुत हल्ला किया था और उसको छुड़ाने के प्रयास में नगर-रक्षकों ने उस सैनिक को और उसके रथ को अपने अधिकार में कर लिया था—प्रमुख अपराधी माना गया था।

अगले दिन उस सैनिक को वापस सैनिक शिविर में भेज देने की सेनाध्यक्ष की आज्ञा आयी। इस पर भृगुदत्त ने बन्दी सैनिक को न्यायाधीश के अधीन कर सेनाध्यक्ष से कह दिया कि बन्दी न्यायाधीश के संरक्षण में है। न्यायाधीश ने बन्दी पर अभियोग चलाने की आज्ञा दे दी। अभियोग की सुनवाई में पता चला कि पकड़ा गया व्यक्ति सेनाध्यक्ष का बड़ा लड़का है। न्यायाधीश ने इस सूचना पर पूर्ण अभियोग सुनकर निर्णय दिया। निर्णय में अभियुक्त को दो वर्ष के कठोर दण्ड की आज्ञा देकर बन्दी-गृह में भेज दिया गया और सेनाध्यक्ष को उसके पत्र का उत्तर दे दिया।

न्यायाधीश ने लिखा था—

"सेनाध्यक्ष महोदय! अपराधी निरग्र काहर को एक नागरिक स्त्री के अपहरण करने का दोषी पाया गया है और उसे दो वर्ष के कठोर दण्ड की आज्ञा हो गयी है। नियमानुसार इस विषय में महाराज से याचना करनी चाहिये। वह अपराधी को क्षमा कर सकते हैं।"

उसी रात दो सहस्त्र सैनिक बन्दीगृह पर चढ़ आये और बन्दीगृह में तोड़-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
फोड़ कर वहाँ बन्द सब बन्दियों को छुड़ाकर ले गये। निरग्र काहर ने छूटते ही आक्रमणकारी सैनिकों का नेतृत्व अपने हाथ में लेकर कला-भवन पर धावा बोल दिया और वहाँ की सब नर्तकियों और उनके सहयोगी मृदङ्ग आदि बजानेवालों को पकड़कर सैनिक शिविर में ले गया।

नगर-रक्षकों ने सैनिकों का विरोध करना चाहा, परन्तु वे संख्या में कम थे और सैनिक उनसे अधिक युद्ध-कुशल थे। परिणामस्वरूप मरनेवाले नगर-रक्षकों की संख्या पचास से अधिक हो गयी। घायलों की संख्या सौ से भी अधिक थी।

इस संघर्ष के उपरान्त नगर के पूर्ण वैश्य समाज ने नगर छोड़ने का निश्चय कर लिया। दो-चार दिन में ही नगर के पाँच सहस्र से अधिक लोग अपना धन-दौलत समेटकर मधुमति को पार कर पूर्व की ओर पहुँच गये।

भद्रकच्छ में घटी इस घटना की सूचना राजधानी में महाराज जयदमन के पास भेजी गयी और उस सूचना के साथ ही भृगुदत्त ने अपना त्याग-पत्र भी भेज दिया। उसने त्याग-पत्र में लिखा था—"मैं प्रयत्न कर रहा था कि शक-राज्य में भी सामान्य न्याय की प्रथा चला सकूँ, परन्तु मैं इसमें सफल न हो सका। इस कारण मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि यह घटना—जिसका विवरण साथ के सूचना-पत्र में लिखा है—इस कारण घटी है कि सेनाध्यक्ष के इस अधिकार को राज्य की ओर से स्वीकार कर लिया गया था कि उसके सैनिक नगर में नागरिकों को हानि पहुँचाने पर भी नगर के प्रबन्ध द्वारा दण्डित नहीं किये जा सकते। मैं इसे सिद्धान्ततः उचित नहीं मानता। या तो सैनिकों को नगरों में आना ही नहीं चाहिये और यदि वे नगरों में आयेंगे, तो उनको नगरों के नियमों का पालन करना होगा। दोनों ही बातें नहीं हो रहीं। अतः इस अवस्था में मैं अपने कर्तव्य का पालन नहीं कर सकता और अपने पद से त्याग-पत्र देता हूँ। मैं चाहता हूँ कि महाराज मेरा स्थानापन्न यहाँ भेज दें।"

इस घटना की सूचना शिव-मन्दिर में भी पहुँची, तो पण्डित वीरभद्र ने तुरन्त प्रबन्ध-समिति की बैठक बुला ली। विद्यालय के प्रबन्धक भद्रकच्छ नगर में ही रहते थे। उनमें से समिति की बैठक में कोई नहीं आया और सबने मिलकर पण्डित वीरभद्र को सूचित कर दिया—"हम परिवारसहित शक-राज्य को छोड़ रहे हैं और हम चाहते हैं कि विद्यालय को भी यहाँ से उठाकर कच्छ-राज्य में ले जाया जाये। हम प्रयत्न कर रहे हैं कि विद्यालय का पूर्ण कोष भी राज्य से बाहर ले जाया जाये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डित वीरभद्र के पास यह पत्र पहुँचने से पहले ही वैश्य एवं ब्राह्मण समुदाय के छात्र विद्यालय के छात्रावास से जाने लगे थे। विद्यालय के छात्रावास में यह सूचना पहुँच गयी थी कि शक-राज्य में उनका रहना सुरक्षित नहीं है। इस कारण लड़के अधिकारियों को सूचित किये बिना ही अपने-अपने घरों को चले गये।

पण्डित वीरभद्र को छात्रों के चले जाने की सूचना मिली, तो वह छात्रावास में पहुँचे और भागते हुए छात्रों से पूछने पर उन्हें पता चला कि छात्रों के माता-पिता ने उनको अधिकारियों को सूचित किये बिना तुरन्त घर चले आने की आज्ञा दी है।

पण्डित वीरभद्र ने पूछा—"अधिकारियों को सूचित किये बिना क्यों?"

इस पर एक विद्यार्थी ने झिझकते हुए कहा—"सन्देश लानेवाले मेरे बड़े भाई ने बताया था कि आपकी लड़की महारानी है। इस कारण आप अपनी लड़की का पक्ष लेंगे।"

इस सूचना से पण्डित वीरभद्र के पाँवों तले की मिट्टी खिसक गयी। उन्होंने उत्तर दिया—"मैं लड़की से अधिक अपने सजातियों से प्रेम करता हूँ। अत: मैं भी इस राज्य को छोड़ रहा हूँ।"

परिणाम यह हुआ कि दो ही दिन में विद्यालय, छात्रावास और अध्यापकों के कक्ष वीरान हो गये। जिसका जिधर सींग समाया, वह उधर भाग गया। यह बात प्रसिद्ध हो गयी कि महाराज जयदमन की प्रेमिका पहले यहाँ अपना निवास-स्थान बनवाना चाहती है। अब तो नागरिकों और सैनिकों के झगड़े में यह विद्यालय भी राजा तथा उसकी प्रेमिका के अधिकार में आ गया है।

राजधानी में आयुक्त भृगुदत्त के त्याग-पत्र और सैनिकों एवं नागरिकों के झगड़े की सूचना पर विचार हो रहा था। उसी समय सैनिक शिविर में यह सूचना आयी कि नागरिक अपना सब धन-दौलत लेकर भाग रहे हैं। इस कारण आज्ञा दी जा रही है कि भागनेवालों को रोका जाये।

सेनाध्यक्ष जानता था कि महाराज की यह आज्ञा अवश्य आयेगी कि जानेवालों को जाने से रोका जाये। कम-से-कम धन और युवा स्त्रियों को तो रोक ही लिया जाये। अत: इस आज्ञा पर विश्वास कर उसने नगर पर घेरा डाल दिया। इस पर भी आयुक्त बचे-खुचे नगर-रक्षकों की सहायता से स्वयं अपने परिवारसहित निकलने में सफल हो गया। अधिकांश धनी-मानी लोग निकल चुके थे। साधनों के अभाव में कुछ भाग्यहीन लोग अथवा सैनिक संरक्षण पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक भरोसा करनेवाले रह गये थे।

डेढ़-दो वर्ष में भद्रकच्छ एक गाँव से छोटा-मोटा नगर बन गया था। क्रय-विक्रय के कारण व्यापारी वर्ग आकर्षित होकर वहाँ आने लगा था। दो वर्षों से वृद्धि पा रहा नगर जब उजड़ने लगा, तो एक सप्ताह में ही ख़ाली हो गया। रहा-सहा सैनिकों ने लूट लिया। वे लोग, जो राज्य-परिवर्तन से लाभ की आशा करते थे और गाँव में टिके थे, उन्हें भी लूटकर मार डाला गया था।

जब नगर में लूटने को कुछ नहीं बचा, तो सैनिक देहातों में घूम-घूमकर प्रजा को लूटने लगे। उनका कहना था कि वे भद्रकच्छ से भागे लोगों को पकड़कर वापस भद्रकच्छ ले जाना चाहते थे, परन्तु वास्तव में, पिछले दो वर्षों में लूटने-पीटने की आज्ञा से छूट मिल जाने पर शक-सैनिक निरंकुश हो गये थे।

परिणामस्वरूप भद्रकच्छ का वह पूर्ण क्षेत्र, जिस पर शक-राज्य का अधिकार हुआ था और जो मधुमति नदी के पश्चिम की ओर था, अब वीरान हो गया। दो वर्ष पूर्व से भी अधिक विकट स्थिति उत्पन्न हो गयी थी। इस बार लूट-पाट करने वाले सैनिक पचास सहस्र थे।

राजधानी में भद्रकच्छ के अधिकृत क्षेत्र से भगदड़ के समाचार आने लगे, तो जयदमन पद्मिनी के पास पहुँचा और भद्रकच्छ तथा उसके आस-पास के क्षेत्र से आनेवाले समाचार बताकर कहने लगा—"महारानीजी! आप अपने पिताजी को यहाँ बुला लें, तो उनकी सम्मति से उस क्षेत्र में प्रबन्ध कर दिया जाये।"

"मेरे पास वहाँ की कोई सूचना नहीं है। मुझे तो उड़ता-उड़ता समाचार मिला है कि सैनिकों से डरकर वहाँ के लोग घर-बार छोड़कर भाग रहे हैं।"

"आपके पिताजी कहाँ हैं?"

"मेरे पास उनकी कोई सूचना नहीं है।"

"फिर आपके पास यह सूचना किसके द्वारा आयी?"

"मेरी कुछ सेविकाएँ भद्रकच्छ की रहनेवाली हैं। उनका अपने सम्बन्धियों से सम्पर्क है। उन सेविकाओं में से भी कुछ यहाँ से भाग गयी हैं। कुछ यहाँ रह रही हैं, परन्तु उनके भी चित्त में उत्पन्न घबराहट को मैं देख रही हूँ।

"मैं चाहता हूँ कि सम्बन्ध पूर्ववत् ही बने रहें।"

"परन्तु आपकी सेना भी तो बाग़ी हो सकती है।"

"हाँ, यही तो भय की बात है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अब तो सेना को प्रसन्न होना चाहिये।"

"सेनाध्यक्ष और सेना प्रसन्न हैं, परन्तु क्यों, मैं समझ नहीं सका।"

"इसे समझने में क्या कठिनाई है? क्षत्रिय स्वभाव के लोग कर्म करते रहना चाहते हैं। यह उनके स्वभाव में होता है कि वे कर्म करें, किन्तु वे अपने कार्य पर विचार कर नहीं करते।"

"परन्तु आश्चर्य की बात तो यह है कि उनमें से एक ने भी यह नहीं बताया कि उनका कार्य उचित नहीं!" जयदमन ने विस्मय से कहा। इसके साथ ही उसने यह भी कह दिया—"देखो पद्मिनी! झगड़े का मूल कारण यह है कि वे और उनके अधिकारी यह मानते हैं कि नागरिक सैनिकों पर न्याय नहीं कर सकते। नागरिक उनकी प्रजा हैं और प्रजा राजा के कार्यों पर न्यायाधीश नहीं बन सकती।"

"यह सब क्षत्रिय स्वभावानुसार ही है। प्रथम, तो सेना में सेवा करना वे ही लोग स्वीकार करते हैं, जो बिना विचार किये कर्म करने में विश्वास करते हैं। साथ ही सङ्गत से भी स्वभाव बन जाता है। यदि सेना में कोई ब्राह्मण प्रकृति का व्यक्ति भरती हो जाता है, तो वहाँ की सङ्गत के प्रभाव से वह भी उन-जैसा ही बन जाता है। कहावत है कि खरबूजे को देखकर खरबूजा रङ्ग पकड़ता है। सैनिक समझते हैं कि उनको प्रत्येक कर्म करने की स्वतन्त्रता है। वे स्वयं किसी कार्य के भले-बुरे परिणामों पर विचार नहीं कर सकते। इस कारण उनके बिना विचारे कार्य दुष्परिणाम भी उत्पन्न कर सकते हैं।"

"इसका अर्थ यह हुआ कि क्षत्रिय सदा मनमानी करेंगे। यदि यही होना है, तो इसमें कोई क्या कर सकता है? जो व्यक्ति सेना में नहीं हैं, उन्हें सेना का कहा मानना चाहिये, अन्यथा उनका कल्याण नहीं।"

"हाँ, किन्तु राजा को चाहिये कि सेना को ऐसे लोगों के अधीन रखे, जो ब्राह्मण प्रकृति के हों और जिनके सहयोग से उसे लाभ होनेवाला हो।"

"यह कैसे हो सकता है?"

"महाराज! मैं यह कह रही हूँ कि यही होना चाहिये और दो वर्षों तक यही होता रहा है, परन्तु अब छह मास से सैनिकों ने यह छूट प्राप्त कर ली है कि उनके कार्यों पर किसी विद्वान् ब्राह्मण की आज्ञा न चल सके। महाराज! आपने पुष्पा की हत्या की जाँच किसी निष्पक्ष न्यायाधीश के द्वारा नहीं होने दी, अर्थात् आपने यह स्वीकार कर लिया कि सैनिकों के कार्य पर किसी का भी अंकुश नहीं हो सकता। यह सब उसी का परिणाम है। उस समय तो हत्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिविर में हुई थी, परन्तु अब तो हत्याएँ और अपहरण शिविर से बाहर भी होने लगे हैं।"

"पुष्पा से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है? उसकी साथी वीणापाणि ने तो हमारी आज्ञा पर कोई आपत्ति नहीं की।"

"उसने राजनीति नहीं पढ़ी। उसने संसार के इतिहास का भी अध्ययन नहीं किया। इस कारण वह समाज में व्यवस्था का लाभ नहीं समझती और न व्यवस्था को स्थिर रखने के उपायों को ही जानती है।"

"और महारानी पद्मिनी जानती है?"

"हाँ, महाराज! मैंने तीन बार महाभारत का अध्ययन किया है और उसकी विवेचना अपने गुरु-तुल्य पिताजी से सुनी है। वह धर्मशास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान् हैं।"

"अब क्या किया जा सकता है?"

"मैं यहाँ बैठी क्या कह सकती हूँ? अब तो मुझे कुछ भी करने का अधिकार नहीं है।"

"है तो सही, तुम्हारे कहने पर मैंने भृगुदत्त, महादेव तथा भद्रकच्छ के अन्य बीसियों लोगों को राजकीय कार्य पर नियुक्त किया था? तुम्हारी सेविकाएँ भी तुम्हारी ही स्वेच्छा से नियुक्त हुई हैं।"

"नहीं, महाराज! इनमें से एक भी नियुक्ति श्रीमान् की अनुमति के बिना नहीं हुई। अन्तर यह है कि अब मैंने राज्य-कार्य में हस्तक्षेप करना छोड़ दिया है।"

"क्यों छोड़ दिया?"

"अब महाराज तक मेरी पहुँच नहीं रही।"

"तुम्हें मेरे पास आने से किसने मना किया है?"

पद्मिनी इस बात का उत्तर देना नहीं चाहती थी। वास्तविक बात कहने पर उसे ईर्ष्यालु मान लिया जाता। वह मन से ऐसी न थी और न कोई उसे ऐसा मानता ही था।

उसे चुप देखकर जयदमन ने पूछ लिया—"तो अब कुछ नहीं हो सकता?"

"हो तो सकता है, परन्तु होगा नहीं।"

जयदमन वास्तविक बात को समझता था। इस कारण वह किसी विषय पर निश्चय किये बिना वापस चला गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयदमन ने सेनाध्यक्ष को ही भद्रकच्छ का प्रबन्धक नियुक्त कर दिया। सेनाध्यक्ष के प्रबन्धक बनने के कुछ ही दिन उपरान्त क्षीरसागर क्षेत्र से मुक्ता, मणि-माणिक्यादि तथा उस पार के देशों की अन्य अनेक वस्तुओं से लदा हुआ एक जलपोत सागर-तट पर आया, तो सेनाध्यक्ष ने नगर की अवस्था को देखते हुए नागरिकों के स्थान पर स्वयं सौदागरों से बातचीत करनी चाही।

जलपोत में आये सौदागरों ने सन्देश भेजा कि वे पोत पर क्या-क्या सामान विक्रय करने के लिए लाये हैं और क्या-क्या सामान क्रय करना चाहते हैं।

सेनाध्यक्ष ने नगर के बचे-खुचे लोगों से पूछा कि जलपोतवालों से कौन बातचीत करेगा? नगर में शेष बचे लोग व्यापारी नहीं थे। इस कारण वे सेनाध्यक्ष द्वारा पूछे जाने पर एक-दूसरे का मुख देखने लगे। अन्ततः एक प्रतिनिधिमण्डल बना और सेनाध्यक्ष के सम्मुख उपस्थित हुआ।

उस प्रतिनिधिमण्डल ने सेनाध्यक्ष से यह नहीं कहा कि वे व्यापार के विषय में कुछ नहीं जानते। उनका केवल यह कहना था कि उनके पास क्रय करने के लिए धन नहीं है और न ही विक्रय करने के योग्य कोई माल है। भागनेवाले लोग अपने साथ सब-कुछ लेकर भाग गये हैं।

इस पर भी सेनाध्यक्ष ने प्रतिनिधिमण्डल को यह कहकर नौकाओं के द्वारा जलपोत पर भेज दिया कि वह व्यापारियों से जैसा उचित समझे, वार्तालाप करे।

प्रतिनिधिमण्डल के लोग जब जलपोत पर पहुँचे, तो नियमानुसार उनका भव्य स्वागत किया गया। पोत पर आये सौदागरों ने उन्हें अपना-अपना माल दिखाया, परन्तु उनमें से कोई भी न तो कुछ क्रय करने की स्थिति में था और न वे वस्तुओं का ठीक से मूल्याङ्कन ही कर सकते थे। उन्होंने जो कहा, उससे सौदागरों को बहुत आश्चर्य हुआ। प्रतिनिधिमण्डल में एक भला व्यक्ति भी था। उसने पोत के सौदागरों को सारी वस्तुस्थिति समझा दी। उसने कहा—"इस नगर के सारे व्यापारी नगर छोड़कर चले गये हैं। इस कारण यहाँ आपके माल को क्रय करनेवाला कोई नहीं है और न किसी के पास विक्रयार्थ ही कुछ है।"

"तो आप यहाँ किसलिए आये हैं?"

"आपको यहाँ की वस्तुस्थिति बताने के लिए और नगर के प्रबन्धक की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आज्ञा का पालन करने के लिए।"

"अब प्रबन्धक कौन है?"

"सेनाध्यक्ष।"

"तो सेनाध्यक्ष को मेरा नमस्कार कहना और मेरी ओर से उसे यह भेंट अवश्य दे देना।"

इतना कहकर उसने डिबिया में रखी हुई हीरक जड़ी एक अंगूठी उसे दिखा दी।

प्रतिनिधिमण्डल ने अंगूठी लेते हुए कहा—"हम यह पहुँचा देंगे और फिर जैसी आज्ञा होगी, हम आपको बता देंगे।"

इस आश्वासन को निरर्थक समझकर पोत के सौदागरों ने प्रतिनिधिमण्डल को विदा कर दिया। प्रतिनिधिमण्डल के पोत से नौकाओं में उतरते ही पोत के लङ्गर उठा दिये गये और पोत सागर की ओर चल दिये।

इसी प्रकार दूसरे-तीसरे दिन माल से लदे हुए पोत आते रहे और बिना किसी प्रकार का व्यापार किये वापस जाते रहे।

ऐसा होते हुए छह मास व्यतीत होने जा रहे थे कि अचानक सैनिक शिविर से सूचना आयी कि पुरिका की ओर से बहुत बड़ी संख्या में कच्छ-सेना आ रही है। इस समाचार के पहुँचते ही सेनाध्यक्ष ने मधुमति को पार कर कच्छ-सेना को मार्ग में ही रोक देने की और महाराज जयदमन को युद्ध की सम्भावना की सूचना दे दी।

सूचना प्राप्त होते ही जयदमन अश्व पर सवार होकर एक सौ अङ्गरक्षकों के साथ भद्रकच्छ की ओर चल दिया।

जयदमन के भद्रकच्छ पहुँचने से पूर्व ही सेना मधुमति नदी को पारकर पूर्व की ओर प्रस्थान कर चुकी थी। जयदमन उसके पीछे चला गया। जयदमन के सेना तक पहुँचने से पूर्व ही दोनों सेनाएँ एक-दूसरे के समक्ष मोरचा संभाले खड़ी हुई थीं।

जयदमन के पहुँचते ही सेना में जयनाद होने लगा। दोनों सेनाएँ तीन दिन से आमने-सामने खड़ी थीं, परन्तु युद्ध नहीं हो रहा था। इस कारण सैनिक उतावले हो रहे थे। जयदमन के पहुँचते ही युद्ध होने की आशा में शक-सेना कूदने, नाचने, गाने और अपने महाराज के जयघोष करने लगी।

जयदमन ने अपने लिए लगाये ख़ैमे में प्रवेश करते ही सेनाध्यक्ष से पूछा—"यहाँ बैठे-बैठे क्या हो रहा है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कच्छ-सेनापति का एक सन्देश मिला था कि उनके महाराज ने आपके लिए एक निजी सन्देश भेजा है और वह युद्ध से पूर्व आप तक पहुँचाना चाहते हैं।"

इस प्रस्ताव पर जयदमन कुछ समय तक आँखें मूंदकर विचार करता रहा। तदनन्तर कहने लगा—"तुमने यह व्यवहार शक-परम्परा के विपरीत किया है?"

"महाराज! यह तो हम पिछले दो वर्ष से कर रहे हैं। दो वर्ष तक हमने विजित क्षेत्र का शासन यहीं के लोगों के हाथों में दे रखा था और वे सब-कुछ लेकर भाग गये।"

"और अब भी तुम यही कर रहे हो? तीन दिन तक इस प्रकार आमने-सामने बैठे रहना शक-परम्परा नहीं है।"

"महाराज! पहले आप उस पत्र को पढ़ लीजिये कि उसमें क्या लिखा है। युद्ध तो होगा ही। मेरा विचार है कि अपनी सेना शत्रु की सेना से बल और संख्या में बहुत अधिक है। हम जब भी चाहेंगे, शत्रु को एक प्रहर में पराजित कर देंगे।"

"वह पत्र कहाँ है?"

"वह तो आपको ही देने के लिए कह रहे हैं। यदि आज्ञा हो, तो आपके पहुँचने का समाचार भेज दिया जाये और फिर प्रातःकाल तक प्रतीक्षा की जाये। मुझे विश्वास है कि युद्ध तो एक प्रहर में जीत लिया जायेगा।"

जयदमन मान गया और उसने अपने शिविर में पहुँचने की सूचना शत्रु को भेज दी। सूचना पहुँचते ही वहाँ से एक सुभट पत्र ले आया। पत्र सेनाध्यक्ष शूरसेन ने भेजा था। उसने अपनी ओर से लिखा पत्र भी महाराज कच्छ के पत्र के साथ भेज दिया।

जयदमन यह देखकर आश्चर्यचकित हो उठा कि शूरसेन का पत्र—जिसे महाराज ने पहले खोला था—शक भाषा और खरोष्ठी लिपि में लिखा हुआ था। उसने वह पत्र स्वयं ही पढ़ लिया। उस पत्र में लिखा था—

"महाराजाधिराज शक-जाति के शिरोमणि श्री जयदमनजी महाराज की जय हो। चरणों में शूरसेन का विनम्र निवेदन मिले।

"दोनों सेनाओं को एक-दूसरे पर झपटने के लिए तैयार देखकर तीन दिन तक आपका आतिथ्य और खाया हुआ अन्न स्मरण आ गया। मैं उसका प्रतिकार देने में स्वयं को विवश पा रहा हूँ। इस कारण यह निवेदन कर रहा हूँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कि आप महाराज के पत्र को पढ़ें और उनके शुद्ध हृदय से कही बात को समझने का यत्न करें। यदि आपको उनकी युक्ति और उद्देश्य ठीक समझ आयें, तो युद्ध के स्थान पर सन्धि के लिए प्रयत्न करें। आपके अभ्युदय का यही उपाय है।

निवेदक

शूरसेन

(सुरक्षा मन्त्री कच्छ-राज्य)

जयदमन का यह विश्वास था कि शूरसेन अतिकुटिल और नीतिमान व्यक्ति है। इसके एक भी वाक्य पर विश्वास नहीं किया जा सकता। इस कारण उसने शूरसेन के पत्र को एक ओर रख दिया और दूसरे पत्र को खोलकर पढ़ना आरम्भ कर दिया। यह पत्र कच्छराज की मुद्रा और कच्छाधिपति सिंहनाद के हस्ताक्षरों से युक्त था। यह पत्र देव-भाषा में था। इसे जयदमन भली-भाँति समझ नहीं सकता था। एक वर्ष के प्रयत्न से उसने पद्मिनी से यह भाषा पढ़ी थी, परन्तु इसके उपरान्त किसी भी योग्य पढ़ानेवाले के अभाव के कारण वह इतना योग्य नहीं बन सका कि देव-भाषा में लिखे पत्र को भली-भाँति समझ सके। अत: वह विचार करने लगा कि पत्र किससे पढ़वाकर सुना और समझा जा सके?

सेना में शकों के सिवा कोई नहीं था। इस कारण पत्र समझने में कठिनाई हो रही थी। इस पर जयदमन ने बिना पढ़े ही जितना समझा उसके अनुसार ही उत्तर लिखकर भेज दिया। उसने लिखा—

"हम शक दो वर्ष तक महाराज कच्छ से सन्धि करने का विचार करते हुए मधुमति नदी के तट पर पड़े रहे थे। जब हमने देखा कि आपकी ओर से सन्धि की कोई चर्चा नहीं हो रही है, तो यही उचित समझा कि कच्छ-राज्य पर आक्रमण कर दिया जाये। उस समय हमें अपने राज्य को सुरक्षित रखने के लिए मधुमति के पूर्व का क्षेत्र अपने अधिकार में कर लेना अधिक उचित प्रतीत हुआ।

"मैं समझता हूँ कि इस समय जब दोनों सेनाएँ आमने-सामने खड़ी हैं, तो युद्ध हो ही जाना चाहिये और सन्धि के लिए शर्त और युक्तियाँ करने के स्थान पर शक्ति से ही निर्णय कर लिया जाये। जो अधिक बलवान् होता है, जयश्री को प्राप्त करने का अधिकार उसे ही होता है। इस कारण मैं आज मध्य रात्रि में आपकी सेना पर आक्रमण कर दूंगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयदमन का विचार था कि कच्छमहाराज के पत्र का उत्तर कच्छमहाराज तक अवश्य पहुँचाया जायेगा, किन्तु वह मध्य रात्रि से पूर्व नहीं हो सकेगा। इस कारण वह समझता था कि युद्ध में उसकी विजय अवश्य होगी। अतः पत्र लिखकर पढ़ने के उपरान्त कच्छ-राज्य के सुरक्षा-मन्त्री के पास भेज दिया गया।

अभी सन्ध्याकाल नहीं हुआ था। दिन का चतुर्थ प्रहर अपने अन्तिम चरण में था। जयदमन ने अपने सेनाध्यक्ष और सेनानायकों से यह बात कह दी थी कि आक्रमण मध्य रात्रि के समय अचानक कर दिया जायेगा।

सैनिक अभी रात का भोजन बना और खा रहे थे कि पश्चिम की ओर से, अर्थात् मधुमति की ओर से विशाल कच्छ-सेना आ खड़ी हुई। शक-सेना अपने को दोनों ओर से घिरी हुइ देखकर भयभीत हो गयी और दक्षिण व उत्तर की ओर भागने लगी, परन्तु भागते हुए सैनिक अचानक वापस लौटने लगे और उन्होंने बताया कि उन दोनों ओर भी कच्छ-सेना युद्ध के लिए सन्नद्ध खड़ी है।

इस पर जयदमन ने सेनाध्यक्ष और सेनानायकों की एक गोष्ठी बुलायी और उसमें यह निश्चय किया गया कि अब मध्य रात्रि की भी प्रतीक्षा न की जाये और जो सेना पूर्व की ओर है, उस पर आक्रमण कर उसमें से राजधानी पुरिका की ओर मार्ग बनाया जाये। यदि वह दिन चढ़ने से पूर्व उस सेना को छिन्न-भिन्न कर सके, तो फिर पुरिका की ओर चल दिया जाये। यत्न यह किया जाये कि कच्छ-सेना से पहले पुरिका पर अधिकार कर लिया जाये।

यह भी विचार किया गया कि किसी-न-किसी प्रकार शक राजधानी खरीच में यह समाचार भेजा जाये और वहाँ से पचास सहस्र सैनिक पीछे आनेवाली कच्छ-सेना पर आक्रमण कर दें।

यह अतिशौर्यपूर्ण योजना थी और इसके अतिरिक्त अन्य उपाय तो कच्छ-सेना के सामने हथियार डाल देना ही था। जयदमन अपने अश्व पर सवार होकर आक्रमण करनेवालों में सबसे आगे चल पड़ा। शक-सेना को आदेश दिया गया कि पूर्व की ओर खड़ी सेना के बीच में से मार्ग बनाकर पुरिका की ओर बढ़ना है और दिन चढ़ने से पूर्व हमें कच्छ-सेना के घेरे को तोड़ना है।

शक-राजधानी तक सन्देश ले जानेवालों को तैयार किया गया और उन्हें अति शीघ्रता के साथ अपनी राजधानी में स्थित सेनाध्यक्ष के पास महाराज का सन्देश ले जाने का आदेश दिया गया। कई दूतों को एक-जैसा आदेश लिखकर दिया गया और उन्हें भेज दिया गया। तदनन्तर अचानक पूर्व की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर सेना पर आक्रमण कर दिया गया।

यह योजना इस रूप में तो सफल हो गयी कि जहाँ पूर्व की ओर खड़ी सेना के साथ छुट-पुट झड़पें ही हुईं, वहाँ पुरिका की ओर जानेवाला मार्ग सुगमता से मिल गया। पश्चिम की ओर की सेना ने मार्ग रोकने के अतिरिक्त अन्य कोई कार्य नहीं किया। दक्षिण और उत्तर की ओर की सेना ने आक्रमण नहीं किया। केवल शक-सेना के पूर्व की ओर बढ़ने पर वे शक-सेना का स्थान लेती रहीं।

इन सब चालों में छुट-पुट झड़पें ही होती रहीं और उनमें दोनों ओर के सैनिक हताहत होते रहे। कहीं भी खुलकर युद्ध नहीं हुआ। दिन निकलने पर शक-सेना अपने पहले स्थान से तीन-चार कोस पुरिका की ओर बढ़ आयी थी और दिन के प्रकाश में अपनी स्थिति और क्षति पर विचार करने के लिए रुक गयी थी। जब सेना का निरीक्षण किया गया, तो पता चला कि इन झड़पों में लगभग दो सौ सैनिक हताहत हुए हैं। हताहत सैनिक युद्ध-भूमि में ही रह गये थे। दूर पश्चिम की ओर से कच्छ-सेना उनके पीछे-पीछे आती दिखाई दी।

शक समझ गये कि पुरिका का मार्ग उनके लिए खुला छोड़ दिया गया है। इसका अर्थ यह लगाया गया कि एक तो उनको अपने मूलस्थान शक-राज्य से दूर होने का अवसर दिया गया है और दूसरे यह कि पुरिका के मार्ग पर कोई बड़ी सेना उनका विरोध करने के लिए खड़ी है। यह सम्भावना भी समझी गयी कि कदाचित् मार्ग के सब गाँव उजाड़ दिये गये हों और उनकी सेना को भूखा मारने का प्रबन्ध कर दिया गया हो।

इस पर पुनः युद्ध विशेषज्ञों की एक गोष्ठी बुलाई गयी और यह निश्चय किया गया कि पीछे आनेवाली सेना को आगे बढ़ने दिया जाये और उसके साथ युद्ध किया जाये। इसका कारण यह कि पुरिका की ओर से कोई सेना आती दिखाई नहीं दे रही थी।

शक-सेना को वहाँ विश्राम करते हुए तैयार रहने का आदेश दे दिया गया। कई घण्टे व्यतीत होने पर भी पश्चिम की ओर खड़ी कच्छ-सेना ने आक्रमण नहीं किया। वह भी इनकी भाँति विश्राम करने लगी थी।

सैनिकों को मध्याह्न भोजन के लिए कह दिया गया, किन्तु उस स्थान पर जल उपलब्ध नहीं था, अतः मध्याह्न तक कच्छ-सेना के बढ़ने की प्रतीक्षा कर शक-सेना पुरिका की ओर चल दी और एक छोटी-सी नदी के किनारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पहुँचकर उन्होंने अपना डेरा डाल दिया।

पिछली रात के मोरचे पर यह समझा गया था कि कच्छ-सेना के साथ घोर युद्ध होगा और खाने-पीने के सामान की चिन्ता नहीं की गयी थी, परन्तु अब स्थिति दूसरी थी। कच्छ-सेना लगभग एक मील की दूरी पर ठहर गयी थी और रात का खाना-पीना करने लगी थी। इसके विपरीत शक-सेना को खाने का सामान एकत्रित करने के लिए आस-पास के गाँवों में जाना पड़ा था।

उनके विस्मय का ठिकाना न रहा, जब गाँववाले उनको वह सब देने के लिए तैयार हो गये, जो कुछ भी उनके पास था। कुछ लोग पकड़कर लाये गये और उनसे पूछा गया कि उनके पास इतना कम क्यों है? तब गाँववालों ने बताया कि और नहीं है।

उनसे पूछा गया—"तो तुम सब भूखे मर रहे हो?"

गाँववालों ने उत्तर दिया—"जी, हमें आदेश दिया गया है कि दोनों ओर के सैनिकों को वह सब दे दिया जाये, जो हमारे पास है।"

"यह क्यों?"

"कदाचित् इस कारण कि कच्छ-राज्य भोजन के अभाव में किसी को मरने देने का पाप अपने सिर पर लेना नहीं चाहता।"

"और युद्ध में मरने दिया जाये?"

"वह तो तुम जानो और राजा के सैनिक जानें। इसमें हमारा हाथ नहीं है। हम आपको मना नहीं करते, तुम आपस में मैत्री कर लो।"

ज्यों-त्यों कर रात-भर के लिए खाने को मिल गया। नदी के कारण जल भी उपलब्ध हो गया। रात को पुनः गोष्ठी हुई और राजधानी खरीच को पुनः दूत भेजे गये। उनसे कहा गया कि वे उत्तर और दक्षिण की ओर से कच्छ-सेना के पीछे से होकर राजधानी जायें। इसके साथ ही यह भी निश्चय किया गया कि पश्चिम की ओर से पीछा करनेवाली कच्छ-सेना से युद्ध किया जाये।

प्रातःकाल शक-सेना ने अपना मुख पश्चिम की ओर कर लिया और उधर ही बढ़ने लगी। शक-सेना की इस गति को देखकर कच्छ-सेना पीछे पश्चिम की ओर हटने लगी। कच्छ-सेना के किसी कारण पीछे रह जाने वाले सैनिकों से शक-सेना की छुट-पुट झड़पें होती रहीं, परन्तु दोनों सेनाओं में खुलकर युद्ध नहीं हुआ। कच्छ-सेना ने दोनों सेनाओं में लगभग आधे कोस का अन्तर बनाये रखा।

मध्याह्न के समय शक-सेना के इस प्रकार आगे-पीछे आने-जाने को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
व्यर्थ समझकर युद्धनीति विशारदों की पुन: बैठक हुई। इस बैठक में निश्चय किया गया कि कच्छ-सेना के अधिकारियों से बातचीत कर पता किया जाये कि वे क्या करना चाहते हैं।

अत: एक दूत को श्वेत पताका देकर कच्छ-सेना की ओर भेजा गया। जब उसे पकड़कर कच्छ-सेनापति के सम्मुख उपस्थित किया गया, तो कच्छ-सेनापति ने उससे पूछा—"क्या चाहते हो ?"

"हमारे सेनापति आपके सेनापति से युद्ध सम्बन्धी वार्तालाप करना चाहते हैं।"

कच्छ-सेनापति ने कहा—"मुझे वार्तालाप करने में कोई आपत्ति नहीं, परन्तु उसका कोई लाभ नहीं होगा। यदि किसी प्रकार का वार्तालाप करना है, तो हमारे सुरक्षा-मन्त्री से करना चाहिये। वह इस समय राजधानी की ओर जा रहे हैं। यदि कोई प्रतिनिधिमण्डल उनसे मिलने के लिए आना चाहता है, तो उसे सेना में से सुरक्षित निकल जाने की स्वीकृति मिल सकती है।"

इसके साथ ही कच्छ-सेनापति ने यह भी कहा—"आपकी सेना की ओर से खरीच को जानेवाले प्राय: सब दूत यहाँ पकड़ लिये गये हैं। यदि कोई बचकर खरीच की ओर निकल भी गया, तो उसे मधुमति के तट पर पकड़ लिया जायेगा। नदी के तट पर हमारा अधिकार है। एक सौ कोस से ऊपर तक नदी के पूर्ण तट पर कच्छ-सेना के प्रहरी बैठा दिये गये हैं।"

दूत यह समाचार लेकर आया, तो शक-सेना में पुन: गोष्ठी हुई और यह निश्चय किया गया कि समय प्राप्त करना चाहिये, जिससे सारी स्थिति का ठीक-ठीक ज्ञान प्राप्त हो सके। वास्तव में, शकराज जयदमन अपने द्वारा भेजे गये दूतों का परिणाम देखना चाहता था। उसने पिछली रात भेजे दूतों का पता करने के लिए अपने गुप्तचर भेज दिये। इन गुप्तचरों ने अपने सिर और दाढ़ी-मूछों के बाल कटवाकर और देहातियों का पहनावा पहनकर उत्तर और दक्षिण की ओर खोज आरम्भ कर दी। इन गुप्तचरों से यह भी कहा गया था कि मधुमति के तट तक जाकर पता करें कि वहाँ कच्छ-सेना का अधिकार है अथवा नहीं ? सैकड़ों गुप्तचर उत्तर-दक्षिण के गाँवों में भेज दिये गये। इसके साथ ही तीन सैनिकों का एक प्रतिनिधिमण्डल कच्छ के सुरक्षा-मन्त्री शूरसेन से भेंट करने के लिए भी भेज दिया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक-प्रतिनिधिमण्डल में देव-वाणी और शक-भाषा जाननेवाला एक व्यक्ति द्विभाषिये के रूप में भेजा गया था। यह व्यक्ति भद्रकच्छ नगर में पीछे रह गये व्यक्तियों में से पकड़कर लाया गया था। प्रतिनिधिमण्डल को अश्वों पर सवार कच्छ-सेना में से सुरक्षित निकल जाने दिया और उसके साथ पथ-प्रदर्शक के रूप में दो सैनिक भी भेजे गये। मध्याह्न के चले शक-प्रतिनिधि सायंकाल तक मधुमति के तट पर शूरसेन के सम्मुख उपस्थित कर दिये गये। कच्छ-सेना ने मधुमति के दोनों तटों पर अधिकार कर लिया था और शूरसेन राजप्रासाद में ठहरा हुआ था। यह भवन वीरभद्र के मकान पर बनाया गया था।

जब प्रतिनिधिमण्डल को शूरसेन के सम्मुख उपस्थित किया गया, तो द्विभाषिये का कार्य करनेवाले भद्रकच्छ के निवासी व्यक्ति को बहुत आश्चर्य हुआ। उसने वहाँ पण्डित वीरभद्र को शूरसेन के पास बैठे देखा। द्विभाषिया उन्हें पहचानकर झेंप गया और अभी यह निश्चय नहीं कर पाया था कि पण्डित वीरभद्र को पहचान गया प्रकट करे अथवा नहीं, किन्तु पण्डित वीरभद्र ने उसे पहचान लिया और उससे पूछा—"नरेश! तुम कहाँ भटक रहे हो?"

नरेशराय भद्रकच्छ गाँव में एक मामूली दुकानदार था। शक-सैनिकों से लेन-देन करते-करते उसे शक-भाषा का कुछ ज्ञान हो गया था और इसी नाते शक-सेना में था। अब उसे प्रतिनिधिमण्डल में भेज दिया गया था।

नरेशराय ने हाथ जोड़कर प्रणाम करने के उपरान्त कहा—"पण्डितजी! मैं तो समझा था कि आपने मुझे नहीं पहचाना, परन्तु महाराज! आपको यहाँ देखकर मैं समझता हूँ कि आप दोनों सेनाओं में समझौता करा देंगे।"

पण्डित वीरभद्र ने उत्तर दिया—"यह ठीक है कि कच्छाधिपति महाराज सिंहनाद का आदेश है कि कम-से-कम नर-हत्या के साथ युद्ध को समाप्त कर दिया जाये, परन्तु अपने साथियों से कह दो कि वार्तालाप करने के लिए किसी अधिकार-सम्पन्न व्यक्ति को भेजें। बिना महाराज जयदमन का अधिकार-पत्र लाये किसी से वास्तविक बात नहीं हो सकती।"

नरेशराय ने अपने साथियों से सम्मति करने के उपरान्त कहा—"पण्डितजी! वास्तविक बात तो महाराज जयदमन और महाराज सिंहनाद में ही हो सकेगी, यह प्रतिनिधिमण्डल तो प्रारम्भिक वार्तालाप करने के लिए ही आया है।"

"तो सुन लो! आरम्भ में इनको यह सूचना यहाँ से ले जानी चाहिये कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हमारी मुख्य सेना खरीच के मार्ग पर उस सीमा पर पहुँच गयी है, जो सीमा वर्तमान महाराज के पिता चष्टन द्वारा निश्चित हुई थी, अर्थात् सिन्धु नदी के पूर्वी तट पर हमारी सेना खड़ी प्रतीक्षा कर रही है कि उसे आगे बढ़ने का आदेश मिले।

"महाराज जयदमन द्वारा भेजे गये प्रायः सब दूत पकड़कर इस समय भद्रकच्छ के बन्दीगृह में पहुँचाये जा चुके हैं। यदि यह प्रतिनिधिमण्डल चाहे, तो प्रात:काल उसे उन बन्दियों के दर्शन कराये जा सकते हैं।

"इस समय तक कच्छ-सेना द्वारा मधुमति नदी के तट पर एक सौ मील उत्तर से लेकर सागर-तट तक अधिकार किया जा चुका है। महाराज जयदमन और उनके साथ सम्पूर्ण सेना इस समय हमारे घेरे में है। यह ठीक है कि उनके लिए पूर्व का मार्ग पुरिका से दस कोस पश्चिम तक खुला है, परन्तु वहाँ भी उनके स्वागत के लिए एक लक्ष सैनिक शस्त्रास्त्र से सुसज्जित खड़े हैं। यदि महाराज चाहें, तो वे सैनिक उनके गले में पुष्पों की माला भी पहना सकते हैं और चाहें, तो उनसे लोहा भी ले सकते हैं।

"अब इस प्रतिनिधिमण्डल को विश्राम के लिए रात में यहीं रहना चाहिये। यदि प्रातः ये चाहें, तो इन्हें शक-बन्दियों के दर्शन कराने के उपरान्त वापस अपनी सेना में भेज दिया जायेगा।"

प्रतिनिधिमण्डल ने पुनः नरेशराय के द्वारा पूछा—"वर्तमान परिस्थिति में क्या हो सकता है?"

उत्तर अब भी पण्डित वीरभद्र ने ही दिया। उन्होंने कहा—"महाराज कच्छ के सुरक्षा-मन्त्री अभी महाराज की ओर से सन्धि की शर्तों पर बातचीत करने के लिए यहाँ उपस्थित हैं। महाराज जयदमन अथवा उनकी ओर से कोई अधिकार-सम्पन्न व्यक्ति सेनाध्यक्ष से बातचीत करने आ सकता है। वार्तालाप में सन्धि की शर्तें निश्चित हो सकती हैं। निश्चय के उपरान्त वे शर्तें दोनों नरेशों के पास भेजी जायेंगी और उन पर दोनों नरेशों के हस्ताक्षर एक स्थान पर दोनों राज्यों के प्रमुख व्यक्तियों के सामने होंगे। तब सन्धि की कार्रवाई पूरी होगी।"

"यदि दोनों पक्षों के अधिकारी एकमत नहीं हो सके, तो क्या होगा?"

"तो युद्ध होगा। युद्ध के उपरान्त फिर सन्धि होगी, भले ही उस सन्धि में एक राज्य समाप्त हो जाये। तब भी सन्धि तो होगी ही। तब राजाओं के साथ सन्धि नहीं होगी, तब एक राज्य और दूसरे राज्य की प्रजा के मध्य सन्धि होगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक-प्रतिनिधिमण्डल अगले दिन प्रातःकाल ही सरपट घोड़े दौड़ता हुआ अपने शिविर की ओर चल दिया और मध्याह्न तक वह कच्छ-सेना को पार कर शक-सेना में जा पहुँचा। वहाँ पहुँचकर उसे ज्ञात हुआ कि वहाँ के गाँववालों ने शक-सेना को अन्न, अनाज और जल दिया है और वह भी सामान्य मूल्य पर। महाराज जयदमन को जब पूर्ण परिस्थिति का ज्ञान हुआ कि सभी बावन दूत, जिन्हें शक राजधानी भेजा गया था, भद्रकच्छ के बन्दीगृह में हैं, तो उन्होंने कहा—"मैं समझता हूँ कि इस स्थिति में युद्ध नहीं हो सकता और कदाचित् हो भी नहीं सकेगा। यदि कच्छराज चाहें, तो हम सबको भूखे और प्यासे रखकर मृत्यु के घाट उतार सकेंगे। अतः सन्धि के लिए वार्तालाप होना चाहिये।"

जयदमन ने अपने सेनाध्यक्ष और उसके साथ दो सेनापतियों को सन्धि की शर्तें तय करने के लिए अधिकार-पत्र दे दिया। अगले दिन प्रतिनिधिमण्डल शूरसेन से सन्धि-वार्तालाप करने के लिए भद्रकच्छ भेज दिया गया।

तीन दिन के वार्तालाप के उपरान्त सन्धि-वार्ता में निश्चित हुई शर्तें लेकर शक-सैनिक अधिकारी लौट आये। उनके आते ही गोष्ठी बुला ली गयी और शर्तों पर विचार होने लगा। सन्धि-वार्ता में यह निश्चय हुआ था कि शक और कच्छ-राज्यों में सीमा सिन्धु नदी होगी। पश्चिम की ओर सिन्धु और उत्तर की ओर ऐरावती नदी तक शक-राज्य तथा कच्छ-राज्य की सीमा होगी। शकराज की पञ्चनद देश के शिशुपाल से पहले ही सन्धि थी। दोनों राज्यों की सीमा वितस्ता नदी थी। कश्मीर-राज्य के साथ भी शक-राज्य की सन्धि थी तथा उनकी सीमा वितस्ता और कुछ पहाड़ियाँ थी। उत्तर की ओर गान्धार-राज्य से भी शकराज की सन्धि थी। इस प्रकार शकों और उनके मित्र राज्यों को भारतवर्ष के राज्यों ने सीमित कर रखा था।

कच्छ-राज्य के सैनिक अधिकारियों के साथ सन्धि-वार्ता से शक-राज्य को बहुत-सा विजित क्षेत्र वापस करना पड़ रहा था। इस पर जयदमन बहुत लज्जित था। इसके साथ ही वह विचार कर रहा था कि कच्छ-राज्य की वर्तमान सैनिक व्यूह-रचना अवश्य पण्डित वीरभद्र द्वारा की हुई है। अतः अब उसे पण्डित वीरभद्र और उनकी लड़की पद्मिनी से वैमनस्य का दुःख सताने लगा था। जयदमन यह भी अनुभव कर रहा था कि उसकी नीति में भूल उसकी रखेल वीणापाणि ने ही करायी थी। अब उसे समझ आ रहा था कि पद्मिनी और वीणापाणि में क्या अन्तर था?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयदमन अपने क़दम वापस खींचना चाहता था। अतः उसने पण्डित वीरभद्र को यह सन्देश भेज दिया कि वह इन शर्तों को स्वीकार करता है और उसे महाराज सिंहनाद से मिलकर बहुत प्रसन्नता होगी।

इस पर दोनों सेनाओं का एक संयुक्त सैनिक सङ्गठन निर्मित किया गया। इस सङ्गठन में दोनों सेनाओं में से पचास-पचास सैनिक नियुक्त किये गये और महाराज जयदमन को इस टुकड़ी के संरक्षण में मान-प्रतिष्ठा के साथ पुरिका ले जाया गया। जयदमन के इस प्रकार आने की सूचना पहले ही भेज दी गयी।

इस सैनिक सङ्गठन में जहाँ शक-सेनाध्यक्ष और उसके अधीन सेनापति थे, वहाँ शूरसेन और पण्डित वीरभद्र भी थे। सम्पूर्ण मार्ग में शकराज के साथ आदर और सम्मान के भाव से व्यवहार किया गया। मार्ग में पड़नेवाले गाँवों में भी जनता की ओर से शकराज का स्वागत किया गया। इस कारण जयदमन आश्चर्य कर रहा था कि कहीं यह कच्छराज का छल तो नहीं है अथवा उसे बन्दी बनाने का आयोजन न हो। अपने मन में उठ रहे संशयों का उत्तर पाने के लिए उसने एक दिन पण्डित वीरभद्र को बातचीत करने के लिए अपने पास बुलाकर उनसे पूछा—"पिताजी! क्या आप मुझसे नाराज़ हैं?"

पण्डित वीरभद्र मुसकराये। वह समझ गये कि जयदमन अब अपने और पद्मिनी के बिगड़े सम्बन्ध की ओर संकेत कर रहा है। उन्होंने कहा—"महाराज! मैं आपसे नाराज़ नहीं हूँ और न किसी प्रकार आपका अनिष्ट करने का यत्न कर रहा हूँ। इसके विपरीत मैं यत्न कर रहा हूँ कि आपको आपका यथोचित अधिकार प्राप्त रहे। मेरी आरम्भ से ही यह अभिलाषा रही है कि भारतवासियों और शक-समुदाय के सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण हों, ताकि दोनों समुदाय एक हो जायें। इसी कारण मैंने अपनी लड़की को आपसे विवाह पर आशीर्वाद दिया था। मैं अब भी उसी दिशा में काम कर रहा हूँ, परन्तु इस प्रयास में सफलता परमात्मा के अधीन है।

"कठिनाई यह है कि जीवात्मा परमात्मा के नियन्त्रण में नहीं है। उसे केवल स्वेच्छा से विचरण करने की ही नहीं, अपितु परमात्मा से प्राप्त सामर्थ्य के प्रयोग की भी पूर्ण स्वीकृति है। बन्धन कर्म के फलभोग का है। अतः मैं कर्म तो कर सकता हूँ, परन्तु उसका फल तो दूसरों के अपने उद्देश्यों से सम्बन्धित है। मैं इसमें हस्तक्षेप नहीं कर सकता। फिर भी आपके लिए प्रयत्न तो कर ही रहा हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयदमन ने कहा—"मैं यह जानना चाहता हूँ कि मेरा जो यह भव्य स्वागत हो रहा है, कहीं यह कोई छलना तो नहीं ?"

"जहाँ तक मैं जानता हूँ, आपका सम्मान सत्य हृदय से किया जा रहा है। पुरिका के महाराज सिंहनाद के अपने श्रीमुख से यह आज्ञा थी कि आपकी समस्या का सुझाव न्यूनाधिन्यून हत्याओं से करना है और मैं इस दिशा में ही प्रयत्न कर रहा हूँ।"

"इसका प्रमाण क्या होगा ?"

"पुरिका के बाहर आपका भारी स्वागत किया जायेगा। वहाँ से आपको महाराज सिंहनाद अपने हाथी पर बैठाकर पुरिका के मुख्य मार्ग से ले जाते हुए अपने राजभवन में ले जाकर रखेंगे। मार्ग में लोग आप दोनों नरेशों पर पुष्प-वर्षा करेंगे और आपका जयघोष करेंगे। राजप्रासाद में एक सप्ताह तक आपका आतिथ्य किया जायेगा और उसके उपरान्त एक दिन नगर के प्रतिष्ठित लोगों और सेनाध्यक्षों की उपस्थिति में दोनों नरेश सन्धि पर हस्ताक्षर करेंगे। फिर एक दिन आपको सम्मानसहित विदा कर दिया जायेगा।"

"मुझे इस सब कार्यक्रम में सम्मिलित होते लज्जा अनुभव होगी।"

"किसलिए ?"

"इस कारण कि मैं एक पराजित नरेश हूँ।"

"परन्तु इस सन्धि से लाभ आपको और आपकी प्रजा को होनेवाला है।"

"क्या लाभ होनेवाला है ?"

"दोनों राज्यों में व्यापार होगा और इस आदान-प्रदान में बहुत लाभ होगा। इससे आपकी शक-सभ्यता और ज्ञान-विज्ञान में भी उन्नति होगी।"

इन सब बातों पर जयदमन पण्डित वीरभद्र का मुख देखता रह गया। वह और अधिक स्पष्टता चाहता था, परन्तु इससे अधिक जानना उचित न समझकर चुप रहा। उसने बात बदल दी और बोला—"पण्डितवर! मेरे साथ आपके सम्बन्ध कैसे रहेंगे ?"

"जैसे पहले थे।"

"पहले कैसे थे ?"

"आप मेरे दामाद हैं और मैं एक श्वसुर का कर्तव्य-पालन करता रहूँगा। इस दामाद-श्वसुर से भी अधिक एक अन्य सम्बन्ध था, मेरा आपकी प्रजा होना। अब वह सम्बन्ध नहीं बन सकता। इसका कारण यह कि अब मेरा निवास आपके राज्य में नहीं रहा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

:1:

जब भद्रकच्छ में भगदड़ मची तथा सैनिकों के अत्याचारों और अनाचारों की आशङ्का बढ़ी, तो विद्यालय की प्रबन्ध-समिति की बैठक बुलाई गयी। पत्र-व्यवहार के द्वारा यह निश्चय किया गया कि प्रचलित परिस्थतियों में विद्यालय नहीं चल सकेगा, अतः उसे बन्द कर देना चाहिये।

प्रबन्ध-समिति के इस निश्चय के उपरान्त वे विद्यार्थी भी—जो अपने माता-पिता के साथ देश छोड़कर नहीं गये थे—विद्यालय छोड़कर चल दिये। प्रबन्ध-समिति के प्रमुख सदस्य पण्डित वीरभद्र ने भी अपना लोटा-डोरी लिया और मधुमति नदी पार कर कच्छ-राज्य में चले गये। पण्डित वीरभद्र ने सङ्कल्प कर लिया था कि वह अपने जन्म-स्थान को सैनिक-राज्य से मुक्ति दिलायेंगे। इस सङ्कल्प के अनुरूप ही वह कच्छ की राजधानी पुरिका जा पहुँचे।

पुरिका में यथावत् चहल-पहल थी। लोग निश्चिन्त होकर अपने-अपने व्यवसाय में लगे हुए थे। मनोरञ्जन और नाच-रङ्ग भी पूर्ववत् चल रहे थे। पण्डित वीरभद्र उसी पन्थागार में जा पहुँचे, जिसमें वह दो वर्ष पूर्व आकर ठहरे थे। वह वहाँ के राज्य के अधिकारियों से मिलकर शक-राज्य की परिस्थिति का वर्णन करना चाहते थे, परन्तु उन्हें सन्देह था कि उनके विषय में राज्य-भर में यह सन्देश पहुँच चुका होगा कि वह शक-राज्य की सहायता करते रहे हैं। इस कारण उन्हें यह आशा नहीं थी कि कोई उनकी बात सुनेगा। इस पर भी वह अधिकारियों तक पहुँचने का और उन्हें वस्तु-स्थिति से अवगत कराने का कोई-न-कोई मार्ग खोज रहे थे। दिन-भर नगर में घूमना और रात में पन्थागार में सो रहना, उन दिनों पण्डित वीरभद्र का यही एक कार्य था।

सौभाग्य से एक दिन राजमार्ग पर उन्हें प्रौढ़ावस्था की एक स्त्री के साथ चलता हुआ शङ्कर दिखाई दिया। शङ्कर को देखते ही पण्डित वीरभद्र को अपने मन में कार्य-सिद्धि की योजना दिखाई दी। आगे बढ़कर वह शङ्कर और उस स्त्री के सामने जा खड़े हुए। शङ्कर ने पण्डित वीरभद्र को देखा, तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
झुककर चरण स्पर्श किये और हाथ जोड़कर नमस्कार करने लगा।

पण्डित वीरभद्र ने पूछा—"शङ्करजी! कहाँ घूम रहे हो?"

शङ्कर ने उत्तर दिया—"गुरुजी! आपको तो विदित है कि मैं भद्रकच्छ से चला आया था।"

"यह तो ठीक है, परन्तु तुम पुरिका में आये और तब से यहीं रह रहे हो, मुझे इसका ज्ञान नहीं था।"

"गुरुजी! एक रात स्वप्न में मैंने माताजी को मुझे पुकारते हुए देखा, तो लगा कि माताजी किसी कष्ट में हैं और मुझे स्मरण कर रही हैं। अत: अगले दिन ही मैं पुरिका चला आया था। माताजी वास्तव में कष्ट में थीं और वह अर्हत जिन्होंने माताजी से मुझे जन्म दिया है, इन्हें साध्वी बन जाने के लिए आग्रह कर रहा था। माताजी निर्वाह में कष्ट अनुभव करती हुई समझ नहीं रही थीं कि क्या करें। मेरे पुरिका से बाहर जाने के उपरान्त उनके पास निर्वाह का साधन नहीं रहा था। इसी समस्या को सुलझाने के लिए उन्हें साध्वी बनने की प्रेरणा दी जा रही थी। वह अपने हृदय से साध्वी बनना नहीं चाहती थीं।

"मेरे यहाँ पहुँचने पर उन्होंने सुख की साँस ली। यह हैं मेरी माताजी।" शङ्कर ने साथ खड़ी प्रौढ़ावस्था की स्त्री की ओर संकेत करते हुए कहा।

"तो तुमने यहाँ जीविकोपार्जन का साधन सोच लिया?"

"मैं पुन: शूरसेनजी की सेवा में चला गया हूँ। उन्होंने मेरा अपराध क्षमा कर दिया है। मैंने उन्हें भद्रकच्छ में अपने व्यवहार की सफ़ाई दी थी और उनको उस पर सन्तोष हुआ है।"

पण्डित वीरभद्र ने बात को समाप्त करते हुए पूछा—"अब तुम किधर जा रहे हो?" पण्डितजी नहीं चाहते थे कि वह अपनी योजना राजमार्ग पर खड़े-खड़े बतायें, इस कारण वह शङ्कर से पृथक् मिलना चाहते थे। शङ्कर ने पण्डितजी की बात से किसी रहस्य का अनुमान लगा लिया और उनसे पूछा—"आप कहाँ ठहरे हैं?"

"मैं राजकीय पन्थागार में ठहरा हूँ। कब मिलने आओगे?"

"इस समय माताजी के साथ किसी आवश्यक काम से जा रहा हूँ। कल प्रात: अल्पाहार के समय मिलने आ सकूंगा।"

शङ्कर अपनी माताजी के साथ अपने मार्ग पर चल दिया और पण्डित वीरभद्र अपनी योजना की पूर्ति की आशा में पन्थागार में लौट आये।

अगले दिन अल्पाहार के समय शङ्कर आया, तो पण्डित वीरभद्र ने उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भी अल्पाहार लेने का निमन्त्रण देकर कहना आरम्भ किया—"भद्रकच्छ में क्रान्ति हो गयी है। वहाँ पाटलिपुत्र की कुछ नर्तकियाँ आयी हुई थीं। उनमें से एक को जयदमन ने अपने राजप्रासाद में रख लिया है। उसके मोहजाल में फंसा हुआ जयदमन पद्मिनी से विरक्त हो गया है और अपनी राजनीति उस नर्तकी वीणापाणि की सम्मति से चलाने लगा है। परिणामस्वरूप सैनिकों को असीम अधिकार प्राप्त हो गये हैं और प्रायः नागरिक उस क्षेत्र को छोड़कर भाग गये हैं। मैं भी अपना कार्य छोड़कर यहाँ आ गया हूँ। यहाँ आने पर मैं अपने प्रदेश में क्रान्ति कराने का विचार कर रहा हूँ। इसमें यहाँ के अधिकारी सहायक हो सकते हैं।"

पण्डित वीरभद्र की बात सुनकर शङ्कर मुस्कराने लगा। उसने निकट खिसककर धीरे-धीरे यह रहस्योद्घाटन किया—"वे नर्तकियाँ तो यहाँ से ही भेजी गयी थीं, किन्तु अब शूरसेन अपनी पहली योजना की असफलता के कारण अपने किये पर पश्चात्ताप कर रहा है। उसने ही यहाँ के मन्त्रिमण्डल के सदस्य सेठ सोमदेवजी के द्वारा यह नयी योजना चलवायी है। सेठ सोमदेवजी का विचार था कि नर्तकी वीणापाणि महाराज जयदमन का ध्यान आकर्षित किये बिना नहीं रहेगी और उनको विश्वास था कि यदि जयदमन एक बार वीणापाणि के मोहजाल में फंस गया, तो यहाँ से शक-राज्य की नीति चलाई जा सकेगी। यद्यपि इस बार मुझे विश्वास में नहीं लिया गया था, तथापि बातों-बातों से ही मैं इस अनुमान पर पहुँचा हूँ कि जो कुछ शक-राज्य में हो रहा है, वह यहाँ की सम्मति से ही कराया जा रहा है।"

रहस्य की इस बात को सुनकर पण्डित वीरभद्र चकित रह गये। वह समझ गये कि सेठ सोमदेव शूरसेन से अधिक योग्य नीतिज्ञ हैं। अतः उन्होंने सेठ सोमदेव से सम्पर्क बनाने के लिए शङ्कर से पूछा—"सेठ सोमदेव से तुम्हारा किसी प्रकार का सम्पर्क है अथवा नहीं?"

"उनके दर्शन तो प्रायः प्रतिदिन होते हैं, परन्तु वह शूरसेन को योग्य नीतिज्ञ न समझकर अपनी योजना पृथक् चला रहे हैं। अब मैं शूरसेनजी का सेवक हूँ, इस कारण वह अपनी योजना के विषय में कुछ बताते नहीं।"

"शङ्करजी! एक काम कीजिये। मुझे सोमदेवजी से मिला दीजिये। मुझे उनकी नर्तकियोंवाली योजना को सुनकर उन पर शूरसेन से अधिक विश्वास हो रहा है।"

पन्थागार का पाचक अल्पाहार ले आया था तथा दोनों—शङ्कर और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयदमन ने सेनाध्यक्ष को ही भद्रकच्छ का प्रबन्धक नियुक्त कर दिया। सेनाध्यक्ष के प्रबन्धक बनने के कुछ ही दिन उपरान्त क्षीरसागर क्षेत्र से मुक्ता, मणि-माणिक्यादि तथा उस पार के देशों की अन्य अनेक वस्तुओं से लदा हुआ एक जलपोत सागर-तट पर आया, तो सेनाध्यक्ष ने नगर की अवस्था को देखते हुए नागरिकों के स्थान पर स्वयं सौदागरों से बातचीत करनी चाही।

जलपोत में आये सौदागरों ने सन्देश भेजा कि वे पोत पर क्या-क्या सामान विक्रय करने के लिए लाये हैं और क्या-क्या सामान क्रय करना चाहते हैं।

सेनाध्यक्ष ने नगर के बचे-खुचे लोगों से पूछा कि जलपोतवालों से कौन बातचीत करेगा? नगर में शेष बचे लोग व्यापारी नहीं थे। इस कारण वे सेनाध्यक्ष द्वारा पूछे जाने पर एक-दूसरे का मुख देखने लगे। अन्ततः एक प्रतिनिधिमण्डल बना और सेनाध्यक्ष के सम्मुख उपस्थित हुआ।

उस प्रतिनिधिमण्डल ने सेनाध्यक्ष से यह नहीं कहा कि वे व्यापार के विषय में कुछ नहीं जानते। उनका केवल यह कहना था कि उनके पास क्रय करने के लिए धन नहीं है और न ही विक्रय करने के योग्य कोई माल है। भागनेवाले लोग अपने साथ सब-कुछ लेकर भाग गये हैं।

इस पर भी सेनाध्यक्ष ने प्रतिनिधिमण्डल को यह कहकर नौकाओं के द्वारा जलपोत पर भेज दिया कि वह व्यापारियों से जैसा उचित समझे, वार्तालाप करे।

प्रतिनिधिमण्डल के लोग जब जलपोत पर पहुँचे, तो नियमानुसार उनका भव्य स्वागत किया गया। पोत पर आये सौदागरों ने उन्हें अपना-अपना माल दिखाया, परन्तु उनमें से कोई भी न तो कुछ क्रय करने की स्थिति में था और न वे वस्तुओं का ठीक से मूल्याङ्कन ही कर सकते थे। उन्होंने जो कहा, उससे सौदागरों को बहुत आश्चर्य हुआ। प्रतिनिधिमण्डल में एक भला व्यक्ति भी था। उसने पोत के सौदागरों को सारी वस्तुस्थिति समझा दी। उसने कहा—"इस नगर के सारे व्यापारी नगर छोड़कर चले गये हैं। इस कारण यहाँ आपके माल को क्रय करनेवाला कोई नहीं है और न किसी के पास विक्रयार्थ ही कुछ है।"

"तो आप यहाँ किसलिए आये हैं?"

"आपको यहाँ की वस्तुस्थिति बताने के लिए और नगर के प्रबन्धक की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज्ञा का पालन करने के लिए।"

"अब प्रबन्धक कौन है?"

"सेनाध्यक्ष।"

"तो सेनाध्यक्ष को मेरा नमस्कार कहना और मेरी ओर से उसे यह भेंट अवश्य दे देना।"

इतना कहकर उसने डिबिया में रखी हुई हीरक जड़ी एक अंगूठी उसे दिखा दी।

प्रतिनिधिमण्डल ने अंगूठी लेते हुए कहा—"हम यह पहुँचा देंगे और फिर जैसी आज्ञा होगी, हम आपको बता देंगे।"

इस आश्वासन को निरर्थक समझकर पोत के सौदागरों ने प्रतिनिधिमण्डल को विदा कर दिया। प्रतिनिधिमण्डल के पोत से नौकाओं में उतरते ही पोत के लङ्गर उठा दिये गये और पोत सागर की ओर चल दिये।

इसी प्रकार दूसरे-तीसरे दिन माल से लदे हुए पोत आते रहे और बिना किसी प्रकार का व्यापार किये वापस जाते रहे।

ऐसा होते हुए छह मास व्यतीत होने जा रहे थे कि अचानक सैनिक शिविर से सूचना आयी कि पुरिका की ओर से बहुत बड़ी संख्या में कच्छ-सेना आ रही है। इस समाचार के पहुँचते ही सेनाध्यक्ष ने मधुमति को पार कर कच्छ-सेना को मार्ग में ही रोक देने की और महाराज जयदमन को युद्ध की सम्भावना की सूचना दे दी।

सूचना प्राप्त होते ही जयदमन अश्व पर सवार होकर एक सौ अङ्गरक्षकों के साथ भद्रकच्छ की ओर चल दिया।

जयदमन के भद्रकच्छ पहुँचने से पूर्व ही सेना मधुमति नदी को पारकर पूर्व की ओर प्रस्थान कर चुकी थी। जयदमन उसके पीछे चला गया। जयदमन के सेना तक पहुँचने से पूर्व ही दोनों सेनाएँ एक-दूसरे के समक्ष मोरचा संभाले खड़ी हुई थीं।

जयदमन के पहुँचते ही सेना में जयनाद होने लगा। दोनों सेनाएँ तीन दिन से आमने-सामने खड़ी थीं, परन्तु युद्ध नहीं हो रहा था। इस कारण सैनिक उतावले हो रहे थे। जयदमन के पहुँचते ही युद्ध होने की आशा में शक-सेना कूदने, नाचने, गाने और अपने महाराज के जयघोष करने लगी।

जयदमन ने अपने लिए लगाये ख़ैमे में प्रवेश करते ही सेनाध्यक्ष से पूछा—"यहाँ बैठे-बैठे क्या हो रहा है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कच्छ-सेनापति का एक सन्देश मिला था कि उनके महाराज ने आपके लिए एक निजी सन्देश भेजा है और वह युद्ध से पूर्व आप तक पहुँचाना चाहते हैं।"

इस प्रस्ताव पर जयदमन कुछ समय तक आँखें मूंदकर विचार करता रहा। तदनन्तर कहने लगा—"तुमने यह व्यवहार शक-परम्परा के विपरीत किया है?"

"महाराज! यह तो हम पिछले दो वर्ष से कर रहे हैं। दो वर्ष तक हमने विजित क्षेत्र का शासन यहीं के लोगों के हाथों में दे रखा था और वे सब-कुछ लेकर भाग गये।"

"और अब भी तुम यही कर रहे हो? तीन दिन तक इस प्रकार आमने-सामने बैठे रहना शक-परम्परा नहीं है।"

"महाराज! पहले आप उस पत्र को पढ़ लीजिये कि उसमें क्या लिखा है। युद्ध तो होगा ही। मेरा विचार है कि अपनी सेना शत्रु की सेना से बल और संख्या में बहुत अधिक है। हम जब भी चाहेंगे, शत्रु को एक प्रहर में पराजित कर देंगे।"

"वह पत्र कहाँ है?"

"वह तो आपको ही देने के लिए कह रहे हैं। यदि आज्ञा हो, तो आपके पहुँचने का समाचार भेज दिया जाये और फिर प्रातःकाल तक प्रतीक्षा की जाये। मुझे विश्वास है कि युद्ध तो एक प्रहर में जीत लिया जायेगा।"

जयदमन मान गया और उसने अपने शिविर में पहुँचने की सूचना शत्रु को भेज दी। सूचना पहुँचते ही वहाँ से एक सुभट पत्र ले आया। पत्र सेनाध्यक्ष शूरसेन ने भेजा था। उसने अपनी ओर से लिखा पत्र भी महाराज कच्छ के पत्र के साथ भेज दिया।

जयदमन यह देखकर आश्चर्यचकित हो उठा कि शूरसेन का पत्र—जिसे महाराज ने पहले खोला था—शक भाषा और खरोष्ठी लिपि में लिखा हुआ था। उसने वह पत्र स्वयं ही पढ़ लिया। उस पत्र में लिखा था—

"महाराजाधिराज शक-जाति के शिरोमणि श्री जयदमनजी महाराज की जय हो। चरणों में शूरसेन का विनम्र निवेदन मिले।

"दोनों सेनाओं को एक-दूसरे पर झपटने के लिए तैयार देखकर तीन दिन तक आपका आतिथ्य और खाया हुआ अन्न स्मरण आ गया। मैं उसका प्रतिकार देने में स्वयं को विवश पा रहा हूँ। इस कारण यह निवेदन कर रहा हूँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कि आप महाराज के पत्र को पढ़ें और उनके शुद्ध हृदय से कही बात को समझने का यत्न करें। यदि आपको उनकी युक्ति और उद्देश्य ठीक समझ आयें, तो युद्ध के स्थान पर सन्धि के लिए प्रयत्न करें। आपके अभ्युदय का यही उपाय है।

निवेदक
शूरसेन
(सुरक्षा मन्त्री कच्छ–राज्य)

जयदमन का यह विश्वास था कि शूरसेन अतिकुटिल और नीतिमान व्यक्ति है। इसके एक भी वाक्य पर विश्वास नहीं किया जा सकता। इस कारण उसने शूरसेन के पत्र को एक ओर रख दिया और दूसरे पत्र को खोलकर पढ़ना आरम्भ कर दिया। यह पत्र कच्छराज की मुद्रा और कच्छाधिपति सिंहनाद के हस्ताक्षरों से युक्त था। यह पत्र देव–भाषा में था। इसे जयदमन भली–भाँति समझ नहीं सकता था। एक वर्ष के प्रयत्न से उसने पद्मिनी से यह भाषा पढ़ी थी, परन्तु इसके उपरान्त किसी भी योग्य पढ़ानेवाले के अभाव के कारण वह इतना योग्य नहीं बन सका कि देव–भाषा में लिखे पत्र को भली–भाँति समझ सके। अत: वह विचार करने लगा कि पत्र किससे पढ़वाकर सुना और समझा जा सके?

सेना में शकों के सिवा कोई नहीं था। इस कारण पत्र समझने में कठिनाई हो रही थी। इस पर जयदमन ने बिना पढ़े ही जितना समझा उसके अनुसार ही उत्तर लिखकर भेज दिया। उसने लिखा–

"हम शक दो वर्ष तक महाराज कच्छ से सन्धि करने का विचार करते हुए मधुमति नदी के तट पर पड़े रहे थे। जब हमने देखा कि आपकी ओर से सन्धि की कोई चर्चा नहीं हो रही है, तो यही उचित समझा कि कच्छ–राज्य पर आक्रमण कर दिया जाये। उस समय हमें अपने राज्य को सुरक्षित रखने के लिए मधुमति के पूर्व का क्षेत्र अपने अधिकार में कर लेना अधिक उचित प्रतीत हुआ।

"मैं समझता हूँ कि इस समय जब दोनों सेनाएँ आमने–सामने खड़ी हैं, तो युद्ध हो ही जाना चाहिये और सन्धि के लिए शर्त और युक्तियाँ करने के स्थान पर शक्ति से ही निर्णय कर लिया जाये। जो अधिक बलवान् होता है, जयश्री को प्राप्त करने का अधिकार उसे ही होता है। इस कारण मैं आज मध्य रात्रि में आपकी सेना पर आक्रमण कर दूंगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयदमन का विचार था कि कच्छमहाराज के पत्र का उत्तर कच्छमहाराज तक अवश्य पहुँचाया जायेगा, किन्तु वह मध्य रात्रि से पूर्व नहीं हो सकेगा। इस कारण वह समझता था कि युद्ध में उसकी विजय अवश्य होगी। अत: पत्र लिखकर पढ़ने के उपरान्त कच्छ-राज्य के सुरक्षा-मन्त्री के पास भेज दिया गया।

अभी सन्ध्याकाल नहीं हुआ था। दिन का चतुर्थ प्रहर अपने अन्तिम चरण में था। जयदमन ने अपने सेनाध्यक्ष और सेनानायकों से यह बात कह दी थी कि आक्रमण मध्य रात्रि के समय अचानक कर दिया जायेगा।

सैनिक अभी रात का भोजन बना और खा रहे थे कि पश्चिम की ओर से, अर्थात् मधुमति की ओर से विशाल कच्छ-सेना आ खड़ी हुई। शक-सेना अपने को दोनों ओर से घिरी हुइ देखकर भयभीत हो गयी और दक्षिण व उत्तर की ओर भागने लगी, परन्तु भागते हुए सैनिक अचानक वापस लौटने लगे और उन्होंने बताया कि उन दोनों ओर भी कच्छ-सेना युद्ध के लिए सन्नद्ध खड़ी है।

इस पर जयदमन ने सेनाध्यक्ष और सेनानायकों की एक गोष्ठी बुलायी और उसमें यह निश्चय किया गया कि अब मध्य रात्रि की भी प्रतीक्षा न की जाये और जो सेना पूर्व की ओर है, उस पर आक्रमण कर उसमें से राजधानी पुरिका की ओर मार्ग बनाया जाये। यदि वह दिन चढ़ने से पूर्व उस सेना को छिन्न-भिन्न कर सके, तो फिर पुरिका की ओर चल दिया जाये। यत्न यह किया जाये कि कच्छ-सेना से पहले पुरिका पर अधिकार कर लिया जाये।

यह भी विचार किया गया कि किसी-न-किसी प्रकार शक राजधानी खरीच में यह समाचार भेजा जाये और वहाँ से पचास सहस्र सैनिक पीछे आनेवाली कच्छ-सेना पर आक्रमण कर दें।

यह अतिशौर्यपूर्ण योजना थी और इसके अतिरिक्त अन्य उपाय तो कच्छ-सेना के सामने हथियार डाल देना ही था। जयदमन अपने अश्व पर सवार होकर आक्रमण करनेवालों में सबसे आगे चल पड़ा। शक-सेना को आदेश दिया गया कि पूर्व की ओर खड़ी सेना के बीच में से मार्ग बनाकर पुरिका की ओर बढ़ना है और दिन चढ़ने से पूर्व हमें कच्छ-सेना के घेरे को तोड़ना है।

शक-राजधानी तक सन्देश ले जानेवालों को तैयार किया गया और उन्हें अति शीघ्रता के साथ अपनी राजधानी में स्थित सेनाध्यक्ष के पास महाराज का सन्देश ले जाने का आदेश दिया गया। कई दूतों को एक-जैसा आदेश लिखकर दिया गया और उन्हें भेज दिया गया। तदनन्तर अचानक पूर्व की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर सेना पर आक्रमण कर दिया गया।

यह योजना इस रूप में तो सफल हो गयी कि जहाँ पूर्व की ओर खड़ी सेना के साथ छुट-पुट झड़पें ही हुईं, वहाँ पुरिका की ओर जानेवाला मार्ग सुगमता से मिल गया। पश्चिम की ओर की सेना ने मार्ग रोकने के अतिरिक्त अन्य कोई कार्य नहीं किया। दक्षिण और उत्तर की ओर की सेना ने आक्रमण नहीं किया। केवल शक-सेना के पूर्व की ओर बढ़ने पर वे शक-सेना का स्थान लेती रहीं।

इन सब चालों में छुट-पुट झड़पें ही होती रहीं और उनमें दोनों ओर के सैनिक हताहत होते रहे। कहीं भी खुलकर युद्ध नहीं हुआ। दिन निकलने पर शक-सेना अपने पहले स्थान से तीन-चार कोस पुरिका की ओर बढ़ आयी थी और दिन के प्रकाश में अपनी स्थिति और क्षति पर विचार करने के लिए रुक गयी थी। जब सेना का निरीक्षण किया गया, तो पता चला कि इन झड़पों में लगभग दो सौ सैनिक हताहत हुए हैं। हताहत सैनिक युद्ध-भूमि में ही रह गये थे। दूर पश्चिम की ओर से कच्छ-सेना उनके पीछे-पीछे आती दिखाई दी।

शक समझ गये कि पुरिका का मार्ग उनके लिए खुला छोड़ दिया गया है। इसका अर्थ यह लगाया गया कि एक तो उनको अपने मूलस्थान शक-राज्य से दूर होने का अवसर दिया गया है और दूसरे यह कि पुरिका के मार्ग पर कोई बड़ी सेना उनका विरोध करने के लिए खड़ी है। यह सम्भावना भी समझी गयी कि कदाचित् मार्ग के सब गाँव उजाड़ दिये गये हों और उनकी सेना को भूखा मारने का प्रबन्ध कर दिया गया हो।

इस पर पुनः युद्ध विशेषज्ञों की एक गोष्ठी बुलाई गयी और यह निश्चय किया गया कि पीछे आनेवाली सेना को आगे बढ़ने दिया जाये और उसके साथ युद्ध किया जाये। इसका कारण यह कि पुरिका की ओर से कोई सेना आती दिखाई नहीं दे रही थी।

शक-सेना को वहाँ विश्राम करते हुए तैयार रहने का आदेश दे दिया गया। कई घण्टे व्यतीत होने पर भी पश्चिम की ओर खड़ी कच्छ-सेना ने आक्रमण नहीं किया। वह भी इनकी भाँति विश्राम करने लगी थी।

सैनिकों को मध्याह्न भोजन के लिए कह दिया गया, किन्तु उस स्थान पर जल उपलब्ध नहीं था, अतः मध्याह्न तक कच्छ-सेना के बढ़ने की प्रतीक्षा कर शक-सेना पुरिका की ओर चल दी और एक छोटी-सी नदी के किनारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पहुँचकर उन्होंने अपना डेरा डाल दिया।

पिछली रात के मोरचे पर यह समझा गया था कि कच्छ-सेना के साथ घोर युद्ध होगा और खाने-पीने के सामान की चिन्ता नहीं की गयी थी, परन्तु अब स्थिति दूसरी थी। कच्छ-सेना लगभग एक मील की दूरी पर ठहर गयी थी और रात का खाना-पीना करने लगी थी। इसके विपरीत शक-सेना को खाने का सामान एकत्रित करने के लिए आस-पास के गाँवों में जाना पड़ा था।

उनके विस्मय का ठिकाना न रहा, जब गाँववाले उनको वह सब देने के लिए तैयार हो गये, जो कुछ भी उनके पास था। कुछ लोग पकड़कर लाये गये और उनसे पूछा गया कि उनके पास इतना कम क्यों है? तब गाँववालों ने बताया कि और नहीं है।

उनसे पूछा गया—"तो तुम सब भूखे मर रहे हो?"

गाँववालों ने उत्तर दिया—"जी, हमें आदेश दिया गया है कि दोनों ओर के सैनिकों को वह सब दे दिया जाये, जो हमारे पास है।"

"यह क्यों?"

"कदाचित् इस कारण कि कच्छ-राज्य भोजन के अभाव में किसी को मरने देने का पाप अपने सिर पर लेना नहीं चाहता।"

"और युद्ध में मरने दिया जाये?"

"वह तो तुम जानो और राजा के सैनिक जानें। इसमें हमारा हाथ नहीं है। हम आपको मना नहीं करते, तुम आपस में मैत्री कर लो।"

ज्यों-त्यों कर रात-भर के लिए खाने को मिल गया। नदी के कारण जल भी उपलब्ध हो गया। रात को पुनः गोष्ठी हुई और राजधानी खरीच को पुनः दूत भेजे गये। उनसे कहा गया कि वे उत्तर और दक्षिण की ओर से कच्छ-सेना के पीछे से होकर राजधानी जायें। इसके साथ ही यह भी निश्चय किया गया कि पश्चिम की ओर से पीछा करनेवाली कच्छ-सेना से युद्ध किया जाये।

प्रातःकाल शक-सेना ने अपना मुख पश्चिम की ओर कर लिया और उधर ही बढ़ने लगी। शक-सेना की इस गति को देखकर कच्छ-सेना पीछे पश्चिम की ओर हटने लगी। कच्छ-सेना के किसी कारण पीछे रह जाने वाले सैनिकों से शक-सेना की छुट-पुट झड़पें होती रहीं, परन्तु दोनों सेनाओं में खुलकर युद्ध नहीं हुआ। कच्छ-सेना ने दोनों सेनाओं में लगभग आधे कोस का अन्तर बनाये रखा।

मध्याह्न के समय शक-सेना के इस प्रकार आगे-पीछे आने-जाने को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
व्यर्थ समझकर युद्धनीति विशारदों की पुनः बैठक हुई। इस बैठक में निश्चय किया गया कि कच्छ-सेना के अधिकारियों से बातचीत कर पता किया जाये कि वे क्या करना चाहते हैं।

अतः एक दूत को श्वेत पताका देकर कच्छ-सेना की ओर भेजा गया। जब उसे पकड़कर कच्छ-सेनापति के सम्मुख उपस्थित किया गया, तो कच्छ-सेनापति ने उससे पूछा—"क्या चाहते हो?"

"हमारे सेनापति आपके सेनापति से युद्ध सम्बन्धी वार्तालाप करना चाहते हैं।"

कच्छ-सेनापति ने कहा—"मुझे वार्तालाप करने में कोई आपत्ति नहीं, परन्तु उसका कोई लाभ नहीं होगा। यदि किसी प्रकार का वार्तालाप करना है, तो हमारे सुरक्षा-मन्त्री से करना चाहिये। वह इस समय राजधानी की ओर जा रहे हैं। यदि कोई प्रतिनिधिमण्डल उनसे मिलने के लिए आना चाहता है, तो उसे सेना में से सुरक्षित निकल जाने की स्वीकृति मिल सकती है।"

इसके साथ ही कच्छ-सेनापति ने यह भी कहा—"आपकी सेना की ओर से खरीच को जानेवाले प्रायः सब दूत यहाँ पकड़ लिये गये हैं। यदि कोई बचकर खरीच की ओर निकल भी गया, तो उसे मधुमति के तट पर पकड़ लिया जायेगा। नदी के तट पर हमारा अधिकार है। एक सौ कोस से ऊपर तक नदी के पूर्ण तट पर कच्छ-सेना के प्रहरी बैठा दिये गये हैं।"

दूत यह समाचार लेकर आया, तो शक-सेना में पुनः गोष्ठी हुई और यह निश्चय किया गया कि समय प्राप्त करना चाहिये, जिससे सारी स्थिति का ठीक-ठीक ज्ञान प्राप्त हो सके। वास्तव में, शकराज जयदमन अपने द्वारा भेजे गये दूतों का परिणाम देखना चाहता था। उसने पिछली रात भेजे दूतों का पता करने के लिए अपने गुप्तचर भेज दिये। इन गुप्तचरों ने अपने सिर और दाढ़ी-मूछों के बाल कटवाकर और देहातियों का पहनावा पहनकर उत्तर और दक्षिण की ओर खोज आरम्भ कर दी। इन गुप्तचरों से यह भी कहा गया था कि मधुमति के तट तक जाकर पता करें कि वहाँ कच्छ-सेना का अधिकार है अथवा नहीं? सैकड़ों गुप्तचर उत्तर-दक्षिण के गाँवों में भेज दिये गये। इसके साथ ही तीन सैनिकों का एक प्रतिनिधिमण्डल कच्छ के सुरक्षा-मन्त्री शूरसेन से भेंट करने के लिए भी भेज दिया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक-प्रतिनिधिमण्डल में देव-वाणी और शक-भाषा जाननेवाला एक व्यक्ति द्विभाषिये के रूप में भेजा गया था। यह व्यक्ति भद्रकच्छ नगर में पीछे रह गये व्यक्तियों में से पकड़कर लाया गया था। प्रतिनिधिमण्डल को अश्वों पर सवार कच्छ-सेना में से सुरक्षित निकल जाने दिया और उसके साथ पथ-प्रदर्शक के रूप में दो सैनिक भी भेजे गये। मध्याह्न के चले शक-प्रतिनिधि सायंकाल तक मधुमति के तट पर शूरसेन के सम्मुख उपस्थित कर दिये गये। कच्छ-सेना ने मधुमति के दोनों तटों पर अधिकार कर लिया था और शूरसेन राजप्रासाद में ठहरा हुआ था। यह भवन वीरभद्र के मकान पर बनाया गया था।

जब प्रतिनिधिमण्डल को शूरसेन के सम्मुख उपस्थित किया गया, तो द्विभाषिये का कार्य करनेवाले भद्रकच्छ के निवासी व्यक्ति को बहुत आश्चर्य हुआ। उसने वहाँ पण्डित वीरभद्र को शूरसेन के पास बैठे देखा। द्विभाषिया उन्हें पहचानकर झेंप गया और अभी यह निश्चय नहीं कर पाया था कि पण्डित वीरभद्र को पहचान गया प्रकट करे अथवा नहीं, किन्तु पण्डित वीरभद्र ने उसे पहचान लिया और उससे पूछा—"नरेश! तुम कहाँ भटक रहे हो?"

नरेशराय भद्रकच्छ गाँव में एक मामूली दुकानदार था। शक-सैनिकों से लेन-देन करते-करते उसे शक-भाषा का कुछ ज्ञान हो गया था और इसी नाते शक-सेना में था। अब उसे प्रतिनिधिमण्डल में भेज दिया गया था।

नरेशराय ने हाथ जोड़कर प्रणाम करने के उपरान्त कहा—"पण्डितजी! मैं तो समझा था कि आपने मुझे नहीं पहचाना, परन्तु महाराज! आपको यहाँ देखकर मैं समझता हूँ कि आप दोनों सेनाओं में समझौता करा देंगे।"

पण्डित वीरभद्र ने उत्तर दिया—"यह ठीक है कि कच्छाधिपति महाराज सिंहनाद का आदेश है कि कम-से-कम नर-हत्या के साथ युद्ध को समाप्त कर दिया जाये, परन्तु अपने साथियों से कह दो कि वार्तालाप करने के लिए किसी अधिकार-सम्पन्न व्यक्ति को भेजें। बिना महाराज जयदमन का अधिकार-पत्र लाये किसी से वास्तविक बात नहीं हो सकती।"

नरेशराय ने अपने साथियों से सम्मति करने के उपरान्त कहा—"पण्डितजी! वास्तविक बात तो महाराज जयदमन और महाराज सिंहनाद में ही हो सकेगी, यह प्रतिनिधिमण्डल तो प्रारम्भिक वार्तालाप करने के लिए ही आया है।"

"तो सुन लो! आरम्भ में इनको यह सूचना यहाँ से ले जानी चाहिये कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हमारी मुख्य सेना खरीच के मार्ग पर उस सीमा पर पहुँच गयी है, जो सीमा वर्तमान महाराज के पिता चष्टन द्वारा निश्चित हुई थी, अर्थात् सिन्धु नदी के पूर्वी तट पर हमारी सेना खड़ी प्रतीक्षा कर रही है कि उसे आगे बढ़ने का आदेश मिले।

"महाराज जयदमन द्वारा भेजे गये प्रायः सब दूत पकड़कर इस समय भद्रकच्छ के बन्दीगृह में पहुँचाये जा चुके हैं। यदि यह प्रतिनिधिमण्डल चाहे, तो प्रातःकाल उसे उन बन्दियों के दर्शन कराये जा सकते हैं।

"इस समय तक कच्छ-सेना द्वारा मधुमति नदी के तट पर एक सौ मील उत्तर से लेकर सागर-तट तक अधिकार किया जा चुका है। महाराज जयदमन और उनके साथ सम्पूर्ण सेना इस समय हमारे घेरे में है। यह ठीक है कि उनके लिए पूर्व का मार्ग पुरिका से दस कोस पश्चिम तक खुला है, परन्तु वहाँ भी उनके स्वागत के लिए एक लक्ष सैनिक शस्त्रास्त्र से सुसज्जित खड़े हैं। यदि महाराज चाहें, तो वे सैनिक उनके गले में पुष्पों की माला भी पहना सकते हैं और चाहें, तो उनसे लोहा भी ले सकते हैं।

"अब इस प्रतिनिधिमण्डल को विश्राम के लिए रात में यहीं रहना चाहिये। यदि प्रातः ये चाहें, तो इन्हें शक-बन्दियों के दर्शन कराने के उपरान्त वापस अपनी सेना में भेज दिया जायेगा।"

प्रतिनिधिमण्डल ने पुनः नरेशराय के द्वारा पूछा—"वर्तमान परिस्थिति में क्या हो सकता है?"

उत्तर अब भी पण्डित वीरभद्र ने ही दिया। उन्होंने कहा—"महाराज कच्छ के सुरक्षा-मन्त्री अभी महाराज की ओर से सन्धि की शर्तों पर बातचीत करने के लिए यहाँ उपस्थित हैं। महाराज जयदमन अथवा उनकी ओर से कोई अधिकार-सम्पन्न व्यक्ति सेनाध्यक्ष से बातचीत करने आ सकता है। वार्तालाप में सन्धि की शर्तें निश्चित हो सकती हैं। निश्चय के उपरान्त वे शर्तें दोनों नरेशों के पास भेजी जायेंगी और उन पर दोनों नरेशों के हस्ताक्षर एक स्थान पर दोनों राज्यों के प्रमुख व्यक्तियों के सामने होंगे। तब सन्धि की कार्रवाई पूरी होगी।"

"यदि दोनों पक्षों के अधिकारी एकमत नहीं हो सके, तो क्या होगा?"

"तो युद्ध होगा। युद्ध के उपरान्त फिर सन्धि होगी, भले ही उस सन्धि में एक राज्य समाप्त हो जाये। तब भी सन्धि तो होगी ही। तब राजाओं के साथ सन्धि नहीं होगी, तब एक राज्य और दूसरे राज्य की प्रजा के मध्य सन्धि होगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक-प्रतिनिधिमण्डल अगले दिन प्रातःकाल ही सरपट घोड़े दौड़ता हुआ अपने शिविर की ओर चल दिया और मध्याह्न तक वह कच्छ-सेना को पार कर शक-सेना में जा पहुँचा। वहाँ पहुँचकर उसे ज्ञात हुआ कि वहाँ के गाँववालों ने शक-सेना को अन्न, अनाज और जल दिया है और वह भी सामान्य मूल्य पर। महाराज जयदमन को जब पूर्ण परिस्थिति का ज्ञान हुआ कि सभी बावन दूत, जिन्हें शक राजधानी भेजा गया था, भद्रकच्छ के बन्दीगृह में हैं, तो उन्होंने कहा—"मैं समझता हूँ कि इस स्थिति में युद्ध नहीं हो सकता और कदाचित् हो भी नहीं सकेगा। यदि कच्छराज चाहें, तो हम सबको भूखे और प्यासे रखकर मृत्यु के घाट उतार सकेंगे। अतः सन्धि के लिए वार्तालाप होना चाहिये।"

जयदमन ने अपने सेनाध्यक्ष और उसके साथ दो सेनापतियों को सन्धि की शर्तें तय करने के लिए अधिकार-पत्र दे दिया। अगले दिन प्रतिनिधिमण्डल शूरसेन से सन्धि-वार्तालाप करने के लिए भद्रकच्छ भेज दिया गया।

तीन दिन के वार्तालाप के उपरान्त सन्धि-वार्ता में निश्चित हुई शर्तें लेकर शक-सैनिक अधिकारी लौट आये। उनके आते ही गोष्ठी बुला ली गयी और शर्तों पर विचार होने लगा। सन्धि-वार्ता में यह निश्चय हुआ था कि शक और कच्छ-राज्यों में सीमा सिन्धु नदी होगी। पश्चिम की ओर सिन्धु और उत्तर की ओर ऐरावती नदी तक शक-राज्य तथा कच्छ-राज्य की सीमा होगी। शकराज की पञ्चनद देश के शिशुपाल से पहले ही सन्धि थी। दोनों राज्यों की सीमा वितस्ता नदी थी। कश्मीर-राज्य के साथ भी शक-राज्य की सन्धि थी तथा उनकी सीमा वितस्ता और कुछ पहाड़ियाँ थी। उत्तर की ओर गान्धार-राज्य से भी शकराज की सन्धि थी। इस प्रकार शकों और उनके मित्र राज्यों को भारतवर्ष के राज्यों ने सीमित कर रखा था।

कच्छ-राज्य के सैनिक अधिकारियों के साथ सन्धि-वार्ता से शक-राज्य को बहुत-सा विजित क्षेत्र वापस करना पड़ रहा था। इस पर जयदमन बहुत लज्जित था। इसके साथ ही वह विचार कर रहा था कि कच्छ-राज्य की वर्तमान सैनिक व्यूह-रचना अवश्य पण्डित वीरभद्र द्वारा की हुई है। अतः अब उसे पण्डित वीरभद्र और उनकी लड़की पद्मिनी से वैमनस्य का दुःख सताने लगा था। जयदमन यह भी अनुभव कर रहा था कि उसकी नीति में भूल उसकी रखेल वीणापाणि ने ही करायी थी। अब उसे समझ आ रहा था कि पद्मिनी और वीणापाणि में क्या अन्तर था?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयदमन अपने क़दम वापस खींचना चाहता था। अतः उसने पण्डित वीरभद्र को यह सन्देश भेज दिया कि वह इन शर्तों को स्वीकार करता है और उसे महाराज सिंहनाद से मिलकर बहुत प्रसन्नता होगी।

इस पर दोनों सेनाओं का एक संयुक्त सैनिक सङ्गठन निर्मित किया गया। इस सङ्गठन में दोनों सेनाओं में से पचास-पचास सैनिक नियुक्त किये गये और महाराज जयदमन को इस टुकड़ी के संरक्षण में मान-प्रतिष्ठा के साथ पुरिका ले जाया गया। जयदमन के इस प्रकार आने की सूचना पहले ही भेज दी गयी।

इस सैनिक सङ्गठन में जहाँ शक-सेनाध्यक्ष और उसके अधीन सेनापति थे, वहाँ शूरसेन और पण्डित वीरभद्र भी थे। सम्पूर्ण मार्ग में शकराज के साथ आदर और सम्मान के भाव से व्यवहार किया गया। मार्ग में पड़नेवाले गाँवों में भी जनता की ओर से शकराज का स्वागत किया गया। इस कारण जयदमन आश्चर्य कर रहा था कि कहीं यह कच्छराज का छल तो नहीं है अथवा उसे बन्दी बनाने का आयोजन न हो। अपने मन में उठ रहे संशयों का उत्तर पाने के लिए उसने एक दिन पण्डित वीरभद्र को बातचीत करने के लिए अपने पास बुलाकर उनसे पूछा—"पिताजी! क्या आप मुझसे नाराज़ हैं?"

पण्डित वीरभद्र मुसकराये। वह समझ गये कि जयदमन अब अपने और पद्मिनी के बिगड़े सम्बन्ध की ओर संकेत कर रहा है। उन्होंने कहा—"महाराज! मैं आपसे नाराज़ नहीं हूँ और न किसी प्रकार आपका अनिष्ट करने का यत्न कर रहा हूँ। इसके विपरीत मैं यत्न कर रहा हूँ कि आपको आपका यथोचित अधिकार प्राप्त रहे। मेरी आरम्भ से ही यह अभिलाषा रही है कि भारतवासियों और शक-समुदाय के सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण हों, ताकि दोनों समुदाय एक हो जायें। इसी कारण मैंने अपनी लड़की को आपसे विवाह पर आशीर्वाद दिया था। मैं अब भी उसी दिशा में काम कर रहा हूँ, परन्तु इस प्रयास में सफलता परमात्मा के अधीन है।

"कठिनाई यह है कि जीवात्मा परमात्मा के नियन्त्रण में नहीं है। उसे केवल स्वेच्छा से विचरण करने की ही नहीं, अपितु परमात्मा से प्राप्त सामर्थ्य के प्रयोग की भी पूर्ण स्वीकृति है। बन्धन कर्म के फलभोग का है। अतः मैं कर्म तो कर सकता हूँ, परन्तु उसका फल तो दूसरों के अपने उद्देश्यों से सम्बन्धित है। मैं इसमें हस्तक्षेप नहीं कर सकता। फिर भी आपके लिए प्रयत्न तो कर ही रहा हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयदमन ने कहा—"मैं यह जानना चाहता हूँ कि मेरा जो यह भव्य स्वागत हो रहा है, कहीं यह कोई छलना तो नहीं ?"

"जहाँ तक मैं जानता हूँ, आपका सम्मान सत्य हृदय से किया जा रहा है। पुरिका के महाराज सिंहनाद के अपने श्रीमुख से यह आज्ञा थी कि आपकी समस्या का सुझाव न्यूनाधिन्यून हत्याओं से करना है और मैं इस दिशा में ही प्रयत्न कर रहा हूँ।"

"इसका प्रमाण क्या होगा ?"

"पुरिका के बाहर आपका भारी स्वागत किया जायेगा। वहाँ से आपको महाराज सिंहनाद अपने हाथी पर बैठाकर पुरिका के मुख्य मार्ग से ले जाते हुए अपने राजभवन में ले जाकर रखेंगे। मार्ग में लोग आप दोनों नरेशों पर पुष्प-वर्षा करेंगे और आपका जयघोष करेंगे। राजप्रासाद में एक सप्ताह तक आपका आतिथ्य किया जायेगा और उसके उपरान्त एक दिन नगर के प्रतिष्ठित लोगों और सेनाध्यक्षों की उपस्थिति में दोनों नरेश सन्धि पर हस्ताक्षर करेंगे। फिर एक दिन आपको सम्मानसहित विदा कर दिया जायेगा।"

"मुझे इस सब कार्यक्रम में सम्मिलित होते लज्जा अनुभव होगी।"

"किसलिए ?"

"इस कारण कि मैं एक पराजित नरेश हूँ।"

"परन्तु इस सन्धि से लाभ आपको और आपकी प्रजा को होनेवाला है।"

"क्या लाभ होनेवाला है ?"

"दोनों राज्यों में व्यापार होगा और इस आदान-प्रदान में बहुत लाभ होगा। इससे आपकी शक-सभ्यता और ज्ञान-विज्ञान में भी उन्नति होगी।"

इन सब बातों पर जयदमन पण्डित वीरभद्र का मुख देखता रह गया। वह और अधिक स्पष्टता चाहता था, परन्तु इससे अधिक जानना उचित न समझकर चुप रहा। उसने बात बदल दी और बोला—"पण्डितवर! मेरे साथ आपके सम्बन्ध कैसे रहेंगे ?"

"जैसे पहले थे।"

"पहले कैसे थे ?"

"आप मेरे दामाद हैं और मैं एक श्वसुर का कर्तव्य-पालन करता रहूँगा। इस दामाद-श्वसुर से भी अधिक एक अन्य सम्बन्ध था, मेरा आपकी प्रजा होना। अब वह सम्बन्ध नहीं बन सकता। इसका कारण यह कि अब मेरा निवास आपके राज्य में नहीं रहा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

:1:

जब भद्रकच्छ में भगदड़ मची तथा सैनिकों के अत्याचारों और अनाचारों की आशङ्का बढ़ी, तो विद्यालय की प्रबन्ध-समिति की बैठक बुलाई गयी। पत्र-व्यवहार के द्वारा यह निश्चय किया गया कि प्रचलित परिस्थतियों में विद्यालय नहीं चल सकेगा, अत: उसे बन्द कर देना चाहिये।

प्रबन्ध-समिति के इस निश्चय के उपरान्त वे विद्यार्थी भी—जो अपने माता-पिता के साथ देश छोड़कर नहीं गये थे—विद्यालय छोड़कर चल दिये। प्रबन्ध-समिति के प्रमुख सदस्य पण्डित वीरभद्र ने भी अपना लोटा-डोरी लिया और मधुमति नदी पार कर कच्छ-राज्य में चले गये। पण्डित वीरभद्र ने सङ्कल्प कर लिया था कि वह अपने जन्म-स्थान को सैनिक-राज्य से मुक्ति दिलायेंगे। इस सङ्कल्प के अनुरूप ही वह कच्छ की राजधानी पुरिका जा पहुँचे।

पुरिका में यथावत् चहल-पहल थी। लोग निश्चिन्त होकर अपने-अपने व्यवसाय में लगे हुए थे। मनोरञ्जन और नाच-रङ्ग भी पूर्ववत् चल रहे थे। पण्डित वीरभद्र उसी पन्थागार में जा पहुँचे, जिसमें वह दो वर्ष पूर्व आकर ठहरे थे। वह वहाँ के राज्य के अधिकारियों से मिलकर शक-राज्य की परिस्थिति का वर्णन करना चाहते थे, परन्तु उन्हें सन्देह था कि उनके विषय में राज्य-भर में यह सन्देश पहुँच चुका होगा कि वह शक-राज्य की सहायता करते रहे हैं। इस कारण उन्हें यह आ़शा नहीं थी कि कोई उनकी बात सुनेगा। इस पर भी वह अधिकारियों तक पहुँचने का और उन्हें वस्तु-स्थिति से अवगत कराने का कोई--न-कोई मार्ग खोज रहे थे। दिन-भर नगर में घूमना और रात में पन्थागार में सो रहना, उन दिनों पण्डित वीरभद्र का यही एक कार्य था।

सौभाग्य से एक दिन राजमार्ग पर उन्हें प्रौढ़ावस्था की एक स्त्री के साथ चलता हुआ शङ्कर दिखाई दिया। शङ्कर को देखते ही पण्डित वीरभद्र को अपने मन में कार्य-सिद्धि की योजना दिखाई दी। आगे बढ़कर वह शङ्कर और उस स्त्री के सामने जा खड़े हुए। शङ्कर ने पण्डित वीरभद्र को देखा, तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
झुककर चरण स्पर्श किये और हाथ जोड़कर नमस्कार करने लगा।

पण्डित वीरभद्र ने पूछा—"शङ्करजी! कहाँ घूम रहे हो?"

शङ्कर ने उत्तर दिया—"गुरुजी! आपको तो विदित है कि मैं भद्रकच्छ से चला आया था।"

"यह तो ठीक है, परन्तु तुम पुरिका में आये और तब से यहीं रह रहे हो, मुझे इसका ज्ञान नहीं था।"

"गुरुजी! एक रात स्वप्न में मैंने माताजी को मुझे पुकारते हुए देखा, तो लगा कि माताजी किसी कष्ट में हैं और मुझे स्मरण कर रही हैं। अत: अगले दिन ही मैं पुरिका चला आया था। माताजी वास्तव में कष्ट में थीं और वह अर्हत जिन्होंने माताजी से मुझे जन्म दिया है, इन्हें साध्वी बन जाने के लिए आग्रह कर रहा था। माताजी निर्वाह में कष्ट अनुभव करती हुई समझ नहीं रही थीं कि क्या करें। मेरे पुरिका से बाहर जाने के उपरान्त उनके पास निर्वाह का साधन नहीं रहा था। इसी समस्या को सुलझाने के लिए उन्हें साध्वी बनने की प्रेरणा दी जा रही थी। वह अपने हृदय से साध्वी बनना नहीं चाहती थीं।

"मेरे यहाँ पहुँचने पर उन्होंने सुख की साँस ली। यह हैं मेरी माताजी।" शङ्कर ने साथ खड़ी प्रौढ़ावस्था की स्त्री की ओर संकेत करते हुए कहा।

"तो तुमने यहाँ जीविकोपार्जन का साधन सोच लिया?"

"मैं पुन: शूरसेनजी की सेवा में चला गया हूँ। उन्होंने मेरा अपराध क्षमा कर दिया है। मैंने उन्हें भद्रकच्छ में अपने व्यवहार की सफ़ाई दी थी और उनको उस पर सन्तोष हुआ है।"

पण्डित वीरभद्र ने बात को समाप्त करते हुए पूछा—"अब तुम किधर जा रहे हो?" पण्डितजी नहीं चाहते थे कि वह अपनी योजना राजमार्ग पर खड़े-खड़े बतायें, इस कारण वह शङ्कर से पृथक् मिलना चाहते थे। शङ्कर ने पण्डितजी की बात से किसी रहस्य का अनुमान लगा लिया और उनसे पूछा—"आप कहाँ ठहरे हैं?"

"मैं राजकीय पन्थागार में ठहरा हूँ। कब मिलने आओगे?"

"इस समय माताजी के साथ किसी आवश्यक काम से जा रहा हूँ। कल प्रात: अल्पाहार के समय मिलने आ सकूंगा।"

शङ्कर अपनी माताजी के साथ अपने मार्ग पर चल दिया और पण्डित वीरभद्र अपनी योजना की पूर्ति की आशा में पन्थागार में लौट आये।

अगले दिन अल्पाहार के समय शङ्कर आया, तो पण्डित वीरभद्र ने उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भी अल्पाहार लेने का निमन्त्रण देकर कहना आरम्भ किया—"भद्रकच्छ में क्रान्ति हो गयी है। वहाँ पाटलिपुत्र की कुछ नर्तकियाँ आयी हुई थीं। उनमें से एक को जयदमन ने अपने राजप्रासाद में रख लिया है। उसके मोहजाल में फंसा हुआ जयदमन पद्मिनी से विरक्त हो गया है और अपनी राजनीति उस नर्तकी वीणापाणि की सम्मति से चलाने लगा है। परिणामस्वरूप सैनिकों को असीम अधिकार प्राप्त हो गये हैं और प्राय: नागरिक उस क्षेत्र को छोड़कर भाग गये हैं। मैं भी अपना कार्य छोड़कर यहाँ आ गया हूँ। यहाँ आने पर मैं अपने प्रदेश में क्रान्ति कराने का विचार कर रहा हूँ। इसमें यहाँ के अधिकारी सहायक हो सकते हैं।"

पण्डित वीरभद्र की बात सुनकर शङ्कर मुस्कराने लगा। उसने निकट खिसककर धीरे-धीरे यह रहस्योद्घाटन किया—"वे नर्तकियाँ तो यहाँ से ही भेजी गयी थीं, किन्तु अब शूरसेन अपनी पहली योजना की असफलता के कारण अपने किये पर पश्चात्ताप कर रहा है। उसने ही यहाँ के मन्त्रिमण्डल के सदस्य सेठ सोमदेवजी के द्वारा यह नयी योजना चलवायी है। सेठ सोमदेवजी का विचार था कि नर्तकी वीणापाणि महाराज जयदमन का ध्यान आकर्षित किये बिना नहीं रहेगी और उनको विश्वास था कि यदि जयदमन एक बार वीणापाणि के मोहजाल में फंस गया, तो यहाँ से शक-राज्य की नीति चलाई जा सकेगी। यद्यपि इस बार मुझे विश्वास में नहीं लिया गया था, तथापि बातों-बातों से ही मैं इस अनुमान पर पहुँचा हूँ कि जो कुछ शक-राज्य में हो रहा है, वह यहाँ की सम्मति से ही कराया जा रहा है।"

रहस्य की इस बात को सुनकर पण्डित वीरभद्र चकित रह गये। वह समझ गये कि सेठ सोमदेव शूरसेन से अधिक योग्य नीतिज्ञ हैं। अत: उन्होंने सेठ सोमदेव से सम्पर्क बनाने के लिए शङ्कर से पूछा—"सेठ सोमदेव से तुम्हारा किसी प्रकार का सम्पर्क है अथवा नहीं?"

"उनके दर्शन तो प्राय: प्रतिदिन होते हैं, परन्तु वह शूरसेन को योग्य नीतिज्ञ न समझकर अपनी योजना पृथक् चला रहे हैं। अब मैं शूरसेनजी का सेवक हूँ, इस कारण वह अपनी योजना के विषय में कुछ बताते नहीं।"

"शङ्करजी! एक काम कीजिये। मुझे सोमदेवजी से मिला दीजिये। मुझे उनकी नर्तकियोंवाली योजना को सुनकर उन पर शूरसेन से अधिक विश्वास हो रहा है।"

पन्थागार का पाचक अल्पाहार ले आया था तथा दोनों—शङ्कर और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डित वीरभद्र—अल्पाहार लेते हुए बातचीत कर रहे थे।

शङ्कर कुछ देर मौन रहा। वह अपने मन में योजना बना रहा था कि किस प्रकार पण्डित वीरभद्र और सेठ सोमदेवजी में सम्पर्क स्थापित किया जाये? अन्ततः उसने कहा—"मैं नहीं जानता कि मेरे स्वामी शूरसेन मेरे आपसे भेंट करने को पसन्द करेंगे अथवा नहीं और मैं नहीं चाहता कि उनको पता चले कि मैंने आपको सेठ सोमदेवजी के पास पहुँचाया है। शूरसेनजी मुझ पर बहुत कृपा करते हैं और मैं उनका बहुत आदर करता हूँ, किन्तु देश और राष्ट्र शूरसेनजी से ऊपर है। इस कारण मैं शूरसेनजी से चोरी-चोरी सेठ सोमदेवजी और आपकी भेंट कराने का प्रयत्न करूँगा। यदि आप कभी शूरसेनजी से मिलें, तो मेरी इस सेवा का वर्णन न करें।"

पण्डित वीरभद्र शङ्कर के इस आश्वासन से प्रसन्न थे और समझ रहे थे कि शङ्कर की सहायता से वह अपनी योजना के दूसरे चरण पर पहुँच रहे हैं।

कई दिन तक शङ्कर से भेंट नहीं हुई, तो पण्डित वीरभद्र इस दिशा में निराश होने लगे। एक दिन वह निरर्थक राजमार्ग पर घूमते हुए थककर लौटे थे कि पन्थागार में अपने आगार के बाहर एक व्यक्ति उनकी प्रतीक्षा करता हुआ मिला। पण्डित वीरभद्र भीतर जाने से पहले आगार का द्वार बन्द कर उस पर ताला लगा गये थे। बाहर एक व्यक्ति को खड़ा देखकर पण्डित वीरभद्र ने प्रश्न-भरी दृष्टि से उसके मुख की ओर देखा। उस व्यक्ति ने हाथ जोड़कर नमस्कार कहा और पूछा—"क्या आप ही पण्डित वीरभद्रजी हैं?"

"हाँ, क्या बात है?"

"नगर के एक प्रतिष्ठित सेठ ने मुझे आपके पास भेजा है। वह आपसे मिलना चाहते हैं।"

"वह सज्जन कौन हैं?"

"सेठ सोमदेवजी हैं। उन्होंने इस पन्थागार के आगार संख्या तीन में ठहरे हुए पण्डित वीरभद्रजी को आज सायंकाल अपने मकान पर बुलाया है।"

"परन्तु मैं तो जानता नहीं कि उनका निवास स्थान कहाँ है? वहाँ कैसे पहुँच सकूंगा?"

"वह चौथे प्रहर के आरम्भ में आपको ले जाने के लिए रथ भेजेंगे। आप तैयार रहियेगा। सेठजी बहुत व्यस्त व्यक्ति हैं। इस कारण उनके सारे काम समय पर ही होते हैं। यदि कोई व्यक्ति समय पर उनसे मिलने नहीं आता, तो उसे पुनः भेंट के लिए समय निश्चित करना पड़ता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पण्डित वीरभद्र ने सन्तोष अनुभव करते हुए कहा—"मैं सही समय पर तैयार रहूँगा। उनको मेरा आशीर्वाद देना।"

दोनों व्यक्तियों में भेंट हो गयी। सेठ सोमदेव पण्डितजी को देखकर खिलखिलाकर हँस पड़े और पण्डितजी को आदर सहित बैठाकर कहने लगे—"तो जयदमन ने अपनी प्रकृति के अनुसार काम करना आरम्भ कर दिया है न?"

"हाँ, सेठजी! और मुझे वहाँ से भाग आना पड़ा है।"

"और आपकी लड़की?" सोमदेव ने मुसकराते हुए पूछा।

"मेरे वहाँ से चलने के समय तक तो वह खरीच के राजप्रासाद में ही थी, परन्तु जहाँ तक मुझे ज्ञात है, वह पति से त्यक्ता है।"

सेठ सोमदेवजी ने गम्भीर होकर कहा—"मैं समझता हूँ कि वह वहाँ नहीं रह सकेगी। आश्चर्य की बात यह है कि वह अभी तक वहाँ है। कोई अन्य स्त्री होती, तो वीणापाणि के अपमानयुक्त व्यवहार से ऊबकर वहाँ से चली आयी होती।"

"तो आपको वहाँ की स्थिति का मुझसे अधिक ज्ञान है?"

सेठ सोमदेवजी ने हंसते हुए कहा—"यदि मूर्ख शूरसेन ने अपनी योजना मुझसे पूछकर बनायी होती, तो मैं उसे वैसा करने की सम्मति कभी नहीं देता, जैसा उसने किया था। मेरी वर्तमान योजना परिपक्व हो चुकी है। आपकी लड़की पद्मिनी को अपने पुत्र के साथ राजप्रासाद छोड़कर चले आना चाहिये। वह मेरे अनुमानों को मिथ्या सिद्ध कर रही है। सम्भवतः उसके रक्त में पिता के ब्राह्मणत्व का अंश अब भी विद्यमान है, किन्तु मैं मानता हूँ कि यदि ब्राह्मण एक बार रुष्ट हो जाये, तो वह अपने शत्रु का विनाश किये बिना साँस नहीं ले सकता।"

पण्डित वीरभद्र ने सोमदेवजी की शङ्का का समाधान कर दिया। उन्होंने कहा—"एक आर्य कन्या अपने पति को कभी शत्रु नहीं समझ सकती। यही कारण है कि पद्मिनी के विषय में आपका अनुमान मिथ्या सिद्ध हो रहा है। लगता है कि आपका पाला किसी श्रेष्ठ आर्य पत्नी से नहीं पड़ा।"

"तो आप मुझे आर्य नहीं मानते?"

"मेरी सूचना के अनुसार आप जैन धर्मावलम्बी हैं।"

"और हम जैन यह मानते हैं कि वास्तविक आर्य सभ्यता और संस्कृति को मानने वाले हम जैन ही हैं। शैव तो आर्य होने का बहाना करते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डित वीरभद्र हँस दिये और बात बदलकर बोले—"कदाचित् आप ठीक ही समझते हैं। आपकी नवीन योजना की रूपरेखा को जानकर मुझे अपनी धारणा पर सन्देह होने लगा है।"

सेठ सोमदेवजी ने कहा—"राजधानी खरीच में ऐसी स्थिति बन रही प्रतीत होती है कि शक-राज्य शीघ्र ही कच्छ पर आक्रमण कर देगा। यहाँ के महाराज और मैं भी युद्ध में नर-हत्या की कल्पना से सङ्कोच करते हैं। महाराज से मेरी बातचीत हुई है। वह चाहते हैं कि कोई ऐसा चमत्कार किया जाये कि साँप भी मर जाये और लाठी भी बच जाये। उनका अभिप्राय यह है कि बिना नर-हत्या हुए कच्छ-राज्य को विजयश्री मिले।"

पण्डित वीरभद्र सोमदेव की इस इच्छा को सुनकर गम्भीर हो गये और कुछ देर मौन रहने के उपरान्त बोले—"यदि आप मुझे कुछ समय दें, तो मैं अपनी सम्मति दे सकता हूँ। मेरे मस्तिष्क में एक योजना बन रही है, परन्तु वह अभी स्पष्ट नहीं है। कुछ दिनों में ही मैं अपनी योजना की सम्पूर्ण रूप-रेखा श्रीमान् के समक्ष स्पष्ट कर सकूंगा, परन्तु उसमें भी सेना की सहायता की आवश्यकता पड़ेगी।

"सेना कोई दूषित वस्तु नहीं है। जैन राजाओं ने भी लोगों को डराने के लिए सेना रखी हुई है। यदि केवल भय उत्पन्न करने से ही विजय प्राप्त करने की कोई योजना हो, तो आप बताइये। जयदमन द्वारा चलायी नीति से यह आशा की जा सकती है कि आप और आपकी लड़की देशहित में जयदमन के विरुद्ध भी कुछ वैसी ही बात कर सकेंगे।"

इसके उपरान्त भेंट समाप्त हुई और पण्डित वीरभद्र कुछ दिनों में अपनी योजना बनाकर उपस्थित होने का वचन देकर पन्थागार में लौट आये।

:2:

पण्डित वीरभद्र की योजना बनी और सेठ सोमदेवजी के पास पहुँच गयी। पण्डितजी ने पूर्ण प्रक्रिया और पूर्ण व्याख्या सहित सेना की गतिविधि लिखकर दे दी। सेठ सोमदेवजी ने उसे पढ़ा, तो फड़क उठे और जब उन्हें मन्त्रिमण्डल तथा महाराज की स्वीकृति भी प्राप्त हो गयी, तो उन्होंने कहा—"महाराज! यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योजना मेरे एक मित्र ने बनायी है और उसने इसके प्रत्येक अङ्ग पर व्याख्यासहित विचार किया है। यदि इस पर उसे भी योजना अपनाने वालों में सम्मिलित कर लिया जाये, तो मेरी राय में यह उचित ही होगा। वह व्यक्ति उस सम्पूर्ण क्षेत्र को भली-भाँति जानता है, अतः उसे सेनाध्यक्ष के साथ सम्मतिदाता के रूप में रख लिया ज़ाये। इससे योजना की सफलता में बहुत सहायता प्राप्त होगी।"

महाराज ने कहा—"क्या हमारे सेनाध्यक्ष इस योजना को अपना नहीं सकेंगे?"

"महाराज! सेनाध्यक्ष क्या कर सकेंगे, यह तो वही बता सकते हैं, किन्तु मैं समझता हूँ कि योजना बनाना ब्राह्मणों का काम है और उसे कार्यान्वित करना क्षत्रियों का काम है। पिछले दो वर्षों में सेनाध्यक्ष ने कोई योजना नहीं बनायी। मुझे इस पर कोई आश्चर्य नहीं हुआ; क्योंकि क्षत्रिय तो काम करने के लिए ही उत्पन्न होता है। योजना बनाना और भविष्य में दूर तक देखकर, होनेवाली परिस्थितियों का अनुमान लगाकर, उनके प्रतिकार पर पहले ही विचार करना ब्राह्मणों का काम है। वह ब्राह्मण हैं और एक ब्राह्मण के नाते ही मैं उन्हें इस कार्य के साथ सम्बन्धित करना चाहता हूँ।"

महाराज सिंहनाद ने शूरसेन की ओर देखा, तो वह कहने लगा—"महाराज! योजना व्याख्यासहित बनी है तथा प्रत्येक पग पर सम्भावित स्थितियों का और उन स्थितियों में करणीय कार्य का भी वर्णन कर दिया गया है। मैं समझता हूँ कि मैं इस योजना के अनुसार कार्य कर सकूंगा। यदि इस प्रकार का बुद्धिमान् और नीतिकुशल व्यक्ति भी सम्मतिदाता के रूप में मिल जाये, तो मुझे प्रसन्नता ही होगी। आपत्ति का तो प्रश्न ही नहीं उठता।"

महाराज सिंहनाद ने कहा—"ठीक है। हम आपके उन ब्राह्मण देवता को अपने सेनाध्यक्ष के साथ सम्मतिदाता के रूप में नियुक्त करते हैं। उनका क्या नाम है?"

"महाराज! वह भद्रकच्छ का ही एक विद्वान् व्यक्ति है और उनका नाम है पण्डित वीरभद्र! वह शकराज जयदमन के श्वसुर हैं, परन्तु हमारी एक भेदनीति के कारण जयदमन के शत्रु हो गये हैं।"

"ओह!" शूरसेन के मुख से यह विस्मयजनक शब्द निकल पड़ा।

सेठ सोमदेवजी ने शूरसेन के विस्मय की ओर ध्यान न देते हुए महाराज से कहा—"महाराज! आपको स्मरण होगा कि एक वर्ष पूर्व मैंने एक राजनीतिक कार्य के लिए दस सहस्र स्वर्ण मुद्राएँ स्वीकार करायीं थीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर महामन्त्री ने कहा—"यह राशि पाटलिपुत्र से कुछ नर्तकियाँ भद्रकच्छ भेजने के लिए थी।"

सेठ सोमदेवजी ने कहा—"हाँ। मैंने पचीस के लगभग नर-नारियाँ और सङ्गीताचार्य वहाँ भिजवाये थे। उनमें एक अतिसुन्दर नर्तकी भी थी। उस पर जयदमन की दृष्टि पड़ गयी, तो वह उसकी पत्नी की स्थानापन्न बन गयी। उनके इस कष्ट और रोष का कारण वह नर्तकी है और उसका फल है कि आज वह पुरिका में भटक रहे हैं। मेरा उनसे परिचय था। इस कारण मैंने उनकी सहायता से यह योजना बनवायी है।"

शूरसेन ने गम्भीर भाव बनाकर कहा—"पण्डित वीरभद्र हैं तो बहुत योग्य, परन्तु उनके विश्वसनीय होने पर मन नहीं मानता।"

सेठ सोमदेवजी ने कहा—"शूरसेनजी! बुद्धि एक तीक्ष्ण धारवाला खड्ग है। वह जिसके हाथ में रहेगा, उसी का कल्याण करेगा। मुझे विश्वास है कि इस समय वह मेरे हाथ में है। ब्राह्मण होने के नाते वह छल नहीं करेंगे।"

शूरसेन के कुछ कहने से पूर्व ही महामन्त्री ने कह दिया—"पण्डित वीरभद्र के विषय में हमारी सूचना बहुत अच्छी है। भद्रकच्छ से वैश्य समाज के कुछ लोग यहाँ आये हैं और पण्डित वीरभद्र के विषय में उनका कहना है कि वे उन्हें एक श्रेष्ठ मानव मानते हैं।"

यह सुनकर शूरसेन का मुख बन्द हो गया और पण्डित वीरभद्र की सेवाएँ स्वीकार कर ली गयीं।

पण्डित वीरभद्र और शूरसेन की भेंट सेठ सोमदेवजी के द्वारा ही हुई। सेठ सोमदेवजी की बैठक में पण्डित वीरभद्र को बुलाया गया और शूरसेन से उनकी भेंट करायी गयी।

जब पण्डित वीरभद्र वहाँ पहुँचे, तो सेठ सोमदेव और शूरसेन बातचीत कर रहे थे। पण्डितजी ने शूरसेन को आशीर्वाद दिया, तो शूरसेन ने हँसते हुए कहा—"तो पण्डितजी! अब आप पुनः हमारे साथ भद्रकच्छ चलेंगे?"

पण्डित वीरभद्र ने उत्तर दिया—"हाँ, भाग्य में कुछ ऐसा ही लिखा है।"

"आशा है कि इस बार हमारा आपसे झगड़ा नहीं होगा।"

"झगड़ा तो तब भी नहीं हुआ था। जहाँ तक मुझे ज्ञात है, मेरा आपके साथ होना आपके लिए सहायक ही सिद्ध हुआ था।"

"सच?"

"हाँ, श्रीमान्। मैंने सेठ सोमदेवजी को सारी बात समझा दी है और वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
समझ गये हैं।"

"पण्डितजी! क्या समझाया है? कुछ मुझे भी समझा दें, तो अनुगृहीत अनुभव करूँगा।"

"कोई रहस्य की बात नहीं है। उपनिषद् में एक कथा है कि एक बार मनुष्य की इन्द्रियों में झगड़ा हो गया। हाथ-पाँव अदि झगड़ने लगे कि रात-दिन परिश्रम वे करते हैं और उस परिश्रम से जो कुछ उपलब्ध होता है, उसे मुख खा जाता है, रसना उसका स्वाद लेती है और पेट तृप्ति अनुभव करता है। इस कारण सब इन्द्रियों ने काम करना बन्द कर दिया। परिणाम यह हुआ कि अन्न-अनाज उपलब्ध होना रुक गया। अब कुछ आता नहीं था और पेट को भी नहीं मिलता था। इसका परिणाम यह हुआ कि शरीर शिथिल होने लगा। हाथ-पाँव भी बेकार होने लगे। तब बुद्धि ने हाथों को समझाया कि वे भूल कर रहे हैं। उन्हें पेट में गये अन्न से ही शक्ति प्राप्त होती है। इस कारण उन्हें काम करना चाहिये।

"हाथों को समझ नहीं आ रहा था कि मुख में डाला अन्न उन्हें कैसे प्राप्त होता है। यह समझाया बुद्धि ने और जब पुनः शरीर में समन्वय बना, तो काम चलने लगा। शूरसेनजी! यही बात मैंने सेठ सोमदेवजी को समझायी है और अब आपको समझा रहा हूँ।"

"मैं समझ रहा हूँ, किन्तु सेठजी क्या समझे? वह तो पेट की भाँति केवल खानेवाले हैं।"

"उन्हें समझाया है कि बुद्धि से कही गयी बात को मान लें और आपको समझा दें, अन्यथा निराश हुए हाथ पेट में छुरा भी घोंप सकते हैं।"

शूरसेन समझ गया और कुछ समय बाद बोला—"ओह! परन्तु वह तो कहते थे कि बुद्धि एक तीक्ष्ण खड्ग है और यह उनके हाथ में है।"

"हाँ। इसका कारण यह है कि पेट ने सृष्टि का सञ्चार बुद्धि में भी करना आरम्भ कर दिया है। धनाभाव के कारण बुद्धि भूखी रहने लगी थी।"

सेठ सोमदेव हँस दिये और पूछने लगे—"तो क्या अब बुद्धि ने अपना स्थान प्राप्त कर लिया है?"

"हाँ। पेट के द्वारा राज्य के हाथों पर नियन्त्रण मिलने की आशा हो गयी है।"

इस पर पण्डित वीरभद्र ने अपनी योजना बतायी और उसके अनुसार तैयारी होने लगी। दो लक्ष सैनिक तैयार किये गये। एक लक्ष सैनिक पुरिका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
की रक्षा के लिए पुरिका से दस कोस पश्चिम की ओर स्थित कर दिये गये और शेष एक लक्ष के चार भाग कर दिये गये। एक भाग मधुमति की ओर चल दिया। सेना की इस टुकड़ी के बढ़ने की सूचना भद्रकच्छ में पहुँची, तो आज्ञानुसार पचास सहस्त्र शक-सैनिक आगे बढ़े । मधुमति की ओर चलते हुए शक-सेना कच्छ-सेना के आमने-सामने मधुमति से बीस कोस के अन्तर पर पहुँच गयी। ज्योंही दोनों सेनाएँ आमने-सामने आयीं, सेनाध्यक्ष शूरसेन ने श्वेत पताका हाथ में देकर दूत के द्वारा एक पत्र शक-सेनाध्यक्ष के पास भेज दिया। उस पत्र में शक-सेनाध्यक्ष से निवेदन किया गया था कि कच्छ के महाराज सिंहनादजी की शकराज के साथ किसी प्रकार का झगड़ा करने की इच्छा नहीं है तथा वह अपना एक पत्र शकराज महाराज जयदमन को देना चाहते हैं। यदि वह सेना के साथ हों, तो सूचना भेज दी जाये, तब पत्र भेज दिया जायेगा।

शक-सेनाध्यक्ष ने उत्तर भेजा कि महाराज जयदमन इस समय सेना के साथ नहीं हैं। हाँ, वह दो-तीन दिन में सेना में आनेवाले हैं।

इस पर शूरसेन का एक अन्य पत्र आया। उस पत्र में उसने लिखा था—"मेरा शक-सेनाध्यक्ष को यह सुझाव है कि महाराज जयदमन के आने तक और उन्हें महाराज सिंहनाद का पत्र देने तक युद्ध न हो। मुझे पूर्ण विश्वास है कि दोनों महाराज परस्पर बिना युद्ध किये ही समझ जायेंगे।"

शक-सेनाध्यक्ष धोखे में आ गया और तीन दिन तक दोनों सेनाएँ आधा मील के अन्तर पर डेरा डाले पड़ी रहीं। इस समय कच्छ-सेना का एक भाग दक्षिण की ओर शक-सेना के दक्षिण में तीन मील के अन्तर पर आ खड़ा हुआ।

जब जयदमन अपनी सेना के शिविर में पहुँचा, तो कच्छ-सेना के एक भाग ने शक-सेना के पीछे जाकर मधुमति पर अधिकार कर लिया था।

जयदमन की प्रतीक्षा में तीन दिन तक और वार्तालाप के दिनों में कच्छ के प्रजागण शक-सेना को रसद-पानी देते रहे। कच्छ की प्रजा के इस व्यवहार पर शक-सैनिकों और स्वयं जयदमन को भी आश्चर्य हुआ, परन्तु जब शक-सेना ने स्वयं को चारों ओर से घिरा हुआ पाया, तो पुनः सन्धि हो गयी। सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर करने के लिए जयदमन को अत्यन्त आदरपूर्वक पुरिका ले जाया गया और राजप्रासाद में ठहराया गया, जहाँ उसकी सेवा और मनोरञ्जन का अत्यन्त उत्तम प्रबन्ध किया गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सात दिन तक अतिथि सत्कार होता रहा। कच्छ-राज्य की समृद्धि को देखकर जयदमन चकित रह गया। उसे भ्रमण के लिए रथ पर बैठाकर नगर और नगर के दर्शनीय स्थलों पर ले जाया जाता। उन सब स्थानों पर नर-नारियों को कौशेय वस्त्र और नाना प्रकार के आभूषण धारण किये देखकर जयदमन कच्छ-राज्य से ईर्ष्या करने लगा।

रात्रि-भोज के समय पण्डित वीरभद्र जयदमन से मिलते रहते थे। यह उनका कर्तव्य था कि वह जयदमन से मिलकर उसका सुख-समाचार लें और यदि उसे किसी प्रकार का कष्ट हो, तो शीघ्रातिशीघ्र उसका निवारण करें। जयदमन को किसी प्रकार का कोई कष्ट नहीं था और वह सदा सन्तोष प्रकट किया करता था।

चार दिन व्यतीत हो चुके थे और जयदमन कच्छ-राज्य के धन-दौलत, समृद्धि और प्रजा के मुख पर सुख एवं उल्लास देख चुका था। अत: रात्रि-भोज के समय जब पण्डित वीरभद्र आये, तो जयदमन ने उन्हें अपने आगार में ले जाकर उनसे पूछा—"पण्डितजी! इस देश की समृद्धि को देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य होता है कि यहाँ के निवासियों के पास इतना धन-दौलत कहाँ से आता है! भ्रमण के समय जब भी में किसी व्यक्ति को देखता हूँ, तो वह अपनी भुजाओं पर स्वर्ण के मोटे-मोटे भुजबन्द पहने दिखाई देता है। मुझे अभी तक ऐसा कोई भाग्यहीन व्यक्ति दिखाई नहीं दिया, जिसके गले में कण्ठहार अथवा भुजाओं पर भुजबन्द न हो। स्त्रियाँ तो प्राय: आभूषणों से लदी दिखाई देती हैं। इन्हें अपने आभूषणों के छिन जाने का भय नहीं? अस्त्र-शस्त्रधारी सैनिक भी मार्ग में चलते-फिरते दिखाई देते हैं, परन्तु स्त्रियाँ उनसे भी निर्भय होकर घूमती-फिरती दिखाई देती हैं।"

"हाँ, महाराज! यह यहाँ की रीति है।"

"तो क्या यहाँ ऐसा कोई नहीं, जिसके घर में स्त्री नहीं?"

"ऐसे बहुत हैं, जिनका विवाह नहीं हुआ।"

"वे ऐसी सुन्दर स्त्रियों को देखकर उनकी ओर आकर्षित नहीं होते?"

"महाराज! यह यहाँ की रीति नहीं है। जो लोग अविवाहित अथवा युवा हैं, यदि वे किसी स्त्री की सङ्गत चाहते हैं, तो उनके लिए वेश्यालय हैं, जहाँ स्त्रियाँ भाड़े पर मिल जाती हैं, परन्तु उनसे लाभ उठानेवाले कम ही हैं। प्राय: स्त्री-सङ्गत की इच्छा होने पर व्यक्ति विवाह कर लेते हैं अथवा सन्यास ले लेते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु सब को तो सुन्दर स्त्रियाँ मिल नहीं सकतीं?"

"हाँ, परन्तु यह भाग्याधीन है। कोई अपने भाग्य से झगड़ा नहीं करता।"

"परन्तु पिछली रात यहाँ के प्रबन्धकों ने मुझे एक अतिसुन्दर स्त्री मनोरञ्जन के लिए दी थी। मैंने उसे अपने साथ खरीच चलने का निमन्त्रण दिया, तो वह कहने लगी—आप पहले अपनी पत्नी से तो निबट लीजिये। मुझे ज्ञात हुआ है कि आपको उससे मिले एक वर्ष से अधिक हो चुका है। मुझे आश्चर्य हुआ कि वह मेरे घर की बातों को कैसे जानती है?"

पण्डित वीरभद्र ने कहा—"अवश्य ही किसी जानकार ने बताया होगा।"

"क्या हमारा देश इतना समृद्ध नहीं हो सकता?"

"क्यों नहीं हो सकता? मैंने और भृगुदत्त ने इसका उपाय किया था, किन्तु वह सौभाग्य आपके लिए नहीं था।"

"हाँ, समुद्री व्यापार से आय में वृद्धि तो हुई थी।"

"मैं करों से प्राप्ति की बात नहीं कह रहा। मैं तो प्रत्येक प्रजाजन के लाभवाला कार्य निमार्ण करने का प्रयत्न कर रहा था। महाराज! परिश्रम ही धन-दौलत है और सही प्रकार से किया गया परिश्रम ही प्रचुर मात्रा में धन उपलब्ध कराता है। हम इसका प्रबन्ध ही तो कर रहे थे। हमारे विद्यालय से पढ़कर विद्वान् निकलते, तो लोगों में संयम और सहनशीलता उत्पन्न करते। इन गुणों से युक्त होकर किया गया परिश्रम लाखों स्वर्ण उत्पन्न करने की सामर्थ्य निर्मित कर लेता। उनकी धन-सम्पदा राज्य की ही होती। आपातकाल आने पर राजा प्रजा से ऋण ले सकता है। इस कारण प्रजा को जितना सम्पदा से युक्त रखा जायेगा, राज्य उतना ही समृद्ध होगा।"

"परन्तु आपने विद्यालय का यह गुण तो बताया ही नहीं था।"

"यह और अन्य अनेक गुण संयम और ज्ञान से ही आते हैं।"

"परन्तु पिताजी! अब क्या होगा?"

पण्डित वीरभद्र सें आत्मीयता प्रकट करने के लिए जयदमन उन्हें पिता कहकर सम्बोधन करने लगा था। पण्डित वीरभद्र तो सामान्य ढंग से ही कह रहे थे। उन्होंने कहा—"अब आपको भृगुदत्त-जैसा कोई योग्य मन्त्री बनाना होगा।"

"वैसा कहाँ मिलेगा?"

"आप अपने राज्य में ढूढ़िये अथवा कच्छ-राज्य से किसी योग्य मन्त्री की सेवाएँ माँग लीजये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं तो उनसे आपको माँगनेवाला हूँ।"

"मैं उनकी सेवा में नहीं हूँ।"

"परन्तु आप कार्य तो कच्छ-राज्य का ही कर रहे हैं।"

"नहीं श्रीमान्! मैं अपना ही कार्य कर रहा हूँ।"

"आपका यहाँ क्या कार्य है?"

"मुझे अपनी जन्मभूमि को स्वतन्त्र कराना था। वह मैंने करा ली है।"

"कैसे करा ली है?"

"इस कार्य में महाराज सिंहनादजी की सहायता लेनी पड़ी थी। उन्होंने वहाँ से विदेशी राज्य को निकाल दिया है।"

"परन्तु वहाँ तो आपकी लड़की का राज्य था।"

"महाराज! जब से आपने राज्य-कार्य में उसकी सम्मति लेनी बन्द कर दी, तब से वह उसका राज्य नहीं रहा।"

जयदमन गम्भीर होकर विचार करने लगा। वीणापाणि ही उसे राज्य-कार्य में सम्मति देने लगी थी। उसने ही जयदमन के मन में यह विचार जाग्रत किया था कि राजा और सेना ही राज्य के वास्तविक अधिकारी होते हैं। प्रजा तो दास होती है।

जयदमन ने कुछ विचारकर कहा—"आप ठीक कहते हैं। मुझसे भूल हुई थी। अब वह भूल नहीं करूँगा।"

"हाँ। ऐसा ही होना चाहिये।"

पण्डित वीरभद्र से इस दिन के वार्तालाप ने जयदमन के मन में यह आशा उत्पन्न कर दी कि यदि वह पद्मिनी से उचित व्यवहार करेगा, तो पण्डितजी, उनके शिष्य अथवा अन्य विद्वान् उसके राज्य में वापस आ सकेंगे।

:3:

राजभवन में उपस्थित महाराज सिंहनाद और दोनों राज्यों के प्रतिनिधियों के सम्मुख जयदमन से सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर कराये गये। दरबार लगाया गया और दोनों ओर के नरेशों को बराबर के सिंहासनों पर बैठाया गया। नरेशों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीचे और उनके सामने राज्याधिकारी और प्रजागण बैठे थे। जयदमन के साथ आये पचास सैनिक और उनके पीछे उसके सेनाध्यक्ष तथा कुछ अन्य सैनिक अधिकारी भी भवन में उपस्थित थे। पुरिका और कच्छ-राज्य के सब प्रमुख लोग भी दरबार-भवन में उपस्थित थे।

सबसे पहले एक अर्हत ने शान्ति-पाठ पढ़ा। उसके बाद कच्छ का महामन्त्री उठकर यह वक्तव्य पढ़ने लगा—

"पिछले ढाई-तीन वर्षों से हमारे राज्य और शक-राज्य के मध्य सीमा के विषय में कुछ विवाद चला आ रहा था। हम जैन मतावलम्बी हिंसा से भयभीत रहते हैं। इस कारण हम युद्ध-जैसी भयंकर बात से बचना चाहते थे। भगवान् महावीर तथा जिन एवं अर्हतों की कृपा-दृष्टि और आशीर्वाद से हमने बिना युद्ध के ही सीमा-विवाद को निबटा दिया है। कुछ एक हत्याएँ अवश्य हुईं, किन्तु इतने महान् विवाद को हमने बीस-पचीस बलिदानों से ही सुलझा लिया।

"अहिंसा ही सुख और शान्ति का मार्ग है। इस मार्ग पर चलने से हिंसक पशु भी हरिण की भाँति निरीह हो जाता है। अहिंसा के इस चमत्कार को हमने साक्षात् देखा है और यह उस चमत्कार का ही परिणाम है कि दो सवर्था भिन्न संस्कृतियाँ और सभ्य जातियों के प्रमुख व्यक्ति इस प्रकार मैत्री भाव में एक आसन पर बैठे हैं।"

महामन्त्री ने अपना वक्तव्य समाप्त किया, तो एक चारण ने महाप्रभु महावीर का जयघोष कर दिया। उसके उपरान्त जयदमन ने शक-वाणी में कुछ कहा और उसका अनुवाद पण्डित वीरभद्र ने देव-वाणी में प्रस्तुत कर दिया। जयदमन ने कहा—

"मुझे कच्छ के महाराजाधिराज भाई सिंहनाद से मित्रता-लाभ का बहुत हर्ष हो रहा है। मैंने कच्छ की राजधानी तथा राज्य के कुछ प्रमुख स्थान देखे हैं और इन्हें देखकर मैं यहाँ की धन-सम्पदा और लोगों की शान्ति-प्रियता से बहुत प्रभावित हुआ हूँ।

"मैं महाराज कच्छ का बहुत आभारी हूँ कि इन्होंने मुझे अपना मित्र बनाने की कृपा की है। मुझे कच्छ-राज्य से मित्रता की सन्धि करने पर बहुत प्रसन्नता हो रही है।"

इसके उपरान्त दो सन्धि-पत्र निकाले गये और उन दोनों पर दोनों नरेशों के हस्ताक्षर हुए। तदुपरान्त पुनः महाप्रभु महावीर की जय-जयकार बुलाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गयी और फिर दोनों नरेशों का जयघोष किया गया।

सभा विसर्जित हुई, तो जयदमन ने पण्डित वीरभद्र को बुलाकर उनसे पूछा– "अब क्या होगा?"

"अब कल आपको यहाँ से भेंट में यहाँ की विशेष वस्तुएँ देकर विदा कर दिया जायेगा।"

"और आप?"

"मैं अभी कुछ दिन पुरिका में ही रहूँगा।"

"हम चाहते थे कि आप मेरे साथ चलते।"

"महाराज! अभी मुझे पुरिका में कुछ काम है। मैं कुछ दिन उपरान्त खरीच आऊँगा। पद्मिनी से भी मिलना है और वहाँ एक बालक भी है, जिसके साथ मैं अपना रक्त-सम्बन्ध मानता हूँ। उसके विषय में भी महाराज से कुछ निवेदन करना है। मैं शीघ्र ही वहाँ पहुँचने का प्रयत्न करूँगा।"

जयदमन को इस बात से सन्तोष हुआ कि पण्डित वीरभद्र ने खरीच आने के लिए अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी है। वह समझ गया था कि यदि उसने पद्मिनी के साथ प्रेममय व्यवहार रखा, तो पण्डितजी को उनकी लड़की किसी-न-किसी प्रकार बांधकर रख सकेगी।

अगले दिन अङ्गरक्षकों से घिरा हुआ जयदमन अपने सैनिक शिविर की ओर चला गया। उसका सैनिक शिविर अब तक वहीं था, जहाँ उसे कच्छ-सेना ने घेर रखा था।

जयदमन के वहाँ पहुँचते ही कच्छ-सेनापति ने शक-महाराज से निवेदन किया कि उनको अपनी सेनासहित वापस सिन्धु नदी से पार चले जाना चाहिये।

शक-सेना की स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। उसका जीवन कच्छ-सेना की दया पर था। उसका रसद-पानी सब कच्छ-सेना के घेरे में से ही होकर जाता था। इसके साथ ही कच्छ-सेना ने मधुमति से सिन्धु नदी तक सम्पूर्ण क्षेत्र अपने अधिकार में कर लिया था।

जयदमन ने सेनानायकों की एक गोष्ठी बुलायी और सब ने एकमत से यह निर्णय लिया कि सेना को वापस सिन्धु नदी से पार चले जाना चाहिये, अन्यथा वे सब भूखे मर जायेंगे। उस स्थान पर जल का भी अभाव था। अपनी राजधानी से शक-सेना का सम्पर्क टूट चुका था। यह सम्पर्क तो तब ही बना, जब शक-सेना सिन्धु नदी के तट पर पहुँची। वहाँ राजधानी से दूत आये हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे। जयदमन ने उन्हें अपने सामने आने का आदेश दिया, तो दूत ने कहा—"महाराज! राजधानी का समाचार हम आपको एकान्त में ही देंगे।"

यद्यपि जयदमन को इस पर आश्चर्य हुआ, तथापि इसमें किसी गूढ़ रहस्य को समझकर और दूतों को अपने शिविर में उपस्थित होने का आदेश देकर वह स्वयं भी वहाँ पहुँच गया। दूत ने हाथ जोड़कर निवेदन किया—"महाराज! आपकी पराजय का समाचार खरीच पहुँचा, तो राजधानी के नायक तूर ने राजधानी पर अपने अनुकूल सैनिक बैठाकर अपने को शकराज घोषित कर दिया है।

"इस पर महारानी ने अपने प्रासाद को भीतर से बन्द कर कुछ निष्ठावान् सैनिकों की सहायता से अपनी रक्षा का प्रबन्ध कर लिया। तूर ने नगर में अपनी सत्ता स्थापित कर राजप्रासाद पर अधिकार करने के लिए धावा बोल दिया और घमासान युद्ध हुआ। महारानी प्रासाद की छत पर चढ़कर धनुष-बाण से लड़ती रहीं। राजप्रासाद पर आक्रमण करनेवालों में स्वयं तूर भी था। वह इस आक्रमण में मारा गया। युद्ध देखनेवालों का कहना है कि महारानीजी के बाण से ही तूर की मृत्यु हुई है। उसके हृदय पर घाव लगा था।

"तूर की मृत्यु के उपरान्त राजधानी के नागरिकों और आपके कुछ निष्ठावान् सैनिकों की एक समिति राज्य-कार्य कर रही है। जिस दिन यह काण्ड हुआ था, उसी रात राजप्रासाद को आग लग गयी थी। आग बुझाने का कार्य किया जाता रहा, परन्तु सारा राजप्रासाद जलकर भस्म हो गया।"

"और महारानीजी?" जयदमन ने घबराकर पूछा।

"वह प्रासाद में नहीं मिलीं। न उनका और न राजपुत्र का ही शव मिला है। प्रबन्ध-समिति की ओर से बहुत खोजा गया, परन्तु उनका कोई चिह्न नहीं मिला।"

"और वीणापाणि?"

"महाराज! वह तो जिस दिन आपको कच्छ-सेना द्वारा घेर लिए जाने का समाचार मिला था, उसी दिन अपनी साथिनों के साथ पश्चिम की ओर चली गयी थी। बाद में समाचार आया कि राजधानी से तो वह पश्चिम की ओर ही गयी थी, परन्तु उसे पूर्व की ओर देखा गया था। लोगों का अनुमान है कि वह पञ्चनद देश में चली गयी है।"

इस समाचार से जयदमन अत्यन्त खिन्न और दुखी मन से वहाँ ठहरने की अपेक्षा अपनी राजधानी खरीच चला गया। अगले दिन वह राजधानी में पहुँचा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो नगर की प्रबन्ध-समिति ने उसे वही समाचार सुना दिया, जो दूत ने उसे सुनाया था।

जयदमन ने राज्य के नागरिकों को सान्त्वना देने के लिए एक दरबार करने की घोषणा कर दी। उसने चारों ओर दूत और गुप्तचर भेज दिये, ताकि वे पद्मिनी और माता-समान मालती का पता करें। उसने स्वीकार किया कि बिना युद्ध किये ही उसकी पराजय हो गयी थी। वह घेरे में घिर गया था और अन्न व जल के अभाव में पीड़ित सेना ने हथियार डाल दिये। उसे पुरिका ले जाया गया, जहाँ वह सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर कर आया है। उस सन्धि के अनुसार कच्छ-राज्य दो लाख स्वर्ण प्रतिवर्ष शक-राज्य को दिया करेगा। यह सिन्धु नदी तक का क्षेत्र कच्छ-राज्य में वापस जाने पर होनेवाली हानि की पूर्ति के लिए है।

तूर एक समझदार और शूरवीर सैनिक था। उसके विद्रोह करने के समाचार पर जयदमन को बहुत खेद और आश्चर्य हुआ था। जाँच करने पर पता चला कि महाराज जयदमन के खरीच राजधानी से युद्ध में जाते ही वीणापाणि ने तूर से मित्रता कर ली और वह उसकी सम्मति से ही विद्रोह करने पर तैयार हुआ था। जिस दिन तूर ने राजधानी पर अधिकार किया था, उससे पहली रात ही वीणापाणि राजप्रासाद से चली गयी थी। इस पर तूर को बहुत आश्चर्य और निराशा हुई थी।

जयदमन ने पद्मिनी की बहुत खोज करायी, परन्तु उसे न पद्मिनी का ही कोई समाचार मिला और न वीणापाणि का।

सम्पूर्ण राज्य को व्यवस्थित करने में छह मास लग गये। उसने पण्डित वीरभद्र को खरीच में बुलाने के लिए अपने विशेष दूत पुरिका भेजे। जयदमन का दूत महाराज सिंहनाद के पास पहुँचा, तो उन्होंने पण्डित वीरभद्र का पता करने के लिए सेठ सोमदेवजी से कहा। सेठ सोमदेवजी ने बताया कि पण्डित वीरभद्र उन्हें उसी सायंकाल मिले थे, जिस दिन सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर करने के लिए राज्य-सभा की बैठक हुई थी। उन्होंने कहा था कि वह काशी जा रहे हैं। उसके पश्चात् वह नहीं मिले।

कच्छ के कुछ लोग, जो वहाँ से भागे नहीं थे, अब भी जयदमन की सेवा में थे। उनमें से दो योग्य व्यक्तियों को पण्डित वीरभद्र का समाचार लेने काशी भेजा गया। वे वहाँ पण्डित वीरभद्र से मिले और यह समाचार लाये कि पण्डित वीरभद्र को पद्मिनी के जीवित होने का समाचार नहीं मिला। जब उन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वे सब प्रमाण सुनाये गये, जिनसे पद्मिनी के जीवित होने का अनुमान लगाया जा सकता था, तब वह पुरिका चले गये और वहाँ उसकी खोज कर रहे हैं। दूतों ने यह भी सूचना दी कि पण्डित वीरभद्र अब पुरिका में भी नहीं हैं। अपनी लड़की की खोज में वह अन्यत्र कहीं चले गये हैं।

इस खोज में दो वर्ष लग गये। अब तक खरीच में व्यवस्थित रूप से राज्य-कार्य चलने लगा था, परन्तु क्षत्रिय स्वभाव से विवश शकराज दो लाख स्वर्ण प्रतिमास से सन्तुष्ट नहीं था। एक वर्ष तक भद्रकच्छ पर भृगुदत्त के शासन ने उसे इससे अधिक आय करायी थी। इस कारण उसका मन कर रहा था कि वह पुनः भद्रकच्छ पर अपना अधिकार कर ले।

पद्मिनी और वीणापाणि के उपरान्त जयदमन ने अन्य कई स्त्रियों को पत्नी के रूप में रखने का प्रयत्न किया, परन्तु उसे वह सन्तोष कभी नहीं मिला, जो उन दोनों से प्राप्त होता था। वे दोनों बुद्धिमती और बात करने में चतुर थीं। यद्यपि दोनों की सम्मति परस्पर विपरीत होती थी, तथापि दोनों इतनी कुशलता से बात करती थीं कि उसके लिए उनकी बात मानने के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय ही नहीं होता था।

जयदमन के सैनिक मन्त्री उसे मधुमति पर पुनः अधिकार कर लेने की सम्मति देते रहते थे, परन्तु वह अभी मान नहीं रहा था।

:4:

जब जयदमन के कच्छ-सेना द्वारा घिर जाने का समाचार खरीच पहुँचा, तो तूर—जो राजधानी में स्थित सेना का अध्यक्ष था—कच्छ-सेना द्वारा खरीच पर आक्रमण को सम्भावित मानने लगा। इस कारण उसने खरीच में क़िले-बन्दी करना आरम्भ कर दिया। इसी समय वीणापाणि ने तूर को राज-प्रासाद में बुला भेजा। उसका आशय यह था कि वह शकमहारानी के अधिकार से तूर के द्वारा वहाँ की शासक बन जाये,परन्तु पहली ही भेंट में वह समझ गयी कि तूर स्वयं क्षत्रप की उपाधि प्राप्त करने का यत्न कर रहा है। वीणापाणि ने उससे पूछा—"सेनाध्यक्ष! राजधानी की सुरक्षा के विषय में कुछ कठिनाई तो नहीं?"

"कठिनाई तो है, परन्तु मैं उस कठिनाई को पार करने का प्रयत्न कर रहा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हूँ।"

"क्या कठिनाई है? शकमहारानी से आप क्या आशा करते हैं?"

"शकमहारानी कौन है?"

"क्या आप नहीं जानते कि वह मैं हूँ?"

"हमारे पुरोहितों ने आपका विवाह नहीं कराया था। अतः आप महारानी पद के योग्य नहीं मानी जा सकतीं।"

"क्या विवाह आवश्यक है?"

"विवाह के बिना किसी भी स्त्री को महारानी अथवा राजकुमार की माँ नहीं माना जा सकता।"

वीणापाणि समझ गयी। फिर भी उसने कहा—"मुझे विश्वस्त सूत्रों से पता चला है कि विवाहित रानी, अर्थात् पद्मिनी के पिता विजयी सेना में हैं और वह सेना लेकर खरीच आ रहे हैं। उन पण्डितजी का यह यत्न रहेगा कि वह जयदमन को पुरिका में बन्दी बनाकर रखें और यहाँ पद्मिनी को उसके लड़के के नाम पर राजमाता घोषित कर दें। कच्छ-राज्य की ओर से पद्मिनी की सत्ता को समर्थन मिलेगा।"

तूर को वीणापाणि की यह भविष्यवाणी सम्भव एवं युक्तिसंङ्गत प्रतीत हुई। वह गम्भीर विचार में निमग्न हो गया। उसे मौन देख वीणापाणि ने कहा—"मैं चाहूँगी कि आप मुझे महारानी घोषित कर दें। मैं शक-राज्य की महारानी बनकर आपकी दासी के रूप में रह सकूंगी।"

तूर को कुछ-कुछ समझ में आने लगा था। उसने कहा—"क्या मतलब?"

"मतलब स्पष्ट है। आप जयदमन से अधिक सुन्दर और राजा बनने के अधिक योग्य प्रतीत होते हैं।"

"परन्तु लोग क्या कहेंगे?"

"अभी तो आप मुझे महाराज जयदमन की रानी के रूप में शासक घोषित कर दें और राज्य का प्रबन्ध चलायें। समय आने पर आप यहाँ के राजा होंगे और मैं यहाँ की महारानी।"

तूर को योजना पसन्द आयी। उसने राजप्रासाद में ही अपना निवास बना दिया और वहीं से प्रबन्ध करना आरम्भ कर दिया, परन्तु उसी रात वीणापाणि अपनी साथिनों और सेविकाओं के साथ महल छोड़कर पश्चिम की ओर चली गयी। वीणापाणि का यह कार्य भी पुरिका के सेठ सोमदेवजी की योजना के अनुसार ही था। जब तूर ने अपने को शकराज घोषित किया, जो वीणापाणि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
महल छोड़कर जा चुकी थी। इससे निराश होकर तूर वीणापाणि के स्थान पर पद्मिनी को स्थापित करने का प्रस्ताव लेकर उसके प्रासाद में पहुँच गया।

पद्मिनी नगर के तथा युद्ध-क्षेत्र के समाचार स्वतन्त्र रूप से प्राप्त कर रही थी। उसे यह समाचार मिला था कि शकराज और कच्छ-सेनापति में सन्धि-वार्ता हो रही है। इससे वह समझ गयी कि उसका पति खरीच में जीवित लौट आयेगा।

इस समय तूर उससे मिलने आया। पद्मिनी ने उससे पूछा—"सेनापति किस प्रयोजन से मुझसे मिलने आये हैं?"

"मैंने स्वयं को शक-राज्य का उत्तराधिकारी घोषित कर दिया है और हमारे समुदाय में यह प्रथा है कि विजयी व्यक्ति विजित व्यक्ति की पत्नी का पति भी होता है। आपको शकमहारानी के पद पर स्थापित कर मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी।"

"ठीक है। पहले आप राजा बन जाइये, तब तक मैं भी अपने विषय में विचार कर लूंगी। मेरी सूचना यह है कि शकराज जयदमनजी की कच्छराज से सन्धि हो गयी है और वह कच्छ तथा शक-सेनाओं के साथ खरीच आ रहे हैं। इस कारण मेरी सम्मति है कि पहले आप अपना अधिकार स्थापित करें, उसके उपरान्त ही मैं अपने विषय में विचार करूँगी।"

तूर की सूचना केवल यह थी कि जयदमन कच्छ-सेना का बन्दी है और सम्भव है कि कच्छ-सेना उसे पुरिका ले जाये। इस कारण वह समझ रहा था कि जयदमन तो गया और अब उसे राजधानी खरीच की रक्षा करनी चाहिये। अतः उसने पद्मिनी से कहा—"मैं जयदमन के विषय में विश्वस्त सूचना लेकर आऊँगा। इस समय तो वह कच्छ-सेना का बन्दी है। कच्छ-सेना का विचार सिन्धु के इस पार आने का नहीं है। यदि आये भी, तो मैं यहाँ विरोध की तैयारी कर चुका हूँ। कच्छ-सेना यहाँ विजय प्राप्त नहीं कर सकती।

"महारानीजी! मैं यहाँ का भावी शासक बनूंगा। अन्य नगरों से भी सूचनाएँ आ रही हैं कि वे मेरे अधीन कच्छ-सेना से युद्ध करेंगे। इस कारण मैं आपको यहाँ की महारानी बने रहने का निमन्त्रण देता हूँ। मैं कल तक विश्वस्त सूचना के साथ मिलने आऊँगा।"

इतना कहने के उपरान्त तूर पद्मिनी के कक्ष से वीणापाणि के कक्ष में पहुँच गया। उसने अपन्ना निवास वहीं बना लिया था।

अगले दिन पद्मिनी ने राजमहल के निष्ठावान् सैनिकों की सहायता से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाकाबन्दी कर ली और तूर के सैनिकों को मार भगाया। तूर को यह पता चला, तो उसने राजमहल पर घेरा डाल दिया। पद्मिनी राजमहल की छत पर चढ़ गयी और अपने धनुष-बाण से तीर चलाने लगी। तूर अभी राजमहल पर आक्रमण की तैयारी कर ही रहा था कि पद्मिनी के एक बाण से वह घायल होकर मारा गया।

तूर अभी जीवित था कि राजमहल को आग लग गयी। वह आग पद्मिनी ने जान-बूझकर लगवायी थी। वह अपने पुत्र और सेविकाओं को लेकर चोरी-चोरी राजमहल से निकलने के उपरान्त खरीच को छोड़कर उत्तर की ओर चली गयी। जाने से पूर्व राजमहल को आग लगाने का प्रयोजन यह था कि वह चाहती थी कि यदि तूर जीवित बच गया अथवा जो भी उसका स्थानापन्न अधिकारी होगा, वह यही समझेगा कि पद्मिनी जल मरी है और उसका पुत्र भी उसके साथ ही चल बसा है।

पद्मिनी अपनी भागने की योजना में सफल हो गयी, राजमहल में आग भी लग गयी, परन्तु आग जान-बूझकर लगाई गयी थी, अत: राजमहल में रहनेवाले सब व्यक्ति बच निकले और जब नागरिकों की समिति ने राज्य अपने हाथ में लिया, तो वे जल गये राजमहल में महारानी और राजकुमार के शव अथवा अस्थियाँ ढूंढ़ने लगे। जब उन्हें राजमहल में कोई भी शव अथवा नर-अस्थियाँ नहीं मिलीं, तो यह अनुमान लगाया गया कि पद्मिनी ने स्वयं राजमहल को आग लगवाई है और वह किसी-न-किसी प्रकार बच निकली है।

जयदमन ने जब सारी कथा सुनी, तो पद्मिनी की खोज आरम्भ कर दी। इसी खोज में जयदमन के गुप्तचर पहले पुरिका और उसके उपरान्त पण्डित वीरभद्र की खोज में काशी पहुँच गये। कई मास की खोज के उपरान्त पण्डित वीरभद्र मिल गये। भद्रकच्छ का एक निवासी गोवर्धनलाल एक दिन गङ्गाघाट पर स्नान कर रहा था कि अचानक उसे सूर्याभिमुख ध्यानावस्थित बैठे पण्डित वीरभद्र दिखाई दे गये।

गोवर्धनलाल उन्हें पहचान गया और आँखें मूंदकर पालथी मारे घाट पर बैठे पण्डित वीरभद्र के सामने बैठ गया। समय पर पूजा समाप्त हुई और पण्डित वीरभद्र की आँखें खुलीं, तो उन्होंने एक व्यक्ति को अपनी ओर ध्यानपूर्वक देखते हुए देखा, तो वह भी उसे देखने लगे। जब उन्होंने उसे पहचान लिया, तो उन्होंने उससे पूछा—"क्या तुम गोवर्धन हो?"

"हाँ, भगवन! मैं छह मास से आपको काशी में ढूंढ़ रहा हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"काशी में ही क्यों ?"

"पुरिका के सेठ सोमदवजी ने बताया था कि आप यहाँ शास्त्राध्ययन और योग का अभ्यास करने आये हुए हैं। इस कारण आपको यहाँ ढूंढ़ रहा था।"

"परन्तु तुम्हें मेरे विषय में सोमजी से मिलने की क्या आवश्यकता थी ?"

"मुझे आपसे मिलने के लिए शकराज जयदमन ने भेजा है। कुछ अन्य लोग आपको अन्य नगरों में भी ढूंढ़ रहे हैं।"

"परन्तु मुझे क्यों ढूंढ़ा जा रहा है ?"

इस पर गोवर्धन ने खरीच का समाचार बता दिया और कहा—"पद्मिनी के बिना महाराज जयदमन बहुत व्याकुल हैं। इस कारण पद्मिनी और उनके साथ राजकुमार की खोज की जा रही है। यह माना जा रहा था कि पद्मिनी और राजकुमार आपके पास अवश्य आये होंगे और वे वहीं होंगे; जहाँ आप होंगे। इस कारण खरीच के बीसियों लोग आपकी खोज कर रहे हैं।"

"परन्तु वे तो मेरे पास नहीं आये।"

"तो वे कहाँ हैं ?"

"मैं नहीं जानता।"

"तो महाराज! उन्हें ढूंढ़ना चाहिये।"

"मुझे अब उनमें रुचि नहीं है।"

"मुझे उनकी खोज करने में रुचि है।"

"तुम्हारी रुचि किस कारण है ?"

"एक, राजकुमार और उसकी माँ को ढूंढ़नेवाले को जयदमन की ओर से दस सहस्र स्वर्ण का पुरस्कार मिलेगा। दूसरा, यह कि आपकी लड़की महारानी बनेगी, तो राज्य में पुनः सुख-शान्ति होने की आशा की जा सकती है।"

पण्डित वीरभद्र आँखें मूंदकर विचार करने लगे। वह सोच रहे थे कि गोवर्धनलाल द्वारा बताया दूसरा कारण अधिक श्रेयस्कर है। इससे लोक-कल्याण की आशा की जा सकती है।

यद्यपि अब वह भद्रकच्छ अथवा खरीच में रहना नहीं चाहते थे, उनके मन में वैराग्य उत्पन्न हो गया था, तथापि वह राजयोग के उपासक थे और निष्काम कर्म करने में विश्वास रखते थे। इस कारण वह अपने तथा अपनी लड़की के लिए हित-चिन्तन पर विचार करने लगे। वह समझ गये थे कि जयदमन के राजमहल में पद्मिनी के सम्मानयुक्त स्थान प्राप्त करने से शक-प्रजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का हित होगा। अतः वह पद्मिनी को ढूढ़ने के लिए उद्यत हो गये। वह गोवर्धनलाल को अपने स्थान पर ले गये और कुछ ही दिनों में योजनाबद्ध विधि से पद्मिनी की खोज करने के लिए चल दिये।

जब पण्डित वीरभद्र को पद्मिनी और राजकुमार के जीवित होने का विश्वास हो गया, तो वह कल्पना करने लगे कि पद्मिनी अवश्य कहीं छिपी हुई होगी और जयदमन के विचारों को जानने का प्रयत्न कर रही होगी।

उन्होंने गणना की, तो समझ गये कि पद्मिनी को खरीच से लापता हुए एक वर्ष से अधिक हो चुका है। वह पञ्चनद अथवा कश्मीर में होगी। इस विचार पर वह पुरिका वापस लौट आये। वह जानते थे कि खोज में भाग-दौड़ करनी होगी और उसके लिए धन सेठ सोमदेवजी से ही मिल सकेगा। काशी में तो वह एक मन्दिर में रहते थे और मन्दिर के भण्डारे में भोजन कर लेते थे। काशी में वह एक विद्वान् नीलमणि दशर्नाचार्य के पास सांख्य पढ़ रहे थे और गुरुजी के द्वारा ही उनके भोजन एवं वस्त्रादि का प्रबन्ध हो रहा था।

पण्डित वीरभद्र गोवर्धनलाल के साथ ही पुरिका लौट आये।

:5:

पण्डित वीरभद्र सेठ सोमदेवजी से मिले और उन्हें अपनी योजना बताकर सहायता प्राप्त करने की आशा से उनके मुख की ओर देखने लगे।

सेठ सोमदेवजी ने गम्भीर भाव धारण कर कहा—"यहाँ राज्य को यह सूचना मिली है कि जयदमन की पत्नी पद्मिनी खरीच से लापता है। पहले तो जयदमन को आशा थी कि पद्मिनी लौट आयेगी, किन्तु अब उसे एक राजा के रूप में राज्य करते डेढ़ वर्ष हो रहा है और ऐसा प्रतीत होता है कि वह नया विवाह कर अन्य उत्तराधिकारी पाने की लालसा करने लगा है। हमारी नवीनतम सूचना यह है कि यवन देश की एक सुन्दर लड़की ढूंढ़ ली गयी है और उसके पिता से बातचीत हो रही है।"

इस परिस्थिति को जानकर पण्डित वीरभद्र सेठ सोमदेवजी से पद्मिनी की खोज के लिए धन की मांग नहीं कर सके। उनका अपनी लड़की को ढूंढ़ निकालने का उत्साह मन्द पड़ गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेठ सोमदेवजी ने सुझाव दिया—"पण्डितजी! यदि आपका पुरिका में ही रहने का विचार हो, तो आपको राज्य-कार्य यहाँ भी मिल सकता है। आपके विषय में महाराज की सम्मति बहुत अच्छी है।"

पण्डित वीरभद्र की राज्य-कार्य में कोई रुचि नहीं थी। वह किसी भी राजा का वेतनधारी सेवक बनना नहीं चाहते थे। फिर भी उन्होंने कहा—"भगवन्! यह समाचार बहुत उत्साहवर्धक है, परन्तु मैं अभी किसी भी राज्य के लिए अपने मन को तैयार नहीं कर सकता।"

"ठीक है, अपने मन का तैयार कर लो। राज्य-कार्य मिल जाने पर जन-जन की सेवा अधिक सुगमता और प्रभावी ढंग से हो सकती है।"

"भगवन्! अभी तो लड़की के लिए परेशान हूँ। कुछ दिन के उपरान्त ही चित्त को तैयार करने का यत्न करूँगा।"

"ठीक है, कहाँ ठहरे हो?"

"अभी तो राजसी पन्थागार में ही ठहरा हुआ हूँ, परन्तु मेरे पास अधिक धन नहीं है। इस कारण किसी सार्वजनिक निःशुल्क स्थान पर जाने का विचार कर रहा हूँ। मेरा विचार था कि लड़की पुरिका में आयी होगी, इसी कारण यहाँ आया था।"

"अच्छी बात है। जब तक इच्छा हो, पन्थागार में ही रहो, वहाँ का व्यय दे दिया जायेगा। मुझसे मिलते रहेंगे, तो आप कल्याणकारी कार्य में लगे रहेंगे। इससे इस संसार-रूपी कीचड़ से निकलने में सहायता मिलेगी।"

पण्डित वीरभद्र सेठ सोमदेवजी से मिली सूचना के कारण पद्मिनी और उसके पुत्र को ढूंढ़ना छोड़कर अपने विषय में विचार करने लगे थे, परन्तु उन्होंने राज्य-सेवा में जाने का विचार नहीं किया।

गोवर्धनलाल को जब यह समाचार मिला कि जयदमन नया विवाह कर नये राजकुमार को जन्म देने का यत्न करना चाहता है, तो वह भी पद्मिनी को ढूंढ़कर और पुरस्कार पाने की आशा छोड़कर भद्रकच्छ जाने पर विचार करने लगा।

पण्डित वीरभद्र अब पुरिका में एकाकी जीवन व्यतीत कर रहे थे। वह दूसरे-तीसरे दिन सेठ सोमदेवजी से मिलने उनके निवास-स्थान पर जाया करते थे। देश तथा विदेश के विभिन्न विषयों पर परस्पर वार्ता होती थी।

पण्डित वीरभद्र को एक दिन सेठ सोमदेवजी का सन्देश मिला कि महाराज सिंहनाद अपने जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में एक दरबार कर रहे हैं। यदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डित वीरभद्रजी मध्याह्नोत्तर तीसरे प्रहर सेठ सोमदेवजी के निवास-स्थान पर पहुँच जायें, तो वह उनको राज्य-दरबार में ले जाकर बहुत प्रसन्नता अनुभव करेंगे।

पण्डित वीरभद्र को सन्देश मिला, तो वह समय पर सेठजी के स्थान पर पहुँच गये। वहाँ से सेठ सोमदेवजी उन्हें अपने रथ पर बैठाकर राज्य-दरबार में ले गये और उन्हें विद्वानों के लिए नियत स्थान पर बैठा दिया।

राज्य-दरबार हुआ। चारणों द्वारा प्रशस्तिगाथा गायी गयी और तत्पश्चात् महाराज सिंहनाद ने प्रजा का, राज्य-कर्मचारियों का, मन्त्रियों का और राज्य के विद्वतज्जनों का धन्यवाद किया। इसके साथ ही उन्होंने राज्य की समृद्धि का वर्णन करते हुए दान-दक्षिणा की एक लम्बी सूची सुना दी। पण्डित वीरभद्र को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि उस सूची में उनका भी नाम था। सूची में यह वाक्य सुनकर कि भद्रकच्छ के विद्वान् पण्डित वीरभद्रजी को एक सौ एक स्वर्ण भेंटस्वरूप दिया जाये, पण्डित वीरभद्र समझे कि सोमदेवजी ने अपने व्यय को बचाने के लिए दान-सूची में उनका नाम लिखवा दिया है।

राज्य-सभा के विसर्जन के उपरान्त जब पण्डित वीरभद्र सेठजी के रथ पर राजप्रासाद से वापस लौट रहे थे, तो उन्होंने सेठजी से कहा—"आपने कृपापूर्वक मेरा नाम भी राज्य-भेंट पानेवाले विद्वानों कर सूची में लिखवा दिया, इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ और आपको धन्यवाद देता हूँ।"

सेठजी ने कहा—"यह मैंने नहीं लिखवाया। हाँ, मैंने एक दिन महाराज के सम्मुख यह सूचना रखी थी कि भद्रकच्छ के विद्वान् पण्डित वीरभद्र आजकल पुरिका में आये हुए हैं। लगता है कि यह उस सूचना का ही परिणाम है।"

"तो भगवन्! अब आपको मासिक सहायता भेजने की कोई आवश्यकता नहीं रहेगी।"

"पण्डितजी! उसका इस भेंट से कोई सम्बन्ध नहीं। वह मैं अपने कल्याण के लिए देता हूँ और यह महाराज ने अपने कल्याण की आशा में भेंट की है। वास्तव में, यह मासिक भेंट भी मैं नहीं दे रहा। यह सेठानीजी आपके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए दे रही हैं।"

"परन्तु महाराज! मैंने अपनी जानकारी में उनका कभी कोई कल्याण नहीं किया। मैंने तो आज तक उनके दर्शन भी नहीं किये।"

"परन्तु वह समझती हैं कि आपने उनका बहुत भारी कल्याण किया है। जब मैं यहाँ के प्रतिनिधिमण्डल का अध्यक्ष बनकर भद्रकच्छ गया था, तो मुझे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहाँ से अपने वापस लौटने की आशा नहीं थी। ऐसा अनुमान था कि हम सबको आग पर भूनकर हमारे माँस से शकराज प्रीतिभोज करेंगे। मैं अपनी पत्नी को अन्तिम नमस्कार कर और अपनी सम्पत्ति का इच्छा-पत्र लिखकर ही यहाँ से गया था।

"जब मैं जीवित और सब प्रकार से स्वस्थ एवं सकुशल वापस आया, तो उसने मेरी न्योछावर की और वहाँ का पूर्ण विवरण जाना। जब उसने शूरसेन की असफल योजना की बात सुनी, तो वह आपके प्रति कृतज्ञता अनुभव करने लगी। इस बार जब आप काशी से लौटे थे, तो आपके पूर्ण व्यय का भार वह अपने पास से कर रही है और नित्य प्रात: महाप्रभु महावीरजी से आपके दीर्घ जीवन के लिए प्रार्थना करती रहती है।"

पण्डित वीरभद्र ने मुसकराकर कहा—"वास्तव में, इस कार्य का श्रेय मुझे नहीं। मैं तो उस समय आपका बन्दी था। इस विषय में सम्मति महारानी पद्मिनी की चलती थी। उन्होंने ही प्रतिनिधिमण्डल के एक सदस्य के पाप क्षमा कराये थे।"

"यह सब सेठानीजी को पता है। उसका कहना है कि यदि कभी पद्मिनीजी को मिल सकी, तो वह उन्हें भी निहाल कर देगी। आप—पद्मिनीजी का सृजन करनेवाले हैं, अत: कम प्रतिष्ठित नहीं हैं।"

पण्डित वीरभद्र मुसकराकर चुप हो गये। सेठ सोमदेवजी की सहायता उनके लिए जारी रही, परन्तु राज्य-सभा में जाने का एक अन्य परिणाम हुआ। महाराज सिंहनाद के जन्मोत्सव की सभा के दूसरे दिन प्रात: अल्पाहार के समय शङ्कर पण्डितजी से मिलने आया। पण्डित वीरभद्र ने उसे देखा, तो अल्पाहार का निमन्त्रण दे दिया। शङ्कर ने मुसकराते हुए कहा—"गुरुवर! इसीलिए तो आया हूँ। आपकी कृपा का फल भोग रहा हूँ।"

शङ्कर के लिए भी अल्पाहार मंगा लिया गया। पन्थागार का सेवक शङ्कर के लिए दूध और मिष्ठान्न लेने गया, तो शङ्कर ने कहा—"गुरुवर! मैं कल राज्य-सभा में उपस्थित था और आपको राज्य के विद्वानों की पङ्क्ति में बैठा देखकर बहुत प्रसन्नता अनुभव कर रहा था। जब आपका नाम विद्वानों की भेंट की सूची में सुना, तो मैं समझ गया कि अब आपको राज्य में उचित स्थान मिल रहा है। मैं उसी समय आपके चरण स्पर्श करने के लिए आनेवाला था, परन्तु सेठ सोमदेवजी आपको अपने रथ पर बैठाकर ले गये।

"कल सायंकाल मैं सेठजी के निवास-स्थान पर गया था। वहाँ से पता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चला कि आप इस पन्थागार में ठहरे हुए हैं, अतः चरण स्पर्श करने आया हूँ।"

इस पर पण्डित वीरभद्र ने अपने पुरिका में होने का प्रयोजन बता दिया। उन्होंने कहा—"मैं तो काशी में शास्त्राध्ययन में लीन था। वहाँ यह सूचना मिली कि पद्मिनी खरीच से भाग गयी है और अभी तक लापता है। मैं उसकी खोज में यहाँ आया, तो सेठ सोमदेवजी ने अपने प्रेमपाश में बांधकर मुझे यहाँ रोक रखा है।"

शङ्कर ने भी अपने विषय में बता दिया। उसने कहा—"सेठजी ने महाराज से मेरी बहुत प्रशंसा की और भद्रकच्छ क्षेत्र में आयुक्त के पद पर मेरी नियुक्ति करा दी। वह सारा क्षेत्र, जो अब तक भृगुदत्त के अधीन था, अब मेरे प्रबन्ध में है और मैं अपनी ओर से वहाँ का कार्य परिश्रम और विचारशीलता से चला रहा हूँ।

"राज्य-भर के आयुक्तों को महाराज के जन्मदिन पर यहाँ पहुँचने का आदेश था और सब आयुक्तों ने कल प्रातः महाराज के जन्मदिन के उपलक्ष्य में भेंट दी हैं। हम सब सायंकाल राज्य-सभा में उपस्थित हुए थे।

"महारानी पद्मिनी के विषय में मुझे यह सब पहले ही ज्ञात था। हमारा राज्य उन्हें ढूंढ़ निकालने में यत्नशील है। राज्य की ओर से इस खोज में विपुल प्रयत्न हो रहा है। यह राजनीतिक दृष्टि से किया जा रहा है। इस कारण यदि आप यहाँ सेठजी के सम्पर्क में रहेंगे, तो एक दिन महारानीजी को अवश्य पा जायेंगे।"

"किसी दुर्घटनावश उसका स्वर्गवास भी तो होना सम्भव है।"

"गुरुवर! यह तो भाग्याधीन है। जन्म और मृत्यु बिना भाग्य के नहीं होते। इस पर भी मुझे आशा है कि ऐसा नहीं हुआ होगा। महारानी पद्मिनी भाग्यशालिन् थीं। अभी उनकी मृत्यु की आयु नहीं है।"

"अब मेरी उसमें कोई रुचि नहीं रही। मेरी रुचि पद्मिनी के कारण नहीं थी। यदि वह खरीच में महारानी बन सकती, तो वहाँ के लोगों का कल्याण कर सकती थी, परन्तु अब समाचार आ रहे हैं कि जयदमन दूसरा विवाह कर अपने राज्य का एक अन्य उत्तराधिकारी बनाना चाहता है। इस कारण मैंने वहाँ की जनता के कल्याण की योजना को अनावश्यक और असम्भव समझकर उसे अपने मन से निकाल दिया है।"

"पण्डितजी! निराश होने का कोई कारण नहीं। हमने अपने गुप्तचर पड़ोस के सब राज्यों में पता करने के लिए भेजे हुए हैं और खोज में भी ढील

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
नहीं दी जा रही।"

"कच्छ-राज्य की इसमें क्या रुचि है?"

"यह एक राजनीतिक दृष्टि से किया जा रहा है और यह विचार सेठ सोमदेवजी का है। उनका मानना है कि शक-राज्य से कच्छ-राज्य का विवाद अभी समाप्त नहीं हुआ है। इस विवाद का मूल्य दो लक्ष स्वर्ण प्रतिवर्ष बहुत अधिक है। इस विवाद में जयमदन का पुत्र रिपुदमन एक मोहरा सिद्ध होगा। फिर भी भविष्य के विषय में जो विचार किया जा रहा है, वह अभी तक कोरी कल्पना ही है।"

पण्डित वीरभद्र और शङ्कर के मध्य भद्रकच्छ की भी बातें हुईं। शङ्कर ने बताया—"कच्छ-राज्य ने आयात-निर्यात कर में पुनः वृद्धि कर दी है। इस कारण व्यापार अभी उस स्तर पर नहीं पहुँचा, जहाँ महारानी पद्मिनी की नीति से पहुँच गया था। कर-वृद्धि पर राज्य में बहुत ले-दे हुई थी। अन्य क्षेत्रों ने भी यह माँग की थी कि यदि भद्रकच्छ में कर कम रखा जाता है, तो पूर्ण राज्य में कर में कमी होनी चाहिये, अन्यथा अन्य क्षेत्रों के व्यापारी घाटे में रहेंगे। इस कारण समानता के विचार से सारे राज्य में कर में कुछ कमी की गयी है और भद्रकच्छ में वृद्धि की गयी है।"

पण्डित वीरभद्र के विस्मय का ठिकाना न रहा, जब उसी सायंकाल शूरसेन उनसे मिलने आया। मध्याह्नोत्तर का अल्पाहार लेते हुए उसने पण्डितजी से कहा— "कल आपको राज्य-सभा में बैठे देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं यह जानने के लिए महामन्त्री से मिल चुका हूँ कि आप पुरिका में किस प्रयोजन से आये हैं? उन्होंने आपके विषय में कुछ बातें बतायी हैं। इस कारण मैं आपसे मिलने चला आया हूँ।"

शूरसेन के इस कथन ने तो पण्डित वीरभद्र को और भी अधिक विस्मय में डाल दिया। वह स्वयं नहीं जानते थे कि कच्छ-राज्य उनसे किस विषय में क्या कार्य लेना चाहता है। वह अपने मन में कल्पना करने लगे, परन्तु मौन रहे, कुछ भी जानने की उत्सुकता प्रकट नहीं की।

शूरसेन ने कहा—"पण्डितजी! अभी आप पुरिका में रहें। मैंने महामन्त्री से कह दिया है कि आपकी आर्थिक सहायता कर दी जाये। उन्होंने कहा है कि वह पहले ही इस दिशा में विचार कर रहे हैं।"

अब पण्डित वीरभद्र ने कहा—"मुझे महामन्त्री के द्वारा इस दिशा में किये जा रहे किसी प्रयास की जानकारी नहीं है, परन्तु सेठ सोमदेवजी मेरे यहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रहने में आश्रय बने हुए हैं।"

"और भद्रकच्छ में चलनेवाले आपके विद्यालय का क्या हुआ?"

"अब मैं उन लोगों के सम्पर्क में नहीं हूँ। यहाँ से जाते समय विद्यालय का सम्पूर्ण कोष यहाँ के एक सेठ मूलमणिजी के पास था। जहाँ तक मुझे ज्ञात है, वह सब धन लेकर और भद्रकच्छ को छोड़कर कहीं अन्यत्र चले गये हैं। उसके उपरान्त मेरा उनसे सम्पर्क नहीं रहा। मेरा वहाँ पर विद्यालय स्थापित करने का एक प्रयोजन यह भी था कि भारतीय ज्ञान-विज्ञान शक-राज्य में भी पहुँचे, परन्तु अब तो शक-राज्य भद्रकच्छ में रहा नहीं। इस कारण उस विद्यालय की योजना निष्प्रयोजन हो गयी है।"

"किन्तु यहाँ के अधिकारी उसे निष्प्रयोजन नहीं मानते। महामन्त्री के मस्तिष्क में मुझे यही बात उठ रही प्रतीत हुई है।"

"परन्तु क्या मूलमणि का पता चला?"

"हाँ, उन्होंने वहाँ का शेष धन—जो उनके पास था—यहाँ कच्छ-राज्य में जमा करा दिया है।"

इस विषय में सेठ सोमदेवजी से पण्डित वीरभद्र का वार्तालाप नहीं हुआ था, इस कारण उन्होंने बात बदल दी और कहा—"भद्रकच्छ क्षेत्र को शक-राज्य से मुक्त कराने की योजना से आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होनी चाहिये थी। मैं आशा करता हूँ कि उस युद्ध में आपके प्रयास का मूल्यांकन किया जायेगा।"

शूरसेन हंस दिया और बोला—"उस युद्ध में अहिंसा की प्रवृत्ति और व्यवहार की महिमा का गान किया गया है। राज्य के जैन मतावलम्बियों का विचार है कि अहिंसा और कम हिंसा की नीति की विजय हुई है और इसके लिए सेठ सोमदेवजी और आपकी भूरि-भूरि प्रशंसा हो रही है। सेना के कार्य को गौण माना जा रहा है। उस वार्षिक अनुदान की भी बहुत प्रशंसा की जा रही है, जो कच्छ-राज्य के द्वारा शक-राज्य को दिया जा रहा है।"

पण्डित वीरभद्र समझ गये कि मिथ्या दृष्टि अपनायी जा रही है। विजय अहिंसा की नहीं हुई, अपितु सैनिक शक्ति के सही ढंग से प्रयोग की हुई थी। प्रयोग के उस ढंग में उनका योगदान तो था, परन्तु वह हिंसा अथवा अहिंसा की दृष्टि से नहीं था। यदि जयदमन हठ का कुछ भी प्रदर्शन करता, तो निस्सन्देह सहस्रों की मृत्यु की सम्भावना थी।

इस पर भी पण्डित वीरभद्र अपने को कच्छ-राज्य का गुरु नहीं मानते थे। यदि इस विषय में भी दृष्टि में कुछ सुधार हो सकता था, तो सेठ सोमदेवजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के द्वारा ही हो सकता था। अतः पण्डित वीरभद्र ने इस विषय को भी बदल दिया। उन्होंने कहा—"मैं समझ नहीं रहा कि मैं यहाँ किसलिए पड़ा हूँ? काशी में आत्मोन्नति में संलग्न था। यहाँ अध्ययन कार्य उस गति से और उस दिशा में नहीं हो रहा। न यहाँ वह सब साहित्य ही उपलब्ध है, जो काशी में था और न ही वहाँ के विद्वान् यहाँ हैं।

"महामन्त्री भी उसी दिशा में विचार कर रहे प्रतीत होते हैं। उनका विचार है कि जो राशि मूलमणिजी को पुरिका में दी गयी थी, उसी धन से विद्यालय चालू कर दिया जाये।

"परन्तु वह अथवा वैसा विद्यालय तो यहाँ के राजा की धार्मिक नीति के विपरीत हो जायेगा। वह विद्यालय शैव सम्प्रदाय के समर्थन में होनेवाला था। इसी कारण उसकी स्थापना शिव-मन्दिर में की गयी थी। महामन्त्री का विचार कुछ वैसा ही है, परन्तु वह स्वयं और महाराज सिंहनाद भी विरोधाभास में फंस रहे हैं। जैन सम्प्रदाय का विद्यालय उस स्तर का होना असम्भव है, परन्तु जैन गुरु कह रहे हैं कि यह असम्भव नहीं। जैनियों में बहुत विद्वान् लोग हैं, जो ज्ञान-विज्ञान के उतने ही ज्ञाता हैं, जितने वेद मत को मानने वाले।"

पण्डित वीरभद्र इस विषय में भी अपनी सम्मति देना नहीं चाहते थे। उनका विचार था कि उच्च कोटि के ज्ञान में लीन होकर जैन मतावलम्बी भी वैदिक मत के अनुयायी हो जायेंगे। इस विषय में भी वह शूरसेन को उपयुक्त व्यक्ति नहीं मानते थे।

:6 :

पण्डित वीरभद्र को पुरिका में आये एक वर्ष से ऊपर हो गया था। अब उन्होंने पन्थागार छोड़ दिया था और नगर के एक मकान में रहने लगे थे। उन्होंने अपने घर पर कुछ ग्रन्थों का संग्रह भी कर लिया था। उज्जैन में विभिन्न विषयों के कई बृहत् पुस्तकालय थे और वहाँ अनेक व्यक्ति पुस्तकों की प्रतिलिपियाँ तैयार करने का व्यवसाय करते थे। वे विभिन्न ग्रन्थों की प्रतिलिपियाँ तैयार करते थे और पुस्तकों को प्राप्त करने के इच्छुक व्यक्ति ग्रन्थों की प्रतियाँ मोल ले जाते थे। उज्जैन में यह व्यवसाय बहुत प्रचलित था। ऐसे ही एक लिपिकार से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पण्डित वीरभद्र का परिचय हुआ, तो उन्होंने कई ग्रन्थों की प्रतिलिपियाँ प्राप्त कर लीं। इस प्रकार वह अपने स्वाध्याय की प्रवृत्ति को कार्य में लगा रहे थे। इस व्यस्तता के बल पर ही वह पुरिका में टिके हुए थे।

वह प्राय: तीसरे प्रहर सेठ सोमदेवजी के घर आया करते थे और अब उन्हें किसी धर्मग्रन्थ की कथा करने के लिए कहा गया था। सेठजी ने महाभारत ग्रन्थ की एक प्रतिलिपि प्राप्त कर ली थी और जब भी सेठानीजी को अवकाश होता, वह पण्डित वीरभद्रजी को महाभारत की कथा करने के लिए बुलवा लेती थीं। जैसे-जैसे पण्डित वीरभद्र-जैसे विद्वान् द्वारा कथा और उसकी विवेचना की चर्चा होने लगी, श्रोतागणों की रुचि भी बढ़ने लगी।

ऐसे ही एक दिन जब पण्डित वीरभद्र को कथा करने के लिए बुलावा आया, तो उस समय शूरसेन पण्डितजी से मिलने आया हुआ था। उसने पण्डितजी से पूछ लिया—"यह सेठानी ने आपको किस कारण बुलाया है?"

"मैं उनके घर पर महाभारत ग्रन्थ की कथा करता हूँ। पाठ करने के साथ ही वहाँ वर्णित घटनाओं की विवेचना भी करता हूँ। उन विवेचनाओं को सुनने के लिए ही मुझे बुलाया जाता है।"

"परन्तु यह तो उनके धर्म में वर्जित है?"

"मैंने उन्हें बताया है कि धर्म तो वेद और महावीर का एक ही है। सम्पूर्ण भारतीय समाज का धर्म एक है, परन्तु समुदाय के अन्य रीति-रिवाजों और मान्यताओं में अन्तर है। उनके विषय में विवाद व्यर्थ है। सबको अपने-अपने विचारानुसार व्यवहार करने की स्वीकृति होनी चाहिये।"

"तो जैन और शाक्त—मांस-मछली खानेवालों का—धर्म एक ही है?"

"हाँ, शूरसेनजी। धर्म है सत्य बोलना, चोरी न करना, क्रोध और वासनामय व्यवहार से बचना। ये और इसी प्रकार की अनेक बातें भारत के प्राय: सब समुदायों में समान हैं। जिनमें भेद है, वह गौण धर्म है। उदाहरण के रूप में क्या खाना और क्या न खाना, क्या पहनना और क्या न पहनना, इसी प्रकार महाप्रभु महावीर को गुरु मानना अथवा शाक्य मुनि गौतम को। ऐसे ही हिंसा-अहिंसा भी गौण हैं। यदि दोनों समान उद्देश्य से की जायें, तो समान हैं।"

शूरसेन हँस पड़ा और पूछने लगा—"तो सेठानीजी इसे मान गयीं?"

"उनके अन्तरात्मा की बात तो मैं नहीं कह सकता। प्रत्यक्ष रूप में अब वह हिंसा-अहिंसा को गौण मानकर लोक-कल्याण को मुख्य मान रही प्रतीत होती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या लोक में वह पशुओं को नहीं मानतीं?"

"मानती हैं,. परन्तु मनुष्य को उससे अधिक महत्त्व देने लगी हैं। जहाँ दोनों के कल्याण में विरोध है, वहाँ मानव-कल्याण को मुख्य और किसी पशु के कल्याण को गौण मानती प्रतीत होती हैं।"

"क्या सेठजी भी यही मान रहे हैं?"

"मैंने उनसे इस विषय में कभी पूछा नहीं। अब यह विषय पति-पत्नी के मध्य का हो गया है। इस कारण मैं जब कथा पर जाता हूँ, तो अपनी बुद्धि से विचारित बात कह आता हूँ। कभी श्रोतागणों में से कोई प्रश्न पूछता है, तो उसका उत्तर भी अपनी बुद्धि के अनुसार दे देता हूँ।"

"और सप्ताह में किस दिन और कितने दिन कथा पर जाते हैं?"

"पहले तो पखवाड़े में अमावास्या के दिन ही बुलाया जाता था, परन्तु अब सप्ताह में दो बार बुलाया जाता है।"

"कथा सुनने के लिए कितने लोग आते हैं?"

"आजकल तो उनकी हवेली का नीचेवाला कमरा खचाखच भर जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि सेठजी के सम्बन्धी, मित्र और पड़ोसी भी वहाँ आने लगे हैं।"

"क्या मैं भी वहाँ जा सकता हूँ?"

"जहाँ तक मुझे पता लगा है, आनेवाले स्वेच्छा से आते हैं और बिना किसी प्रकार की बाधा के आते हैं। यदि इस पर भी आपको आना हो, तो आप मेरे साथ आ सकते हैं। कब आ रहे हैं?"

"अभी एक चौथाई घड़ी में।"

इस पर शूरसेन भी पण्डित वीरभद्र के साथ सेठजी के मकान पर कथा सुनने जा पहुँचा। सेठ सोमदेवजी ने शूरसेन को देखा, तो पूछ लिया—"पण्डितजी के साथ कहाँ घूम रहे हैं रक्षा-मन्त्री महोदय?"

"यह आपके यहाँ आ रहे थे, तो मैं भी आपके दर्शन करने चला आया। आपके रथ का लाभ उठा लिया है।"

"हाँ, रथ तो सेठानीजी ने भेजा था। वह प्रायः इन्हें सप्ताह में दो दिन कथा करने के लिए बुलवा लेती हैं।"

"मैंने यह सब पण्डितजी से जान लिया है और सेठानी के पण्डितजी पर मुग्ध होने का कारण जानने के लिए आपके पास आया हूँ।"

"शूरसेनजी! पण्डितजी तो सेठानी के पिता तुल्य हैं। मैं समझता हूँ कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय उनकी आयु पचास वर्ष के आस-पास होगी और हम पति-पत्नी तीस के आस-पास हैं। हमारा गृहस्थ जीवन महाप्रभु की कृपा से अत्यन्त मधुर और शान्त है।"

शूरसेन सेठजी के समीप बैठा पण्डितजी की शकुन्तला-कथा की व्याख्या सुन रहा था। कथा समाप्त होने पर शूरसेन पण्डितजी की व्याख्या की नवीनता पर चकित था। शकुन्तला को वर देनेवाले देवता आकाश से उतरकर नहीं आये थे। वे दुष्यन्त के राज्य में रहनेवाले विद्वान् ही थे और उनकी यह व्यवस्था—कि भरत उनका पुत्र ही नहीं, अपितु उनका उत्तराधिकारी भी होगा—सर्वथा विस्मयकारी थी।

इस समय सेठानीजी के समीप बैठी एक स्त्री को पण्डितजी ने पहचान लिया और उसके मुख को देखते रह गये। वह स्त्री उठकर भीतर जाने लगी, तो पण्डितजी ने उसे आवाज़ दी—"सरस्वती!"

वह स्त्री ठिठककर खड़ी हो गयी और घूमकर पण्डितजी को नमस्कार करने लगी।

"सरस्वती! सौभाग्यवती होओ। इस नगर में क्या कर रही हो?"

सरस्वती समझ रही थी कि पण्डितजी उसे पहचान नहीं सकेंगे। वह पण्डितजी के सम्पर्क में कभी नहीं आयी थी और गाँव में एक निर्धन की लड़की और साधारण नागरिक की पत्नी रही थी। उसका पति शकों के प्रथम डाके में मारा गया था। उसके उपरान्त जब पद्मिनी जयदमन की रानी बनकर भद्रकच्छ आयी, तब उसने महारानीजी की सेवा स्वीकार कर ली।

जब पण्डितजी ने उसे पहचान लिया कि वह भद्रकच्छ की लड़की है, तो सरस्वती को बताना पड़ा—"मैं महारानी पद्मिनी की सेवा में थी तथा उनके साथ ही खरीच से भागकर आयी थी। अब सेठानीजी के एक सम्बन्धी की सेवा में हूँ।"

"ओह! कहाँ रहती हो?"

"यहाँ से कुछ अन्तर पर एक गाँव में रहती हूँ। स्वामी सेठानीजी से मिलने आये हुए हैं। इस कारण मैं भी यहाँ हूँ।"

"तो विवाह कर लिया है?"

"नहीं महाराज! अभी विधवा जीवन ही व्यतीत कर रही हूँ।"

पण्डितजी चुप हो गये। जब कथा सुननेवाले सब लोग चले गये, तो पण्डितजी को दूध-मिठाई खाने को दी गयी। शूरसेन और सोमदेवजी भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पण्डितजी का साथ दे रहे थे। मिठाई खाते-खाते पण्डितजी ने सेठजी से कहा—"मैं काशी लौट जाने का विचार कर रहा हूँ।"

"परन्तु पण्डितजी! यहाँ खरीच से भारी गड़बड़ के समाचार आ रहे हैं।"

"उनका मुझसे क्या सम्बन्ध हो सकता है?"

"शकराज भद्रकच्छ पर आक्रमण भी कर सकता है।"

"परन्तु मैं भद्रकच्छ का शासक नहीं कि उस आक्रमण की चिन्ता करूँ।"

"पण्डितजी! भद्रकच्छ आपकी जन्मभूमि है और उसके प्रति आपका कुछ तो कर्तव्य है।"

"परन्तु सेठजी! मैं सन्यास ले रहा हूँ और सन्यासी भूमण्डल का नागरिक हो जाता है।"

"ठीक है, किन्तु आपने अभी तक सन्यास नहीं लिया है। इस कारण अभी आप अपनी जन्मभूमि भद्रकच्छ के ही नागरिक हैं और वह आपसे कुछ आकांक्षा रखती है।"

"परन्तु सेठजी! महाराज तथा जनता को अर्हत लोग बता रहे हैं कि उनकी शान्तिप्रियता और सहृदयता ने ही शकराज को हिंसक पशु से गाय बना दिया है। मैं महाराज और अर्हतों की शान्तिमय नीति का समर्थक नहीं हूँ। मैं जानता हूँ कि पिछली विजय शान्ति की नहीं थी, अपितु हिंसायुक्त उपायों की थी। उसमें कम हिंसा इस कारण नहीं हुई थी कि कोई अहिंसा का प्रयोग कर रहा था, वरन् इस कारण हुई थी कि हिंसा का प्रयोग करनेवाला कोई चतुर, बुद्धिमान् और नीतिज्ञ व्यक्ति था।"

"यह तो ठीक है। हम सब जानकार इस तथ्य को जानते हैं, परन्तु मूर्ख जनता को भी इसे समझना चाहिये। देश में अधिकांश लोग शान्ति और अहिंसा के उपासक हैं, यदि उनको इन उपायों के व्यर्थ होने का बोध कराया जाये, तो देश में अशान्ति व्याप्त हो जायेगी।"

"परन्तु सेठजी! इससे एक बात यह भी होगी कि लोगों को युद्ध से घृणा होने लगेगी और विदेशी आक्रमणकारियों के लिए देश को अपने पाँव से रौंदना सुगम हो जायेगा। जनता में क्षत्रियों की उत्पत्ति घट जायेगी और जो होंगे, वे भी शत्रु और मित्र की पहचान नहीं कर सकेंगे।"

देश में व्याप्त इस स्थिति को सेठजी देख रहे थे। वह मौन हो गये। शूरसेन समझ रहा था कि पण्डित वीरभद्र उसके विचार की पुष्टि कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेठ सोमदेवजी राजधानी में चोटी के दो-चार धनी-मानी व्यक्तियों में थे और राज्य के कोषाध्यक्ष भी थे। अतः उन्हें महाराज का पूर्णरूप से सहायक समझकर मन्त्रिमण्डल उनसे सम्मति ले रहा था। पण्डित वीरभद्र की युक्तिसंङ्गत बात को सुनकर सेठ सोमदेव परेशानी अनुभव कर रहा था। उसे मन्त्रिमण्डल में जब भी बुलाया जाता, तो वह सदा शान्ति और अहिंसा का ही पक्ष लेता था।

शूरसेन सेठजी की परेशानी को देखकर मुसकरा रहा था। सेठजी के घर से लौटते हुए पण्डित वीरभद्र और शूरसेन सेठानी द्वारा भेजे गये रथ में पण्डित वीरभद्रजी के घर की ओर आ रहे थे। शूरसेन ने पण्डितजी से मार्ग में ही पूछ लिया—"जैसा मन्त्रिमण्डल का अनुमान है कि हमारे राज्य द्वारा दिये धन से ही शक-राज्य कच्छ पर आक्रमण की तैयारी कर रहा है, इस अवस्था में आप क्या सम्मति देते हैं?"

"देखिये सेनाध्यक्ष महोदय! जब सन्धि की शर्तें तय हो रही थीं, तो मैं आपके द्वारा शक-राज्य को किसी भी प्रकार की आर्थिक सहायता देने के पक्ष में नहीं था, परन्तु पुरिका में आपके मन्त्रिमण्डल ने दो लक्ष स्वर्ण प्रतिवर्ष देना स्वीकार कर लिया। यह क्यों? मैं समझा नहीं। सम्भवतः व्यापारी वर्ग—जिनका आज राज्य में बाहुल्य है—यह समझता है कि धन से सबको क्रय किया जा सकता है। यह धारणा मिथ्या है। धन नहीं, अपितु विचार-सुधार ही सुख और शान्ति का मूल है।

"स्वभाव विवेक से बदलता है और विवेक शिक्षा का सुफल होता है। किसी विदेशी राज्य से मैत्री करने के लिए सांस्कृतिक विचारों का आदान-प्रदान होना चाहिये। इसमें धन आपकी सहायता नहीं कर सकता।

"जो बात मैं पद्मिनी की प्रेरणा से करना चाहता था, उसे यहाँ के राज्य ने पद्मिनी का प्रतिस्पर्धी उत्पन्न कर उसके प्रभाव को कम कर दिया। स्त्रियाँ भेजकर विजय का ही यह परिणाम है कि दोनों राज्यों में युद्ध होगा। जो कुछ पिछली बार नगण्य-सी हत्याओं से सम्पन्न हो सका था, वह इस बार सहस्रों की मृत्यु से हो सके, तब भी परमात्मा का धन्यवाद करना होगा।"

पण्डित वीरभद्र के मकान पर पहुँचकर शूरसेन अपने निवास-स्थान की ओर चला गया और पण्डित वीरभद्र रात-भर सरस्वती के कथन पर विचार करते रहे। उन्हें सन्देह होने लगा कि सरस्वती अवश्य ही पद्मिनी के विषय में जानती होगी। उसने सेठजी को पद्मिनी के भागने का कारण और उसके अन्त का वृत्तान्त अवश्य बताया होगा। इसके अतिरिक्त सेठजी भी कभी-कभी यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बताया करते थे कि पद्मिनी अभी मरनेवाली नहीं है। इन सब बातों से उन्हें किसी रहस्य की सम्भावना होने लगी थी।

अगले दिन वह स्वत: ही सेठजी के मकान पर पहुँच गये। सेठजी ने उन्हें असमय और बिना सूचना के आया देखा, तो प्रश्न-भरी दृष्टि से पण्डित वीरभद्र की ओर देखने लगे।

पण्डित वीरभद्र ने कहा—"सोमदेवजी! कल कथा के समय जो स्त्री सेठानीजी के समीप बैठी थी, मैं उससे मिलने आया हूँ।"

"वह कौन थी?" सेठ सोमदेवजी ने पण्डित वीरभद्र को सरस्वती से बातें करते नहीं देखा था। जिस समय पण्डित वीरभद्र सरस्वती से उसके पुरिका में होने के विषय में पूछ रहे थे, सेठ सोमदेवजी शूरसेन से किसी अन्य विषय पर बात कर रहे थे।

सेठजी को समझाने के लिए पण्डित वीरभद्र ने कहा—"उस स्त्री का नाम सरस्वती है। वह बता रही थी कि वह अपने स्वामी के साथ किसी देहात से नगर में आयी हुई है।"

"मुझे विदित नहीं। मैं सेठानी से पूछकर उस स्त्री को आपसे मिलने के लिए भेज दूंगा।

"वह स्त्री किसी समय शकराज की पत्नी पद्मिनी की सेवा किया करती थी। उसने कल बताया था कि वह पद्मिनी के साथ ही खरीच से भागी थी।"

"ठीक है। मैं पता कर उस स्त्री को आपके पास भेज दूंगा।"

पण्डित वीरभद्र लौट आये और उत्सुकता से सरस्वती की प्रतीक्षा करने लगे। सायंकाल सेठ सोमदेवजी का सन्देश मिला—"सरस्वती अपने स्वामी के साथ देहात में चली गयी है। उसे नगर में आने के लिए सन्देश भेज दिया है। आशा है कि दो-चार दिन में वह आपसे मिलने के लिए आयेगी।"

:7:

पण्डित वीरभद्र के सेठ सोमदेवजी के मकान से लौट आने के उपरान्त सेठजी सेठानीजी के पास पहुँचे और उनसे पूछने लगे—"मोहिनी! यह तुमने क्या किया? सरस्वती को लाकर कथा में बैठा दिया? पण्डित वीरभद्र उसे पहचान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गये हैं और अब वह उससे मिलकर अपनी लड़की के विषय में जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं।"

सेठानीजी ने कहा—"सरस्वती का विचार था कि पण्डित वीरभद्र उसे नहीं पहचानते, परन्तु वह उसे न केवल पहचान गये, अपितु उसके नाम से भी परिचित थे और यह भी जानते थे कि वह पद्मिनी की सेवा में रही है। कथा के उपरान्त सरस्वती ने अपनी भूल स्वीकार कर ली है। मैं समझती हूँ कि अब पद्मिनी का रहस्य पण्डितजी से छिपाकर नहीं रखा जा सकेगा।"

"मैं पहले ही कहता था कि पद्मिनी के विषय में इतना लुकाव-छुपाव करने की आवश्यकता नहीं, परन्तु मन्त्रिमण्डल का यही निर्णय था कि पद्मिनी के विषय में बात तब ही प्रकट करनी चाहिये जब उसके पुत्र को शक-राज्य का उत्तराधिकारी घोषित करने की आवश्यकता होगी।"

"आप लोगों की नीति मुझ-जैसी सरल-चित्त स्त्री की समझ में नहीं आती। पण्डितजी से इस योजना को छिपाकर रखने की क्या आवश्यकता है?"

"मैं अभी महामन्त्री के पास जाकर इस विषय पर बातचीत कर लेता हूँ। पद्मिनी को पिता से मिलने की अनुमति तो मिलनी ही चाहिये।"

सेठ सोमदेवजी महामन्त्री से बातचीत करने के लिए उनके आवास पर गये। महामन्त्री के पूछने पर सोमदेवजी ने उन्हें बताया—"हमारे आवास पर पद्मिनी की एक सेविका सरस्वती से पण्डित वीरभद्र की भेंट हो गयी है। उस भेंट में सरस्वती ने उन्हें केवल इतना बताया है कि वह आजकल अपने स्वामी के साथ पुरिका से कुछ मील के अन्तर पर रहती है। पण्डित वीरभद्र उससे मिलकर अपनी लड़की के विषय में पूर्ण जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं। इस प्रकार पद्मिनी के कच्छ-राज्य में जीवित रहने की बात प्रकट हो जायेगी। यदि पण्डित वीरभद्र को सरस्वती से नहीं मिलने दिया जाता, तो उनको इस पूर्ण व्यवहार पर सन्देह हो जायेगा और वह अपने मन में क्या-क्या कल्पना करने लगेंगे, कहा नहीं जा सकता।"

महामन्त्रीजी ने सब सुना और कहा—"मैं आज ही मन्त्रिमण्डल की बैठक बुला रहा हूँ और इस विषय में अपनी नीति निर्धारित करता हूँ। मन्त्रिमण्डल की इस बैठक में आप भी सम्मिलित होंगे।"

"ठीक है, आप सूचना भेज दीजियेगा। मैं कुछ दिन के लिए सरस्वती को पण्डित वीरभद्र से भेंट न करने के लिए कह दूंगा। तब तक आप विचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर लें।"

मन्त्रिमण्डल की बैठक में पद्मिनी के साथ-साथ शक-राज्य के व्यवहार पर भी विचार किया गया। उसी समय गुप्तचर विभाग के मन्त्री ने बताया—"सिन्धु नदी के पार एक लक्ष शक-सेना एकत्र हो चुकी है। इस सेना के एकत्र होने का कोई कारण नहीं बताया जा रहा। हमारे गुप्तचर यह सूचना भेज रहे हैं कि यवन देश के सैनिक बहुत बड़ी संख्या में शक-सेना में भरती हो रहे हैं। इस बार गान्धार के लोग भी सेना में लिये जा रहे हैं। गान्धार के लोग अब तक शकों से शत्रुता का व्यवहार रखते थे। अब ऐसा प्रतीत होता है कि वह शत्रुता मिट गयी है।"

महामन्त्री ने पूछा—"तो क्या मन्त्रिमण्डल को युद्ध अवश्यम्भावी लगता है?"

शूरसेन ने कहा—"जब से पद्मिनी वहाँ से भागकर आयी है, मैं तो तब से ही कह रहा हूँ कि युद्ध होगा और जितना शीघ्र हो, उतना ही अच्छा है।"

"परन्तु शूरसेनजी! हमारे राज्य की यह नीति नहीं है कि अकारण युद्ध आरम्भ कर दिया जाये।"

"भगवन्! कारण तो है। पहले भी था। उस समय भी था, जब हमने जयदमन से सन्धि की थी। इसी कारण मैंने कहा था कि उसे धन देना एक प्रकार से अपने देश पर आक्रमण करने का ख़र्च देना है, परन्तु मन्त्रिमण्डल समझता था कि इस प्रकार जयदमन के मन में लोभ उत्पन्न किया जा सकेगा और लोभी जीव कभी झगड़ा नहीं कर सकता। अब यह युक्ति गलत सिद्ध हो चुकी है। उसे दुहराने की आवश्यकता नहीं है। यदि मन्त्रिमण्डल यह समझता है कि युद्ध अवश्यम्भावी है, तो मुझे आदेश दिया जाये कि मैं आक्रमण की तैयारी करूँ। पण्डित वीरभद्र अभी पुरिका में ही हैं। उनसे भी सहायता ली जा सकती है।

"परन्तु पण्डित वीरभद्र की यह सम्मति है कि सैनिक विजय तो वास्तविक विजय का प्रथम चरण है। विजय के प्रभावी अङ्ग तो शकों को अपनी संस्कृति और अपने धर्म के अनुकूल बनाना है, अन्यथा दिया गया सारा धन और नर-हत्याएँ व्यर्थ हो जाती हैं।"

महामन्त्री चन्द्रशेखर ने कहा—"हम समझते थे कि धन से शकों की वासना बढ़ेगी और इससे वे हमारे अधिक से अधिक अनुकूल हो जायेंगे।"

"तो यह विचार अशुद्ध सिद्ध हो रहा है न?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर महामन्त्री चुप कर गये।

मन्त्रिमण्डल ने सर्वसम्मति से यह निर्णय किया कि युद्ध निकट प्रतीत हो रहा है। अतः सेनापति शीघ्रातिशीघ्र देश की रक्षा और शत्रु का मान-मर्दन करने की योजना बनाकर सूचित करें। यदि शूरसेन चाहें, तो पण्डित वीरभद्र से सहायता ले सकते हैं।

इस सम्बन्ध में उनकी भेंट पद्मिनी से हो जानी चाहिये और उसे अपने पुत्र के साथ सिन्धु पार के क्षेत्र का राज्य देने की योजना होनी चाहिये।

मन्त्रिमण्डल की बैठक में महाराज सिंहनाद अभी तक चुप बैठे थे। युद्ध की तैयारी का निर्णय होते ही वह सतर्क होकर कहने लगे—"योजना में कम-से--कम नर-हत्याएँ करने पर ध्यान देना चाहिये।"

शूरसेन ने मुसकराकर कहा—"महाराज! यह तो कोई भी सेनापति अपने ध्यान में रखेगा। नर-हत्या लक्ष्य नहीं होता। लक्ष्य विजय होती है और पण्डित वीरभद्र के अनुसार सैनिक विजय तो विजय प्राप्त करने का प्रथम चरण है। इसके उपरान्त अन्य चरण भी उठाने पड़ते हैं और अन्तिम विजय तो अपने धर्म और संस्कृति का दूसरे देश में चलन है।"

इस ध्येय को तो मन्त्रिमण्डल भी मानता था, परन्तु जो सौ-दो सौ हत्याएँ पहले शकों के साथ युद्ध के समय हुई थीं, मन्त्रिमण्डल उससे भी घबराता था तथा पण्डित वीरभद्र की प्रथम योजना के समान ही इस बार भी वैसी ही कोई योजना चाहता था। इस प्रकार मन्त्रिमण्डल में दो प्रकार की स्वीकृति दी गयी। एक, युद्ध की तैयारी की और दो, पद्मिनी और पण्डित वीरभद्र की भेंट की। इस निर्णय के अनुसार शूरसेन अगले दिन प्रातःकाल ही पण्डित वीरभद्र से मिला और भावी युद्ध पर बात होने लगी। इससे पहले पण्डित वीरभद्र के पास सेठ सोमदेवजी का सन्देश पहुँच गया था कि सरस्वती अपने स्वामी के साथ देहात लौट गयी है और उसे बुलाने के लिए सन्देश भेज दिया गया है।

पण्डित वीरभद्र को जब सिन्धु नदी पर युद्ध की तैयारियों की सूचना दी गयी, तो पण्डितजी ने मुस्कराते हुए पूछ लिया—"अभी तक शकों को कितना धन दिया जा चुका है?"

"अभी एक वर्ष हुआ है, उन्हें चौथी राशि भेजी गयी है।"

"इसका अभिप्राय यह है कि अब तक आठ लक्ष स्वर्ण दिया जा चुका है। इस प्रकार डेढ़ करोड़ रजत से अधिक उन्हें मिल चुका है और इसी डेढ़ करोड़ से शकराज एक लक्ष विदेशी सैनिक भरती करने के योग्य हो सका है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उन देशों में दस–पन्द्रह रजत में ही सैनिक भरती किया जाता है। वे राज्य अपने सैनिकों को वेतन नहीं देते। शत्रु से लूट का आधा उनको दिया जाता है, जो वेतन से कई गुना अधिक होता है।"

शूरसेन यह सब जानता था। इस कारण उसने कहा—"पण्डितजी! राजनीति में राज्य की भूलों पर ध्यान नहीं दिया जाता। हम सदा वर्तमान स्थिति से आगे देखते हैं।"

"परन्तु जो भूल हुई है, उसके निराकरण की आवश्यकता तो होती है और उस भूल का ज्ञान ही भूल सुधारने में सहायक होता है।"

"हाँ, तो बताइये कि इस भूल को किस प्रकार सुधारा जा सकता है? वह धन तो अब व्यय हो चुका।"

"इसका प्रतिकार यह है कि जयदमन का कोष लूट लिया जाये अथवा वहाँ लूट डलवा दी जाये।"

"यह कैसे हो सकता है?"

"हो तो सकता है, परन्तु इसके लिए समय की आवश्यकता है। मैं नहीं कह सकता कि अब आक्रमण में कितनी देर लगेगी।"

"उसका कोष लूटने में कितना समय चाहिये?"

"हम तो लूटेंगे नहीं। हमें लूटने की आवश्यकता भी नहीं, यदि शक–राज्य के लोग ही इस शुभ कार्य को करें, तो अधिक सही होगा।"

"तो पण्डितजी महाराज! इसे कीजिये। इसके लिए युद्ध को कुछ समय के लिए रोकना होगा। यह मैं कर सकता हूँ।"

"क्या करेंगे?"

"महाराज ने जयदमन को एक पत्र लिखा था कि शक–सेना का सिन्धु नदी के तट पर एकत्रित होने का कोई कारण नहीं। उस पत्र का उत्तर नहीं आया। अब महाराज की ओर से एक नया पत्र लेकर दूत वहाँ जायेगा और उनको आक्रमण स्थगित करने के लिए प्रलोभन प्रस्तुत करेगा।"

"तो दूत को भेजने का प्रबन्ध भी आप ही करेंगे। इस सम्बन्ध में महाराज को मत घसीटिये। दूत तो दिखावे के लिए भेजा जायेगा। वास्तव में, तो यह युद्ध के लिए उनकी तैयारी जानने का एक साधन होगा।

"इसके साथ ही मैं शक–राज्य पर आक्रमण करने की योजना बनाना चाहता हूँ।"

"क्या कच्छ–राज्य अब स्वत: आक्रमण करने के लिए मान गया है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आक्रमण के लिए नहीं, अभी तो यह स्वीकार किया गया है कि अपनी रक्षा में ऐसी तैयारी की जाये कि कम-से-कम नर-हत्याएँ हों।"

"देखो शूरसेन! यदि इस बार कच्छ पर आक्रमण हुआ, तो दस सहस्र कच्छ-सैनिक मारे जायेंगे। यदि कच्छ-राज्य शत्रु की सेना को पुरिका में पहुँचने से रोक नहीं सका, तो कच्छ की जनता में से कई लाख लोगों की हत्या होगी और सहस्रों स्त्रियों का अपहरण किया जायेगा। किन्तु यदि हमने आक्रमण किया और हमारी योजना सफल हो गयी, तो दो-तीन लाख शक, यवन और गान्धार सैनिक मारे जायेंगे। इस विशाल रक्त की बलि केवल इस कारण होगी कि कच्छ-राज्य ने शकों को विपुल धन दिया है।"

इतने भयंकर चित्र की कल्पना से शूरसेन काँप उठा। उसने कहा—"पण्डितजी! जब हम कम-से-कम कहते हैं, तो हमारा अभिप्राय सम्भावना से कम ही होता है। यदि दो लाख के मरने की सम्भावना हो, तो पौने दो लाख कम ही माना जायेगा।"

पण्डित वीरभद्र मुस्कराकर चुप रहे। शूरसेन भी मुसकरा रहा था। शूरसेन ने बात बदल दी और बोला—"यदि युद्ध से पूर्व महारानी पद्मिनी और उनके लड़के का पता चल जाता, तो हम उसे शक-राज्य का उत्तराधिकारी घोषित कर आपका सांस्कृतिक अभियान चला सकते थे।"

पण्डितजी हँस दिये और कहने लगे—"परन्तु पद्मिनी का इन सेठानीजी को पता है।"

"तो क्या उन्होंने कुछ बताया है?"

"बताया तो नहीं, परन्तु अनुमान-प्रमाण से मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि सेठानीजी को पद्मिनी का ज्ञान है और जिस प्रकार वह पद्मिनी के पिता को दान-दक्षिणा द्वारा पुरिका में रोके हुए हैं, वैसे ही शक-राजकुमार की माता को धन के बल पर रोके हुए हैं।"

"परन्तु यह आपका भ्रम भी तो हो सकता है। प्राय: भ्रम और अनुमान में इतना कम अन्तर होता है कि भ्रम को ही सत्य मान लिया जाता है।"

"हाँ, यदि अनुमान लगानेवाला कोई मूर्ख हो, तो यह भी हो सकता है, परन्तु शूरजी! मैं अपने को मूर्ख नहीं मानता। मेरा अनुमान आधारयुक्त है। इस पर भी मुझे यह आश्चर्य है कि सेठानी-जैसी धर्मात्मा और सरल-चित्त स्त्री किसी महारानी के रहस्य को इतनी देर तक किस प्रकार गुप्त रख सकी है?

"इसी कारण मैं कह रहा हूँ कि आपका अनुमान अशुद्ध भी हो सकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है।"

"क्या आप ऐसा समझते हैं?"

"सेठानीजी के सरल-चित्त होने से इतना बड़ा रहस्य कैसे गुप्त रखा जा सकता है?"

"सेठानीजी के चित्त की सरलता ही इसका प्रमाण है। ऐसा प्रतीत होता है कि कोई चतुर व्यक्ति सेठानीजी के सरल चित्त से लाभ उठा रहा है।"

"यह कोई बड़ा ही चतुर व्यक्ति होगा। यह सेठ सोमदेव भी हो सकता है।"

"मैं समझता हूँ कि यह कच्छराज होगा। मुझसे छिपाकर रखने की मूर्खता कच्छराज के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं कर सकता।"

इस पर शूरसेन हँस पड़ा। फिर गम्भीर होकर बोला—"यदि कच्छराज यह मूर्खता न करता और आपकी लड़की को आपसे मिला देता, तो आप क्या करते?"

"पद्मिनी को किसी अन्य राज्य में जाकर रहने को कह देता। वह यहाँ सुरक्षित नहीं है।"

"परन्तु पण्डितजी! यदि आपका अनुमान सही है कि शक महारानी इस देश में है, तो वह सुरक्षित तो है?"

"भयङ्कर समय आ रहा है और कच्छराज की बुद्धि की परीक्षा होनेवाली है।"

शूरसेन ने कुछ विचारकर कहा—"यदि पद्मिनी पुरिका में है, तो गुप्तचर विभाग को इसका ज्ञान होना चाहिये। मैं महामन्त्री से कहकर इसका पता लगाऊँगा। कारण यह कि हमारी युद्ध-नीति भी तो पद्मिनी के आश्रय में ही चल सकेगी।"

पण्डित वीरभद्र ने कहा—"तो महामन्त्री से पता कीजिये। मैंने भी पता करने का प्रयत्न किया है। सायंकाल तक पता चल जायेगा।"

"पता कर मुझे बताइयेगा।"

पण्डित वीरभद्र को पहली रात सेठ सोमदेवजी का यह सन्देश मिला था कि सरस्वती को बुलाया जा रहा है। इस समाचार को प्राप्त करने के उपरान्त पण्डित वीरभद्र का मस्तिष्क तीव्रता से कार्य करने लगा। वह इस परिणाम पर पहुँचे कि पद्मिनी न केवल कच्छ-राज्य में ही कहीं है, वरन् उसे प्रकट न होने के लिए विवश भी किया जा रहा है। शूरसेन ने बात ऐसे ढंग से की थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि उसे पद्मिनी के विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं है। वह युद्ध के विषय में रुचि रखता था। इस कारण उसने पण्डित वीरभद्र को प्रेरणा देते हुए कहा—"पण्डितजी! मेरे सम्मुख तो भावी युद्ध की योजना ही है।"

"इस विषय में आप मुझे बताइयेगा कि युद्ध के लिए कच्छराज कितने सैनिक उपलब्ध करा सकता है और इस कार्य पर कितना धन व्यय कर सकता है? साथ ही मुझे गुप्तचर विभाग के मन्त्री से मिला दीजिये। मैं उनसे कहूँगा कि शक-सेना को निर्बल करना उनका कर्तव्य है। यदि वह मुझसे मिले, तो मैं उन्हें भी कुछ सुझाव दूंगा।"

"कह दूंगा।" शूरसेन ने कहा और एक-दो दिन में पुन: मिलने की बात कहकर चल दिया।

:8:

शूरसेन महामन्त्री से मिला और पण्डित वीरभद्र के अनुमान के विषय में उन्हें बता आया। महामन्त्री ने सेठ सोमदेवजी को बताया कि पद्मिनी को पण्डित वीरभद्र से मिला देना चाहिये। इसका परिणाम यह हुआ कि सप्ताह की दूसरी कथा के समय पद्मिनी और सरस्वती दोनों सेठ सोमदवजी के घर आयी हुई थीं।

पण्डित वीरभद्र अपने मन की बात सेठानीजी से कहने का निश्चय कर आये थे। वह कथा के उपरान्त बात करना चाहते थे, परन्तु कथा समाप्त होते ही सेठानीजी ने स्वयं कह दिया—"पण्डितजी! कोई आपसे मिलने आया हुआ है।"

पण्डित वीरभद्र ने समझा कि सरस्वती हो सकती है। इस कारण उन्होंने पूछ लिया—"तो सरस्वती आयी है?"

सेठानीजी मुस्करायीं और बोलीं—"आपको अन्त:पुर में चलना होगा।"

विद्युत् की भाँति पण्डित वीरभद्र के मस्तिष्क में बात प्रकाशित हो गयी। उन्होंने कहा—"तो क्या सरस्वती का स्वामी भी उसके साथ आया है?"

सेठानी ने हँसकर कहा—"आइये।" वह पण्डित वीरभद्र को एक आगार में ले गयी। वहाँ उन्हें पद्मिनी, उसका चार वर्ष का पुत्र और सरस्वती खड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मिले। पद्मिनी ने मुस्कराते हुए पिता को नमस्कार किया और कहा—"परमात्मा का लाख-लाख धन्यवाद है कि चिरप्रतीक्षा के उपरान्त आपका दर्शन-लाभ हो सका है।"

पण्डित वीरभद्र ने कहा—"सुनाओ पद्मिनी! स्वास्थ्य और चित्त कैसा है?"

"दोनों स्वस्थ और सतर्क हैं। केवल बन्धन में थे। आशा करती हूँ कि अब सारे बन्धन टूट जायेंगे।"

"किसके बन्धन में थे?"

"परिस्थितियों के, जीवन की भूलों के परिणाम के और देश के वातावरण के। सम्भव है कि कुछ अन्य बन्धन भी हों, परन्तु ये तो स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं।"

सेठानीजी समीप खड़ी थीं। इस कारण उन बन्धनों की बात छोड़कर पण्डित वीरभद्र ने कहा—"तुम यहाँ कैसे पहुँच गयी हो? तुम्हारा अन्तिम समाचार तो तीन वर्ष पूर्व मिला था कि तुम खरीच में हो और राजप्रासाद की छत पर चढ़कर बाण चलाने का अभ्यास करते-करते राज्य में छीना-झपटी करनेवाले की हत्या कर बैठी थीं।"

"तो यह समाचार आपको मिल चुका है?"

"हाँ, परन्तु मेरी समझ में यह नहीं आता कि तुम वहाँ से लापता क्योंकर हो गयी थीं और तुम यहाँ कैसे पहुँच गयी हो?"

इस समय सेठानीजी ने एक सुझाव दिया। उन्होंने कहा—"पण्डितजी! यदि बैठ जायें, तो क्या ठीक नहीं होगा?"

आगार में दरी और कालीन बिछे थे। बैठने के लिए दीवार के सहारे तकिये लगे थे और उन तकियों के सम्मुख गद्दियाँ रखी थीं। पण्डित वीरभद्र ने व्यंग्य के भाव से कह दिया—"यह तो महारानीजी की आज्ञा से ही हो सकेगा।"

पद्मिनी ने हँसते हुए कहा—"पिताजी! बैठिये। मैं तो आपके सम्मुख कभी महारानी नहीं रही। अब तो न राज्य रहा है और न ही मैं किसी राज्य की रानी हूँ।"

सब बैठ गये। मोहिनी नहीं बैठी। उसने कहा—"पण्डितजी के लिए दूध यहीं भिजवा देती हूँ।" इतना कहकर वह चल दी।

वास्तव में, वह पिता-पुत्री में खुलकर बातचीत होने देना चाहती थी।

पद्मिनी ने कहा—"पिताजी! उस घर को छोड़ने का विचार तो उस दिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
ही उत्पन्न हो चुका था, जब वीणापाणि आकर राजप्रासाद में रहने लगी थी। मैं समझ गयी थी कि दुकानदारी करने में अभ्यस्त उस स्त्री से मैं बाज़ी नहीं जीत सकूंगी। यह विचार परिपक्व होते-होते दो वर्ष लगे और फिर परिस्थिति ने उस विचार को पके फल की भाँति प्रयोग करने के लिए तैयार कर दिया। मैं समझ गयी कि वहाँ पड़े रहने से जीवन निरर्थक हो रहा है और मैं घर छोड़ने के लिए तैयार हो गयी। सेनाध्यक्ष तूर ने जब प्रस्ताव किया कि मैं उसकी भार्या बन जाऊँ, तो वही विचार पके फल की भाँति टपक पड़ा। मैंने उसे टालकर और पूर्ण प्रासाद को फूँककर वहाँ से निकल भागने का विचार बना लिया। वह सब तुरन्त नहीं हो सका। प्रासाद को आग लगाकर और इस रुद्रदमन को साथ लेकर नगर से निकल भागने का प्रबन्ध उस समय सुगम नहीं था। विशेष रूप से जब वीणापाणि पहले वहाँ से भाग चुकी थी।

"इस तैयारी के समय ही तूर सङ्गत की इच्छा से मेरे प्रासाद में आना चाहता था। मैंने सारे द्वार बन्द कर दिये। उसने सैनिकों के साथ आक्रमण कर दिया और मैं अपने कुछ निष्ठावान् सिपाहियों के साथ उसके प्रवेश में बाधा खड़ी करने लगी। इस बाधा से ही यह विचार आया कि क्यों न अपने धनुष-बाण पर बाल्यकाल के अभ्यास का प्रयोग करूँ। एक प्रहरी का धनुष-बाण लेकर मैं प्रासाद की छत पर से लक्ष्य साधने लगी। तूर मर गया, तो नगर को सैनिकों द्वारा लूटे जाने से बचाने के लिए नागरिकों ने एक समिति बनायी। रात के समय जब समिति प्रबन्ध के विषय में विचार करने बैठी, तो समय की अराजकता का लाभ उठाते हुए मैं वहाँ से भागने में और प्रासाद को आग लगाने में सफल हो गयी।

"मेरे साथ राजप्रासाद के प्रहरी थे और मालतीजी थीं। मैंने प्रहरियों को लौटा दिया। भद्रकच्छ के एक वृद्ध सेवक नरसिंह, मालती और यह सरस्वती मेरे साथ हैं। नरसिंह घर पर है। जब मुझे आपसे मिलने की स्वीकृति मिली, तो मैं सरस्वती के साथ आ सकी हूँ।"

"तुम्हें बन्दी किसने बना रखा था?"

"बन्दी तो नहीं कह सकती। मैं वहाँ पहुँची, तो नरसिंह को यहाँ के महामन्त्री के पास भेजा था। वह मुझसे मिलने पन्थागार में आये थे। वहाँ उन्होंने मेरे सम्मुख एक योजना रखी थी। मुझे वह योजना पसन्द आयी, तो उन्होंने मुझे उचित समय तक गुप्त रूप में रहने की सम्मति दी थी। योजना की सफलता के लिए मैंने यह स्वीकार कर लिया कि मैं यहाँ रहूँगी। मुझे एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
राजकीय निवास-गृह में ठहरा दिया गया है। वहाँ मेरे सुखपूर्वक रहने का प्रबन्ध है। सेठानीजी की कृपा से मुझे स्वाध्याय में लीन रहने की सुविधा भी प्राप्त है। मासिक व्यय के लिए सरस्वती उनसे धन ले आती है। तीन दिन पहले वह आयी थी और आपके दर्शन करने के प्रलोभन का विरोध नहीं कर सकी, उसी का यह परिणाम है कि मुझे यहाँ आने की स्वीकृति मिल सकी है।

"इस पर भी मेरे प्रकट होने का समय अभी नहीं आया है। हाँ, अब मैं आपसे मिला करूँगी, ऐसी स्वीकृति मिल गयी है।"

"तो यह बात है? मुझे एक बात से प्रसन्नता हो रही है कि तुम एक अज्ञात, परन्तु सतर्क एवं स्वाभिमानयुक्त स्त्री की भाँति कार्य करती रही हो।"

"मुझे आपसे यह जानने के लिए कहा गया है कि आपको यहाँ के रक्षा-मन्त्री ने युद्ध की सम्भावना और उद्देश्य के विषय में जो बताया है, उस पर आप मेरी स्थिति को जानकर क्या इस योजना के सफल होने की आशा करते हैं?"

"युद्ध में तो हमारे सफल होने की शत-प्रतिशत आशा है, किन्तु यदि युद्ध के नियमों का पालन न किया गया, तो निकट भविष्य में एक अन्य युद्ध भी लड़ना होगा। युद्ध के उपरान्त की सेवा-योजना अधिक कठिन है। रक्षा-मन्त्री पशुओं को सेना के बल पर मानवी शिक्षा देने की बात कह रहे थे। यह नहीं हो सकेगा। दूसरा उपाय यहाँ का जैन-राज्य नहीं कर सकेगा।"

"तो क्या आप इसमें सहयोग देंगे?"

"यह युद्धोपरान्त की परस्थितियों पर निर्भर करता है। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि यहाँ का राज्य-सञ्चालन कुछ मिथ्या सिद्धान्तों के आधार पर हो रहा है। उन सिद्धान्तों के चलते यह युद्ध अन्तिम नहीं होगा। तब तक मैं कहाँ होऊँगा और क्या कर सकूंगा, इस समय नहीं बता सकता।"

बात बदलने के लिए पद्मिनी ने कहा—"आप इस लड़के को पहचान लीजिये। मैं इसे आपका शिष्य बनाना चाहती हूँ।"

"यह हो सकता है, परन्तु यह तुम्हारा मेरे साथ रहने पर ही सम्भव हो सकेगा। युद्धोपरान्त के लिए भविष्यवाणी अभी नहीं की जा सकती।"

पद्मिनी ने कहा—"मैं यहाँ नगर में आकर नहीं रह सकती और आपको अपने निवास-गृह पर आने को भी नहीं कह सकती। इस कारण मैं उस समय की बात कर रही हूँ, जिसको लाने के लिए यह प्रयास किया जा रहा है।"

सेठानी दूध ले आयी और बोलीं—"बाहर शूरसेन और सेठजी आपकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रतीक्षा कर रहे हैं। पद्मिनी को भी अभी पाँच कोस जाना है। इनके लिए रथ बाहर खड़ा है।"

पण्डित वीरभद्र उठ खड़े हुए और बोले—"शीघ्र ही फिर मिलूंगा।" इतना कहकर और दूध लेकर वह बाहर बैठक में पहुँच गये। वहाँ शूरसेन और सेठजी बैठे थे। तीनों युद्ध के विषय में योजना पर विचार करने लगे।

पण्डित वीरभद्र ने अपनी योजना बता दी। उस योजना के तीन अङ्ग थे। पहला था—जयदमन को भड़काकर आक्रमण के लिए उद्यत कर दिया जाये और जब वह आक्रमण करे, तो मधुमति तक उसका विरोध न किया जाये, अर्थात् उसे मधुमति तक बढ़ने दिया जाये। उसके उपरान्त हमारा युद्ध-कार्य आरम्भ किया जाये।

"युद्ध की तैयारी इससे पृथक् है। हमारी सेना पुरिका और मधुमति के मध्य होनी चाहिये। जब शक-सेना सिन्धु पार कर मधुमति की ओर चले, तो हम अपनी सेना को गतिमान कर मधुमति के पूर्वी तट पर ले जायें। इसी सन्दर्भ में दूसरी तैयारी यह करनी है कि सिन्धु नदी कहाँ से और कैसे पार की जाये? यह पचास कोस उत्तर पर होनी चाहिये। बीस सहस्र अश्वारोहियों के पार करने का प्रबन्ध होना चाहिये और नदी को दो-तीन घण्टों में ही पार कर लेना चाहिये। ये बीस सहस्र अश्वारोही खरीच पर अपना अधिकार कर लें। इसे तीन दिन में ही करना होगा। इसी स्थान पर अगले दिन बीस सहस्र अश्वारोही सैनिक पार की हुई नदी के उस स्थान पर अधिकार कर लें, जहाँ से शक-सेना ने सिन्धु नदी को पार किया था। तीसरे दिन पचास सहस्र पैदल सेना नदी को उसी स्थान से पार कर पहले गयी दोनों सेनाओं की सहायता के लिए पहुँच जाये।

"मेरा अभिप्राय यह है कि दो लक्ष सेना को गति देनी होगी। यह चार सेनाध्यक्षों के अधीन होगी। एक सेना मधुमति से पूर्व में शक-सेना का मार्ग रोकेगी। दूसरी सेना बीस सहस्र अश्वारोहियों के साथ राजधानी जायेगी। तीसरी सेना बीस सहस्र अश्वारोही सैनिकों के साथ शक-सेना के पीछे से उनका रसद-पानी बन्द करने के लिए सिन्धु तट पर अधिकार करनेवाली होगी। चौथा सेनाध्यक्ष वह होगा, जो पैदल सेना को शक-राज्य पर अधिकार करने में सहायक होगा। इन चारों सेनाध्यक्षों की योजना और कार्य का तिथि-क्रम पृथक्-पृथक् बन जाना चाहिये।

"यदि इस तिथि-क्रम का पालन होता रहा, तो युद्ध कम-से-कम रक्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बहाकर जीता जा सकेगा। हमारे महामन्त्री तो अभी से होनेवाले पाप की निवृत्ति के लिए चतुर्मास व्रत धारण करने की तैयारी कर रहे हैं।"

इस पर तीनों हँसने लगे। हँसते हुए सेठजी ने कहा—"और सेठानीजी विजय के उपलक्ष्य में दोनों समुदायों के अर्हतों के लिए एक वृहत् भोज देने का आयोजन करने लगी हैं।"

"तो उनको विश्वास है कि विजय हमारी ही होगी?"

"उनका कहना है कि पराजय तो हो ही नहीं सकती। विजय उसी पक्ष की होगी, जिसकी ओर धर्म, न्याय और बुद्धि है। पण्डित वीरभद्र हमारी बुद्धि हैं तथा पद्मिनी धर्म और न्याय की मूर्ति है। इस कारण विजय हमारी ही होगी।"

पण्डित वीरभद्र ने कहा—"हाँ, सेठानीजी का कथन सत्य सिद्ध हो सकता है, परन्तु यदि कच्छ-सेना स्वस्थ और सजग हो, तो...।"

सेठ सोमदेवजी शूरसेन की ओर देखने लगे। शूरसेन ने इसका अभिप्राय समझते हुए कहा—"तो शरीर को स्वस्थ रखने के लिए मैं किसी योग्य वैद्य की सहायता लेना चाहता हूँ।"

पण्डित वीरभद्र बोले—"ओषधि तो मेरे पास है, परन्तु कह नहीं सकता कि आप उसका प्रयोग कर सकेंगे अथवा नहीं। हमारी देव-वाणी में वह शक्ति है, जो मृतप्राय शव में भी चेतना का सञ्चार कर सकती है।"

सेठजी ने कहा—"तो पण्डितजी! उस ओषधि का सेवन कराइये।"

पण्डित वीरभद्र ने कहा—"अभी उस ओषधि की एक लघु मात्रा सेठानीजी को मिली है और आप उसका प्रभाव देख लें। जहाँ महामन्त्री प्रायश्चित्त के लिए व्रत कर रहे हैं, वहाँ सेठानीजी विजय के उपलक्ष्य में उत्सव की तैयारी कर रही हैं।"

शूरसेन ने बात समाप्त करते हुए कहा—"मैं इस योजना को और इसके लिए अनुमानित व्यय को मन्त्रिमण्डल की बैठक में प्रस्तुत करूँगा। इस पर चालीस-पचास लाख स्वर्ण व्यय होने की सम्भावना है।"

इस पर सेठ सोमदेवजी ने कहा—"इतना तो हमारे कोष में है।"

सेठ सोमदेवजी राज्य के कोषाध्यक्ष थे और कोष के विषय में ठीक-ठीक जानते थे।

"प्रश्न यह नहीं है कि कोष में इतना है अथवा नहीं। मन्त्रिमण्डल में विचारणीय बात यह होगी कि युद्ध-जैसी योजना पर इतना धन व्यय किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जाये अथवा नहीं?"

इस पर पण्डित वीरभद्र ने कहा—"परन्तु शूरसेनजी! आपकी इसमें क्या रुचि है कि आप इतना व्यय करें? मेरा अभिप्राय यह है कि युद्ध लड़ा ही जाये।"

सेठजी बोले—"क्या शूरसेनजी युद्ध कर रहे हैं अथवा युद्ध को जीतने की योजना प्रस्तुत कर रहे हैं? युद्ध तो कोई अन्य कर रहा है।"

शूरसेन ने कहा—"हाँ, उस दिन मन्त्रिमण्डल में सब इस परिणाम पर पहुँचे थे कि युद्ध अवश्यम्भावी है। इस पर ही युद्ध में कम-से-कम हत्याओं के साथ विजय प्राप्त करने की योजना बनाने को कहा गया था। फिर भी मैं यह कहता हूँ कि यदि मैं युक्ति-प्रतियुक्ति न करता, तो युद्ध की सम्भावना किसी को भी दिखाई न देती और कोई योजना भी न बनती।"

सेठजी ने मुसकराकर पूछा—"तो पण्डितजी का कहना ठीक है कि आप राज्य को युद्ध करने पर विवश कर रहे हैं?"

शूरसेन चुप लगा गया और विचारमग्न हो गया। इस पर पण्डित वीरभद्र हँस दिये और कहने लगे—"मेरा प्रश्न असङ्गत नहीं है। देखिये सेठजी! मैंने इसे इस प्रकार समझा है कि शूरसेन जो कुछ कह रहे हैं, वह अपने स्वभाव से विवश होकर कह रहे हैं। इस कारण मैं इनसे यह कह रहा हूँ कि जहाँ कोटि-कोटि जनता की रक्षा के लिए राज्य व्यय की गिनती करने में लगा हो, उस राज्य में रहने का कुछ प्रयोजन ही नहीं।"

"परन्तु पण्डितजी! आपका यह कहना भी ठीक नहीं कि राज्य धन-व्यय करने में आनाकानी करेगा।"

"शूरसेनजी ऐसा ही विचार कर रहे थे।"

"हाँ, सेठजी को पता नहीं कि सेना पर व्यय स्वीकार कराने के लिए कितना प्रयत्न करना पड़ता है। इस कञ्जूसी का ही यह परिणाम है कि हमारे शस्त्रास्त्र और आयुध इतने अच्छे नहीं, जितने शकराज के पास हैं। वहाँ तो जो कुछ भी बचता है, सेना पर व्यय होता है।"

पण्डित वीरभद्र ने कहा—"इस पर भी विजय हमारी ही होगी। हमारे पास जो सबसे उत्तम शस्त्र है, वह उनके पास नहीं है। यदि हमने उसके प्रयोग करने में सङ्कोच नहीं किया, तो निस्सन्देह विजय हमारी ही होगी।"

सेठ सोमदवजी ने पूछा—"वह क्या शस्त्र है?

पण्डित वीरभद्र ने अंगुलि से अपने मस्तिष्क को छू दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ परिच्छेद

:1:

जयदमन कच्छ-राज्य की बुद्धिमत्ता पर आश्चर्य कर रहा था। पिछली बार जब उसे कच्छ-सेना द्वारा घेर लिया गया था, तो कच्छ-राज्याधिकारियों ने सन्धि के लिए उससे वार्तालाप करना स्वीकार किया था।

वह अपने मन में विचार कर रहा था कि यदि उसने कच्छ-सेना को घेरे में ले लिया होता, तो वह क्या करता? उसे इसमें रत्ती-भर भी सन्देह नहीं था कि वह सम्पूर्ण कच्छ-सेना को भूख और प्यास से तड़प-तड़पकर मर जाने देता और जब वे घिरे हुए सैनिक व्याकुल होते, तो उन पर आक्रमण कर उन सबको मौत के घाट उतार देता। वह विचार कर रहा था कि उसकी सेना सीधा पुरिका पर आक्रमण कर देती और सम्पूर्ण नगर तथा राज्यकोष को लूट लेती। तब धन के साथ-साथ असंख्य स्त्रियाँ और पुरुष गुलाम के रूप में मिल जाते।

वह विचार कर रहा था कि इस सबके विपरीत कच्छ-राज्य ने क्या किया? उसकी घिरी हुई सेना को कच्छ के नागरिक बिना मूल्य रसद-पानी देते रहे। फिर सन्धि हुई और सन्धि में स्वेच्छा से यह शर्त लिख दी कि कच्छ-राज्य द्वारा शक-राज्य को प्रतिवर्ष दो लक्ष स्वर्ण दिये जायेंगे।

सन्धि के उपरान्त खरीच में अपने निवास-गृह में बैठा वह विचार कर रहा था कि कच्छ-मन्त्रिमण्डल को उदार तथा लोगों का हित-चिन्तक समझे अथवा शकराज से भयभीत समझे?

उसे खरीच पहुँचे अभी दो-तीन दिन ही हुए थे। उसका राजप्रासाद अधजली अवस्था में था। वहाँ का सारा मूल्यवान् सामान नष्ट-भ्रष्ट हो चुका था। उसने अपने रहने के लिए एक मकान का प्रबन्ध कर लिया था, जो बहुत छोटा था। उसमें सुख-सुविधा का कोई सामान नहीं था और न उसमें कोई सजावट ही थी।

उस मकान की बैठक में बैठा-बैठा पद्मिनी की स्मृति से पीड़ित जयदमन शोकयुक्त विचारों के जङ्गल में फंस गया था। उसे नगर के उन नागरिकों ने—जिन्होंने तूर के मारे जाने के उपरान्त नगर सुरक्षा समिति बनायी थी—यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बताया कि तूर महारानी पद्मिनी के तीर से मारा गया था। उसके उपरान्त राजप्रासाद के एक कोने में अग्नि भड़क उठी। कुछ नागरिकों का यह विचार था कि आग तूर के साथियों ने लगायी थी और कुछ का कहना था कि आग भीतर रहनेवालों ने ही लगायी थी। आग बुझाने का यत्न किया गया, परन्तु राजप्रासाद में लकड़ी बहुत लगी हुई थी, इस कारण आग को बुझाने में दो दिन लग गये। इस परेशानी में महारानीजी की ओर किसी का ध्यान ही नहीं गया। यह समझा जा रहा था कि वह और उनका पुत्र उस आग में जल मरे। परन्तु जब जले हुए प्रासाद की जाँच-पड़ताल की गयी, तो वहाँ जला हुआ एक भी मानव-शव नहीं मिला। आग बुझानेवालों में से कुछ व्यक्ति झुलस अवश्य गये थे, किन्तु राजप्रासाद के रहनेवालों में से कोई भी अग्निकाण्ड में जल गया हो, ऐसा देखने में नहीं आया।

इस सूचना पर जयदमन को आश्चर्य होने के साथ-साथ क्रोध भी आया। उसने नागरिकों और सैनिकों की एक समिति बनायी और उसके सम्मुख राज्य के भावी व्यवहार पर विचार किया गया। पहली बात जिस पर विचार हुआ, वह यह थी कि कच्छ-राज्य ने इतनी उदारतापूर्ण सन्धि क्यों की?

इस पर सब एकमत थे कि कच्छ-मन्त्रिमण्डल भीरुओं का टोला है और उन्हें राजनीति की कोई समझ नहीं है। वे युद्ध-जैसी भयंकर बात से भयभीत शक-राज्य को वार्षिक वृत्ति देकर सन्तुष्ट रखना चाहते हैं। दूसरा प्रश्न यह था कि यह धन किस प्रयोजन से मिला है? जयदमन ने बताया कि कच्छ के महामन्त्री चन्द्रशेखर यह कहते थे कि उन्हें यह धन शक-प्रजा की उन्नति के लिए दिया जा रहा है।

इस पर सब एकमत थे कि यह सब दिखावे की बात थी। वास्तविक बात यह है कि वे उनको घूस देकर सन्तुष्ट रखना चाहते हैं।

तीसरा प्रश्न यह था कि इस धन का प्रयोग किस काम के लिए किया जाये? सैनिक चाहते थे कि इस धन से शस्त्रास्त्रों का निर्माण करना चाहिये, किन्तु सामान्य नागरिक इसे सामान्य जनता पर व्यय करने के लिए कहते थे। एक व्यक्ति ने तो यह भी कह दिया कि दो लक्ष स्वर्ण व्यय किया जाये, तो प्रत्येक दिन साढ़े पाँच सौ स्वर्ण का वितरण किया जा सकता है। महाराज स्वयं प्रतिदिन अपने महल के बाहर खड़े होकर इतना कुछ नित्य निर्धन लोगों में बाँट दिया करें।

दो प्रकार की सम्मति होने से इस विषय पर बातचीत समाप्त कर दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गयी।

चौथा प्रश्न था कि पद्मिनी को कहाँ ढूंढ़ा जाये? उसके साथ उसका पुत्र राज्य का उत्तराधिकारी भी है। इसके लिए बहुत बड़ी संख्या में गुप्तचर शक-क्षेत्र और पड़ोसी राज्यों में भेजे गये और पद्मिनी की खोज आरम्भ हो गयी। राज्य-कार्य पुनः वैसे ही चलने लगा, जैसा पहले चला करता था। कच्छ-राज्य से भी पद्मिनी की खोज में सहायता माँगी गयी और उन्होंने भी सहायता देने का वचन दिया।

इस प्रकार एक वर्ष से अधिक व्यतीत हो गया। इस समय यवन देश का एक सौदागर नमरूद अपनी दो कन्याओं के साथ खरीच पहुँचा, तो किसी ने जयदमन को समाचार दिया कि सौदागर की दोनों लड़कियाँ अति सुन्दर हैं। इस पर सौदागर नमरूद को राजप्रासाद में बुलाया गया। अब तक राजप्रासाद दुबारा निर्मित हो चुका था। नमरूद अपनी दोनों लड़कियों के साथ राजप्रासाद में पहुँचा और वहाँ उसकी दोनों लड़कियों का विवाह जयदमन के साथ हो गया। दोनों ही लड़कियाँ सुन्दर और समझदार थीं। दानों बहिनों ने जयदमन को अपने मोह-जाल में इतना फंसा लिया कि वह उनकी अंगुलियों पर नाचने लगा। जयदमन का नया श्वसुर अपनी लड़कियों के द्वारा उसे कच्छ-राज्य पर अधिकार कर लेने की सम्मति देने लगा।

सौदागर नमरूद सौदागर की बड़ी लड़की शीरीं अपने पिता की सम्मति पर शकराज से निरन्तर कहती रहती थी—"जो राजा अपने राज्य के विस्तार के लिए प्रयत्न नहीं करता, उसका राज्य नष्ट हो जाता है। संसार की कोई भी वस्तु एक ही स्थान पर खड़ी नहीं रह सकती। या तो वह उन्नति करेगी, अन्यथा उसकी अवनति हो जायेगी।

इस पर जयदमन ने पूछा—"शीरीं! इससे क्या लाभ होगा?"

शीरीं ने उत्तर दिया—"देखिये महाराज! मैं आपके बच्चे की माँ बननेवाली हूँ। बहिन मरियम भी बच्चे को ही जन्म देगी और यदि प्रभु की कृपा हुई, तो आप दस-पाँच राजकुमारों के पिता बन जायेंगे। उन सबके लिए भी तो राज्य करने के लिए स्थान चाहिये। इसी कारण मैं कहती हूँ कि इस छोटे-से देश में हमारा परिवार समा नहीं सकता।"

"तो क्या किया जाये?"

"आप आज्ञा दें, तो मैं पिताजी से सम्मति करने के उपरान्त बता सकती हूँ। वह देश-विदेश में घूमे हैं और इस विषय में बहुत अनुभवी हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जयदमन ने शीरीं के पिता से वार्तालाप किया, तो नमरूद ने कहा—"सेना और शस्त्रास्त्रों के निर्माण के लिए यवन देश के लोग और कारीगर बुलाने चाहियें।"

इस प्रकार की गयी गोष्ठियों का परिणाम यह हुआ कि यवन देश के अनेक लोग और कारीगर बुलाये गये और सेना तथा शस्त्रास्त्रों में वृद्धि होने लगी। सेना-वृद्धि का लक्ष्य एक लक्ष रखा गया। इस सारी तैयारी में दो वर्ष लग गये। जब सैनिक दृष्टि से सारी तैयारी पूर्ण हो गयी, तो सिन्धु नदी के पश्चिमी तट पर सैनिक शिविर बनाया गया और राज्य-प्रबन्ध के लिए एक अल्पसंख्या में सैनिकों को छोड़कर शेष सम्पूर्ण सेना का जमाव खरीच से पचास कोस पूर्व की ओर सिन्धु नदी के तट पर कर दिया गया।

कच्छ-राज्य के गुप्तचरों ने इस सेना के एकत्र होने की सूचना पुरिका में दे दी थी और वहाँ चिन्ता व्यक्त की जाने लगी थी।

यवन देश के युद्ध-विशारद शक-राज्य में बुलाये गये और कच्छ-राज्य पर आक्रमण की योजनाएँ बनने लगीं। अचानक एक लक्ष सैनिकों और पचास सहस्र अश्वों तथा सेना द्वारा प्रयोग किये जानेवाले शस्त्रास्त्र एवं खाने-पीने के सामान को सिन्धु नदी के पार ले जाने और वहाँ से पुरिका तक पहुँचने की सारी योजना बना ली गयी।

पाँच सहस्र नौकाएँ अश्वों को नदी के पार ले जाने के लिए तथा दो सहस्र तैरनेवाले बड़े-बड़े पटरे रसद को उस पार ले जाने के लिए तैयार किये गये थे।

सिन्धु नदी के पार बैलगाड़ियाँ तैयार की गयीं, जो पचास कोस दूर मधुमति नदी के तट तक युद्ध सामग्री व सारी नौकाओं को ले जाने के लिए तैयार थीं।

अभी यह तैयारी हो ही रही थी कि खरीच में यह सूचना आयी कि कच्छ-राज्य में भी हलचल दृष्टिगोचर हो रही है। कच्छ-सेना का जमाव पञ्चनद-राज्य और शक-राज्य के सङ्गम-स्थल पर हो रहा था। वहाँ सिन्धु नदी पञ्चनद-राज्य को पार कर शक-राज्य में प्रवेश करती थी।

कच्छ-सेना के वहाँ एकत्र होने और नदी पार करने की तैयारी पर यह समझा गया कि कच्छ-राज्य पञ्चनद-राज्य पर आक्रमणकी तैयारी कर रहा है।

इसके विरुद्ध पञ्चनद में भी सैनिक हलचल के लक्षण दिखाई देने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शक-राज्य के युद्ध-विशारदों का यह अनुमान था कि कच्छ-राज्य और पञ्चनद-राज्य में ठन रही है।

इस सूचना और अनुमान के आधार पर यह योजना बनी कि ज्योंही इन दोनों राज्यों में युद्ध आरम्भ हो, कच्छ-राज्य पर आक्रमण कर दिया जाये और युद्ध के किसी निर्णय पर पहुँचने से पूर्व ही शक-राज्य का कच्छ-राज्य पर अधिकार हो जाना चाहिये।

इस सूचना पर पञ्चनद-राज्य से भी बातचीत की गयी, परन्तु वहाँ से उत्तर आया कि हम अकेले ही कच्छ-राज्य से निबटने के लिए समर्थ हैं। अतः शक-राज्य को हमारी चिन्ता नहीं करनी चाहिये।

शकों को इस बात की चिन्ता नहीं थी कि कच्छ और पञ्चनद-राज्यों के संघर्ष में कौन विजयी होता है। वह तो यह जानने के लिए इच्छुक थे कि उन दोनों में हाथापाई कब होती है, जिससे वह कच्छ-राज्य पर आक्रमण कर सकें।

शक-सेना में यवन और गान्धार के अनेक लोग लूट-मार के प्रलोभन से भरती हुए थे, अतः वे आक्रमण के लिए जल्दी मचा रहे थे। शकराज को आक्रमण में देर करते देख सैनिक शिविर के नायकों ने एक दिन परस्पर गोष्ठी की और नदी पार कर कच्छ-राज्य में प्रवेश कर गये।

कच्छराज इसी समय की प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्होंने मधुमति और सिन्धु नदी बीच का क्षेत्र सर्वथा अरक्षित छोड़ा हुआ था। अतः तीन दिन में ही सेना बिना किसी विघ्न-बाधा के मधुमति के तट पर पहुँच गयी।

:2 :

खरीच में दो समाचार एक साथ पहुँचे। एक तो यह कि शक-सेना बिना महाराज की अनुमति के कच्छ-राज्य में घुस गयी और दूसरी यह कि कच्छ-सेना शक और पञ्चनद-राज्यों की साझी सीमा से एक कोस दक्षिण पर सिन्धु नदी पार कर शक-राज्य में प्रवेश कर गयी। इस सूचना से जयदमन समझ गया कि इस बार भी वही कहानी दुहराई जा रही है, जो पहले कच्छ-राज्य के युद्ध में हुई थी। इस पर उसने अपने मन्त्रिमण्डल की बैठक बुलायी, जिसमें उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्वसुर महामन्त्री नमरूद भी थे। जब उन्हें यह पता चला कि शक-सेना बिना योजना के कच्छ-राज्य की सीमा में चली गयी है, तो वह आगबबूला हो गये। उन्होंने कहा—"महाराज! अपनी सेना को वापस बुला लेना चाहिये और कच्छ-राज्य से क्षमा मांगकर उनके सैनिकों को राज्य से बाहर कर देने की याचना करनी चाहिये।"

जयदमन ने कहा—"महामन्त्री! इससे तो अपनी सेना बाग़ी हो जायेगी और यह भी सम्भव है कि मुझे बन्दी बनाकर फाँसी पर चढ़ा दे और यदि उनको यह पता चल गया कि आपने मुझे यह सम्मति दी है, तो आपके और आपकी लड़कियों के लिए भी मुसीबत बन जायेगी।"

"तो अब?" नमरूद ने पूछ लिया।

"देखिये, अब स्थिति यह है कि हमारी सेना सिन्धु नदी को पार कर मधुमति की ओर बढ़ रही है और कच्छ-सेना सिन्धु नदी को पार कर खरीच की ओर बढ़ रही है। ऐसी स्थिति में क्या किया जाये?"

नमरूद ने एक क्षण के लिए विचार किया और पूर्ण राज्य में लामबन्दी का आदेश देने की सम्मति दे दी।

"इससे क्या होगा?"

"बीस से तीस वर्ष की आयु के देश के सब युवक सेना में भरती हो जायें।"

"इस आदेश को पूर्ण होने में कितना समय लगेगा?"

"एक सप्ताह तो लग ही जायेगा।"

"तब तक क्या किया जाये? तब तक तो कच्छ-सेना खरीच में पहुँच जायेगी।"

"मैं अभी आदेश देता हूँ कि स्थानीय सेना कच्छ-सेना को आगे बढ़ने से रोके।"

"तो शीघ्र करो, परन्तु जो सेना आगे कच्छ-क्षेत्र में बढ़ती जा रही है, उसका क्या होगा? उसे तो मार डाला जायेगा।"

"नहीं, उसकी सहायता करनी चाहिये।"

"तो करो। कैसे करोगे?"

जयदमन ने राजधानी के संरक्षकों को एकत्र किया और उनसे उनकी ओर बढ़ती हुई सेना को कच्छ-सेना का विरोध करने को कहा। इसके उपरान्त वह नमरूद को इस सेना का नेतृत्व करने का आदेश देकर कच्छ में फंस गयी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अपनी सेना का नेतृत्व करने चल दिया।

:3:

नमरूद खरीच की ओर बढ़ रही सेना का विरोध करने के लिए जल्दी-जल्दी में केवल दस सहस्र सेना ही एकत्र कर सका, परन्तु उनके नौसिखिया होने के कारण वह सेना कच्छ-सेना के सम्मुख ठहर नहीं सकी और कच्छ-सेना आंधी की भाँति बढ़ती हुई खरीच के सामने जा खड़ी हुई।

खरीच नगर के सब द्वार बन्द कर दिये गये, तो कच्छ-सेना ने घेरा डाल दिया। जहाँ शक राजधानी के लोग बाहर से रसद-पानी लाने का यत्न करते थे, वहाँ कच्छ-सैनिक उनके इस प्रयत्न को विफल करने का यत्न करते थे।

राजधानी में बन्द लोगों को सन्धि के लिए विवश करने में दो मास लगे। तब तक बढ़ रही शक-सेना का शक-राज्य से सम्बन्ध टूट गया और उनके लिए आगे बढ़ने के सिवा अन्य कोई उपाय न रहा। मधुमति के पश्चिम में कच्छ-सेना का भारी जमाव था। घोर युद्ध हुआ। दोनों ओर भारी संहार हुआ। शक-सेना पूर्णत: नष्ट हो गयी और जयदमन को पकड़कर पुरिका भेज दिया गया।

जब खरीच में यह समाचार पहुँचा, तो नगर में घिरे नागरिक हतोत्साहित हो गये। नागरिकों ने श्वेत पताका देकर एक नागरिक को घेरा उठाने के लिए कहकर कच्छ-सेनाध्यक्ष के पास भेज दिया। घेरा उठाने की बातचीत होने लगी। इस कार्य के लिए शङ्कर को नियुक्त किया गया।

आक्रमण के समय भद्रकच्छ ख़ाली कर दिया गया था और वहाँ के आयुक्त शङ्कर को सेना के साथ खरीच भेज दिया गया था। खरीच में घेरा डालनेवाली सेना का अध्यक्ष शूरसेन था और उसके साथ सम्पूर्ण आक्रमण की योजना बनानेवाले पण्डित वीरभद्र थे।

जब सन्धि-वार्ता होने लगी, तो इस कार्य के लिए शङ्कर को नियुक्त किया गया। शङ्कर नगर के भीतर गया, तो समाचार लाया कि जयदमन का श्वसुर नमरूद बीमार होकर मर गया है और जयदमन की दोनों पत्नियाँ सन्धि के लिए याचना कर रही हैं। इस पर शीरीं और मरियम को अभयदान दे दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया और उन्हें कच्छ महाराज की सेवा में पहुँचकर राज्य वापस पाने के लिए यत्न करने की स्वीकृति भी दे दी गयी। अतः दोनों बहिनों ने स्वयं को सेनाध्यक्ष के अधिकर में दे दिया और खरीच पर कच्छ-सेना का अधिकार हो गया।

शूरसेन ने दोनों रानियों को बन्दी बनाकर पुरिका भेज दिया। उनकी सुरक्षा के लिए पण्डित वीरभद्र और पचास सैनिक साथ भेजे गये। शीरीं और मरियम पालकी में थीं और पण्डित वीरभद्र अश्व पर सवार होकर उन्हें घेरे हुए जा रहे थे।

मार्ग में शीरीं और मरियम को पता चला कि उनको ले जानेवाले जयमदन की प्रथम पत्नी के पिता हैं। इस कारण एक सायंकाल शीरीं पण्डित वीरभद्र के खैमे में आयी और बोली—"मैं आपसे एक बात जानना चाहती हूँ।"

"हाँ, भीतर आओ और बताओ कि क्या जानना चाहती हो?"

"आप शक महाराज के श्वसुर हैं?"

"हाँ, तुम्हारी सूचना ठीक है।"

"तब तो हम आपकी बेटी सामान हैं।"

"हाँ, परन्तु इस कारण नहीं कि तुम जयदमन की पत्नी हो, अपितु इस कारण कि वे सब स्त्रियाँ, जो अपने से छोटी हों, मेरे लिए बेटी समान हैं। समवयस्क बहिन होती हैं और बड़ी आयुवाली माता होती हैं।"

इसका अर्थ समझने के लिए शीरीं पण्डित वीरभद्र का मुख देखने लगी। फिर कुछ विचार कर बोली—"मेरा अभिप्राय यह था कि क्या आप हमारे पति को मुक्त कराने का यत्न करेंगे?"

"हाँ, परन्तु इस कारण नहीं कि वह आपका पति है, अपितु इस कारण कि वह पड़ोसी राज्य का अधिपति है। उसके लिए दो मार्ग हैं। या तो वह राज्य को छोड़कर वन में चला जाये अथवा विजयी राज्य के अधीन होकर रहे। राजाओं को बन्दी नहीं बनाया जाता, परन्तु जो राजा इन दोनों बातों को न माने, उसको मार डाला जाता है। उसे जीवित रहने का अधिकार नहीं रहता।"

शीरीं समझ गयी कि यह बड़े विचित्र प्रकार का व्यक्ति है, परन्तु उसे यह पता नहीं था कि पण्डित वीरभद्र की कच्छ-राज्य में कितनी प्रतिष्ठा है। इस कारण उसने कहा—"क्या कच्छ-राज्य का भी यही विचार है?"

"मैं नहीं जानता। देखो बेटी! तुमने मेरी सम्मति पूछी है। वह मैंने बता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दी। परन्तु मैं न तो राजा हूँ और न ही कच्छ–राज्य का कोई अधिकारी।"

"तो आप हमारे लिए कुछ नहीं कर सकते?"

"मुझे इसका कोई अधिकार नहीं है।"

"शक महाराज आपकी बेटी की बहुत प्रशंसा किया करते थे। अब वह कहाँ हैं?"

"जहाँ तक मुझे ज्ञान है, वह पुरिका में है।"

"ओह! तो आप हमें उनसे मिला देंगे?"

"परन्तु वह तो वहाँ बन्दी है। बिना राज्य की स्वीकृति के मैं भी उससे नहीं मिल सकता।"

"परन्तु आप तो राज्य की सेवा कर रहे हैं और हमें यह बताया गया है कि आपकी सम्मति से ही यह युद्ध हुआ है।"

"हाँ, यह ठीक है, परन्तु आपको यह किसने बताया?"

सेनाध्यक्ष के साथ शङ्कर नाम का एक सेवक था, उसने ही हमें आपके विषय में सूचना दी थी। सेनाध्यक्ष का सन्देश लेकर वही खरीच दुर्ग में जाया करता था।

"ठीक है, शङ्कर मेरे विषय में बहुत कुछ जानता है। परन्तु यदि उसने यह बताया है कि मैं कच्छ–राज्य की सेवा में हूँ, तो वह भूल कर रहा है। मैं राज्य की सेवा में नहीं हूँ। मैं राष्ट्र की सेवा में हूँ।"

"वह क्या होता है?" शीरीं नयी बात सुन रही थी। इस कारण वह और अधिक जानकारी प्राप्त करने का यत्न कर रही थी।

पण्डित वीरभद्र ने बताया—"मैं समाज को राष्ट्र मानता हूँ और उसी की सेवा कर रहा हूँ।"

"परन्तु आपने तो सहस्त्रों शकों को मृत्यु के घाट उतरवाया है। क्या यह भी समाज सेवा थी?"

"हाँ, बेटी।"

इसके उपरान्त दोनों बहिनें मार्ग–भर प्रत्येक सायंकाल पण्डित वीरभद्र से बातें सुनने आने लगी और यह कार्य–कलाप पुरिका पहुँचने तक चलता रहा।

पुरिका पहुँचने पर एक नयी परिस्थिति सामने आयी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात यह हुई थी कि युद्ध में दोनों ओर के लगभग चालीस-पचास सहस्र सैनिक मारे गये थे। सैकड़ों स्त्रियाँ विधवा होकर सम्पन्न घरानों में सेवा-कार्य अथवा वेश्यावृत्ति करने पर विवश हो गयी थीं। पण्डित वीरभद्र ही इस युद्ध की योजना का निर्माण करने वाले थे और उन्हें ही इस अमानवता का उत्तरदायी माना गया।

महामन्त्री ने तो इक्कीस दिन का व्रत रखकर स्वयं को पापमुक्त कर लिया। महाराज, राज्य-कर्मचारियों और नगर के सभी जैन मतावलम्बियों ने भी व्रत, स्नान और पूजन कर प्रायश्चित्त कर लिया।

जब पण्डित वीरभद्र पुरिका पहुँचे और वहाँ महामन्त्री के निवास-स्थान पर जयदमन की पत्नियों सहित गये, तो महामन्त्री आगबबूला हो गया। उसने पूछा—"ये कौन हैं?"

पण्डित वीरभद्र ने शूरसेन का पत्र निकालकर महामन्त्री के सम्मुख रख दिया। महामन्त्री ने पत्र पढ़ा और कहा—"मैं इनको अभी जयदमन के पास भेज देता हूँ और तुमको आदेश देता हूँ कि तुम राज्य-बन्दी हो।"

पण्डित वीरभद्र समझ रहे थे कि किसी ने उनके विरुद्ध किसी अधर्माचरण की शिकायत की है। इस कारण उन्होंने पूछ लिया—"मेरा अपराध?"

"यह तुम्हें वहाँ लिखित मिल जायेगा।"

"तो आप मुझे लिखित आदेश दे दीजिये, अन्यथा मुझे कारागार में कौन घुसने देगा?"

महामन्त्री ने बात को समझते हुए कहा—"ठहरो।" फिर उसने प्रतिहारी को बुलाकर उससे कहा—"इन पण्डितजी को पाँच सैनिकों की सुरक्षा में कारागार पहुँचा दो।"

प्रतिहारी समझ नहीं पाया था कि पण्डितजी का क्या अपराध है। इस पर भी उसने बिना कुछ विचार किये पण्डितजी को बाँह से पकड़कर कहा—"महाराज! चलिये।"

पण्डित वीरभद्र चुपचाप प्रतिहारी के साथ चल दिये।

महामन्त्री की बैठक के बाहर से पाँच सैनिक पण्डित वीरभद्र के आगे-पीछे हो लिये और उन्हें कारागार में पहुँचा आये। वहाँ जब पण्डितजी को बन्द किया जाने लगा, तो उन्होंने एक सैनिक से पूछा—"मेरा एक काम करोगे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बताइये।"

"मेरे यहाँ आने की सूचना सेठ सोमदेवजी तक पहुँचा देनी है।"

सैनिक ने कहा—"हम ऐसा नहीं कर सकेंगे। महामन्त्रीजी की आज्ञा के बिना हम कुछ भी नहीं करेंगे।" उसी समय कारागार का कारापाल आ पहुँचा। उसने पण्डित वीरभद्र की कोठरी में बैठकर उन्हें बताया—"वह सामने सहन है। आप इसी में घूम-फिर सकेंगे। रात को इसी कोठरी में सोना होगा। अब बताइये, भोजन में क्या लेंगे?"

"जो यहाँ बन्दियों को देते हो।"

"परन्तु आप-जैसा बन्दी तो यहाँ कोई नहीं है।"

"मुझ-जैसा? क्या मतलब है?"

"मेरा अभिप्राय है कि यहाँ सब बन्दी अपराधी हैं और आपके समान निरपराध बन्दी कोई नहीं।"

"तुम कैसे जानते हो कि मैंने कोई अपराध नहीं किया है?"

"पण्डितजी! यहाँ अर्हतों ने आपको पकड़वाया है और वे जो भी आरोप आप पर लगा रहे हैं, वे सत्य नहीं हैं।"

पण्डित वीरभद्र ने बात बदल दी और कहा—"मेरा एक काम करोगे?"

"बताइये।"

"मेरे यहाँ पहुँचने की सूचना सेठ सोमदेवजी को पहुँचा दो।"

"पहुँचा दूंगा, परन्तु मुझे आशा नहीं कि वह किसी प्रकार भी आपकी सहायता कर सकेंगे।"

"मुझे सहायता की आवश्यकता नहीं है। मैं उनसे किसी विषय में जानकारी प्राप्त करना चाहता हूँ। वह राज्य-कार्य से सम्बन्धित नहीं है।"

"अभी कुछ समय में आपका सन्देश पहुँचा दूंगा। भोजन के सम्बन्ध में आपको सब प्रकार की सुविधा रहेगी। वैसे भी इतना कुछ तो यहाँ सब बन्दियों को मिलता ही है।"

पण्डित वीरभद्र को कमरे में सोने के लिए एक चटाई मिली थी। वह उस पर बैठ गये। कारापाल के कथन को सुनकर वह समझ गये कि उन्हें क्यों बन्दी बनाया गया है। वह समझ गये कि महाराज और मन्त्रिमण्डल अपने मतावलम्बियों का दबाव सहन नहीं कर सके।

मध्याह्नोत्तर कारागार के कारापाल ने अपने एक विश्वस्त सेवक के द्वारा सेठ सोमदेवजी को सन्देश भेज दिया। दारोग़ा का सेवक सेठ सोमदेवजी को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना देने गया, तो वापस लौटकर उसने बताया कि उनको पण्डितजी के विषय में सब ज्ञात है।

सोमदेवजी को महामन्त्री के इस कृत्य पर भारी रोष था। अर्हतों के नगर में अनशन कराने के उपरान्त वह पण्डित वीरभद्र के विरुद्ध किसी कार्रवाई की आशा करते ही थे। उनका और सेठानीजी का विचार था कि पण्डित वीरभद्र को कच्छ-राज्य से बाहर चले जाने का आदेश दिया जायेगा, परन्तु बन्दीगृह में डाले जाने पर उन्हें बहुत विस्मय हुआ था। सेठ और सेठानी दोनों को पण्डितजी के बन्दीगृह में डाले जाने की आशा नहीं थी।

मध्याह्न के समय महामन्त्री का एक सेवक पण्डित वीरभद्र के जयदमन की पत्नियों सहित आने और पण्डितजी को बन्दीगृह में भेजे जाने का समाचार दे गया था।

सेठजी ने यह समाचार सेठानीजी को दिया, तो वह भी रोष में भर गयीं और बोलीं—"हम इस राज्य में कैसे रह सकेंगे?"

"क्यों? तुमको इस राज्य में क्या कष्ट है?"

"जब राज्य और राष्ट्र के भक्तों को बन्दीगृह में डाला जा सकता है, तो हम किस खेत की मूली हैं?"

"मैं इस राज्य का कोषाध्यक्ष हूँ।"

"कोषाध्यक्ष हैं, तो पण्डितजी को छुड़ा लीजिये।"

"वाह! इन दोनों बातों का क्या सम्बन्ध है?"

"सम्बन्ध तो है। आप राज्य की सेवा करते हैं और आपके एक परिचित को अन्याय से बन्दी बना लिया गया है। ऐसे राज्य में रहते हुए और सेवा करते आपको लज्जा न्हीं लगेगी? जहाँ विद्वानों के साथ अन्याय होता हो, वहाँ हम-जैसों की क्या दुर्दशा हो सकती है?"

"परन्तु मोहिनी! यहाँ नहीं रहूँगा, तो कहाँ जाऊँगा?"

"क्या संसार कच्छ-राज्य से भी छोटा है?"

सोमदेव मुख देखता रह गया। उसने पूछा—"और क्या काम करूँगा?"

"काम राज्य दे रहा है? आपके कर्मफल नहीं रहे क्या? देखिये श्रीमान्! यदि भाग्य में धनवान् होना लिखा है, तो कच्छ से कहीं बाहर जाकर भी सब-कुछ प्राप्त हो जायेगा, अन्यथा यहाँ भी तो अनेक कंगले रहते हैं।"

सोमदेव चुप हो गया। रात्रि-भोजन के समय मोहिनी ने कहा—"पेट भरने के लिए खा रही हूँ, अन्यथा चित्त अब उचाट हो गया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"मैं कल दिन के समय महाराज से मिलने जा रहा हूँ।"

"किसलिए?"

"अपने कोषाध्यक्ष के पद से त्याग-पत्र देने।"

"ठीक है, महाप्रभु महावीर आपकी सहायता करेंगे।"

महाप्रभु का नाम सुनकर सेठ सोमदेव हँस दिये और कहने लगे—"राजपथ से सूचना आयी है कि नगर के सेठियों का एक आयोग महाराज सिंहनाद से मिलने गया है। उसने महाराज से कह दिया है कि शूरसेन को भी बन्दी बना लिया जाये; क्योंकि वह भी कम दोषी नहीं है।"

"और सेनाध्यक्ष तथा रक्षा-मन्त्री किसे बना रहे हैं?"

"यह तो पता नहीं चला कि महाराज ने यह प्रश्न पूछा है अथवा नहीं और यदि पूछा है, तो आयोग ने क्या उत्तर दिया है?"

"मेरी सम्मति में तो रक्षा-मन्त्री पञ्चानन सेठ को और सेनाध्यक्ष महानन्द महोर को बना देना चाहिये।"

इस पर सेठजी ज़ोर से हँस पड़े और गम्भीर होकर कहने लगे—"देखो मोहिनी! मैंने अपने लेखाकार से कह दिया है कि मेरे यहाँ के लेन-देन का चिट्ठा तैयार कर दे; क्योंकि मैं अपना व्यवसाय समेट रहा हूँ। इसमें समय लगेगा। सब को समेटते हुए छह मास से कम नहीं लगेंगे।"

"परन्तु यह भी सम्भव है कि आपका सब-कुछ राज्य ही आत्मसात् कर ले।"

"तब तो और भी अच्छा होगा। शीघ्र ही छुट्टी मिल जायेगी।"

मोहिनी ने सेठजी की ओर देखकर पूछ लिया—"क्या यह सब आप मेरे कहने पर कर रहे हैं?"

"हाँ और नहीं भी। हाँ इसलिए कि तुम्हारे एक वाक्य ने मुझे उस निर्णय तक पहुँचने में सहायता प्रदान की है, जिसे दिन-भर विचार करने पर भी मैं समझ नहीं सका था।"

"सच? क्या मैंने ऐसा जादू-भरा वाक्य कह दिया?"

"तुमने कहा था कि यदि मेरे भाग्य में लाखों में खेलना लिखा है, तो सब-कुछ त्याग देने पर भी फिर मिल जायेगा। मैं कर्म-फल पर विश्वास करता था, परन्तु अपने पर विश्वास नहीं कर रहा था। अब तो मैं लोटा-डोरी लेकर भी यहाँ से चलने का तैयार हो गया हूँ।

"आज मध्याह्न के समय यह समाचार मिला था कि पण्डित वीरभद्र यहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पहुँच गये हैं। उसके उपरान्त समाचार मिला कि उन्हें कारागार में डाल दिया गया है। उसके उपरान्त कारागार के दारोग़ा का सेवक आया था। इस समय तक मैं द्विविधा में फंसा हुआ था कि क्या अब पुरिका रहने योग्य रह गया है अथवा नहीं? मैं अपने फैले हुए व्यापार की चिन्ता कर रहा था, परन्तु जब तुमने बताया कि भाग्य प्रबल है, तो चिन्ता करने का कारण ही नहीं रहा और बस, मैं तैयार हो गया।

"मैंने किसी अत्यावश्यक कार्य से महाराज को एक पत्र लिखा है, जिसका सम्बन्ध मेरी राज्य-सेवा से है। मैंने उसमें लिखा है—"मैं श्रीमान् से मिलना चाहता हूँ। यदि आप कल प्रात: अल्पाहार के उपरान्त कुछ क्षण इस सेवक की बात सुनने के लिए दें, तो मैं कृतज्ञ होऊँगा। महाराज का उत्तर भी आ गया है कि हमें कोषाध्यक्ष से मिलकर बहुत प्रसन्नता होगी। अत: मैं अपना त्याग-पत्र कल ही प्रस्तुत कर दूंगा और ज्योंही मेरा उत्तराधिकारी नियुक्त किया जायेगा, मैं यहाँ से अपना बोरिया-बिस्तर लपेट दूंगा।"

सेठानीजी ने उसी समय पति के चरण स्पर्श कर हाथ माथे से लगाया और कहा—"मैं आपसे यही आशा करती हूँ। मैं कल पण्डितजी से मिलने कारागार जा रही हूँ।"

"उसके लिए तो महामन्त्री से स्वीकृति लेनी होगी। वह कोई साधारण बन्दी नहीं हैं। राज्य बन्दी हैं।"

"मैं जानती हूँ। महामन्त्री को स्वीकृति देनी ही होगी, अन्यथा कारागार के द्वार पर आमरण अनशन कर दूंगी।"

सेठजी हँस दिये और बोले—"तो इन अर्हतों का शस्त्र इन पर ही चलाओगी?"

"तो क्या मैं इनकी अनुयायी नहीं हूँ?"

"परन्तु तुम एक बात नहीं समझीं। जिस हिंसा को ये दूसरों पर होने से दु:ख अनुभव करते हैं, उसी को अपनों पर करने को ये पुण्य मानते हैं। इस कारण तुम्हारे भूखे मर जाने पर ये तम्हें पुण्यात्मा कहकर प्रसन्नता से तुम्हारी पूजा करेंगे।"

"परन्तु ऐसा अर्हतों के अनशन पर तो नहीं किया गया?"

"हाँ। यह इस कारण कि उन्होंने आमरण अनशन नहीं किया था। जब कभी कोई आमरण अनशन करता है, तब ही उसे पता चलता है कि उसके अनशन को तोड़ देने पर लोग हो-हल्ला मचा देंगे, किन्तु तुम्हारे विषय में कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जूँ भी नहीं फड़केगी। इसका कारण यह है कि तुम्हारे पति ने एक हत्यारे को बचाने के लिए त्याग-पत्र दिया होगा।"

"परन्तु मैं तो सत्य ही मरना चाहती हूँ।"

"और मैं भी सत्य ही कहता हूँ कि मैं तुम्हें मरने नहीं दूंगा। ऐसा मरना भाग्य का खेल नहीं होगा। यह तो आत्महत्या हो जायेगी।"

"अच्छी बात है, व्रत रखने से पूर्व विचार करूँगी।"

:5:

अगले दिन महाराज सिंहनाद बन्दी बने महाराज जयदमन से बातचीत कर रहे थे। उस वार्तालाप का विषय था—जयदमन को शक-राज्य पुनः वापस दिया जाये।

यह वार्तालाप कई दिनों से चल रहा था। कुछ शर्तें रखी जा रही थीं और जयदमन उनमें कमी कराने का यत्न कर रहा था। जयदमन को पद्मिनी सम्मति दे रही थी। जयदमन जब से पुरिका आया था, पद्मिनी उसके साथ ही रह रही थी।

इस युद्ध में अपना सर्वस्व विनष्ट हुआ देखकर और फांसी पर लटकाये जाने की आशङ्का करता हुआ जयदमन पुरिका पहुँचा था, परन्तु वहाँ अपना स्वागत देखकर वह विस्मित रह गया था। यद्यपि यह स्वागत उससे कम था, जो प्रथम युद्ध के उपरान्त हुआ था, तथापि जो कुछ भी था, वह उसकी आशा से बहुत अधिक था। उसे रहने के लिए एक पृथक् मकान और पद्मिनी की सङ्गत प्राप्त थी। दिन-प्रतिदिन वह यह भी देख रहा था कि धीरे-धीरे उसकी बातें भी मानी जा रही थीं।

वार्तालाप के इन दिनों में उसकी दोनों नवीन पत्नियाँ—शीरीं और मरियम—भी पुरिका आ पहुँची थीं और उनको भी उनके पति के पास पहुँचा दिया गया था। उन दोनों की भेंट से जयदमन बहुत प्रसन्न हुआ और उसने उनको बताया—"मेरी प्रथम पत्नी पद्मिनी—कच्छ के एक महान् विद्वान् की लड़की—भी मिल गयी है।"

शीरीं के मुख से निकला—"ओह! वह अब कहाँ हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या तुम उससे मिलोगी?"

"तो क्या नहीं मिलना चाहिये? क्या वह कुरूप हैं?"

"नहीं। मैं उसके रूप-लावण्य की बात नहीं कर रहा, परन्तु वह बहुत विद्वान् और चतुर है। वह तुम दोनों पर शासन करेगी।"

"इस पर भी हम उनसे मिलेंगी। उनके पिताजी भी हमारे साथ इस नगर में आये हैं।"

"ओह! वह कहाँ हैं?"

"इस समय उनको बन्दी बनाकर कारागार में भेज दिया गया है।"

"क्यों?"

"यह तो हम भी नहीं समझ सके। शत्रु-सेना के एक सेवक शङ्कर ने हमें बताया था कि वह पण्डितजी ही आपके श्वसुर हैं। उन्होंने ही इन युद्धों का सञ्चालन किया है। शङ्कर आपके श्वसुर की बहुत प्रशंसा करता था। हमने मार्ग में उनसे वार्तालाप भी किया है। हमें तो वह एक नेक और बुद्धिमान् व्यक्ति प्रतीत हुए, परन्त यहाँ आते ही महामन्त्री ने उन्हें कारागार में भेज दिया है।"

"तब तो मेरी योजना में बहुत विघ्न पड़ गया है।"

"आपकी क्या योजना थी?"

"यही कि यदि पद्मिनी मेरे साथ रहेगी, तो पण्डितजी की बुद्धि का प्रयोग मुझे मिलता रहेगा। वह कहीं भी रहें, जब तक मैं उनकी बेटी को सुखी और प्रसन्न रखूंगा, वह अपनी बुद्धि और अनुभव से मेरी सहायता करते रहेंगे। महामन्त्री ने तो यह सब घोटाला कर दिया।"

पद्मिनी ने अपने पिता के पकड़े जाने का समाचार सुना, तो वह व्याकुल हो उठी। वह इस राज्य के अधिकारियों की मनोवृत्ति को नहीं समझ सकी। उसने कह दिया—"देव! मैं सेठानी मोहिनीजी से मिलना चाहूँगी।"

"परन्तु वह तो मेरे बहुत विरुद्ध हैं।"

"आपके पिछले व्यवहार के कारण। परन्तु अब तो आपने अपना व्यवहार बदलने का वचन दे दिया है न? उनके पति की इस राज्य में बहुत चलती है। मुझे आशा है कि सेठजी पण्डितजी को मुक्त करा देंगे।"

"तो कल उनको सन्देश भेज दूंगा और फिर मिल लेंगे।"

"मैं उनसे तुरन्त मिलना चाहती हूँ।"

"यह सम्भव नहीं। मुझे और मेरे साथ तुम्हें भी राज्य के किसी व्यक्ति से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलने के लिए यहाँ के महामन्त्री से स्वीकृति लेनी पड़ती है।"

"तो स्वीकृति माँग लीजिये।"

इस पर तुरन्त एक पत्र महामन्त्री को भेज दिया गया, परन्तु उस पत्र का उत्तर उसी समय नहीं आया। सन्देश ले जानेवाला समाचार लाया कि महामन्त्री को अभी अवकाश नहीं था। इस कारण पत्र उनके निजी सेवक ने ले लिया है और उत्तर शीघ्र भेजने के लिए कहा है।

पद्मिनी मन मसोसकर रह गयी। उसके मन में राज्याधिकारियों के प्रति रोष बढ़ता जा रहा था।

अगले दिन जब जयदमन महाराज सिंहनाद से मिलने गया, तो सेठ सोमदेवजी वहाँ पहले से ही उपस्थित थे। यह सूचना महाराज के पास पहुँच गयी थी कि सेठजी मिलने के लिए आये हैं। जयदमन ने भी वहाँ पहुँचते ही अपने आने की सूचना भेज दी। जयदमन की भेंट के समय महामन्त्री उपस्थित रहा करता था। वह भी वहाँ पहुँचा, तो उसने भी अपने आने की सूचना भेज दी।

जयदमन को सेठ सोमदेवजी जानते और पहचानते थे, परन्तु इस बार पुरिका आने पर उससे कभी बातचीत नहीं हुई थी। जयदमन ने महामन्त्री से पूछा—"महामना! मेरी पत्नी ने कल एक याचिका आपके पास भेजी थी।"

"उस याचिका में क्या लिखा था?"

"वह किसी मोहिनीदेवी से भेंट करना चाहती हैं।"

"मैं जाँच करा रहा हूँ कि महारानी पद्मिनी को मोहिनीदेवी से क्या काम है?"

जयदमन ने बताया—"सुना है कि जब वह यहाँ बन्दी थीं, तो मोहिनीजी की देख-रेख में थीं।"

"वह मैं जानता हूँ, परन्तु एक बन्दी का अपने बन्दीगृह के दारोग़ा से घनिष्ठ सम्बन्ध हम स्वीकार नहीं करते। इसका कोई कारण नहीं कि दोनों का सम्बन्ध बाद में भी बना रहे।"

जयदमन मौन हो गया, परन्तु सेठ सोमदेवजी दोनों में हो रहे वार्तालाप को सुन रहे थे। वह अपनी पत्नी को कारागार का दारोग़ा कहे जाने पर आगबबूला हो गये, किन्तु अपने क्रोध को भीतर-ही भीतर पी गये। इसी समय महाराज सिंहनाद ने महामन्त्री और सेठ सोमदेवजी को भीतर बुला लिया और जयदमन को कहला भेजा कि सेठजी और महामन्त्री से भेंट के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपरान्त महाराज आपसे मिलेंगे।

सेठ सोमदेवजी जब महाराज के सामने उपस्थित हुए, तो नमस्कार के उपरान्त वह बोले—"महाराज! एक याचना करने आया हूँ।"

"बताओ।"

"मैं पुरिका छोड़ने का विचार कर रहा हूँ। इस कारण राज्य का सेवा-कार्य छोड़ना चाहता हूँ।"

"क्या सेवा-कार्य करते हो?"

"मैं इस राज्य का कोषाध्यक्ष हूँ। राज्य की आय-व्यय का लेखा-जोखा रखता हूँ और आपके कोष की रक्षा का भार भी मुझ पर है।"

"इस युद्ध के उपरान्त कितना कुछ बचा है?"

"महाराज! युद्ध में मोल ली गयीं वस्तुओं का मूल्य अभी नहीं दिया गया है। मन्त्रालय से नित्य मांग-पत्र आ रहे हैं। इस कारण पूर्ण युद्ध के व्यय का पता नहीं चला। इस पर भी अनुमान है कि लगभग एक करोड़ स्वर्ण कच्छ-राज्य के कोष में उपस्थित है।"

"परन्तु सेठजी आप इस श्रेष्ठ पद को छोड़ना क्यों चाहते हैं?"

"महाराज! मेरे मन में वैराग्य उत्पन्न हो गया है और मैं सन्यास लेना चाहता हूँ।"

"और आपकी सम्पत्ति कितने मूल्य की है?"

"सब लेन-देन और राज्य में सम्पत्ति के विक्रय कर को मिलाकर एक करोड़ स्वर्ण के लगभग हो जायेगी।"

"ओह! तब तो सेठजी आपको सन्यास लेने की आवश्यकता नहीं है। भला इतनी सम्पदा किसको देकर जायेंगे? सुना है कि आपके कोई सन्तान भी नहीं है।"

"हाँ, महाराज! मैं अपनी सांसारिक स्थिति सुधारने का यत्न करना चाहता हूँ।"

"मैं यह पूछ रहा हूँ कि आप यह सब किसको देकर जायेंगे?"

"किसी लोक-कल्याण के कार्य में व्यय कर रहा हूँ।"

"लोक-कल्याण का क्या कार्य कर रहे हो?"

"पुरिका में एक बहुत बड़ा शिक्षा-केन्द्र चलाऊँगा। एक पण्डित वीरभद्रजी हैं। उनकी देख-रेख में यह शिक्षा-केन्द्र चलेगा।"

"परन्तु वह तो राज्य का द्रोही है। उसे तो हमने राज्य-बन्दी बना रखा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है।"

सेठ सोमदेवजी ने विस्मय प्रकट करते हुए कहा—"कब से?"

"वह कल खरीच से यहाँ आया था और उसे सीधा कारागार में भेज दिया है।"

"तब तो महाराज! किसी विद्वान् को ढूंढ़ना होगा। मैं तो यह संकल्प कर चुका हूँ कि अपने धन से एक महाविद्यालय खोलूंगा।"

"विद्यालय के लिए हमारे महामना सौभद्र कैसे रहेंगे?"

"वह तो महामूर्ख है। कुछ पढ़ा-लिखा भी नहीं है।"

"परन्तु वह धर्म-कर्म तो बहुत जानते हैं।"

"महाराज! मैं कोई चैत्य स्थापित नहीं कर रहा। मैं विद्यालय स्थापित करना चाहता हूँ। ऐसा विद्यालय, जहाँ सब मत-मतान्तरों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सके।"

"तो क्या वीरभद्र इस योग्य हैं?"

"हाँ, महाराज! वह मेरी परीक्षा में महान् विद्वान् सिद्ध हुए हैं।"

"तो ठीक है। हम आज ही किसी नवीन कोषाध्यक्ष का निश्चय कर लेंगे, परन्तु आप अपने शिक्षा-केन्द्र का अध्यक्ष नियुक्त करने के उपरान्त हमें अवश्य बताना। यदि हमें वह अध्यक्ष स्वीकार न हुआ, तो हम उस विद्यालय का प्रबन्ध राज्याधीन ले लेंगे और आपके धन पर राज्य का अधिकार कर लेंगे।"

"ठीक है महाराज! बता दूँगा। अभी तक तो यही विचार है कि पण्डित वीरभद्र को ही नियुक्त करूँ।"

"परन्तु वह तो राज्य-बन्दी है।"

"उन पर अभियोग तो चलाया ही जायेगा। मुझे विश्वास है कि वह छूट जायेंगे।"

"हमें सम्मति दी गयी है कि उस पर अभियोग न चलाया जाये।"

"किसलिए? किसी व्यक्ति को अपराध सिद्ध किये बिना बन्दी नहीं बनाया जा सकता। कोई भी न्यायप्रिय नरेश बिना अपराध सिद्ध किये अपनी प्रजा को बन्दी नहीं बना सकता।"

"परन्तु हमें तो यही न्याय समझ में आया है कि पण्डित वीरभद्र पर अभियोग ही न चलाया जाये।"

"महाराज! इसमें कोई युक्ति नहीं है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह अध्यात्म का विषय है। पण्डित वीरभद्र ने सहस्रों की नर-हत्या करायी है। इस कारण हमारा मन कहता है कि यह अपराधी है। इसके विषय में न्यायालय जाँच नहीं कर सकता।"

"परन्तु आप भूल भी तो कर सकते हैं।"

"मन्त्रियों के कथन मानने पर राजा भूल नहीं करता।"

"महाराज! तब तो यह और भी आवश्यक है कि इस विषय पर किसी निष्पक्ष व्यक्ति से जाँच करायी जाये। महाराज! इस विषय पर आपको तटस्थ रहना चाहिये। मन्त्रिमण्डल निर्भ्रान्त नहीं हो सकता।"

"महामन्त्री! तुम बताओ, तुम क्या कहते हो?"

"महाराज! मन्त्रिमण्डल और महाराज तो एक शरीर के दो अङ्ग हैं। अतः एक के दोषी होने पर दूसरा भी दोषी हो जायेगा।"

महाराज सिंहनाद मुसकराये और बोले—"यह ख़ूब रही। मैं निर्दोष हूँ; क्योंकि मैं मन्त्रिमण्डल का कहा मानता हूँ और मन्त्रिमण्डल भी निर्दोष है; क्योंकि मैं उसका कहा मानता हूँ। इसमें हेत्वाभास है। लगता है कि प्रयोजन में भूल हो रही है। क्यों सेठ सोमदेवजी! आप क्या कहते हैं?"

सेठ सोमदेवजी ने कहा—"मैं समझता हूँ कि मन्त्रिमण्डल की इस सम्मति पर किसी निष्पक्ष न्यायाधीश को विचार करने के लिए लगाया जाये और उसके सम्मुख पण्डित वीरभद्र को भी अपनी बात कहने की अनुमति दी जाये। स्वयं महाराज को तटस्थ रहना चाहिये।"

महाराज सिंहनाद सोमदेवजी की बात समझने लगे थे।

सोमदेवजी ने कहा—"दो मास पूर्व मन्त्रिमण्डल ने युद्ध के विषय पर अनुमति माँगी थी। अब युद्ध करनेवालों को बन्दी बनाया जा रहा है और अपने इस बदलते विचार पर, आपकी पीठ पीछे छिपे हुए मन्त्रिमण्डल, अपनी जाँच नहीं कराना चाहता।"

इस पर महाराज ने पूछा—"सोमजी! क्या आप समझते हैं कि पण्डित वीरभद्र अपराधी नहीं हैं?"

"मुझे पता नहीं है कि उन्होंने क्या अपराध किया है।"

महाराज ने महामन्त्री की ओर देखा, तो उसने कहा—"पण्डित वीरभद्र ने ही युद्ध कराया है और उसमें सीमा से अधिक हत्याएँ हुई हैं।"

सेठ सोमदेवजी ने मुस्कराते हुए कहा—"महामन्त्रीजी! युद्ध तो मन्त्रिमण्डल ने किया है और युद्ध में हत्याएँ तो होती ही हैं। इस कारण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अपराधी तो मन्त्रिमण्डल है कि उसके द्वारा चलाये गये युद्ध में इतनी हत्याएँ क्यों हो गयीं? पण्डित वीरभद्र ने तो युद्ध आरम्भ नहीं किया था। उन्होंने किसी भी सैनिक को कभी कोई आदेश नहीं दिया। यह सब कुछ रक्षा-मन्त्री और सेनाध्यक्ष की आज्ञा से होता रहा है। वह युद्ध मन्त्रिमण्डल की आज्ञा से चल रहा था और इसके लिए सारा मन्त्रिमण्डल उत्तरदायी है।

"इस पर भी आरोप तो है और मैं महाराज से यह स्वीकृति लेने आया हूँ कि सेनाध्यक्ष को भी बन्दी बनाने की आज्ञा दी जाये।"

महाराज ने प्रश्न किया—"ओह! तो सम्पूर्ण मन्त्रिमण्डल पर ही अभियोग क्यों न चलाया जाये?"

"परन्तु महाराज! हम रक्षा-मन्त्री पर अभियोग चलाने को नहीं कह रहे हैं।"

"तो क्या उसे भी बिना अभियोग चलाये बन्दी बनाना चाहते हो? परन्तु महामन्त्री! क्या सम्पूर्ण मन्त्रिमण्डल अपने कार्य के लिए उत्तरदायी नहीं है?"

"वह आपके सम्मुख है।"

"और मैं ही पूछ रहा हूँ।"

"तो आप अपने मन्त्रिमण्डल की छुट्टी कर सकते हैं।"

"क्या रक्षा-मन्त्री की भी छुट्टी कर दूँ?"

"वह तो दोषी है।"

"देखो महामन्त्री! दोषी और निर्दोष तो तुम सब एक समान हो। यह कैसे हो गया कि एक दोषी है और दूसरे नहीं हैं?"

"यही तो जाँच का विषय है।"

"अभियोग भी तो जाँच ही होती है।"

महामन्त्री कुछ कह नहीं सका। इस पर महाराज सिंहनाद ने आज्ञा दे दी। उन्होंने कहा—"युद्ध होना चाहिये अथवा नहीं और इसमें मन्त्रिमण्डल उत्तरदायी है अथवा नहीं, इसकी जाँच हो जाये और इस जाँच के लिए मैं विद्याचरण को न्यायाधीश नियुक्त करता हूँ।"

"और तब तक क्या होगा?"

"तब तक युद्ध-कार्य बन्द रहें। राज्य-कार्य चलते रहें।"

"और जयदमन के विषय में?"

"वह भी युद्ध सम्बन्धी कार्य है। उस पर भी न्यायाधीश की जाँच के उपरान्त ही विचार किया जाये। यदि युद्ध उचित था, तो उसकी हानि भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उचित थी, अतः हमें कुछ भी नहीं देना चाहिये। यदि युद्ध अनुचित था, तो जिसने युद्ध की स्वीकृति दी है, वह दोषी है, उसको पकड़ना चाहिये।"

"परन्तु महाराज! युद्ध की घोषणा तो आपने ही की है।"

"हाँ, मन्त्रिमण्डल के कहने पर। तब हम देखेंगे कि इस मिथ्या कार्य पर मन्त्रिमण्डल को क्या दण्ड दिया जाये?"

:6:

सेठ सोमदेवजी चकित थे कि यह सब उलट-पुलट किस प्रकार हो रहा है। वह सिंहनाद के व्यवहार पर चकित थे और समझ नहीं रहे थे कि यह क्यों हो रहा है? वह विचार कर रहे थे कि क्या यह उनकी युक्ति-प्रतियुक्ति का फल है?

यह आज्ञा लेकर कि उनका उत्तराधिकारी एक आध दिन में नियुक्त हो जायेगा, वह अपने घर लौट आये। घर पर मोहिनी उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। सेठजी आये तो उसने पूछा—"क्या कर आये?"

"मेरा त्याग-पत्र स्वीकार हो गया है। मेरा उत्तराधिकारी एक-दो दिन में नियुक्त हो जायेगा। मैं अपनी सारी सम्पत्ति दान कर दूंगा, परन्तु इस सम्पत्ति के विषय पर वार्तालाप होते हुए राज-दरबार में तो काया-पलट हो गयी है।"

"क्या हो गया है?"

"यही कि यदि पण्डित वीरभद्र और शूरसेन दोनों दोषी हैं, तो उनको आज्ञा देनेवाला मन्त्रिमण्डल भी दोषी है। अतः दोषी के दोष की सीमा देखने के लिए विद्याचरण को न्यायाधीश नियुक्त किया गया है।

"कल तक तो मैं यही समझ रहा था कि मन्त्रिमण्डल को प्रजा और महाराज दोनों का समर्थन प्राप्त है, परन्तु आज दिखाई दिया कि महाराज का समर्थन नहीं है। यह चमत्कार है, जो मेरे जीवन-काल में पहले दिखाई नहीं दिया।"

"तो मैं बताती हूँ कि क्या हुआ है। रात मुझे नींद नहीं आ रही थी। मन में विचार आया कि मुझे महाराज से किसी बड़े का द्वार खटखटाना चाहिये। राजा से बड़ा कौन हो सकता है? यह विचार करने लगी, तो समझ आया कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कोई वेद का माननेवाला होता, तो उसे परमात्मा का भय दिखाया जा सकता था, किन्तु यहाँ तो परमात्मा की मान्यता ही नहीं। इस कारण मैंने उसका स्थानापन्न ढूंढ़ा है और उसे रात में ही एक पत्र लिख दिया है। ऐसा प्रतीत होला है कि मेरे पत्र का प्रभाव हुआ है। परमात्मा के उस स्थानापन्न ने ही महाराज को सन्मार्ग दिखाया है।"

"यहाँ तुम्हें परमात्मा का स्थानापन्न कौन मिल गया?"

"जो आपके घर में भी है, जयदमन के घर में भी था और मैंने विचार किया कि वह परमात्मा का स्थानापन्न महाराज सिंहनाद के घर में भी होगा। वह पुरुष की पत्नी है।

"मुझे यह रहस्य पद्मिनी ने बताया था कि जो ईश्वर को नहीं मानते, वे अपनी पत्नी की आज्ञा का पालन करते हैं। नास्तिक पुरुष के लिए उसकी पत्नी ही परमानन्द का स्रोत होती है। वही उसकी नाक की नकेल हो सकती है। मैंने महारानीजी को लिखा और ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने ही महाराज को कुछ बुद्धि प्रदान कर दी है।"

"मोहिनी! तुमने उस पत्र में महारानीजी को क्या लिखा था?"

"बस, शकों के आक्रमण के उपरान्त पुरिका के स्त्री-वर्ग की सम्भावित दुर्दशा का वर्णन किया था। मैंने लिखा था कि यदि शक इस नगर में घुस आते, तो एक भी कुमारी अथवा पतिव्रता युवती बलात्कार से बच न सकती।"

"तुमने बहुत भयङ्कर बात लिख दी?"

"पर यह सत्य है और महाप्रभु महावीरजी की कृपा है कि मेरा तीर ठीक निशाने पर लगा है।"

॥ समाप्त॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त के सर्वाधिक चर्चित उपन्यास

स्वाधीनता के पथ पर	(स्वाधीनता आन्दोलन 1930 से 35 का काल)
पथिक	(स्वाधीनता आन्दोलन 1935 से 40 का काल)
स्वराज्यदान	(स्वाधीनता आन्दोलन 1940 से 46 का काल)
विश्वासघात	(स्वाधीनता आन्दोलन 1946 से 47 का काल)
देश की हत्या	(स्वाधीनता आन्दोलन 1947 से 48 का काल)
दासता के नए रुप	(1948 से 49 का काल)
सदावत्सले मातृभूमे	(1949-.... का काल)

श्री गुरुदत्त की समाजिक रचनाएं

अमानत
अनदेखे वन्धन
आवरण
अन्तरिक्ष में
आकाश पाताल
इवलीस
कला
घर की वात
आशा निराशा
अपने पराए
कामना
गुंठन
चंचरीक
ज़िन्दगी
जीवन ज्वार
न्यायाधिकरण
नए विचार नई वातें
नगर परिमोहन
नास्तिक
पंकज
परिमल
परिवर्तन
पड़ोसी
प्रवंचना
प्रतिशोध
प्रारब्ध और पुरुषार्थ
प्रेयसी
वन्धन शादी का
भगवान भरोसे
भाग्य का सम्वल
भूल
भूत और भविष्य
ममता
मायाजाल
मै न मानूँ
यह संसार
यात्रा का अंत
लालसा
विकार
विलोम गति
विकृत छाया
स्वार्थ
सव एक रंग
सभ्यता की ओर
स्नेह का मूल्य
संस्कार
सफलता के चरण
सर्वमंगला
साहित्यकार
सुमति

www.hindisahityasadan.com
2 वी डी चैम्वर्स,10/54 डी वी गुप्ता रोड,करोल वाग़ पुलीस स्टेशन के पास,नई दिल्ली-05
E-mail: indiabooks@rediffmail.com Tel : 23553624, 23551344, 09213527666

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त की ऐतिहासिक पुस्तकें

परित्राणाय साधूनाम (महाभारत पर आधारित सम्पूर्ण उपन्यास)
वैशाली विलय (वहती रेता)
अस्ताचल की ओर (3 भाग)
खण्डहर वोल रहे हैं (3 भाग)
अमृत मन्थन (राम कथा-1)
परम्परा (राम कथा-2)
अग्नि परीक्षा (राम कथा-3)
जमाना वदल गया (4 भाग)
दो लहरों की टक्कर (2 भाग)
विक्रमादित्य साहसांक
युद्ध और शान्ति
कुमकुम
पत्रलता
दिग्विजय
वाम मार्ग
लुढ़कते पत्थर
गंगा की धारा
सागर तरंग
मेघवाहन
भैरवी चक्र
महाकाल
अवतरण

श्री गुरुदत्त की राजनीतिक रचनाएं

वर्तमान दुर्व्यवस्था का समाधान ..... हिन्दू राष्ट्र
राष्ट्र राज्य और संविधान
हिन्दुत्व की यात्रा
धर्म संस्कृति और राज्य
मनुष्य और समाज
भारत में राष्ट्र
भगनाश
प्रजातंत्र अथवा वर्णाश्रम व्यवस्था
भारत गांधी नेहरु की छाया में
धर्म तथा समाजवाद
बुद्धि बनाम बहुमत
स्व अस्तित्व की रक्षा (2 भाग)
मैं हिन्दू हूँ (राजनैतिक संस्मरण)
भाव और भावना (संस्मरण)
भाग्यचक्र (संस्मरण)

www.hindisahityasadan.com
E-mail: indiabooks@rediffmail.com Tel: 23553624, 23551344, 09213527666

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त की प्रतिनिधि रचनाएं

श्री गुरुदत्त की सशक्त लेखनी से लिखी 200 के लगभग अनुपम उपन्यासों में से चुनकर दस खण्डों में प्रकाशित रचनाएं।

खण्ड 1 - मेघवाहन, सागर तरंग, विक्रमादित्य साहसांक	(ऐतिहासिक उपन्यास)
खण्ड 2 - सहस्त्रवाहू, गगन के पार, अन्तरिक्ष में	(वैज्ञानिक उपन्यास)
खण्ड 3 - कला, कामना, अनदेखे वन्धन	(सामाजिक उपन्यास)
खण्ड 4 - एक और अनेक, मानव	(भावनाप्रधान सामाजिक उपन्यास)
खण्ड 5 - परित्राणाय साधूनाम्	(सम्पूर्ण महाभारत कथा उपन्यास रूप में)
खण्ड 6 - स्वाधीनता के पथ पर, पथिक	(राजनीतिक श्रृंखला के प्रथम उपन्यास)
खण्ड 7 - स्वराज्यदान, दासता के नए रूप	(राजनीतिक श्रृंखला की दो कढ़िया)
खण्ड 8 - देश की हत्या, विश्वासघात	(राजनीतिक श्रृंखला के अन्तिम उपन्यास)
खण्ड 9 - प्रभातवेला, कुमार सम्भव, उमड़ती घटाएं	(पौराणिक उपन्यास)
खण्ड 10- गंगा की धारा	(मुगल काल पर उपन्यास)

Central Library
167992
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

चिकित्सा, ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, धर्म, दर्शन, संगीत, कम्प्यूटर, ओशो
बाल साहित्य तथा हिन्दी साहित्य
www.hindisahityasadan.com
हिन्दी साहित्य सदन
2 वी डी चैम्वर्स,10/54 डी वी गुप्ता रोड,करोल वाग पुलीस स्टेशन के पास,नई दिल्ली-05
E-mail: indiabooks@rediffmail.com Tel : 23553624, 23551344, 09213527666

081
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
167992

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या R 089.9143 GUR - J   आगत संख्या 167992

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30 वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त

8 दिसम्बर, 1894
से
8 अप्रैल, 1989
शिक्षा : एम. एस सी.

प्रथम उपन्यास "स्वाधीनता के पथ पर" से ही ख्याति की सीढ़ियों पर जो चढ़ने लगे कि फिर रुके नहीं।

उपन्यासों में भी शास्त्रों का निचोड़ तो मिलता ही है, रोचकता के विषय में इतना कहना ही पर्याप्त है कि उनका कोई भी उपन्यास पढ़ना आरम्भ करने पर समाप्त किये बिना छोड़ा नहीं जा सकता।

विज्ञान की पृष्ठिभूमि पर वेद, उपनिषद् दर्शन इत्यादि शास्त्रों का अध्ययन आरम्भ किया तो उनको ज्ञान का अथाह सागर देख उसी में रम गये।

श्रीमद्भगवद् गीता, वेद, उपनिषद् तथा दर्शन शास्त्रों की विवेचना एवं अध्ययन अत्यन्त सरल भाषा में प्रस्तुत करना गुरुदत्त की ही विशेषता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक की कुछ अन्य रचनाएें

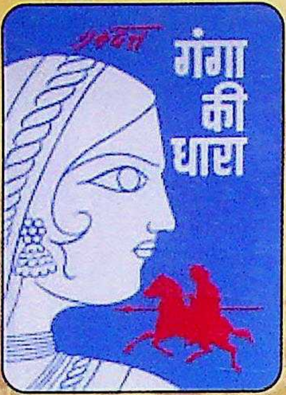

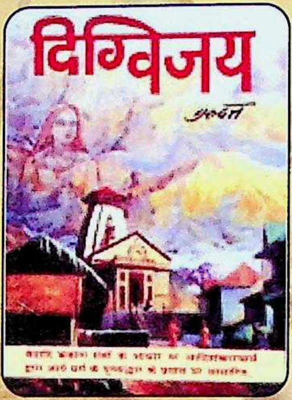

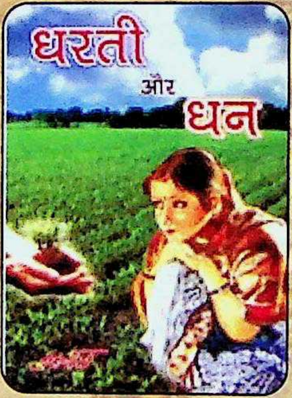

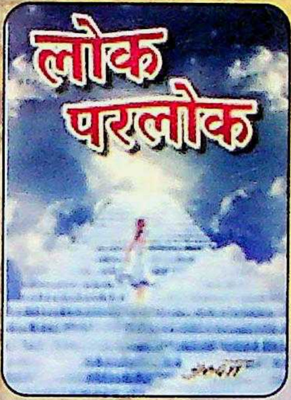

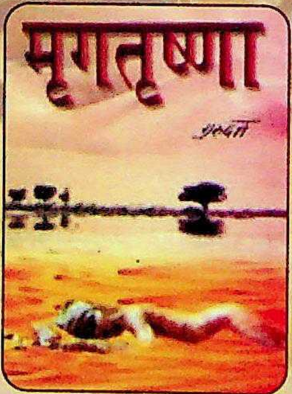

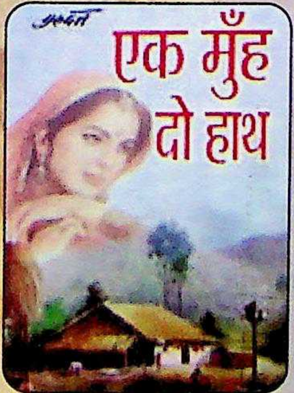

हिन्दी साहित्य सदन
2 बी.डी. चैम्बर, 10/54, देशबन्धु गुप्ता रोड,
करोल बाग, नई दिल्ली-110005
फोन : 23553624, 23551344
www.hindisahityasadan.com
E-maill : hindisahityasadan@gmail.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar